अपनी बात

पूज्य बापू के जीवन का उत्तरार्ध और मुख्यतः उनका अन्तिम काल अत्यन्त ही उत्पादक महत्त्वपूर्ण और अपूर्व रहा है। मेरा यह सौभाग्य रहा कि मैं बापू के अन्तिम दिनों में उनके चरणों के निकट रह सकी। अन्तिम दिनों में उनके निकट रहने का सौभाग्य तो मुझे मिला पर यह नहीं पता था कि अपनी ही आँखों मुझे बापू का निर्वाण भी देखना होगा।

बापू के जीवन की अन्तिम एक महीने की डायरी मैं अपनी टूटी-फूटी भाषा में लिख लिया करती थी। बापू के ये अन्तिम दिन भारतीय इतिहास के अमिट अध्याय हैं। इन पृष्ठों में पाठक भारत की तत्कालीन स्थिति और *बापू की वेदना आकुलता को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।*

मैं कोई विदुषी नहीं और न मुझे कोई अनुभव ही है। फिर भी अपनी बुद्धि के अनुसार अब तक जो कुछ भी टूटी-फूटी भाषा में लिखा है उसे जनता ने बड़े प्रेम से स्वीकार किया है। असल में तो मेरे लेखन में जो कुछ मधुर और प्रेरक रहा है वह सब बापू का ही है। मैंने अपने शब्दों में बापू को ही व्यक्त करने का प्रयास किया है।

स्व. पूज्य किशोरलाल काका का आभार मानना तो मुझे कृत्रिम लगता है। उन्हें तो मैं हृदयपूर्वक वन्दन करके ही उनका ऋण अदा करूँगी। श्री मनु भाई जोधाणी (सम्पादक—'ग्राम-जीवन') तथा श्री चमनलाल भाई (सम्पादक— भावनगर-समाचार) का जितना आभार मानूँ आज उतना थोड़ा है। उन्होंने अत्यन्त प्रेम और आत्मीयतापूर्वक मेरी संस्मरणात्मक यह लेखमाला प्रकाशित की। मूल प्रेरणा तो श्री किशोरलाल काका की भी थी।

बापू ने कहा था कि 'मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है'' इसलिए इसमें जो कोई भी घटना प्रसंगवश आयी है उसमें मैंने हर तरह से यह सावधानी बरती है कि किसीका नाम आदि न आ पाये। फिर भी इतने बड़े विषय में

यदि किसीको कुछ भी दुःख होने जैसी बात लगे या अपने साथ अन्याय होने जैसा मालूम हो तो वह मुझे क्षमा करे, यह मैं बार-बार विनती करती हूँ।

इसमें मुख्यतः बापू के महाप्रयाण तक का दैनिक विवरण दिया गया है। उसके बाद उनकी अन्तिम विधि का वर्णन और उससे सम्बद्ध अनेक बातें अन्यत्र विस्तृत रूप में प्रकाशित हो चुकी हैं। अतः उनके बारे में विशेष न लिखकर जितना मैंने आँखों देखा उसे ही संक्षेप में देकर यह डायरी पूरी की है।

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ मेरी इस डायरी का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कर रहा है अतः राष्ट्रभाषा-प्रेमी सभी लोगों को अब इसका लाभ मिलेगा। मुझे विश्वास है कि हिन्दीभाषी जनता में इसका समुचित स्वागत होगा।

—लेखिका

अनुक्रम

(९)

अन्तिम झाँकी

आपस में ही सामने की कदमों की चिन्ता करें? अपने आप यह मालूम पड़ जाय कि हमें यह काम करना ही चाहिए।"

समुद्र की तरह उदार-हृदय बनिए

दोपहर में कुछ लखनऊवाले आये थे। उनमें भी मुस्लिम दो थे। बापू ने कहा : क्या आपको वर्गों के प्रति श्रद्धा नहीं है? (यहाँ वर्गों से मेरा मतलब रचनात्मक काम से है।) यदि यह काम न होता तो आजादी की लड़ाई भी न हो सकती। मुझे तो सन्देह है कि अब यह स्वराज्य भी टिक पाता या नहीं! आप जनता के धन का किस तरह उपयोग करते हैं, उसका भी विचार करना चाहिए। सार्वजनिक की किसीसे भी दुश्मनी न रहे। हमें जात-पाँत का भेद भूल ही जाना चाहिए। यह सब व्यक्तिगत रूप से ठीक है पर सामूहिक रूप से तो हम सब एक ही मातृभूमि के निवासी हैं और इस तरह भाई-भाई हैं। हमें अपना हृदय दरिया की तरह विशाल रखना चाहिए। दरिया में लोग कितना कूड़ा-करकट फेंकते हैं! फिर भी उसमें नहाकर हम पवित्र हो जाते हैं। खारा होने पर भी उसकी कितनी ज्यादा जरूरत है यह कभी सोचा है? अगर हम इस तरह उदार बनें तो अपनी मानवता से दुनियाभर में दरिया जैसी आध्यात्मिकतावाले महत्त्वपूर्ण देश के नागरिक के नाते ख्याति प्राप्त करेंगे।

भारत के गाँवों में घूमने की इच्छा

शाम को पट्टणी साहब आये थे। उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की थी कि उत्तरदायी शासन के समय बापू भावनगर पधारें। बापू ने कहा : 'यहाँ से निकलना संभव ही नहीं। हाँ 'करो या मरो' इन दोनों में से एक प्रतिज्ञा पूरी हो जाय तो भावनगर अवश्य आऊँगा। बहुत वर्षों से काठियावाड़ नहीं गया। मेरी इच्छा है कि यह महाभारत-कार्य सन्तोषजनक रूप में पूरा हो जाय तो भारत के गाँव-गाँव में घूमूँ। इस तरह देशभर घूमकर लोगों के सुख-दुःख जानूँ। लेकिन यह सब आसमानी सुल्तानी की बात है। कौन जानता है कि कल क्या होगा? सिंध की हालत तो इतनी बुरी है कि यदि मुझे दिल्ली छोड़नी हो तो पहले ही सिंध में जाना है। सिंध जाते समय मैं कोई पासपोर्ट न लूँगा। अपने भाई के घर जाना हो तो क्या अनुमति की जरूरत होती है?

पठानी साहब मेरे पास भी आये थे और मुझे भी भावनगर आने के लिए कहा। लेकिन मैं कैसे जा सकती हूँ? शाम को तो धीरे-धीरे किसी तरह प्रार्थना में गयी थी। चलते समय कमजोरी ज्यादा मालूम पड़ती है। जाड़ा तो है ही।

शरणार्थियों की वापसी का प्रश्न

आज के प्रार्थना-प्रवचन में बापू ने सिंध के हिन्दुओं के लिए कहा : "कुछ मुसलमान भाई पाकिस्तान से आये हैं। उनका कहना है कि 'अब हिन्दू पाकिस्तान जाना चाहें तो जा सकते हैं।' पर मैं समझता हूँ कि अभी वापस लौटने का समय नहीं आया है। अगर ऐसा हो तो आज जो सिन्ध में रह गये हैं, वे डरकर क्यों नहीं आना चाह रहे हैं? या तो सिन्ध में हिन्दुओं को पूर्ण संरक्षण मिले या उन्हें सही-सलामत ढंग से यूनियन में आने की व्यवस्था करें। जब तक इन दोनों में से एक भी नहीं होता तब तक भारत-सरकार शान्ति से नहीं रह सकती यह निश्चित है। जो लोग वहाँ से आये हैं, जब तक वहाँ वे वापस न बैठ जायें तब तक औरों की बात तो ठीक मैं स्वयं शान्ति से नहीं बैठ सकता। सम्भव है कि यहाँ अब थोड़े-बहुत शरणार्थी स्थिर भी हो गये हों। लेकिन उससे क्या? इन लोगों को अपना वासस्थान घर-बार याद आये बगैर रह कैसे सकता है? पर मैं शरणार्थियों को यह सुझाव दे रहा हूँ कि वे प्रामाणिकता के साथ शरीर-परिश्रम करके खायें। इससे उनका दुःख भी कुछ भूल जायगा और वे पापाचार से भी बचे रहेंगे।"

सारा जीवन प्रार्थनामय

रेडियो में बापू का प्रवचन आता है, उस बारे में ने पत्र लिखा है। उसका भी जवाब प्रार्थना में देते हुए बापू ने कहा मैं जो कुछ रोज कहता हूँ, वह सारा प्रार्थना का ही एक अंग है। मेरा तो जो कुछ है, सारा भगवान् को समर्पित है। उस व्यक्ति ने भजन और प्रार्थना का रिकार्ड उतरवाने के लिए लिखा है। भजन और प्रार्थना का रिकार्ड जरूर हो तो ले सकते हैं। लेकिन भजनों के पीछे इन लड़कियों की भक्ति है। रेडियो पर तो अनेक रागदारियाँ गायी जाती हैं। पर उनमें और इन लड़कियों के भजन में अन्तर है। ये भगवान् को सान्निध्य में रखकर गाती हैं, इसलिए इनका पवित्र प्रभाव पड़ता है।

'जूनागढ़ और अजमेर के बारे में मुझे तार मिले हैं। काठियावाड़ के जूनागढ़ में तो मैं धन्य हुआ और चकित-विस्मित भी। मैं कबूल करता हूँ कि अजमेर में भी बहुत बुरी घटना हो गयी है। वहाँ आगजनी और लूटपाट करने में कोई कसर नहीं रखी गयी। फिर भी वहाँ से अतिशयोक्ति भरे समाचार प्रकाशित किये जाते हैं। यह बहुत बुरी बात है। ऐसा न होना चाहिए। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को अपनी-अपनी खामियाँ मिटानी चाहिए। एक-दूसरे के दोष देखने में किसीका भी लाभ नहीं है।

ईसा का स्मरण

रात में राजकुमारी बहन आयी थीं। आज तो साल का आखिरी दिन है। उनके साथ और भी अंग्रेज आये थे बापू का आशीर्वाद पाने के लिए। उन सबके साथ बातचीत करते हुए बापू ने कहा: "विश्व में कोई भी आदमी पूर्ण नहीं है। धर्म-संस्था तो समय के अनुसार ही बनती है। ईसा को हम लोगों ने (मनुष्य-समाज ने) ही बेहाल करके सूली पर चढ़ा दिया। उसी ईसा को आज हम प्रेम से पूजते हैं। जीवित प्राणी को कोंचें खींचें और मरने के बाद पूजा 'इस इतिहास की हम अनेक शताब्दियों से पुनरावृत्ति ही करते आ रहे हैं। आजकल तो हम लोग ऐसे हो गये हैं कि वह चीनी कन्फ्यूशियस कहता है:
'To know what is right and not to do it cowardice.
(सत्य को जानते हुए भी उसके अनुकूल आचरण न करना कायरता है।)' और बापू ने कहा 'सर्वांग धर्म तो सम्पूर्ण ही हो सकता है। हम लोगों ने उसे नहीं देखा पर वैसे ईश्वर को भी कहाँ देखा है। इसीलिए जिसको मैं पचास साठ वर्षों से आतुरतापूर्वक रट लगाता आ रहा हूँ, वह आत्मदर्शन मुझे करना है। यह तो नहीं कह सकता कि आज मैं उसमें पूर्ण सफल हो गया हूँ। फिर भी यह सच है कि मैं उसके नजदीक पहुँच रहा हूँ और मेरी सारी प्रवृत्तियाँ इसी दृष्टि से चल रही हैं।

स्वास्थ्य की सावधानी

उनके चले जाने के बाद बापू ने अखबार पढ़े और पैर धोकर, कसरत कर सोने की तैयारी की। मैंने पैर और सिर में मालिश की। पैर दबाये। अभी बुखार बिलकुल तो उतरा नहीं था। सोने के पहले बुखार लिवाया था।

पैर तो मुश्किल से पाँच मिनट ही मुझे दबाने रखने के लिए ही दबवाये और तुरन्त ही सो जाने के लिए कहा। सोते-सोते पुनः मुझसे कहा कि "आज सुबह मैंने जो तुझे कहा उसे तेरी डायरी में लिख लेना। लेकिन जरा गम्भीरता से विचार करना। अभी तो मैं इतना ध्यान रखता हूँ। अगर इतना ध्यान न रखता तो तू कब की खत्म हो गयी होती या किसी नये रोग का शिकार होते देर न लगती। वजन गिरने लगे कमजोरी मालूम पड़े तो तत्काल सावधान हो जाना चाहिए। आज जीवराज भी मुझसे कह रहे थे कि यह लड़की अगर भविष्य में ध्यान न रखेगी तो हैरान हो जायगी। बच्ची है और पढ़ना बहुत है, इसलिए पता नहीं चल पाता।'

मैं तुरन्त सो गयी और ध्यान रखकर स्वस्थ हो जाऊँगी यह कहा। "मुझे गीताजी सीख लेनी चाहिए। लेकिन 'नहीं' कह रहे हैं। बापू कहते हैं, तो फिर तुझे मेरे पास रहने का मोह छोड़ देना ही होगा। या तो राजकोट जाय या ... के पास जाय। यहाँ रहना और सभी बातों में हठ पकड़ना कैसे चल सकता है? यहाँ कौन जबर्दस्ती रखना चाहता है? भाई साहब के साथ भी ... के बारे में बातें हुईं। भाई साहब ने मौलाना साहब का वह भाषण सुनाया जो लखनऊ में हुआ था। आज तो मुलाकातियों की भीड़ इतनी अधिक रही कि बैठते ही थकान मालूम पड़ने लगती थी।

दस बजे सबने सोने की तैयारी की। बापू ने जल्दी उठकर चिट्ठियाँ नहीं लिखायीं और वे थक गये हैं। शायद इसीलिए उन्होंने अपने बिस्तर के पास लिखने का सारा सामान रखवा लिया है।

• • •

नूतन वर्षाभिनन्दन : २ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१-१-'४८

नियमानुसार ३॥ बजे प्रार्थना हुई। प्रार्थना के बाद बापू ने पत्र लिखे "यहाँ का मामला मेरी राय से कुछ सुधर नहीं रहा है। अभी तो यहाँ बैठा हूँ। पता नहीं क्या हो जायगा? पुलिस के डर से ही बाहर में शान्ति है। लोगों के

हृदय में तो आग भरी है। या तो उस आग में मुझे जलना होगा या उस आग को बुझाना होगा। तीसरा कोई रास्ता अभी तो नहीं दीखता।"

आज अंग्रेजी का नया वर्ष होने के कारण नूतन वर्षाभिनन्दन और मित्र-मत्र के अनेक कार्ड बापू के पास पहुँचे। लार्ड तथा लेडी माउण्टबैटन की बधाइयाँ भी आयीं। राजकुमारी बहन तो बड़े सवेरे भोर में ही प्रणाम करने आयी थीं।

एक बहन को धीरज बँधाते हुए बापू ने लिखा : 'तेरा भाई चला गया! मुझे तो बीमारी की खबर ही न थी। लेकिन प्रभु ने उसको बीमारी से मुक्त कर दिया यह भी उसकी दया ही मानना चाहिए। इसी तरह एक दिन मुझे तुझे और हम सबको जाना है। देश में प्रतिदिन सैकड़ों आदमी मरते होंगे। कितनों ने बेचारे निराधार बच्चे छोड़ दिये होंगे तो कितने ही माँ-बाप के नन्हे-मुन्ने बालक गुजर गये होंगे। तुझे देश की वर्तमान स्थिति का विचार करना चाहिए और इस तरह अपना दुःख हलका करना चाहिए। हमारे अपने दुःख तो स्वार्थ के कारण ही हैं।

नियमानुसार बापू टहलने के लिए निकले तब भी बहुत से अंग्रेज बापू को नव-वर्ष के निमित्त प्रणाम करने आये थे। एक भाई ने तो बापू की यह कहकर स्तुति की कि "आप साक्षात् भगवान् ईसा ही हैं।" बापू कहने लगे : "मैं ईसा-मसीह तो हूँ ही नहीं हाँ उनके पथ पर चलने का मेरा प्रयत्न अवश्य है।"

अभी चाँद बहन की तबीयत ठीक नहीं है। इसलिए डॉ० कर्नल भार्गव को टेलीफोन करके बुलाने के लिए बापू ने कहा।

सोते समय बापू ने आँखें भी बन्द कर ली थीं। बापू को थकान ज्यादा है।

कताई का धागा होने से आज मालिश देर से की गयी। इस बीच बापू ने 'हरिजन' की तैयारी की।

अहिंसा के रूप में निर्बलता

एक बैठक में बापू ने बताया कि "जिसे मैं अहिंसा मान बैठा था वह वास्तव में सच्ची अहिंसा नहीं थी बल्कि अहिंसा के नाम पर निरी निर्बलता ही थी। कहने का मतलब यह कि अहिंसा कभी निष्फल नहीं होती। हाँ अहिंसक निष्फल

अवश्य हो जाते हैं। किन्तु मैं उतनेभर से रुक नहीं जाता। मैं तभी से [illegible]' के अनुसार मैं पिछली भूलों को सुधारकर आगे बढ़ना ही ठीक मानता हूँ। आदमी इसी तरह आगे बढ़ सकता है।"

दोपहर में मुझे अस्पताल जाना पड़ा। वहाँ से लौटने पर एकाएक मुझे बुखार चढ़ आया। बुखार चढ़ जाड़ा देकर आया और थर्मामीटर में १०४ डिग्री तक पहुँच गया। मुझे इससे उतनी परेशानी नहीं होती थी जितनी मेरी बीमारी देख चिन्ता में पड़ जानेवाले बापू को देखकर होती थी।

देशवासी आपस में ही भयभीत

पादरी साहब आये थे। उनसे बापू ने रोज आने के लिए कहा है, इसलिए वे आये। देव नये मौसम के लिए गये। सियाम के सेनेट रोमन के साथ यहाँ फूट पड़नेवाली ज्वालामुखी हिंसा के विषय में बातचीत हुई। उन्होंने बापू का अभिनन्दन भी किया कि आपके परिश्रम से ही भारत आजाद हुआ है। उसका असर सभी देशों पर पड़ा। उससे सभी के हृदय में आजाद होने की अभिलाषा जगनी ही चाहिए। बापू ने कहा: "लेकिन मैं तो इसका श्रेय ले ही नहीं सकता। मैं इस आजादी को आजादी मानता ही नहीं। यदि मुझे पहले से ही पता होता कि हमारी यह अहिंसा निष्क्रिय प्रतिकार (पैसिव रेजिस्टेन्स) मात्र था तो कदाचित् ऐसा परिणाम रुक भी जाता। आज तो इस राजधानी के शहर में भी लोग निश्चिन्त होकर घूम-फिर नहीं सकते। अपने भाइयों का देश-बन्धुओं का डर लगता है। तब मैं कैसे कह सकता हूँ कि हमारा देश आजादी की खुशी मना रहा है! किसका दोष है, इसमें मैं आपको नहीं घसीटता। फिर भी यह निश्चित है कि यह सब विरोधी सत्ता का ही परिणाम है, यह कहे बगैर रह नहीं सकता।"

उनके जाने के बाद ज्ञानी करतारसिंहजी और सरदार दिलीपसिंहजी आये। उन्होंने पंजाब और कश्मीर की खबरें सुनायीं। अभी तो राख से ढँकी आग-सी लग रही है। कब कहाँ यह ज्वालामुखी फूट पड़ेगा, कहा नहीं जा सकता।

प्रार्थना-सभा में बापू ने सर्वप्रथम ईसाई भाइयों का नववर्षाभिनन्दन किया। आज की प्रार्थना-सभा भी रोज की अपेक्षा बहुत बड़ी रही। बहनों को बैठने के लिए कठिनाई हो रही थी।

बापू ने कहा : 'आज ईसाई वर्ष का पहला दिन है। इसलिए मैं आपका नूतन वर्ष पर अभिनन्दन कर रहा हूँ।

बहनों को बैठने की जगह करने में सात-आठ मिनट बिगड़ जायँ तो करोड़ों के अनेक मिनट बिगड़े ऐसा माना जाता है। हमारे देश में ऐसी पद्धति ही नहीं कि बहनों को हमेशा सरलता से जगह मिल जाय। लेकिन अन्य देशों में यह है। जिन देशों में स्त्रियों को सम्मान प्राप्त होता है, वह देश गौरवान्वित माना जाता है। हमारे शास्त्रों में एक संस्कृत श्लोक है कि जहाँ-जहाँ नारी का पूजन होता है, वहाँ-वहाँ सभी देवता निवास करते हैं। फिर अब तो आजादी मिल गयी है। इसलिए हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ गयी है।

जो लोग यहाँ आते हैं, वे केवल राजनैतिक लक्ष्य से ही न आयें। प्रार्थना तो आत्मा की खुराक है। जिस तरह खुराक के बगैर शरीर कमजोर होता जाता है, उसी तरह प्रार्थना के बगैर हम लोग दिनोंदिन असंस्कारी बनते जायँगे।

हरिजन और शराब-बन्दी

आज मुझे आपसे हरिजनों के बारे में कुछ बातें कहनी हैं। हाल ही में नगर प्रदेश में एक हरिजन-परिषद् हुई थी। उसमें एक मंत्री ने उनसे मद्य न लेने और मांस छोड़ देने के लिए कहा। इस पर एक हरिजन भाई ने उठकर बड़ी हिम्मत के साथ कहा : 'हम लोग भंगी-चमार भूखों मरेंगे पर मद्य न छोड़ेंगे।' शराब तो बाहर से भी खराब है। गरीब लोग काफी मेहनत-मजदूरी करके घर लौटते हैं। अपनी थकान मिटाने के लिए, साथ ही गरीबी का दुःख न देख सकने के कारण उसे भुलाने के लिए ही ये लोग शराब पीते हैं। लेकिन शराब पीने से शरीर और आत्मा की बहुत दुर्दशा होती है। मेरी चले तो मैं सरकार से नम्रतापूर्वक यह सूचित करूँ कि आप शराब की सारी दुकानें बन्द करा दें और उन दुकानों पर इन गरीबों के लिए थोड़ा पर कम कीमत का गर्म नाश्ता प्राप्त रहे। साथ ही वहाँ ऐसे साहित्य का भी प्रबन्ध करें जिससे लोगों को कुछ जानने-समझने को मिले। आज एक ओर ऐसे आदमियों से तो दूसरी ओर बड़े सिनेमा आदि में पैसे बढ़ाये जा रहे हैं।

मैंने सुना है कि मौजवाले कठोर परिश्रम कर शहर में अपना माल बेचने आते हैं तो उनमें से शायद ही कोई ऐसा निकलेगा जो बिना सिनेमा देखे

अपने गाँव लौटता हो। मेरा यह विश्वास है कि अगर हम ऐसा ही करते रहे, तो अपना शरीर और मन स्वस्थ नहीं रख सकेंगे। कांग्रेस के विधान के अनुसार तो सन् १९२ से ही मद्य-निषेध-आन्दोलन शुरू हुआ है। अब तो कांग्रेस की सरकार बनी है। इसलिए सर्वप्रथम उसे इस ओर बड़ी ही गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए कि इसमें प्रजा के साथ क्या-क्या वायदे किये हैं और कौन-कौन-से सिद्धांत विधान के विरुद्ध हैं। उसे ऐसी नापाक आमदनी आय को सर्वथा त्याग ही देना चाहिए। अगर मेरी यही की आवाज सुनाई दे, तो मैं सुनाना चाहता हूँ कि इससे न तो सरकार का नुकसान होगा और न प्रजा का ही। दोनों को परस्पर लाभ ही होगा। फिर प्रजा को संस्कारी बनाने में कदाचित् सरकार को कुछ घाटा भी उठाना पड़े तो भी मैं मानता हूँ कि आजादी के इस युग में जनतांत्रिक सरकार को उतना सहन कर ही लेना चाहिए।"

प्रार्थना के बाद बापू टहलने गये। मैं तो तबीयत ठीक न होने के कारण टहल न सकी। टहलते समय बापू के साथ कौन था यह मैं नहीं जानती।

टहलकर लौटने के बाद बापू ने भाषण लिखा। के साथ भीतर-ही भीतर अपार मतभेद बढ़ रहे हैं। उसका असर चारों ओर है। प्रजा में तो होगा ही। अगर इसी तरह चला तो बापू मानते हैं कि एक बार छेद हो जाने पर सारी इमारत चकनाचूर हो जायगी। बापू के हाथ में ही यह बाजी है। अगर इसमें बापू का प्रयत्न सफल न हुआ तो यह कुछ और ही रूप पकड़ेगा।

"के साथ मिनिस्टर से लम्बी बातचीत की। कश्मीर के लिए बापू बेचैन हैं।

'को लिखते हुए उसके पाँच जमीं के सभी पत्र पर बापू ने सूचित किया कि अन्ध अनुकरण भी बुद्धि का अभाव है। क्या कभी बुरी वस्तु का भी अनुकरण या भाव किया जा सकता है? जाने हिन्दुस्तान ने कितने मुसलमान मारे या पाकिस्तान ने कितने हिन्दुओं का सफाया किया इस झमेले में पड़ना अपने ओछेपन का नग्न प्रदर्शन ही है। भगवान् सबको सन्मति दे। आज तो आखिर इस प्रार्थना के बल पर ही मैं जी रहा हूँ। "

साढ़े नौ बजे बापू उठे। व्यायाम कर बिस्तर पर बैठने के पहले मेरा बुखार देखा गया—१ १ ६ था। वे सारी बातें और वातावरण को जान सकें के लिए मैं

सत्य की पहचान

ने 'गीता में कहा है कि ज्ञानपूर्ण सारा कर्म धर्म है। यह बिलकुल सच है। मुझे तो इसके कई अनुभव आये हैं और बहुतों को भी आये ही होंगे। अगर कर्म ज्ञानमय हो जाय तो उसमें भक्ति तो अपने-आप ही आ मिलती है। इसके लिए आदमी को हमेशा सत्य का आश्रय लेना पड़ता है। अगर सत्य पहचान लिया तो उसके लिए और कोई भी मसला बाकी नहीं रहता। जैसे दर्पण में हम अपना प्रतिबिंब देख सकते हैं, चेहरे पर जरा-सा दाग होने पर वह भी दीख पड़ता है, वैसे ही हमें पहले अपना हृदय टटोलना चाहिए। बाद में ही दूसरे की आलोचना करनी चाहिए। शायद ही कोई सर्वांगपूर्ण होने का दावा कर सके। इसलिए मेरी तुम्हें नम्र सलाह है कि …के दोष देखने के बदले अपना दोष देखना था। अगर मेरी सलाह" के पल्ले उतरे तभी उसका विचार किया जाय। नहीं तो यों ही फेंक दे सकते हैं।"

दूसरा पत्र मेरे बड़े बापूजी को लिखा था : "मैं तो अभी संकट में पड़ा हूँ। क्या होगा कहना कठिन है। शायद शीघ्र ही कुछ परिणाम निकले। चि० मनुड़ी (मनु) अत्यन्त दुःखी हो गयी है। इस समय उसकी दशा चिन्ताजनक है। इसमें दोष जितना उसका है, उतना ही मेरा भी होगा। मैंने उससे १८-१८ घंटे काम लिया है और उतना ही या उससे भी ज्यादा मानसिक श्रम भी करवाया है। आखिर बेचारी १५ साल की छोकरी ही ठहरी! फिर भी मैं मानता हूँ कि अगर उसके हृदय में राम-नाम अंकित हो जाय तो उसका शरीर कभी कमजोर नहीं हो सकता। लेकिन इसे मैं कैसे देख सकता हूँ? अभी जब तक मैं उसकी तबीयत ठिकाने नहीं ला पाता तब तक मुझे चिन्ता तो रहेगी ही। इस यज्ञ में उसका भाग मामूली नहीं है। मेरे निकट असंख्य लड़कियाँ आयीं और गयीं। उनमें मनुड़ी का सेवा का हिस्सा उसकी उम्र को देखते हुए शायद सबसे ज्यादा है। अगर मैं उसे अपने पास न बुलाता तो इस लड़की के साथ अपार अन्याय करने का दोष मुझ पर रहता। अब उसे मैं यथाशक्ति पूर्ण स्वस्थ देखूँ, इतना ही बस है।

अभी यहाँ कब तक रहना होगा कहा नहीं जा सकता। करना है या मरना है, तो बीच के मार्ग को अवकाश ही नहीं रहता।

आपकी तबीयत कैसी है? अब तुरत के प्रयोग तो नहीं करते न? बाकी

कि मजबूरी लिखेगी। इतने बोझ में भी मेरी तबीयत ठीक है, यह ईश्वर की महान् कृपा है।

—बापू के आशीर्वाद।"

बापू ने लिखे हुए पत्र नकल करने के लिए दिये और टहलने चले गये। मुझे लेट रहने के लिए कहा।

"दिनभर बुखार रहा। काफी कमजोरी मालूम हो रही है। बापू के पास कौन-कौन आया-गया इसका पता नहीं। रात में चाँद बहन के विवाह के बारे में बातें चल रही थीं। बापू ने तय किया है कि जब तक हिन्दू-मुसलिम-एकता नहीं हो जाती तब तक किसीके विवाह-शादी में नहीं जाऊँगा। लेकिन देवप्रकाशभाई (नैयर) और चाँद बहन का आग्रह है। इसलिए जब तक एकता नहीं हो जाती तब तक कदाचित् वे लोग विवाह न भी करें। बापू की भी अजब जिम्मेदारी है! किसीके शादी-विवाह में—किसीके विवाह-विच्छेद में—किसी निर्वासित के जीवन में—तो पण्डितजी और सरदार दादा के राजनैतिक प्रश्नों में तथा मुझ जैसी की बीमारी में—ऐसी अनेक समस्याओं का बड़े प्रेम से हल करते हैं।

वे देवभाई और चाँद बहन को समझाने-बुझाने में भी काफी समय देते हैं, ताकि कहीं उनको यह न लगे कि बापू हमारे नहीं हैं। वैसे देखा जाय तो सचमुच सभी को यह लगता है कि बापू हमारे ही हैं।

सुशीला बहन तो अमेरिका जाने की तेजी से तैयारी कर रही हैं। उनकी समस्याओं पर भी बापू उतनी ही चिन्तापूर्वक बारीकी से ध्यान देते हैं।

आज तो बारिश हो ही रही है। दिन बड़ा ही खराब गया। शाम को कमलनयनजी आये थे। उन्हें बापू ने खूब हँसाया। प्रार्थना में जाते समय बारिश के कारण बापू ने नोआखालीवाली हैट पहनी थी। श्रोताओं को इससे आश्चर्य भी हुआ था।

आज की प्रार्थना-सभा में बापू ने कहा: "आप सबको यह टोप देखकर आश्चर्य हुआ होगा। लेकिन यह मेरे लिए एक कीमती चीज है। एक तो यह टोप नोआखाली के एक मुसलिम किसान ने मुझे भेंट दिया है और दूसरे, यह छाते की आवश्यकता भी पूरी कर देता है। यह छाते से बहुत सस्ता भी है और एक

ग्रामीण हाथ-कारीगरी का नमूना है। इस तरह हम लोग गाँवों में जाकर ऐसी कितनी ही उपयोगी चीजें पैदा कर सकते हैं।

अभी आपने जो भजन सुना ('दरशन देना प्राण पियारे') वह मातापक्ष गाने का है। भक्त भगवान् से दर्शन देने के लिए कैसी अनुनय-विनय कर रहा है! हम इस तरह अनुनय करनेवाले दुःखी भाइयों की यथाशक्ति मदद करें तो! ईश्वर कभी नहीं सोता। वह सदा-सर्वदा जागता ही रहता है।

'अभी-अभी इलाहाबाद से मेरे पास एक पत्र आया है। वे भाई स्पष्ट लिखते हैं कि अमुक-अमुक व्यक्तियों को छोड़ दें तो कदाचित् ही कोई ऐसा मुसलमान निकले जो हिन्दुस्तान के प्रति पूर्ण वफादार रहे। अगर हम लोगों के बीच लड़ाई छिड़ जाय तब तो एक बच्चा-सा बच्चा भी वफादार न रहेगा। इसलिए जैसे बने वैसे भारत से मुसलमानों को भगा ही देना चाहिए।

इन भाई को मुझे सूचित करना होगा कि अगर हमारी ऐसी ही भावना रही तो निश्चय ही हमारा स्वराज्य खतरे में पड़ जायगा। जब तक इल्जाम साबित न हो तब तक उस पर आक्षेप कर बैठना मानवता नहीं है। कुछ ही दिन पहले लखनऊ में एक बड़ा मुसलमान मुझे मिले थे और उन्होंने कहा था कि हम लोग अपनी जान कुर्बान करके भी देश के प्रति वफादार रहेंगे। क्या ऐसी भावना पर विश्वास न रखना एक राष्ट्र के लिए शोभा के लायक माना जा सकता है? फिर भी मान लीजिये कोई बेवफा ही निकला तो उसे गोली मार सकते हैं। फिर भी यहाँ मैं इतना भी स्पष्टीकरण कर देता हूँ कि यह तरीका मेरा नहीं है।

'यदि ऐसी भावना रही तो कदाचित् सभी देशों में ये माननेवाले कायम रहेंगे। मान लीजिये कि सभी देशों के बीच लड़ाई छिड़ ही जाती है, तो मुझे तो जरा भी जीने की इच्छा नहीं रहेगी। फिर भी जब तक मुट्ठीभर किन्तु सम्पूर्ण सत्य और अहिंसा को माननेवाले लोग हैं, तब तक इन सब देशों के बीच लड़ाई का कदम नहीं उठाया जायगा इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।'

प्रार्थना के बाद पंडितजी आये। कश्मीर की समस्या इतनी उग्र हो गयी है कि हो सकता है, लड़ाई छिड़ जाय। दूसरी ओर देशी नरेशों को भी अब लोक भूमिका में मिला दिया जायगा। देशी नरेश क्या करेंगे कहा नहीं जा सकता।

जूनागढ़ और कश्मीर, ये तीनों प्रश्न कदाचित् भयङ्कर भविष्य उपस्थित कर दें तो कोई अचरज नहीं।

शेख साहब अभी तो बहादुरी के साथ काम कर रहे हैं। लेकिन सरदार दादा का मन उनके बारे में जरा खटक जरूर रहा है। पण्डितजी का तो शेख साहब पर अगाध विश्वास है।

और कांग्रेस संस्था में भी राम-न-रहीम सभी एक-दूसरे पर ऐसे व्यक्तिगत आक्षेप किया करते हैं, जिससे बहुत दुःख होता है। आखिर ये सारे जहर के घूंट बापू को ही पीने पड़ते हैं।

रात में करीब १ बजे सोये। सोने के पहले बहुत-सी मेरे साथ बातें हुईं। बापू प्रभुभाई को इस बारे में लिखनेवाले हैं। लेकिन यह अच्छा नहीं लगता। अभी कुछ वातावरण अत्यन्त उदासी से भरा रहता है। अगर बापू नाराज हों तो फिर हम लोगों का खूब हैरान होना पड़ेगा।

मुझे देख लेने के बाद बापू सोये। गरम पानी खूब पीने को कहा। वे मुझसे कहने : "तेरे शरीर की कमजोरी मुझे सचमुच चिन्ता कराती है। लेकिन जैसे बने वैसे पानी पी, आराम कर और सोना अच्छा न लगे तो भी आँखें बन्द कर राम का नाम लेती हुई पड़ी रह। यह तेरा धर्म है, तेरा काम है।" मुझे तो रोना ही आ गया—एक तो इनकी सेवा लेना! इनके उपकार सिर पर चढ़ रहे हैं और उसका मन में भारी रंज रहता है। मुझ पर बड़े-से-बड़े उपकार चढ़ रहे हैं।

● ● ●

राष्ट्रभाषा और लिपि का मसला : ४

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१-११-४७

नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थना से पहले बापू ने मेरी तबीयत देखी। अब तो यह मियादी बुखार-सा लगता है। मैंने उठने-बैठने की तो बापू ने मनाही कर दी है, पर मैं थोड़ा उठ-बैठ लेती हूँ। रात में आभा बहन भी बापू के पास सोयी हुई थीं। फिर भी रात दो बजे उठ बापू ने मुझे पानी पिलाया। पता नहीं किस जन्म का बापू का यह ऋण मिलना है!

१

नोआखाली से एक पत्र आया है। बापू कहते हैं — 'जब असली खतरा होता है, तभी हमेशा आदमी को हर बात की समझ आती है। इन दिनों मैं जितना अध्ययन कर रहा हूँ और मनुष्य की जो अन्तिम स्थिति देख रहा हूँ, ऐसी जिन्दगी-भर नहीं देखी। कदाचित् यह सारा समय मेरी बीती हुई जिन्दगी का कभी नहीं हो सकता। मैं जिसकी कल्पना तक नहीं कर सकता ईश्वर मुझे उसका स्पष्ट दर्शन करा रहा है। और वह मुझसे कह रहा है कि तू केवल 'यह सारी चेतावनी की सीमा है।

'मुझे पूरी तरह सतर्क हो जाना चाहिए। तभी मुझे शान्ति मिलेगी। इसी असली डायरी तो दिनों से मुझे नहीं थी। आज देखा। देख तो रही कि ...के जैसी अच्छी-अच्छी स्त्रियाँ भी आज बरदाश्त करती हैं। यह सारा मेरी आँखों से ओझल नहीं है। लेकिन कल ही मैंने प्रार्थना में कहा था कि 'मैं तो विश्वासी मनुष्य हूँ। विश्वास रखने में मानव कुछ भी गँवाता नहीं। वह अपना कर्तव्य पूरा कर सकता है। इसीका नाम है सच्ची जिन्दगी।

आज दोपहर में तो बुखार नार्मल हो गया। बापू बहुत प्रसन्न हुए और अब खूब ध्यान रखने के लिए कहा।

आज के पत्र में "मैं अब तक राम के नजदीक नहीं पहुँचा। वहाँ पहुँचने की कोशिश है। अगर वहाँ पहुँच गया तो मेरी अहिंसा का तेज चारों तरफ फैलेगा।

"वहाँ की हालत बहुत खतरनाक है। कश्मीर के बारे में माउण्टबैटन खूब भी काफी प्रयत्न कर रहे हैं। कुछ भी हो अब बंगाल और बिहार की घटना न होगा। अगर वहाँ जरा-सी भी गड़बड़ होगी तो आप मुझे जिन्दा नहीं देखेंगी। यह मेरा सन्देश सबके पास पहुँचा देना।"

सुबह राजेन्द्र बाबू के साथ की बातचीत के बाद भी बापू बहुत व्यथित थे। इस बार के बीच के सम्बन्ध बिगड़ रहे हैं। उसका असर इतना बुरा हो रहा है कि मानो पाकिस्तान में इस परिणाम की राह ही न देखी जा रही हो। भले ही माउण्टबैटन प्रयत्नशील हों। लेकिन आखिर कम्बख्त पारिवारिक बातों में उन्हें इतना अधिक रस-रुचि क्यों होने देनी चाहिए।

और अब तो मानो इस संस्था की एक-एक ईंट खिसकती जान पैसे यह मिसाल बनती जा रही है। बापू कहते हैं "यदि मुझे जिन्दा छोड़ दे, तो मैं सारे

हिन्दुस्तान की यात्रा ही करना चाह रहा हूँ। हमें अपने पहले किये हुए कर्मों को याद कर उन्हें ठोस आकार (मूर्तरूप) देना होगा या यह कबूल करना होगा कि राज्य करना एक बात है और शासन करना दूसरी। अगर ऐसी बातों से मन में दुःख होता ही रहे, तो भी हमें उसे घोषित कर देने में देश की अधिक सुरक्षा है। कश्मीर की समस्या दिन पर दिन गंभीर स्वरूप धारण कर रही है और यदि हम लोग यूनो में जायें तो समझ लें कि हमारी इज्जत मिट्टी में मिल गयी। सर्वप्रथम तो—अगर आपका स्वास्थ्य साथ दे, तो मैं यह अवश्य चाहता हूँ कि—आप देश के कोने-कोने में घूमें और सरकार की दृष्टि तटस्थ रूप से प्रजा को समझायें। अगर कांग्रेस-अध्यक्ष का पद 'तटस्थ' होगा तो सरकार और प्रजा दोनों का काम होगा यह मैं मानता हूँ।'

जाड़ा अधिक होने के कारण आज बापू मालिश के लिए देर से गये। चिट्ठियाँ देखीं। एक खूब गरमागरम पत्र है। बापू ने उसे लिखा। तेरा तीखा पत्र मिला। तू इतना अधिक गरम हो जाय क्या यह उचित है? लोहा गरम हो जाने पर उसमें से चिनगारियाँ निकलने लगती हैं। लेकिन हथौड़ा चाहे जैसा कीजिये वह गरम होकर जलता नहीं। अगर तू हथौड़े जैसी बन जाय तो तेरे इच्छानुसार सब कुछ होकर रहेगा। पर अगर दरिया में ही आग लग जाय तो किसे क्या कहा जाय?"

आश्रम आत्मनिर्भर हो

मुझे नहीं लगता कि मैं यहाँ से निकल सकूँगा। करना है या मरना है। आप समझते होंगे कि दिल्ली में शान्ति है। मगर वह हृदय की नहीं श्मशान की है। मैं भारत की आवाज की प्रतीक्षा में हूँ। मेरे पास आजकल तीन-चार लड़कियाँ तो सेवा में हैं ही। बिरला के इतने बड़े महल में पड़ा हूँ मगर मुझे जरा भी चैन नहीं। लड़कियाँ तो काफी सेवा कर रही हैं। आपकी सेवा की जरूरत अभी तो महसूस नहीं कर रहा हूँ। हाँ अन्य लड़कियाँ चाहें तब मुझसे इजाजत लेकर जा सकती हैं। केवल मनु ही इस यज्ञ की भागीदार है। और सब लड़कियाँ तो इत्तफाक से आ गयी हैं वैसे ही जा भी सकती हैं। मुझे कबूल करना पड़ेगा कि इस यज्ञ में मनु की सेवा अजीब ही बनी रही। यह केवल अपने प्रकार की तरह से काफी मेहनत करती है। आप सब कैसे हैं? खादी-प्रतिष्ठान का क्या हाल है? आश्रम में

लेकिन तू बीमार रहा करती है, यह मुझे बड़ा ही दुःखदायी लगता है। यह सच है कि तू अपनी शक्ति से अधिक टिक सकी है। तू सादी सरल और भोली है इसीलिए ईश्वर तुझे यह हिम्मत दे रहा है। लेकिन देश की परिस्थिति दिन-दिन बिगड़ती जा रही है। मन्त्रिमण्डल में एकमत नहीं है। ये सारी बातें तुझे इसीलिए कह रहा हूँ कि अब कदाचित् मैं देह से तेरे पास न भी रहूँ—आत्मा से तो हूँ ही—तो पीछे से तुझे परेशानी न हो। तेरी प्रकृति बहुत ही कमजोर हो गयी है, इसकी मुझे अत्यधिक उलझन है। अगर यह तू समझ सके तो मैं समझाना चाहता हूँ। तू आज की इन बातों को एक कागज पर लिखकर मुझे दे देना। मैं उसे सुधारकर तुझे दे दूँगा ताकि तू उसे अपने भाई को भेज दे। आजकल तेरी डायरी भी नियमित देख नहीं पाता यह मुझे अच्छा नहीं लगता।

यह बात सुनकर मेरी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली। बापू बड़े प्रेम से थपकियाँ देकर कहने लगे: "क्या इस तरह कभी घबड़ाने से काम चल सकता है?" मैंने पूछा: "क्या आप उपवास करने की सोच रहे हैं?

बापू: "अभी तो किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा पर निर्णय तो करना ही पड़ेगा। तू घबरा न जाय इसीलिए अभी से तुझे तैयार करने का मेरा यह प्रयत्न है।

नहाकर बाहर निकले तो पण्डितजी आये हुए थे। उन्हें भी बापू ने मेरे साथ की गयी बातों का थोड़ा सार बतलाया। भोजन के समय स्थानीय मौलाना लोग आये। उनसे भी बापू ने कहा: "अब आप लोगों के धीरज की कसौटी है। देखें, खुदा मुझसे क्या करवाता है?'

चूँकि बापू ने मुझसे कहा था कि "मेरी कही हुई बातों की किसीसे चर्चा मत करना" इसीलिए मैंने किसीको कुछ नहीं बताया। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि बापू कहीं आमरण अनशन तो नहीं कर देंगे? कलकत्ते में भी बापू ने ऐसा ही किया था।

आराम के बाद राष्ट्रभाषा संबंधी कुछ प्रश्नों के उत्तर लिखाते हुए उन्होंने बतलाया:

राष्ट्रभाषा का प्रश्न

प्रश्न: राष्ट्रभाषा को 'हिन्दी' कहिये या 'हिन्दुस्तानी' यह कोई खास विवाद का सवाल नहीं है। रोज की बातचीत में तो आम हिन्दुस्तानी काम में आयगी ही। जैसा साहित्य विज्ञान और ऐसे ही अन्य विषयों के लिए नये शब्दों का कोष संस्कृत

भाषा से ही बनेगा, इससे भी शायद ही कोई इनकार करे। यह बात साफ-साफ सबको बतलायी जाय तो क्या हर्ज है?

उत्तर : इस सवाल का पहला हिस्सा तो ठीक है। अगर एक नाम के सभी एक ही मानी करें तो झंझट रहता ही नहीं। झगड़ा नाम का नहीं, काम का है। काम एक हो तो अनेक नामों का विरोध वितण्डावाद होगा।

'ऊँचे साहित्य और विज्ञान के शब्द संस्कृत से ही क्यों लिये जायँ? इस बारे में किसी तरह का आग्रह होना ही नहीं चाहिए। एक छोटी-सी समिति ऐसे शब्दों का कोष बना सकती है। उसमें खास शब्द इकट्ठे किये जायँ।

मान लीजिये एक अंग्रेजी शब्द हिन्दुस्तानी में चला है। उसे निकालकर हम क्यों खास संस्कृत शब्द वहाँ बनायें? अगर अंग्रेजी का खास शब्द ले लेते हैं, तो उर्दू का क्यों नहीं? 'कुर्सी' शब्द के लिए 'चतुष्पाद-पीठिका' शब्द दें या ठीक-ठीक 'कुर्सी'? ऐसी मिसालें और भी मिल सकती हैं।

लिपि की समस्या

'जो मसला है, वह लिपि का है। दो लिपियाँ चालू रहते हुए भी यह सवाल—और ठीक सवाल—सभी करते हैं कि दो लिपियों का चलाना राष्ट्र का काम चलाने में बेकार बोझ साबित होगा। तब तो दो लिपियों के बदले एक लिपि जो सभी प्रान्तों के लिए सहज और आसान हो क्यों न मानी जाय?

'दो लिपियाँ मानने के मानी भी मैं समझना चाहता हूँ। क्या उसका यह मतलब होगा कि केन्द्रीय सरकार के सारे विज्ञापन दोनों लिपियों में छपेंगे? फिर तार-घर वगैरह से जो तार आदि भेजे जायेंगे वे तो किसी एक ही लिपि में लिखे जायेंगे। दूसरी लिपि का उपयोग इन जगहों में किस तरह हो सकेगा यह भी मैं जानना चाहता हूँ। मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं कि दूसरी लिपि मुसलमान भाइयों को खुश करने के लिए रखी गयी है। हमें तो यह देखना चाहिए कि किसी पर भी अन्याय किये बिना राष्ट्र का भला किस लिपि के चलने में होगा। 'नागरी' के चलने से मुसलमान भाइयों का नुकसान होगा ऐसा मानना भी ठीक नहीं है।

जहाँ तक मैं समझा हूँ, दोनों लिपियों का चलन थोड़े बरसों के लिए ही जरूरी

है, ताकि वे लोग जो इन लिपियों के जानकार नहीं हैं, धीरे-धीरे जान जायँ। आखिर में सभी एक लिपि अपना लेंगे। इसमें सन्देह ही क्या है!

'दो लिपियों को रखते हुए भी आखिर में जो आसान होगी वही चलेगी। बात इतनी ही है कि उर्दू का बहिष्कार न हो। इस बहिष्कार में द्वेष है, इस झगड़े की जड़ में द्वेष था, आज वह बढ़ गया है। ऐसे मौके पर हम जो एक हिन्दुस्तान चाहते हैं और वह हथियारों की लड़ाई से नहीं उनका फर्ज होगा कि दोनों लिपियों को अपना दें। हम यह भी न भूलें कि बहुतेरे ऐसे हिन्दू, सिख भी पड़े हैं, जो नागरी लिपि जानते ही नहीं। मुझे इसका तजुर्बा हमेशा होता है।

"करोड़ों को दोनों लिपियाँ सीखने की बात नहीं है। जिन्हें अपने सूबे से बाहर काम करना है, उन्हें वे सीखनी चाहिए। केन्द्र के दफ्तर में भी सब कुछ दोनों लिपियों में छापने की बात नहीं है। विज्ञापन वगैरह के लिए तो उन्हें दोनों लिपियों में छापना जरूरी है। जब दोनों कौम के बीच जहर फैल गया है, तब उर्दू लिपि का बहिष्कार लोक-राज का विरोध ही बताता है। तार आदि जब रोमन लिपि में नहीं लिखे जायेंगे तब शायद उर्दू या नागरी लिपि में लिखे जायेंगे। इसे मैं छोटा सवाल मानता हूँ। जब हम अंग्रेजी और रोमन लिपि का मोह छोड़ेंगे तब हमारा दिल और दिमाग ऐसा साफ हो जायगा कि हम इस झगड़े के लिए शरमायेंगे।

"किसीको राजी रखने के लिए कोई बेजा काम हम कभी न करें। पर राजी रखना हर हालत में गुनाह नहीं है। एक ही लिपि को सब खुशी से अपनायें तो क्या अच्छा नहीं है! मगर ऐसा होते हुए भी दोनों लिपियों का चलना आज जरूरी है।

इसके सिवा बापू का भोजन करना मालिश वगैरह नियमानुसार चलता है। दोपहर को राजकुमारी बहन आयी थीं। उनके साथ भी कश्मीर सम्बन्धी बातें हुईं। कौन जानता है कि शायद पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच लड़ाई छिड़ जाय। बापू कहते हैं: "मैं तो यह देखने के लिए जीता ही नहीं रहूँगा। क्या आजादी का परिणाम इतना भयानक और करुण लिखा होगा?"

आज तो दिनभर छोटी-मोटी कौम वाले सबसे बापू ने एक ही बात कही कि 'अब दिल्ली में मेरे निवास का परिणाम शीघ्र ही प्रकट होगा। सुबह मुझसे भी

नहीं जाय रही थी। मुझे तो ऐसा लगता है कि बापू तो कौमी झगड़े के बजाय कौटुंबिक (कांग्रेस के अन्दर नेताओं के एक-दूसरे के प्रति अविश्वास से) कलह परिस्थिति से ज्यादा बेचैन हो उठे हैं और कहीं अनशन ही न कर बैठें। इस समय उपवास करना बापू के लिए भयानक सिद्ध होगा। क्योंकि कलकत्ते के अनशन को अभी कुल छह महीने ही हुए हैं। उस समय की क्षीण हुई शक्ति अभी उनमें नहीं आ पायी है।

शाम को भाई साहब से भी मैंने यह बात कही। आज की प्रार्थना बाल्मीकि-कैम्प में थी। इस कैम्प में सुचेता दीदी की बड़ी ही अच्छी व्यवस्था थी। कैम्प में रहनेवाले लोग भी कुछ समझदार थे। दुःख रहने के बावजूद वे हँसते हुए बहादुरी के साथ उसका सामना कर रहे हैं।

आज की प्रार्थना-सभा में बापू ने कहा : 'मुझे ऐसी छावनी में आकर आप लोगों के साथ बातें करने का अवसर मिला, इसे मैं अपना सौभाग्य ही मानता हूँ। बहुत दिनों से आप लोगों के बीच आने की अपनी इच्छा आज पूरी कर सका हूँ। यहाँ उपस्थित सभी भाई-बहनों से, जो हजारों की संख्या में अपना सर्वस्व गँवाकर आये हुए हैं, प्रार्थना करता हूँ कि आप इन लड़कियों द्वारा प्रभु से की गयी मेरी इस प्रार्थना में हृदय से अपना स्वर मिलाइये कि भगवान्! आप पुनः हमारे देश में एकता और शान्ति स्थापित कर हमें सन्मति दें।

मानव के पास कितना ही धन या सुख-सामग्री हो, फिर भी जब तक आन्तरिक शान्ति नहीं होती, तब तक कभी परिपूर्णता नहीं आती। सभी धर्मों में सत्य को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। अगर यह मिल जाय, तो मानव चाहे जहाँ रहे, अपार सुख का अनुभव करता है। उसे भविष्य की चिन्ता नहीं रहती। भावी अनिश्चितता का एकमात्र परमेश्वर ही है। श्री रामचन्द्रजी जैसों को भी पता न था कि अपने राज्यारोहण के दिन वनारोहण करना पड़ेगा। राजकीय पोशाक के बदले वल्कल धारण करने पड़ेंगे। किन्तु रामचन्द्रजी के मन में बाह्य सुख से ही शान्ति नहीं थी। वे तो अपने हृदय में ही शान्ति का अनुभव करते रहे। इसलिए उनके मन में वन या राजगद्दी दोनों को समान ही माना। हम हिन्दू, सिख और इनमें से हरएक को आयी हुई विपत्ति में शांति खोजनी चाहिए। अगर हम रामचन्द्रजी का आदर्श अपने जीवन में उतार लें, तो ऐसे पागलपन के शिकार कभी न होंगे।

भी सन्तोष न हो तो ये नाराज होंगे ही। यहाँ के व्यवस्थापक ही भावुक हैं और वे शरणार्थियों के दुःखों में पूरा साथ देते हैं। व्यवस्थापिका बहन भी कितनी सादी थीं जब कि दूसरे कैम्पों में इसका अभाव था। इन दुःखी शरणार्थियों के पास जाना हो तो सेवासंघ को अत्यन्त मर्यादित संयत होकर रहना चाहिए। दूसरे कैम्पों में सेवाविका बहनों की वेष-भूषा देखकर ही मैं तो आश्चर्यचकित हो जाता था। उससे उनका प्रभाव पड़ ही नहीं सकता।"

वहाँ से आने के बाद बापू उठे। नियमानुसार पंडितजी आये। बापू ने प्रार्थना- प्रवचन लिख लिया है। अभी साढ़े नौ बजे हैं। थोड़ी ही देर में पंडितजी उठने की तैयारी में हैं। ऐसा लगता है कि उन्होंने कश्मीर का प्रश्न व्यापक कर रहा है।

● ● ●

कश्मीर की समस्या

: ५ :

बिरला-भवन नयी दिल्ली
८-१-'४८

नियमानुसार ३॥ बजे प्रार्थना। घूमते वक्त समय" के साथ बातें। के विषय में अमृभाई का पत्र। अब सबको कदाचित् पता लगेगा। नारणदास काका को भी सूचित करने के लिए कहा। देखें आगे क्या होता है। अभी तो यहाँ पुनः सभी जुट गये हैं, इसलिए बापू चाहते हैं कि एक ही सप्ताहभर के अन्दर उचित निर्णय कर लें। वे ऐसा ही सोच रहे हैं। घूमते वक्त उन्होंने कहा : "अभी तो हृदय में मंथन चल रहा है। ठीक-ठीक प्रकाश नहीं मिल पाया है। फिर भी प्रकाश के मार्ग पर हूँ, ऐसा अवश्य मालूम पड़ रहा है। अब तू जरा भी बीमार न पड़े तो बाकी सब-कुछ मैं हल कर लूँगा। शरीर से बुखार को हटाना ही चाहिए।"

देवभाई (देवप्रकाशभाई नैयर) और चाँद बहन का वातावरण एक दीनतापूर्ण है। सुशीला बहन अमेरिका जाने की तैयारी में व्यस्त हैं। उनकी स्थिति भी अजीब है। बापू अभी ऐसी एक-न-एक बात कहते हैं, जिससे लगता है कि कदाचित् वे बिरला-भवन छोड़ किसी मुस्लिम बस्ती में चले जायें और वहीं अकेले रहने का निर्णय कर लें। बात-बात कुछ समझ में नहीं आता। सबसे ज्यादा अपनी असर

ईश्वर की कृपा मानती है। वे जिनसे बातें करते हैं—पंडितजी और राजेन्द्र बाबू जैसों के साथ भी—उनसे यही कहते हैं कि मैं कुछ सोच रहा हूं। उसमें सिर्फ मनु ही साथ रहेगी और किसीकी जरूरत नहीं। आखिर देखें क्या होता है!

प्रार्थना के बाद छात्रावासों में हरिजन-प्रवेश के बारे में परीक्षितलाल भाई का पत्र पढ़ा। उसके नीचे नोट लिख दिया : इसमें इतना कहा देना चाहिए कि अगर छात्र सच्चे होंगे तो कोई उन्हें रोक नहीं सकता। इस जमाने में छात्रों के आगे संचालकों की चल नहीं सकती—उनमें भी अगर छात्रों के पक्ष में धर्म हो और संचालक अधर्म का आचरण करते हों तब। "लोगों का मौसम से मतलब है, दूसरे अपने से नहीं। चाहे जो हो छात्रावासों में हरिजन हक से और आदरपूर्वक दाखिल होने ही चाहिए।"

एक बालिका को लिखा : 'बालकों को पेन्सिल से कभी नहीं लिखना चाहिए। उसी तरह फाउन्टेनपेन से भी नहीं। बरू की कलम से लिखने पर अक्षर सुधरते हैं। तू अपनी माँ के घरेलू कामों में मदद करती ही होगी। नियमित आध घंटा कातते रहना। कसरत करके शरीर खूब मजबूत बनाना। तुझे रोटी और साग बनाना आ गया है न? ठीक जब मिलेंगे तब मुझे जरूर खिलाना। खूब हँसती-खेलती रह। बाकी मनु बेन लिखेगी।

—बापू के आशीर्वाद।

एक बहन को : तू कब की बीमार जानता है? मेरा तो सभी अनिश्चित है। लेकिन भगवान के पथ पर हूं। तेरा मरज का रोग मिटना ही चाहिए। नमक तो खाना ही नहीं चाहिए। त्रिफला (राम) इस रोग में जहर-सी है और निर्भय-मशाला भी। कटि-स्नान और पेडू पर मिट्टी रखना और आराम करना! मेरे साथ रहती तो उपवास कराता। पर मुझे विश्वास है कि इतने बाह्य उपचारों के साथ हृदय में राम-नाम रटती रहेगी तो निश्चय ही रोगमुक्त हो जायगी। हिन्दुस्तान में पचहत्तर प्रतिशत बहनों को यह रोग है। इसके प्रमुख कारण हैं बहनों के काम न्यून निरन्तर का पूर्ण अज्ञान, कृत्रिम जीवन, खान-पान आदि। अगर मैं यह कहूं कि सभी रोगों में यह रोग कितना भयानक और मानहानिकारक है, इसका बहनों को भान ही नहीं है, तो यह गलत न होगा। अगर मैं इन सब कामों से मुक्त हो जाऊं, तो सर्वप्रथम

प्राकृतिक उपचार से बहनों के सभी रोग मिटा दूँ—ऐसी मेरी पूर्ण श्रद्धा है। लेकिन आज तो यह आसमानी सुल्तानी की बात है।

"कोई अभी पूरी तरह अच्छी तो हुई ही नहीं है। उसे शारीरिक रोग की अपेक्षा मानसिक रोग अधिक है। आभा और मनु अच्छी हैं। आज बम्बई से सुशीला आनेवाली है। यह सुबह के समय लिख रहा हूँ। कदाचित् मैं थोड़ी देर और से हूँ, तो भी तुझे तो नियमित लिखना ही चाहिए। बाकी मनुडी लिखेगी।

—बापू के आशीर्वाद।"

दिल्ली में कौमी आग

उसके बाद राजेन्द्र बाबू आये। उन्होंने कश्मीर की गंभीरता समझायी। भाई साहब ने खबर दी कि रात को दिल्ली में पुनः कौमी आग फूट पड़ी। अब तो बहनें भी निकल पड़ी हैं। एक मुसलिम मुहल्ले में बहनें और बच्चे मुसलमानों के घरों में घुस गये। पुलिस को अश्रुगैस छोड़नी पड़ी। आज के अखबारों में भारत-पाकिस्तान की लड़ाई की अफवाहें छपी हैं। कोई कहता है कि इसमें माउण्टबैटन का स्थान कहाँ होगा यह विचारणीय है। इसमें अन्दर से अंग्रेजों का ही हाथ हो तो आश्चर्य नहीं। बापू कहते हैं: 'यह तो जैसा होगा दीख ही पड़ेगा पर मैं नहीं मानता कि इसमें अंग्रेजों का सीधा हाथ होगा। फिर माउण्टबैटन हमारे गवर्नर जनरल हैं, इसलिए हम सुरक्षित हैं।"

प्रतिदिन मामला चारों तरफ से बिगड़ता जा रहा है। जूनागढ़ की अस्थायी हुकूमत की अव्यवस्था का भी एक भयंकर रूप है। अब तो कुछ दिनों में काश्मीर अपना उत्तरदायी शासन प्रजा को सौंप ही रहा है। लगभग तारीख भी तय हो गयी है। लेकिन महाराजा साहब पटेल साहब और बख्शी भाई सभी चाहते हैं कि बापू के हाथों में ही उत्तरदायी शासन सौंपा जाय। बापू कहते हैं कि "दिल्ली सुधरे तो सब कुछ हो सकता है।

आज तो बादल भी हैं। रात में बारिश भी हुई थी। धूप न होने से आज मालिश जरा देर से हुई। मालिश में सो नहीं पाये। दिल्ली और पाकिस्तान के आज के कश्मीर विषयक वक्तव्य से बापू बेचैन हैं। बंगाली पाठ नियमानुसार हुआ।

भोजन के समय नियमानुसार स्थानीय मुसलमान भाइयों ने खबर दी कि

"हमारे लिए तो आफ़त ही है। शहर में रोज कुछ-न-कुछ होता ही रहता है। आपके सिवा अब किसीका भी आधार नहीं रहा। पुलिस भी बे-सरकार हो गयी है।"

केवल मानवधर्म ही सही

बापू कहते हैं : 'आपकी बात सच है। जब हमारी नीति का रुख ही ऐसा बना है, तो फिर उसमें और दूसरा क्या हो सकता है ? हमारी पुलिस और इंगलैण्ड की पुलिस में ज़मीन आसमान का अन्तर है। वहाँ की पुलिस 'फ़र्ज़' समझकर ही नौकरी करती है। जब कि यहाँ की पुलिस पेट भरने का साधन समझकर नौकरी करती है। इतना महान् अन्तर है। जब हम सबको यह अपना देश प्रतीत होगा तभी यह स्थिति सुधरेगी। जिस दिन हम लोगों के दिलों में यह भावना जाग उठेगी उस दिन हमारे देश की आजादी दुनियाभर में विख्यात हो जायगी। तब न तो साम्यवाद की जरूरत होगी न समाजवाद की और न पूँजीवाद की। तब मानववाद' के सिवा और किसीकी भी जरूरत न होगी। आज हम लोगों में से मानवता उड़ गयी है। उसीका यह परिणाम है।

"इसके साथ ही आपसे एक बात और कहना चाहता हूँ कि जहाँ तक हो सके, आप लोग अपना प्रभाव मुसलिम भाई-बहनों पर डालिये और उन्हें शान्त रखिये तो हिन्दू और सिख तो अपने-आप ठिकाने पर आ जायँगे। अब तो कदाचित् आपको जितनी राह देखनी पड़ी उतनी देखनी भी न पड़े। एक ओर पाकिस्तान भी लड़ाई की बातें कर रहा है। आपको भी उस बात का गम्भीरता से विचार करना ही होगा। अगर आप उसमें सहमत हों तो मुझे कुछ कहना नहीं है। लेकिन अगर असहमत हों तो आपको इसकी खुली घोषणा कर देनी चाहिए। अगर आप ऐसा करें तो भारत के मुसलमानों की बहुत बड़ी सेवा करेंगे।

उनके जाने के बाद बापू ने कुछ देर तक विश्राम किया। लेकिन लगता है कि आज की दिल्ली की अशान्ति से बापू काफ़ी सोच में पड़ गये हैं। पंडित सुन्दरलालजी ने भी बापू से अशान्ति के बारे में बहुत कुछ कहा। जब बार-बार एक के बाद एक बुरी ख़बरें आती रहती हैं, तो बापू को तो यही लगता है कि कदाचित् यह सारा मन्थन तूफ़ान उठ रहा है। सुन्दरलालजी के समाचार की भी बड़ी प्रतिक्रिया हुई। लेकिन ऐसी स्थिति में हम लोग न इधर ही बोल सकते हैं और

न उतर हो। क्योंकि जब दृष्टिकोण ही खराब है, तो उसमें फिर कमी-बेशी की बात महत्त्व देती ही नहीं।

आज तो दिनभर बादल छाये रहे। करीब चार बजे से तो बारिश भी शुरू हो गयी। फिर भी कुछ लोग प्रार्थना में आये ही हुए थे। पहले तो विचार हुआ कि प्रार्थना अन्दर ही की जाय। पर बापू ने कहा कि 'जब लोग इतने कष्ट सहन कर बाहर से—दूर से आये हों तो मुझे वहाँ तक जाना ही चाहिए।"

बापू ने प्रार्थना में आनेवालों का अभिनन्दन करते हुए कहा : 'आप लोग यहाँ केवल कुतूहल की दृष्टि से नहीं बल्कि प्रभु का भजन करने के लिए ही आये हैं—ऐसा मानता हूँ।

'मुझे तो आज आपसे कुछ अलग ही बातें कहनी हैं। आज के समाचार पत्रों में और सर्वत्र एक ही चर्चा चल रही है कि यूनियन और पाकिस्तान के बीच लड़ाई छिड़ जायगी। अभी तो स्वतन्त्र होकर छह महीने भी पूरे नहीं हुए और हम लोगों ने लड़ाई की बातें शुरू कर दी हैं, यह हमारा कितना दुर्भाग्य है! पाकिस्तान ने आज यह विज्ञप्ति प्रकाशित की है कि यूनियन ने लड़ाई करने के लिए राष्ट्रसंघ के पास पुकार की है। ऐसा सफेद झूठ देख मुझे तो अपार आश्चर्य हो रहा है। यह तो 'उलटा चोर कोतवाल को डाँटे' जैसी बात है। अलबत्ता आप मुझसे पूछ सकते हैं कि यूनियन राष्ट्रसंघ से न्याय माँगे तो क्या यह उचित माना जा सकता है? इस पर मेरा जवाब दोनों प्रकार का है। न्याय माँगने के लिए दौड़ना अच्छा भी है और बुरा भी। अच्छा इसलिए कि कश्मीर में एक प्रकार से हमले चल ही रहे हैं और ऐसी अफवाह है कि उसमें पाकिस्तान का भी हाथ है। अगर पाकिस्तान ऐसा दावा करता हो कि यह बात सच नहीं है, तो मुझे उतने मात्र से सन्तोष हो ही नहीं सकता।

"अगर कश्मीर यूनियन से मदद माँगता है, तो यूनियन को भी पड़ोसी और मित्र के नाते उसकी मदद करनी चाहिए। इसमें यूनियन भूल करता हो तो उसका न्याय ईश्वर दे देगा। यूनियन का सिद्धान्त है कि जो पड़ोसी शरण आवे उसकी मदद अवश्य की जाय। लेकिन पाकिस्तान ने जो यह वक्तव्य दिया है मैं मानता हूँ कि उसमें उसकी गम्भीर भूल ही है। ऐसा गंभीर वक्तव्य देने से पूर्व उसे यहाँ

की सरकार से बातचीत कर लेनी चाहिए थी। खुले तौर पर तो वे लोग यही कहते हैं कि हम यूनियन के साथ रहकर ही सब कुछ करेंगे पर यथार्थ में इसके विपरीत ही आचरण करते हैं। धर्म के नाम पर पाकिस्तान की स्थापना हुई है, इसलिए ऐसा पाकिस्तान तो हर प्रकार से 'पाक' यानी पवित्र रखना चाहिए। मैं मानता हूँ कि भूलें तो दोनों देशों में समान ही हुई हैं। तो क्या अब भी उन भूलों की परम्परा बनाये रखनी है? अगर दोनों देशों के बीच युद्ध हुआ तो तीसरी कोई प्रबल सत्ता हम लोगों पर चढ़ बैठेगी और इस तरह हम लोग गत १५ वर्षों से अपार विपत्तियाँ झेल और हजारों-लाखों के बलिदान के बाद पायी हुई बहुत ही महँगी इस आजादी को खो बैठेंगे। तब तो वह हमारी मूर्खता की हद ही मानी जायगी।

अभी कुछ भी बिगड़ा नहीं है। दोनों देशों के नेता लोग ईश्वर को साक्षी रखकर परस्पर विश्वास पैदा करें। अगर राष्ट्रसंघ के पास मामला गया हो और हम लोग उसे वापस लौटा लें तो वे लोग भी राजी ही होंगे। मैं ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना करूँगा कि वह हमें इस युद्ध से बचावे। अगर युद्ध होना तय ही हो, तो कम-से-कम मैं तो उसका साक्षी बनना चाहता ही नहीं। लेकिन यहाँ एक बात का स्पष्टीकरण कर देना चाहता हूँ कि मन-ही-मन दुश्मनी रखने और एक-दूसरे के प्रति षड्यन्त्र करने की अपेक्षा बेहतर है कि दिल खोलकर लड़ ही लिया जाय।

"अभी दिल्ली के दिल में भी शान्ति स्थापित नहीं हो रही है। कल रात बच्चों और बहनों को आगे करके अमुक लोग मुसलमानों के मकानों में घुस गये और उस समय मार-काट छिड़ गयी। लाचार हो पुलिस को अश्रुगैस छोड़नी पड़ी। दुःखी तो सचमुच दुःखी हैं ही पर ऐसी आफत के समय वे मर्यादा का खयाल न करें तो दुःख बढ़ता ही जायगा। इस तरह मारकाट करने से आप सरकार के मददगार होने के बजाय उसके लिए परेशानी करनेवाले ही बन जाते हैं। स्वतंत्र भारत में यहाँ दुनिया भर के राजदूत स्थायी रूप से आकर बसे हैं। उन सबको हम अपना तमाशा बताकर अहिंसा की लाज खो रहे हैं। एक ओर तो कहा जाता है कि भारत ने खून की एक बूँद भी बहाये बगैर आजादी पायी है और दूसरी ओर हम ही अपने भाइयों के बीच कत्लेआम शुरू करके क्या कर रहे हैं? बच्चों और बहनों को आगे रखकर दूसरों का सामना करने में कोई बहादुरी नहीं। पुराने जमाने में गायों को आगे रखकर

मुसलमान कत्लेआम करते थे जिससे हिन्दू लोग सामने वार न कर सकें। इस तरह तो हम अपनी बहनों का दुरुपयोग कर पर्दे सभ्य रहे हैं, इसलिए हमें शरम आनी चाहिए। भगवान् आपको सम्मति दे।

प्रार्थना के बाद अन्दर पैलेस में ही बापू टहले। टहलते समय भाई साहब ने बापू को बतलाया कि कंट्रोल हटा देने से जनता बड़ी ही खुश है और भावों में भी काफी परिवर्तन हो गया है। बापू ने भी उनसे कल सभी के बाजार-भाव लिख लाने के लिए कहा।

जाकिर साहब के साथ शिक्षण और नयी तालीम के बारे में बातचीत करते हुए बापू ने कहा : 'नयी तालीम का प्रत्येक छात्र पूर्ण स्वावलंबी होना चाहिए। अगर यह नहीं होता तो इसे मैं नयी तालीम की नहीं बल्कि आप सब शिक्षकों की ही असफलता मानूँगा। आखिर हमारे यहाँ शिक्षित लोग कितने प्रतिशत होंगे? बड़ी मुश्किल से पाँच निकलें तो क्या उनमें अक्ल नहीं? सब कुछ है, लेकिन गरीबी के कारण वे अक्षर ज्ञान से भी वंचित हैं। इसलिए देश की आर्थिक स्थिति और शिक्षा—दोनों विभाग सगे भाई जैसे ही हैं। एक प्रश्न हल करेंगे तो दूसरा अपने-आप हल हो जायगा। मेरी चले और कोई सुखी नौकरी पर रहे तो मैं खिलाफ होना ही पसंद करूँगा। जब तक लोगों में पेट का गड्ढा नहीं भरता तब तक देश कभी भी ऊँचा नहीं उठ सकता। अगर यह गड्ढा भरने की कोई कला हो तो वह नयी तालीम ही है, अतः उसे व्यापक बनाना चाहिए। इसी तरह प्रत्येक छात्र शिक्षा के साथ-साथ अपना खाना कपड़ा और निवास भी खुद ही पैदा करे। इस देश के लिए यह सब सुलभ है। लेकिन मेरी यह तूती की आवाज कहाँ तक पहुँच सकेगी यह खुदा ही जाने।"

नोंदस्वामीजी ने हिन्दी प्रवचन का अंग्रेजी अनुवाद किया। बापू को उसमें काफी संशोधन करना पड़ा। रात में नियमानुसार पंडितजी आये थे। घंटे भर बैठे। कसरत करके १० बजे के बाद सोने की तैयारी हुई। सोने पर मैंने रोज की तरह तेल की मालिश की और बापू ने बीमार और स्वस्थ सभी की तबीयत का दिनभर का हाल सुना। दिनभर तरह-तरह की बातचीत करते हुए भी बापू एक बात नहीं भूलते। किसको कितने दस्त हुए और कितना बुखार रहा। कितना खाया और कितनी बार नाश्ता किया—यह सारा बारीकी से पूछा। ● ● ●

खादी और कंट्रोल की समस्या

: ६ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
५-१-४८

नियमानुसार प्रार्थना। आज मौन का दिन होने से बापू को खूब ही लिखना था। मैं तो प्रार्थना के बाद बापू को भीतर पहुँचाकर थोड़ी देर सो गयी।

बापू ने आज हिन्दी में खादी पर लिखते हुए बताया कि लोग मौके के सवाल उठाते हैं :

'आजादी मिलने के बाद शुद्ध खादी, अप्रमाणित खादी, मिल के कपड़े और विलायती कपड़ों में बहुत फर्क नहीं रह जाता। जितनी जरूरत हो, उतना सूत ही कातकर और बुनकर पहनें, तो जरूर फर्क पड़ जाता है। क्योंकि इससे एक खास विचारधारा का पता चलता है। पर जितना कपड़ा चाहिए, उतना सूत तो काता नहीं जाता। खादी तो खादी भंडार से ही खरीदते हैं। उसके लिए भी जितना सूत देना पड़ता है, उतना नहीं काता जाता। शुद्ध खादी में कोई सुधार दिखाई नहीं देता। अप्रमाणित खादी में कई तरह के कपड़े आम आते हैं। इसका कारण यह दिखाई देता है कि शुद्ध खादीवालों को सुधार में कोई रुचि नहीं है। आजकल मजदूरी इतनी ज्यादा हो गयी है कि जीवन-वेतन का भी सवाल नहीं रहता। फिर जरूरत हो तो अप्रमाणित खादी लेने में क्या हर्ज है?

सारे देश में कपड़े की काफी कमी है। राष्ट्रीय सरकार एक विलायती कपड़ा मँगाती है। विलायती कपड़ा मँगाना या न मँगाना सरकार के हाथ में है। फिर भी वह कपड़ा मँगाती है, तो फिर उसे खरीदने में क्या बुराई है?

'प्रमाणित खादी ही प्रमाण हो सकती है। यहाँ 'प्रमाणित' शब्द का सही मतलब पूरी तरह जाहिर नहीं होता। 'प्रमाणित' का असली मतलब है—वह खादी जिसमें पूरा दाम देकर सूत खरीदा गया हो, जिसे ठीक दाम देकर बुनवाया गया हो और खादी का दाम नफाखोरी के लिए नहीं बल्कि लोक-सेवा के लिए ही रखा गया हो। स्वावलंबी यानी अपनी बनायी खादी के सिवा बाकी ऐसी खादी को, बाजार से बिकने आती है, उस खादी के लिए प्रमाण जरूरी है।

१

ऐसा प्रमाण देनेवाली एक ही संस्था हो सकती है और वह है—चरखा-संघ। इसलिए चरखा-संघ जिसे प्रमाण-पत्र दे, वही प्रमाणित खादी है।

"उसे छोड़कर जो खादी मिले वह अप्रमाणित खादी हो जाती है। प्रमाण-पत्र न लेने में कुछ-न-कुछ दोष तो होना ही चाहिए। दोषवाली खादी हम क्यों लें? दोषयुक्त और निर्दोष में फर्क है, इसमें संदेह के लिए गुंजाइश ही नहीं हो सकती।

'यह सवाल किया जा सकता है कि प्रमाण-पत्र की शर्त में ही दोष हो सकता है। अगर दोष है, तो उसे बताना जनता का धर्म हो जाता है। आलस्य के कारण दोष बताने के बदले अप्रमाणित और प्रमाणित का फर्क ही उठा देना किसी हालत में ठीक नहीं। हो सकता है कि हममें कुचाल इतनी घर बसी हो कि हम जनता के बीच में ठीक बात कह ही नहीं सकते या जिसे हम ठीक बात मानते हैं, वह धोखा ही हो। इस हद तक जाना जनता के प्रतिनिधि का काम है ही नहीं।

'खादी, स्वदेशी मिल के कपड़े और विदेशी कपड़ों में फर्क है, इस बात में शक ही कैसे पैदा हो सकता है? विदेशी राज्य गया इसलिए विदेशी कपड़ा लाना ठीक बात कैसे हो सकती है? ऐसा खयाल करना ही बताता है कि हम विदेशी राज्य के विरोध का असली कारण ही भूलते हैं। विदेशी राज्य होने से मुल्क को बड़ा भारी नुकसान होता था। उस भारी नुकसान को मिटाना ही स्वराज्य का पहला काम होना चाहिए।

निचोड़ यह कि स्वराज्य में शुद्ध खादी की ही जगह है। उसीमें लोक-कल्याण है। उसीसे बराबरी पैदा हो सकती है।

सेवाग्राम की चिट्ठी

आज सेवाग्राम से मुन्नालाल भाई आये। उन्होंने वर्धा के आश्रम की तथा अन्य भी नयी-पुरानी बातें सुनायीं। बापू तो अब साफ मानते हैं कि आश्रम को अपने पैरों पर ही खड़ा होना चाहिए। दवाखाना आश्रम के बाहर चला गया है। वह तो सब मिलाकर ठीक ही चल रहा है। बापू ने एक चिट पर लिखा: "यदि सेवाग्राम में रचनात्मक कार्यक्रम संपूर्ण स्वावलंबी न बना तो समझिये कि आश्रमवासी फेल हुए। रचनात्मक कार्यक्रम का सर्वथा अमल और संपूर्ण अमल यानी संपूर्ण स्वराज्य' यह मेरी व्याख्या है।

"मैं स्वयं अभी इस विषय पर नहीं पहुँचा हूँ। सेवाग्राम आने की बात को तो हवाई ही समझें। हवाई जहाज तो दिन पर दिन बढ़ ही गये हैं न ! मैं तो आकाश के नीचे बैठा होऊँ और ऊपर घरर-घरर जोर से आवाज आवे तो देख लूँ। यह सब देखता हूँ, तो यही लगता है कि सारी दुनिया अशान्तिमय है। दुनिया में अगर कोई बेकार है, तो एक मैं ही हूँ। (एक साथ विनोद और गम्भीरता का वातावरण छा गया।)

नोआखाली में कनुभाई को लम्बा पत्र लिखा, पर उन्हें वह पसन्द नहीं पड़ा इसलिए कदाचित् न भेजें। लेकिन काफी दुविधा में हैं। सुशीला बहन को इस महीने में अमेरिका जाना था पर अब मई में जाना तय हुआ है। इससे वे भी प्रसन्न हुईं। बापू को छोड़कर जाना वे बिलकुल ही नहीं चाहती थीं।

आज सुशीला बहन ने बापू की मालिश की। मालिश के समय नित्य नियमानुसार बंगला पाठ किये गये। सर्दी इतनी पड़ी है कि शरीर में से हटती ही नहीं। फिर भी बापू बाथ में बरफ जैसे ठण्डे पानी में बैठते हैं। दातौन करने और हाथ-मुँह धोने के लिए भी ठण्डा पानी ही काम में लाते हैं।

बाद में हजामत करते समय बापू १ मिनट सो गये। पंडितजी आये। कुछ देर बातें करके चले गये। इन्दिरा बहन भी नन्हें-मुन्ने को लेकर आयीं। बापू ने उसे संतरा दिया। वह तो खूब खुश हो गया और बापू की गोद में बैठकर लगा खेलने।

मालूम पड़ता है कि बापू को सर्दी होगयी। भोजन में भी परिवर्तन कर दिया गया।

हिन्दू-मुसलिम झगड़े का अन्त ?

नियमानुसार मौलाना आज आये। वे शिकायत करने लगे : "हिन्दू आज मुसलमानों को हिन्दू-बस्ती में हैरान तो करते ही हैं, हथियार भी उनके पास हैं।" बापू ने विस्तार से बताया कि "इसके प्रमाण दोगे तो बहुत सुविधा होगी। मेरे पास यह भी शिकायत आयी है कि मुसलमानों के पास भी काफी हथियार हैं। इसलिए आपका पहला फर्ज तो यह है कि मुसलमान भाइयों से प्रार्थना कर

उनके पास जो हथियार हों वे मुझे लाकर सौंप दें। फिर अगर सरकार मुसलमानों का पूर्ण संरक्षण नहीं करती तो पहले मैं मरूँगा बाद में उन्हें मरने दूँगा।"

बापू से मुलाकातें तो रोज वैसी ही चल रही थीं। मुन्शा बहन गुप्ता ने भी मुसलमानों को हैरान करने की बात कही। बापू ने लिखा : "अगर तेरे जैसी किसी लड़की के ऐसी शिकायत करने के लिए आने के बजाय यह सुनता कि मुसलमानों को बचाते हुए एक हिन्दू के हाथों मुन्शा का खून हो गया तब मैं नाच उठता। मुझे लगता है कि जब ऐसी बहादुरी के साथ हिन्दू-बहनों और भाइयों के बलिदान होंगे तभी इस झगड़े का अन्त होगा।

मिही कताई, चिट्ठी-पत्री आदि नित्य की तरह ही हुए। आज बापू ने हरिजन-फंड और अन्य हिसाब भी सौंपा। नयी हुई चालीं हरिजन कॉलोनी में हरिजन बालकों के लिए मेज देने की सूचना दी। 'अपने पास आवश्यकता से अधिक—भेंट की थाली से है—एक रूमाल का टुकड़ा भी नहीं रखा जा सकता।

कंट्रोल उठा देने का परिणाम

शाम को प्रवचन किया। आज के प्रवचन में कन्ट्रोल पर विवेचन हुआ। अनाज के पहले के और हाल के भाव बतलाये।

प्रवचन में बताया कि कन्ट्रोल उठा देने से मेरे पास चारों ओर से मुबारकबादी के तार आ रहे हैं। अभी भी भिन्न-भिन्न चीजों पर कन्ट्रोल है उसे भी उठा देना चाहिए यह मानसशास्त्र अर्थ भी काफी बड़ा है। मेरे आग्रह पर एक बड़े व्यापारी ने मेरे नाम अंग्रेजी में एक पत्र लिखा है, जिसमें उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये हैं।

वे लिखते हैं कि 'कन्ट्रोल के रहने के और उसके हटने के बाद के भावों में निम्नलिखित परिवर्तन हुआ है

वस्तु	तौल	आज का भाव (कन्ट्रोल उठने पर)	कन्ट्रोल के समय का भाव
गेहूँ	मन	१७॥)	४) से ८५)
गुड़	,,	१२) से १५)	२) से १२)
शक्कर	,,	१४) से १८)	३७) से ४५)

गौड़ की आधा सेर की पैली		॥=)	१॥) से १॥।)
गौड़ (देसी)	मन	१) से १५)	७०) से ८)

इस तरह गौड़ और उसम अन्य चीजों में ५० प्रतिशत कमी हुई। अब अनाज के भाव देखिये।

वस्तु	तौल	आज का भाव	कण्ट्रोल के समय का भाव
गेहूं	मन	१८) से २)	४) से ५)
चावल (बासमती)		२५)	४) से ४५)
मक्का		१) से १७)	१) से १२)
चना		१६) से १८)	१८) से ४)
मूंग		२१)	१५) से १८)
उड़दी		२१)	१४) से १७)
अरहर	,,	१८) से १९)	१) से १२)
चने की दाल		२)	१) से १९)
मूंग की दाल	,,	२६)	१९)
उड़दी की दाल		२६)	१७)
अरहर की दाल		२)	१२)
सरसों	,,	१५)	७५)

गल्ला और अन्य चीजों पर से भी कण्ट्रोल उठ गया, इसलिए बाजार में इस किस्म का काफी बेशुमार आ गया है। रेशम की तो ५० या ६५ प्रतिशत तक कीमत गिर गयी है।

सूती कपड़े और सूत के भाव पर से भी कदाचित् एकाएक कण्ट्रोल उठा दिया जाय, ऐसा लोग सोचने लगे हैं। इसलिए उनके भाव भी काफी गिर गये हैं।"

लेकिन मुझे तो विश्वास है कि अभी भी जिन-जिन चीजों पर कण्ट्रोल है उसे तत्काल उठा लिया जाय तो हर चीज के भावों में ६ से ६५ प्रतिशत गिरावट आ सकती है। इसके सिवा कपड़ों की किस्मों में भी काफी सुधार होगा यह भी निश्चित है। अब तक माल की खपत मालूम न हो तब तक उसका बाहर निर्यात होना ही नहीं चाहिए।

'पेट्रोल पर भी लड़ाई के कारण कंट्रोल लगाया गया था। मेरी दृष्टि से अब उसकी भी जरूरत नहीं। क्योंकि कंट्रोल के कारण अमुक ट्रान्सपोर्ट चलानेवाली कंपनी को बेहद नफा होता है। अगर पेट्रोल पर कंट्रोल न रहे और व्यक्तिविशेष को खास-विशेष पर मोटरें चलाने का ठेका न दिया जाय तो मैं मानता हूँ कि एक ही गाड़ी के मालिक को शायद ( ) से अधिक की आय हो। लेकिन आज तो पेट्रोल के परमिटों का भी चोरी से व्यापार चलता है। इससे देश में मनुष्यों और जानवरों की आवाजा-जाही की समस्याएँ भी हल हो जायँगी। कन्ट्रोल के साथ आप को यह काम जनता के लिए बहुत बड़ा आशीर्वाद साबित हुआ।

'मैं मानता हूँ कि प्रान्त सरकारों को देखते हुए कदाचित् ही इस कदम से बाधा उठाना पड़ेगा। इतना होते हुए अगर कोई सबूत के साथ इस पर मत पेश करेगा तो मैं उसका बड़ा आभारी होऊँगा।

जनता का बहुत बड़ा समुदाय जो बात चाहता हो उसे कर देने के लिए जनता के प्रतिनिधियों को किसी भी तरह से डरने की जरूरत नहीं। मान लीजिये इसमें कदाचित् वे निराश हो जायें तो पुन: जनता पर कन्ट्रोल तो लगाया ही जा सकता है!

'मुझे यह बतलाया गया है कि दुनिया में जितना पेट्रोल निकलता है, उसका सिर्फ एक प्रतिशत भारत में निकलता है। लेकिन इससे हमें निराश नहीं होना चाहिए। हम लोगों की मोटरें कहीं भी चलती हुई रुकी ही नहीं हैं। हम लोग कोई लड़ाकू नहीं इसलिए हमें पेट्रोल की ज्यादा जरूरत ही नहीं है। अगर हमें उसकी जरूरत पड़े और आज दुनिया में जितना पेट्रोल निकलता है उतना ही निकले तो क्या दुनिया को भी इसकी तंगी उठानी पड़ेगी? मेरे बयान की आलोचना करनेवाले इसे मसखरी न समझें। मुझे तो ज्ञान प्राप्त करना है। इसलिए अगर अपना अज्ञान जाहिर न करूँ तो मुझे वह कहाँ से प्राप्त होगा?

'सारांश जब पेट्रोल यहाँ इतना कम है, तो फिर वह चोर-बाजार में कहाँ से आता है? एक भाई ने लिखा है कि जिनके पास एक ही ट्रक या एक ही लारी होती है और एक ही रास्ते पर चलने का लाइसेन्स मिलता है, वह महीने में पाँच से पन्द्रह हजार रुपया तक कमाता है। अगर यह सच हो तो ठीक उसके जैसी ही बात है। तब क्या यही मानना होगा कि कन्ट्रोल गरीबों के लिए शाप और पैसेवालों के

लिए वरदान बना है। अगर हमारा पद्धति और कण्ट्रोल का ऐसा ही बुरा परिणाम हो तो एक क्षण का भी विचार किये बगैर तुरन्त इसे उठा देना चाहिए।

"फिर कपड़े पर कण्ट्रोल तो मुझे जरा भी समझ में नहीं आता। क्योंकि अगर हम खादी को भूल न गये हों तो कपड़े पर फिर कण्ट्रोल किस बात का? कपड़े पर कण्ट्रोल की दलीलों में एक भी ऐसी नहीं जिसका समर्थन किया जा सके। हम लोगों के पास पर्याप्त मात्रा में रुई और करोड़ों हाथ हैं। गाँवों में घर-घर चरखे हैं। इसी तरह हाथ-करघे चलाये जा सकते हैं और ग्रेस की तरह बड़ी सरलता से अपने काम लायक कपड़ा प्राप्त किया जा सकता है। कपड़े के बारे में तो मेरा यह मत है कि इसके लिए जरा भी हस्तक्षेप करने की जरूरत नहीं। इसी तरह मोटरें या गाड़ियाँ खरीदने की भी कोई आवश्यकता नहीं है। गुलामी के जमाने में हमारी रेलों का पहला काम सेना की फिक्र करना था और दूसरा काम बन्दरगाहों पर रुई पहुँचाना तथा बाहर से आनेवाला तैयार कपड़ा देश के भीतर ले जाना था। लेकिन हमारी 'फैक्टरी' जिसका नाम 'खादी' है और वह गाँवों में ही चलती हो, तो ऐसे एक भी केन्द्र बनाने की तनिक भी जरूरत नहीं। हमारा आलस्य ही हमें रोकता है और अज्ञान भी। फिर भी इन दोनों दुर्गुणों को रोकने के लिए हम लोग अपने गाँवों की बदौलत करते हैं यह कोई कम बदनामी नहीं है।

आज का प्रवचन काफी लम्बा रहा। मौन के दिन बापू के प्रवचन हमेशा लम्बे ही हुआ करते हैं।

मौन टूटा तो मिलनेवाले और सभी घर के ही मुलाकाती थे। बापू का जब तक मौन रहता है, तब तक सभी कुछ शान्त रहता है। जब मौन टूटता है, तो पुनः दौरदौरा शुरू हो जाता है।

लगभग पूरा दिन लिखने पढ़ने और आराम में ही बीता। फिर भी बापू थकान की बात करते थे। कदाचित् यहाँ होने की तैयारी है उसका भी यह कारण हो।

सुहरावर्दी भाई ने भी बात शुरू कर दी। लेकिन वे अभी ठहरनेवाले हैं इसलिए बातचीत दूसरे समय के लिए रखी गयी।

लगभग ९ बजे कमरे पर सोने की तैयारी हुई। पाकिस्तान ने 'नेशनल हेराल्ड' में कश्मीर-संबंधी जो वक्तव्य दिया है उसके बारे में पण्डितजी के साथ चर्चा हुई।

बापू तो यह भी मानते हैं कि राष्ट्रीय मुसलमानों को भी (यूनियन में से) इस बारे में वे जैसा कुछ मानते हों, उसे घोषित कर देना चाहिए। ● ● ●

सच्चा लोकतन्त्र : ७ :

बिड़ला-भवन, नयी दिल्ली
६-१-'४८

बापू प्रार्थना से ९ मिनट पहले उठ गये। आज रात में सर्दी भी कड़ाके की रही। मनुभाई के टीके पत्र के बारे में [illegible] के साथ चर्चा की। बापू ने एक बात पर कहा : 'लगता है कि अभी मुझे सोचने को काफी रह गया है। क्योंकि जो यहाँ हैं वे यहाँ शान्ति से बैठकर काम नहीं करते। सब यही मानते हैं कि सारा काम तो दिल्ली में रहने पर ही होता है। हम लोगों से शहरों का मोह छूटता ही नहीं। मसलन गाँवों की बनिस्बत ही आज दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई जैसे शहर बने हैं। उसकी भी परवाह नहीं। फिर भी आखिर लोगों का नैतिक जीवन ऊँचा उठने के बदले आज अत्यधिक बिगड़ गया है। परिणामस्वरूप झगड़े और अराजकता बढ़ गयी है। इसलिए अगर हम यह सारा मूर्खतापूर्ण नहीं मिटाते और जीवन-दर्शन के सीधे-सीधे मार्ग न देते हैं, तो अब चल नहीं सकता। हमें लोगों को काम देना होगा और स्वयं भी काम करना होगा। अब ही तो आश्रमवासियों की कसौटी है। अगर इस कसौटी पर आप खरे उतरें, तो ठीक, नहीं तो उसमें भी अपनी असफलता जाहिर कर मैं नया रास्ता अपनाऊँगा। मैं तो आज क्या सच है और क्या सच लगता है, इसी पर निर्भर हूँ। अगर कल का सच हो, तो उसे अपनाऊँगा, नहीं तो उसे ऐंठ-पेंच में भी समझकर या निर्णय न करूँगा। इसलिए यह सब आप लोगों को सोचना होगा। मैं तो जैसा हूँ, वैसा ही हूँ। अगर मुझे अपने इस कार्य में कुछ भी हानि सहनी पड़े, तो उसे जैसी की वैसी पेश कर दूँगा। कारण, मुझ पर सर्वसाधारण जनता जो अटल विश्वास रखती है, उसका मुझसे विश्वासघात हो ही नहीं सकता। मैं जनता का हूँ और जनता मेरी है। इसलिए मेरे पास व्यक्तिगत जीवन जैसा कुछ भी नहीं है, यह सबको विचारपूर्वक समझ लेना चाहिए।'

आज तो आये हुए पत्र बापू ने ही पढ़े। प्रजा यदि बापू को दिल्ली में कुछ फुरसत मिली तो वे काश्मीर जाने की भी सोच रहे हैं।

बापू दुःखी हुए : 'ये सारे बहाने हैं। कम से कम आयें तो भी क्या हर्ज था ? 'वे वैसे भी अगर खादी पहनकर न आयें तो हमारे देश का प्रभाव क्या पड़ेगा ? क्या यह सब मुझे सहना पड़ेगा ? यह तो मेरी कल्पना से परे की बात है। ओहो ! ईश्वर ने मुझे कितना बाध्य कर दिया ! अभी तक तो अन्धा ही था न ! ये कहना कि बापू कहते हैं या बापू को पसन्द है इसलिए कुछ भी मत कीजिये। आपके मन को जो अच्छा लगे पसन्द आये जिसमें आनन्द हो वैसा ही करना चाहिए।

'अब मैं समझ सकता हूँ कि बिना समझे आज क्या-क्या चल रहा है ! पढ़े-लिखे लोगों की अपेक्षा बा कितनी ऊँची रही ! उसने जो कुछ किया उसमें वह पूर्ण और निरन्तर अखण्ड सदाचार रही। ऐसी बहुत-सी बहनें (आज के जमाने के अनुसार तो अनपढ़ ही कहलायेंगी) मुझे मिली हैं—लक्ष्मी बहन दुर्गा मोस्ती। आश्रम की इन सभी बहनों को जब मैं देखता हूँ, तो मेरा सिर झुक जाता है। इनकी न आगे आने या अखबारों में नाम प्रचार आदि की वृत्ति नहीं। फिर भी आजादी की लड़ाई में इन बहनों का हिस्सा अपूर्व था यह मुझे कबूल करना होगा। इस घटना से बापू को आन्तरिक दुःख हुआ। मुझे क्या पता था कि इससे यह परिणाम निकलेगा ? मैंने तो के लिए पार्सल आया तो दस्तखत कर उसे ले लिया और बापू को सौंप दिया। बापू ने कहा कि 'इसे खोल दे और देख भीतर क्या है ? इससे पूछे तो कह देना मैंने मंगवाया है। इसमें अब बेचारी खादी कहाँ मिल पाती ? आजादी में जैसा इस सूई का हाल है, वैसा ही अगर खादी का करोगे तो कदाचित् आजादी टिकी रहे पर आजादी टिक न पायेगी—तू तो जिन्दा ही रहेगी—इसे देख लेना और फिर बापू को याद करना कि इस सूई का हिसाब बिलकुल छूटा नहीं था।"

कृष्णभाई नायर आये। वे तो रियासत का अपना काम करते हैं। बापू को कोई खास तकलीफ देने नहीं आते। कई बार तो सिर्फ बापू को देखने के लिए ही आते और भाई साहब जैसों से या हम लोगों से बातचीत करके चले जाते।

मंडी के राजासाहब और रानी साहिबा आये हुए थे। बापू को राजा साहब ने १ १) का एक चेक और रानी साहिबा ने अपनी हीरे की अँगूठी दी। उन्होंने दुशाला भी दिया था। लेकिन बापू ने विनोद से कहा : 'अब तो इन सबको इन्हें

जरूरत नहीं—अब तो सब आपकी मुझे जरूरत है।" उन्होंने कहा : "आपके हुक्म के अधीन ही हैं।

हकीम अजमल खाँ आये। उन्होंने कहा कि 'मुसलमानों के तो अब आप ही हैं। अगर आप न होते तो यहाँ हमारा कोई भी न था।"

बापू ने कहा : 'हम सबका खुदा ही है। मनुष्य मनुष्य का क्या रक्षक हो सकता है? लेकिन अब आपको मुस्लिम परिवार में विश्वास पैदा कर उनके पास जो हथियार हों उन्हें ले लेने का प्रयत्न करना चाहिए।

रामेश्वरी बहन और ब्रजलाल नेहरू भी आये थे। ब्रजलालजी ने तो बापू को सर्दी मिटाने के लिए आसन के अमुक प्रयोग बतलाये। बापू मेरी ओर उँगली दिखाकर कहने लगे। "इस लड़की को आप अगर बिलकुल स्वस्थ कर सकें, तो उसे आपको सौंपने के लिए मेरा उत्साह बढ़े। वैसे तो उसके अन्तर में राम-नाम बसता हो तो कुछ भी न होगा।

ब्रजलालजी ने मुझसे विनोद में कहा : हृदय फाड़कर बता दो कि राम-नाम है या नहीं? लेकिन यह ताकत भी तो आसन आदि से आ सकती है।

संस्कृति के लिए कलंकरूप

आज की प्रार्थना में बापू ने बतलाया : 'अभी भी मेरे पास ऐसी शिकायतें आती हैं कि निराश्रित लोग मुसलमानों पर घर खाली कर देने के लिए दबाव डाला करते हैं। इसी कारण बहुत-से अपने घर खाली कर मुसलमानों को खुले आसमान के नीचे रहना पड़ता है। ऐसी भयंकर सर्दी में इस तरह खुले में रहना पड़े यह कोई साधारण बात नहीं है। ठंड के साथ बारिश भी हो रही है। शरणार्थी ऐसा ही आग्रह क्यों रखते हैं कि मुसलमानों के मकान ही हम लेंगे? अगर वे मुसलमानों के मिलों और घरों का बदला लेने के लिए तुले हों तब तो मकान की तंगी समझ सकता हूँ। इस बिड़ला-भवन में से सुशीला एवं बीमार बहन को और हम सबको निकाल बाहर करने का प्रयत्न हो तो वह भी ठीक है। लेकिन निर्दोष मुसलमान-परिवार को निकालना हमारी संस्कृति के लिए कलंकरूप ही माना जायगा। मुसलमानों को राजधानी से बाहर ही खदेड़ने की मनोवृत्ति का परिणाम बहुत बुरा होगा यह सब लोगों को समझ लेना चाहिए।

हाल ही में मुझे समाचार मिला है कि बम्बई के जहाजों से गोदी में माल ढोनेवाले मजदूर हड़ताल कर रहे हैं। कांग्रेस के नेता या सदस्यों, साम्यवादी या समाजवादी—इन सभी दलों से मैं प्रार्थना करता हूँ कि इस तरह हड़ताल न कराइये। अपना विरोध हो उस बारे में हमें अवश्य झगड़ना चाहिए और उसके लिए अमुक को नेता चुनकर उसके नेतृत्व में समिति स्थापित कर समझदारी से काम लेना चाहिए। आजादी के जमाने में वे रस्म-रिवाज चल नहीं सकते जिन्हें हम गुलामी के जमाने में आजमाते थे। सदैव व्यावहारिकता का ध्यान रखना चाहिए। समय समाज और वस्तुस्थिति को समझकर तदनुसार ही काम किया जाय। अभी हड़ताल कराने का समय नहीं है। इससे जनता और हड़तालियों सभी का नुकसान होगा।

सच्चा लोकतन्त्र

'आज तो मुझे सच्चे लोकतन्त्र' पर कुछ बातें कहनी हैं। आप सब जानते ही होंगे कि औंध के राजा ने बरसों पहले वहाँ की जनता को उत्तरदायी शासन सौंप दिया है और अप्पासाहब ने भी अपना जीवन प्रजा की सेवा में ही बिताया है। अब राजासाहब और नेताओं ने अपना राज्य यूनियन में मिला देने का फैसला तय कर लिया है। इस तरह जो राज्य यूनियन में मिल जायेंगे उन्हें वार्षिक गुजारा दिया जायगा। किन्तु औंध के राजासाहब तो ऐसे हैं कि वे प्रजा के लिए भार भी मालूम होना नहीं चाहते। वे तो प्रजा की सेवा के बदले जो मेहनताना मिलेगा वही लेने को राजी होंगे। उन्होंने मुझे एक पत्र भेजा है जिसमें वे लिखते हैं कि 'हमने अपने राज्य में जो पंचायत बनायी है, वह कायम रखी जाय या नहीं।' इसका अधिकृत उत्तर तो मैं नहीं दे सकता, लेकिन अपनी बुद्धि के अनुसार कहूँगा कि यूनियन में मिल जाने के बाद सारे भारत में जैसी राज्यशासन-व्यवस्था होगी वैसी ही होगी। अगर लोगों को पंचायत रखनी हो तो उस तरह की व्यवस्था चलाने से रोकने की बात हमारे विधान में नहीं है।

औंध राज्य भले ही मिट जाय, पर औंध के नाम से पहचाने जानेवाले गाँवों के समूह का विशिष्ट स्वरूप मिट नहीं सकता। वह कायम ही रहेगा। भारत में पंचायत हो या न हो, पर अगर वह समूह के एक अंग के रूप में रहा और अपना

वैसे बापू हर बात या हर प्रसंग को कभी गंभीरता से नहीं लेते। लेकिन आज तो गंभीरता से मेरे बारे में अपने अन्तर की चिन्ता प्रकट कर रहे थे। मुझे लगा कि लगभग हर दो दिन बाद या तो मेरा बुखार बढ़ जाता है या सर्दी वगैरह कुछ हो जाता है। फिर भी कुछ याद न आये तो बापू डॉ. क्लिफ्टन ने एक टीके के बारे पर ही मुझे बताते। आगे कभी हर वक्त बदन दुखता ही रहता है। या कभी-कभी उठना ही रहता है। कभी भी एक भी औंस खाना हो नहीं। इसलिए और भी चिन्ता किया करते हैं। मेरा तो यह रोग बन ही गया। यह बुखार, सर्दी आदि मुझे तो बहुत भयंकर नहीं लगते। फिर बापू को व्यर्थ चिन्ता में क्यों डालूँ? लेकिन आखिर बापू ने प्रेमभरी आवाज में धीरे मुझे पर थपथपाते हुए कहा : 'तू तो नादान है। जब अंजुली को मैं पानी न दूँ, तो यह मेरा भयंकर अपराध होगा। तुझे इससे अधिक कहना भी व्यर्थ है, क्योंकि तुझे कहने की अपेक्षा मुझे ही अधिक ध्यान रखना चाहिए। तेरी इस तबीयत का उत्तरदायी मैं ही हूँ।'

मेरी आँखों से आँसुओं की धाराएँ बह चलीं। बापू का यह कितना अद्भुत प्रेम है!

भोजन के समय थोड़ी देर मेरे गोद बैठ हस्ताक्षर कर दिये। घर से आये हुए पत्र पढ़वाये। परिवार का हाल भी बहुत दिनों बाद पूछा।

श्री आयंगार मिलने आये थे। बापू का तो यही मत है कि 'हमें खुद ही अपना झगड़ा तय करना सीखना चाहिए। लेकिन अब मेरी और आपकी पद्धति जुदी है। मैं तो इसलिए कह रहा हूँ कि 'दोनों पक्ष उठा भर' (इधर से भी मरे और उधर से भी मरे) ऐसा मत कीजिये। या तो आप अपने ही बल से शासन चलाइये और उचित निर्णय कीजिये या सम्पूर्ण सत्य-अहिंसा से। अब निकम्मा रास्ता अख्तियार करने से काम नहीं चल सकता।

उनके जाने के बाद भास्करराव जोशी साहब आये। दरियागंज के मुसलमानों में अहमदुस्सानी साहब मौलाना हबीब उल रहमान साहब प्रमुख थे। उन्होंने रोज की तरह मुसलमानों पर होनेवाले अत्याचारों के बारे में शिकायतें कीं। बापू भी काफी बेचैन हैं। डॉ. सूर्यकान्त और ज्योतिबहन भी आयीं। हमारी अपहृत बहनों के बारे में लाहौर में एक सम्मेलन हुआ था। मृदुला बहन और रामेश्वरी बहन उस सम्मेलन में गयी थीं। वे लोग वहाँ की भीषण दिलचस्प बातें कह रही थीं। इन्होंने तो अपनी जीवन की बाजी लगाकर बहनों को यहाँ लाने का प्रयत्न किया है। हिन्दू बहनों

कम चलता है। यहाँ तो मैं करने या मरने के लिए बैठा हूँ। क्या होगा यह कैसे कह सकता हूँ? प्रकाश की खोज में हूँ और अस्पष्ट किरणें दीख भी रही हैं। यदि सम्पूर्ण प्रकाश मिले तो दिल्ली में 'दिल्ली दोस्ती' बनी रहेगी। इसमें इतना तो बड़ी मुश्किल से लिखा। आप सब कैसे हैं? तेरी तबीयत कैसी है? फिर मनुडी को तो लिखते ही रहना। बाकी सब यहीं लिखेगी। उसका शरीर में सुधार नहीं पाता। नोआखाली में मेरी सेवा में यह काफी दुबली हो गयी है। अगर तुम यह अपने को सुधार ले तो मुझे अपार सन्तोष हो। मेरी बात मानकर अगर यह दो महीने आराम करे और प्रसन्न रहे, तो बाकी के सभी बाह्य उपचार मैं कराऊँ। आज तो यह हो नहीं रहा है। मैं पूरा ध्यान नहीं दे पाता। यहाँ कुछ परिणाम ला सकूँ तो फिर दूसरा काम मनुडी को पहलवान जैसा बनाना है। अथवा भले ही मर जाय" यह विनोद में लिख रहा हूँ।

चिट्ठियों के बाद घूमने निकले। घूमते समय सिंध के बारे में चर्चा की। आज खबर मिली है कि गोपाल स्वामी आयंगार कश्मीर के मामले के लिए कल 'पूना' रवाना होंगे।

घूम आने के बाद बापू के पैर धोये। मैंने मालिश की तैयारी की। मालिश में बापू बंगाली पाठ कर अखबार पढ़ते-पढ़ते सो गये।

बाद में मुझे तबीयत के लिए व्याख्यान मिला। मैंने कहा "पर आपकी तबीयत कहाँ अच्छी है?" बापू ने कहा "मैं तो ७८ साल का हुआ और तू तो १७ साल की है न? ७८ साल की तो हो जा तब मेरे साथ स्पर्धा करना। मैं यह विनोद नहीं करता। मुझे समय नहीं मिलता। लेकिन यहाँ के लिए जैसा 'करेंगे या मरेंगे' का संकल्प है, वैसा ही संकल्प अब तेरे लिए भी करना पड़ेगा कि 'अच्छा होना या मरना'! आज ही तेरी बहन को मैंने चिट्ठी में लिखा है। अगर न देखा हो तो देख लेना।

हजामत के समय बापू ने साबुन का उपयोग करना छोड़ दिया है। बापू का ध्यान इस ओर आकृष्ट करते हुए मैंने कहा कि साबुन के बगैर अच्छी हजामत नहीं बन पाती। बापू ने कहा : "पगली लड़की! बाल पकड़ दे रहे हैं न?"
मैं तो इतनी हँसी कि बापू को भी हँसना पड़ा।

को तो इस बात का भी डर है कि अब समाज कदाचित् उन्हें न अपनाये। उनसे तो यहीं रहना ठीक है। उन्हें काफी समझाना पड़ता है। इन लोगों ने कहा कि "इन बहनों के प्रति जनता का क्या फर्ज हो सकता है, इस बारे में अगर आज बापू अपने प्रवचन में कुछ कहें, तो अच्छा होगा। श्रीनगर में हम लोग जहाँ टिके थे उन सेठी साहब ने कश्मीर छोड़ दिया है। वहाँ अन्न-पानी की बड़ी ही कठिनाई हो रही है।" इस तरह उन्होंने अत्यधिक दुःखभरी बातें कहीं।

बापू की कताई, निद्रा, भोजन वगैरह नियम के अनुसार ही चलता है। आज के प्रार्थना-प्रवचन में चिट्ठियाँ तो काफी आयी थीं। लेकिन रेडियो रेकार्डिंग में १५ मिनट से अधिक समय न मिलने से उतने ही समय में प्रवचन पूरा करना पड़ा।

एक चिट्ठी में एक निर्वासित भाई ने लिखा था कि "जब तक यहाँ से मुसलमानों को न खदेड़ा जायगा तब तक मैं अनशन करता रहूँगा।" उसके उत्तर में बापू ने सूचित किया कि "उसका अनशन निरा अधर्म है। लेकिन जिसे अधर्म ही करना हो उसे कौन रोक सकता है? अनशन के बारे में सभी की अपेक्षा मेरा ज्ञान अधिक है, ऐसा मैं मानता हूँ। कारण यह शस्त्र चलानेवाला भी मैं ही हूँ। इसलिए सार्व अधिक अनशन क्यों किया जाय इस पर पूर्ण विचार करना चाहिए।"

एक दूसरी खबर लिखी है कि 'डाक लोग हड़ताल करके अपना मनचाहा कर लेते हैं। इस तरह हड़तालें की तो नहीं जा सकतीं। मैं स्वयं इस विषय में भी निष्णात हूँ। इतना ही नहीं बल्कि मैंने कई बार हड़तालों का संचालन भी किया है। हर हड़ताल या अनशन उचित नहीं होते।

"दिन में मेरे पास बहुत से शरणार्थी आये थे। उन्होंने मुझसे अपने पर हुए असह्य अत्याचारों की आपबीती बड़े ही दुःखभरे हृदय से कह सुनायी। उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि मैं उनकी ओर कुछ भी ध्यान नहीं देता। किन्तु यह सच नहीं है। उनके कल्याण के लिए ही मैं यहाँ पड़ा हुआ हूँ। नहीं तो मेरा यहाँ क्या काम था? अपना हाल तो मैं ही जान सकता हूँ या जान सकता है एक ईश्वर। आज मेरी कौन सुनता है?

असमर्थ सरकार हट जाय

"एक जमाना था जब मैं जबान से एक शब्द भी निकालता तो लोग तत्काल

इसे रोकने के लिए तैयार थे। यह सच है कि उस समय मैं अहिंसक सेना का सेनापति रहा। किन्तु आज तो मानो जंगल में रोता रहूँ, ऐसा मेरा यह अरण्यरोदन है। आप अपनी पूरी शिकायतें कीजिये। मकान और खाने-पीने की सुविधा माँगते हैं, तो इसका आपको पूर्ण अधिकार है। लेकिन उसके साथ-ही-साथ आपको जो-जो काम सौंपे जायँ उन्हें भी पूरी वफादारी के साथ पूरा करना चाहिए। आज राज्य चलानेवाले मेरे मित्र हैं। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं जैसा कहूँ, वैसा ही वे करते हैं। ऐसी कभी भी नहीं। मित्र के नाते मेरी बात सुन लें। फिर उस पर अमल करना या न करना उन लोगों की इच्छा पर निर्भर है। मैं कोई परमेश्वर तो हूँ ही नहीं। वैसे तो गर्व से भी नहीं कहता। लेकिन अगर कोई मेरा थोड़ा भी माने तो मुझे लगता है कि यह दुर्दशा न भुगतनी पड़े। कदाचित् ऐसा भी हो कि इसमें मैं कुछ भूल भी करता होऊँ।

'करांची और सिंध में आज हिन्दू-सिख रह नहीं सकते। सिन्ध से रवाना होने से पूर्व वे सब वहाँ के गुरुद्वारे में ठहरे थे। उसी समय उन पर हमला किया गया। वहाँ की सरकार कहती है कि 'हम लाचार हैं। हमारी कुछ भी नहीं चलती। जो हुआ और हो रहा है, उसे रोकने में हम असमर्थ हैं। कोई भी सरकार ऐसा कैसे कह सकती है?' मैं तो दोनों सरकारों से कहता हूँ कि आप तो पूर्ण निःशस्त्र बन जाइये। कुछ भी करने की शक्ति न रखते हों तो बेहतर है कि आप वहाँ से हटकर रास्ता साफ कर दीजिये फिर भले ही जनता लुटेरी बन जाय। कोई भी सरकार इस तरह प्रजा को मरने दे, इससे पहले उसे खुद मर मिटना चाहिए।"

बापू ने आज के प्रवचन में सरकार को जो सुनाया उसका जनता पर अच्छा असर हुआ। प्रार्थना के बाद घूमते समय रमेश्वरी बहन थीं। मृदुला बहन भी आयी थीं। उन्होंने पंजाब की अपेक्षा सिन्ध में कितनी खून-खराबी हुई, इसके समाचार सुनाये।

प्रवचन बाद मौन लिया और पंडितजी आये। वे १ मिनट बापू के साथ बैठे। पंडितजी आते हैं, तो बड़ा ही उदास चेहरा लेकर आते हैं और जाते हैं, तब तो उतने ही प्रफुल्लित होकर और मन का बोझ हलका कर विदा होते हैं। लेकिन बापू तो उनके जाने के बाद उतने ही अधिक चिन्तन में दिखाई पड़ते हैं।

क्योंकि दिनभर तो लोगों की तरह-तरह की अनेक समस्याएँ हल करनी पड़ती हैं— मारकाट की दुःखद बातें सुननी पड़ती हैं और रात में पण्डितजी द्वारा दिनभर से भी गम्भीर तथा उदासीभरी बातें सुनकर हल निकालना पड़ता है। कारण यह सारा कष्ट पक्षों के कारण ही आम जनता को भुगतना पड़ रहा है। राज्य-संचालकों की अपनी विचारणा ही मजबूर होती है। लेकिन पण्डितजी पर से यह बोझ बापू अपने ऊपर ठीक वैसे ही उठा लेते हैं, जैसे कोई पिता पुत्र के पास से किसीकी आँखों पर चढ़ने या अप्रिय बनने का उत्तरदायित्व स्वयं उठा लेता है। सचमुच रात में तो बापू धीरता और वीरता के सजीव संगम दिखाई पड़ते और अपना रास्ता साफ करते हैं। ● ● ●

गहरी चिन्ता में

: ९ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
८-१-'४८

नियमानुसार प्रार्थना। काका साहब कल से ही यहाँ आये हुए हैं, इसलिए आज प्रार्थना में वे भी उपस्थित थे। प्रार्थना के बाद काका साहब अन्दर बैठे थे। बापू ने उनसे पूछा: "क्यों आपको समय चाहिए न?" काका साहब ने कहा: "मिल सके तो, नहीं तो नहीं।

बापू ने कहा: 'ऐसा कहोगे तो रह ही जायेंगे। मेरे पास इन दिनों जितना काम बढ़ा है, उतना कभी भी बढ़ा नहीं रहता था। यह देखकर मुझे ऐसा लगता है कि अब मेरा एक मौका आ गया है। मैं इतना काम देख पागल क्यों नहीं हो जाता? ईश्वर मुझे कैसे निभा रहा है, यही आश्चर्य हो रहा है! ऐसी मेरी स्थिति है।

बापू का कहना भी सच ही है। उनके पास मुलाकाती भी इतने ज्यादा हैं और चिट्ठियाँ भी बढ़ती ही जा रही हैं। फिर तबीयत भी ठीक नहीं।

काका साहब से बातें करते समय बापू थोड़ी देर लेट गये। करीब दस मिनट आँखें भी लग गयीं। दरमियान घूमने का समय हो जाने से गरम पानी और

साहब लेकर घूमने के लिए उठे। मैंने बापू के पास उन्हींके हाथों लिखने की चिट्ठियाँ रख दीं।

आराम का समय आ रहा है

घूमते समय खान साहब साथ थे। भाई साहब ने मालकपुर के दंगे की बात कही। रोज कुछ-न-कुछ नयी बात हो ही जाती है। कहीं से शान्ति के समाचार आते ही नहीं। बापू भी काफी बेचैन हो उठे हैं। मैंने मालिश की तैयारी की। मालिश में बापू के बंगला पाठ के बाद मैंने कहा : 'बापू, आज आप आराम ही कीजिये न! क्यों थक रहे हैं!" बापू ने कहा, "अब तो मुझे भी लगता है कि आराम का समय नजदीक आता ही जा रहा है। फिर तो तू झकझोरकर जगायेगी तो भी मैं न जागूँगा। देख तो सही कि चिट्ठियों का कितना ढेर लग गया है। दूसरी ओर दिन-दिन भयंकर अशान्ति के समाचार आ ही रहे हैं। इस बारे में तो तुझे और मुझे विचार करना है कि हमारी कसौटी कहाँ है! हम जाग्रत हैं या इस बिरला-भवन में आकर सो गये हैं! इसका खूब विचार कर।

मैं तो एक शब्द भी न बोली और अपना काम चुपचाप किया। बाद में आज बापू की हजामत का दिन था। स्वयं को चिट्ठी लिखने का समय नहीं मिलता इसलिए हजामत का 'रेकर्ड' दूर किया मुझसे कागज और कलम ले आने के लिए कहा और स्वयं हजामत करते हुए ही पत्र लिखवाये दो दिनों से यहाँ खान साहब आये हुए हैं। हिन्दुस्तानी के बारे में और अन्य भी कई बातें करने का बड़ी मुश्किल से समय निकाल पाये। अगर वे न रहते तो यहाँ रहते रह जाने पर भी बात करने का समय मिल पाता या नहीं कहा नहीं जा सकता। दिनभर मिलते भाई बहन आते रहते हैं और चिट्ठियों का ढेर लगा हुआ है। 'हरिजन' का तो पूरा काम रह ही रहा। जरा भी समय नहीं। फिर मनु ही मेरी हजामत करती है पर आज उसका काम मैंने ले लिया है। बाथ में पड़ा-पड़ा मैं टबी पर बलरा पैर रहा हूँ और यह चिट्ठी आप रखकर, फिर मनु से लिखवा रहा हूँ।

'मेरी तबीयत चाहिए वैसी नहीं है। राम-नाम की न्यूनता। मुझे राज छोड़ जाना चाहिए, ऐसा मैं मानता हूँ। यहाँ रहने और रहने में खुद ही अपने को ठगना है और दूसरे को भी। आदमी खुद ही अपना दुश्मन बनता है। कोई

किसीका दुश्मन नहीं बन सकता। इसी तरह दुनिया में कोई किसीका बिगाड़ भी नहीं सकता।

अब आश्रम में रहने का मोह त्याग दें। आश्रम में तो अब जो इने-गिने लोग हैं, उनसे भी कहता हूँ कि जो अपने पैरों पर खड़े रह सकते हों वे ही रहें।

पंद्रीक दूसरे से राहत मिली। तुमको तो मुझे जरा भी डर नहीं था। किन्तु अमुक के हितों को नुकसान पहुँचेगा इसलिए बरदाश्त ही करती रही। लेकिन क्या इस तरह करने से राज्य चलाया जा सकता है?

इन दिनों मेरी तो अस्तव्यस्तता ही समझिये। यहाँ अभी आग लगी हुई है। कब प्रकट हो उठेगी कहा नहीं जा सकता।'

" 'आपका पत्र अंग्रेजी में लिखा हुआ मिला था। पहले तो मैं माफी माँगता हूँ कि आपको जवाब देर से दे रहा हूँ। मेरे पास एक मिनट की फुर्सत नहीं रहती। इस समय भी टब में बैठा हूँ। हजामत कर रहा हूँ। वैसे तो रोज मनु करती है। मगर आज मैं खुद अपने हाथ से हजामत करता हुआ मनु से यह लिखवा रहा हूँ। यह है आज की मेरी हालत।

"बहावलपुर का मामला बहुत बिगड़ रहा है। बिगड़ी चीज सुधारें! मैं काफी बेचैन हो रहा हूँ। पण्डितजी तो दिन में एक दफा आते ही हैं। उनसे बात कर लूँगा। वहाँ जाने से कुछ लाभ नहीं है। अगर यहाँ कुछ कर सकूँ, तो सारे हिन्दुस्तान में कुछ हो सकेगा। वैसे इधर-उधर दौड़धूप करने से कुछ होनेवाला नहीं है। यहाँ तो करना है या मरना। अगर बहादुरी से मर सकूँ तब भी बहुत काम होगा। देखें आखिर ईश्वर क्या करवाता है! हम सब उन्हींके हाथ में हैं।

"आप वहाँ की जनता को छोड़कर हरगिज मत आइये। अगर वहाँ आप बहादुरी से मर भी जायें तो बहावलपुर की खैरियत है।

मर-मिटने का समय

स्नान में बहुत देर लग गयी और बाहर सुशीला बहन, कृपालानी वगैरह आये हुए थे। इसलिए ज्यादा नहीं लिखवाया। सुशीला बहन ने सिंध की हालत सुनायी। बापू ने जवाब दिया कि 'वहाँ का वर्णन तो मैं रोज-रोज सुनता हूँ। लेकिन यह नहीं सुनता कि कांग्रेस का एक भी नेता मारा गया हो। आज यह वर्णन सुनाने आयी

इससे बेहतर होता कि अगर मैं यह सुन पाता—बहनों की इज्जत बचाते हुए उनकी बहन पर हमला हुआ और वे मर गयीं। जिस दिन हममें ऐसी बहादुरी आयेगी उसी दिन अपने-आप शान्ति स्थापित हो जायगी। अब समय बातें करने, उपदेश देने या चर्चा करने का नहीं है। यह तो मर-मिटने का समय है।

रोज की तरह स्थानीय मुसलमान भाई आये हुए थे। दोपहर में तो कताई और कुछ डाक भी देखी गयी। रुक्मिणी बहन मैसूर जानेवाली थीं।

दोपहर में सरदार दादा भी आये। आज तो बापू की तबीयत ठीक मालूम पड़ रही है। वर्तमान परिस्थिति पर बातचीत के सिलसिले में बापू ने विनोद किया कि "आपको तो १०० साल जीना है न? और अब जीना ही चाहिए।" तुरत ही सरदार दादा ने जवाब दिया। 'शर्त लगाकर कि आपके १२५ तो मेरे १००, नहीं तो नहीं!'

पन्नी साहब भी मिलने आये थे। ठक्कर बापा और हरिजी सिर्फ मिलने के लिए ही आये थे। मीरपुर के निर्वासितों ने रोंगटे-खड़े करनेवाली बापू को अपनी आपबीती सुनायी। उसे सुनकर तो कमजोर सुननेवाले भी काँप उठते।

प्यारेलालजी अपने साथ नोआखाली की एक निर्वासित बहन को लेकर आज ढाका से आये। उन्हें सभी 'दीदी' कहते हैं। मालूम पड़ता है कि वे हिन्दी नहीं जानतीं। लेकिन चेहरे पर से बुद्धिमान दीख पड़ती हैं। करीब ४० साल की होंगी। महिशासपुर में वे जब जिस गाँव में काम कर रहे थे उसी गाँव की ये बहन हैं।

पंडितजी भी आज मुलाकात कर गये। रात में पुनः सेठ साहब के साथ आयेंगे। खासकर वे बापू की तबीयत देखने के लिए ही आये थे।

स्वराज, हस्ताक्षर और सत्याग्रह

आज के प्रार्थना-प्रवचन में बापू ने कहा : 'एक भाई की शिकायत है कि उन्होंने कल दोपहर में १॥ बजे एक चिट्ठी लिखी होगी पर मैंने उसका जवाब नहीं दिया। मेरे पास असंख्य चिट्ठियाँ आती हैं। कितनी ही बार ऐसी भी चिट्ठियाँ आती हैं, जिनकी भाषा मैं नहीं जानता। इसलिए उस भाषा के जानकार जब मुझे उनमें का मजमून समझाते हैं, तब काम चलता है। लेकिन बहुत जरूरी बात हो तो मुझे जरूर बता सकते हैं।

"एक दूसरा प्रश्न यह पूछा गया है कि 'आप हरिजनों से चरण छुआने के

लिए करते हैं, तो चोरी से क्यों नहीं करते ? क्या पैसेवाले और पढ़े-लिखे लोग उसे न छोड़ें ? यह प्रश्न ही अनुचित है। एक आदमी पाप करे तो क्या दूसरों को भी वह करना चाहिए ? और जो पढ़ा-लिखा वर्ग है, सेना में काम करता है, उसे क्या समझाया जाय ? गरीब और मजदूर तो दिनभर खूब मशक्कत करके घर आते हैं। उन्हें वहाँ कुछ भी मानसिक और शारीरिक आराम नहीं मिलता। इसी कारण वे शराब पीते हैं। लेकिन धनिक वर्ग के लिए तो ऐसी बात नहीं है। किन्तु मैं तो ऐसा कोई ही नहीं मानता। तब सेना के सिपाहियों के शराब पीने की बात ही कहाँ रही ? लेकिन ऐसे अंग्रेज और भारतीय भी काफी तादाद में हैं, जो कभी शराब को छूते नहीं।

'छात्रों की हड़ताल के बारे में मुझे यह पत्र मिला है कि उसमें कांग्रेसी छात्र नहीं हैं, कम्युनिस्ट हैं। कम्युनिस्ट या सोशलिस्ट, आखिर उनका लक्ष्य देश-सेवा ही करना है। यह समझकर एकी हो सकते हैं। लेकिन छात्र जब तक पढ़ रहे हों तब तक उनका एक दल होना चाहिए और वह है—विद्या हासिल करने का दल। जब हिन्दुस्तान स्वतंत्र नहीं हुआ था तब मैंने हड़ताल करने और कराने में भाग लिया है। पर सभी हड़तालें अहिंसक और सत्यमूलक होती हैं, यह मानने का कोई कारण नहीं। आज जब कि देश भयंकर स्थिति में से गुजर रहा है और उसे सच्चे छात्रों की जरूरत है, तब इस तरह हड़ताल कराने से विपत्ति और बढ़ जाती है, यह समझना चाहिए।

'एक दूसरे भाई ने मुझे सूचित किया है कि 'आप पाकिस्तान जाकर वहाँ की अराजकता का सामना क्यों नहीं करते ? वहाँ जाकर आप अत्याचारों के सामने सत्याग्रह क्यों नहीं करते ? वहाँ मैं किस मुँह से जाऊँ ? जब यहाँ हम पाकिस्तान की पुनरावृत्ति कर रहे हैं, तो वहाँ जाकर किसे क्या कहूँ ? अगर भारत में शान्ति स्थापित हो जाय तो आज ही और अभी ही मैं पाकिस्तान के लिए चल पड़ूँ। यहाँ राजधानी के बाहर में ही हिन्दू, सिख पागल बन गये हैं और वे चाहते हैं कि यहाँ से सभी मुसलमानों को निकाल बाहर कर दें। अगर हम ऐसा करेंगे तो वह हमारे लिए बड़ी ही लज्जा की बात होगी। फिर पाकिस्तान में हिन्दू, सिख तो रहना ही नहीं चाहते तब कौन सत्याग्रह करे और किसके सामने करे ? आज सत्याग्रह और

फिर बापू ने लिखा—इसमें भी ऐसी भयानक स्थिति में यह सब होता है, इसी कारण उन्हें ज़रा भी उत्साह नहीं—इसका प्रतिबिम्ब यह रहा। "चि० ...के बारे में आश्चर्य और खेद। जो हो उसे मुझे देखते रहना है। सब कुछ अपने स्वभाव के अनुसार। 'फिर नवीन ही उत्साह क्या पावें? इस विवाह के विषय में मैं पूर्णतः उदासीन हूँ। मुझे क्या सोचकर आपने लिखा होगा? मेरे आशीर्वाद कैसे?

—बापू के आशीर्वाद"

यह पत्र ९ तारीख को 'पोस्ट' किया गया। ● ● ●

दिल्ली दोस्ती ही हमें बचायेगी १०

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२-१-४८

बापू आज प्रार्थना-समय से १ मिनट पहले ही जाग गये थे। उन्होंने कल लिखे पत्र में सुधार करने के लिए कहा। बापू ने कहा "मैं जो मानता हूँ वह मुझे वसु और नारायणदास को भी सूचित कर ही देना चाहिए। अहिंसा और सत्य को माननेवाले के लिए छिपाव करने या छिपाने की कोई बात ही नहीं होती। मैं तो इस संस्कृत श्लोक को मानता हूँ, 'अक्रोधेन जयेत् क्रोधम् असाधुं साधुना जयेत्।' आखिर इस श्लोक को माननेवाला और इसके प्रति श्रद्धा, एकनिष्ठता और निष्ठा का बल ही क्या सकता है? इसमें अगर ज़रा भी नरमाई करें तो वह चल ही नहीं सकती। कौन क्या सोचेगा इसकी दरकार करने का यह समय नहीं। यह तो महायज्ञ है, जिसमें सब सम्पूर्ण और सर्वांगशुद्धि ही मिल सकती है। इसमें जैसा एक के बाद एक अपने-आप सीखे मिलते जायेंगे यह सुनिश्चित है।

अगर हम जैसे अनेक मिट जायें तो भी सत्य या अहिंसा का पथ ईश्वर भी बन्द नहीं कर सकता। मैं स्वयं भूलों से भरा हुआ हूँ। मैंने भूलें नहीं कीं या न करूँगा ऐसा अहंकार किया ही नहीं जा सकता, लेकिन मैं भूलें अगर इरादे के साथ न की गयी हों तो सदैव क्षमा के लायक हैं।

हमें दिल्ली दोस्ती ही बचायेगी

"आज यह राजधानी भी एक तरह से ढेर में ही है। भारत की राजधानी

है। बेचारे निर्दोष निर्वासित इस जाड़े की रातों में खुले आकाश के नीचे पड़े-पड़े अपने बच्चों और बहनों की भयंकर दुर्गति और वेदना से आह भर रहे हैं, उनकी यह कल्पना भी इस तरह कुछ शान्त की जा सकती है। पर यह सब कहाँ कहूँ और किससे कहूँ! यह सुनने की फुर्सत ही किसे है? यह कहूँ, तो कह सकता है कि इसके लिए फुर्सत मेरे सिवा और किसीको है ही नहीं।"

बापू अपनी मनोवेदना तो स्वयं ही समझ सकते हैं। वे ही उसे पी सकते और सँभाल सकते हैं। दूसरा होता तो हार्टफेल ही हो जाता। फिर भी दिल्ली, बहावलपुर, सिन्ध और पंजाब की परिस्थिति से आजकल वे काफी बेचैन हैं और कहा करते हैं कि इसका अपराधी तो मैं ही हूँ। अपनी अहिंसा और सत्य का सूक्ष्मता से विचार और आचरण करने में निश्चय ही मैंने कहीं भूल की, फिर उसका प्रतिबिम्ब तो पड़ेगा ही। मैंने मान लिया कि यह वीरों की अहिंसा और वीरों का सत्य है। कदाचित् ईश्वर ने उस समय मुझे जान-बूझकर अन्धा बना दिया हो। अच्छा हुआ कि जिन्दगी की समाप्ति के समय ही मैं जान सका और यह देख सका। इसी तरह बहादुरी के साथ मर सकूँ इतनी ही मेरी भगवान् से प्रार्थना है। अपने आपके लिए इतना भी कर सकूँ तो भी उसमें मेरी विजय ही होगी।

मालिश के समय बापू ने अखबार देखे और बंगाली पाठ किया। स्नान के समय 'टबिंग बाथ' की चर्चा करते हुए कहा 'इसमें पहले गुनगुना पानी फिर अधिक गरम और फिर तो इतना ज्यादा गरम होता कि सहन ही नहीं हो पाता। इसकी थकान भी मालूम होती है, पर लाभ भी काफी होता है।"

सरदार तारा सिंह मिलने के लिए आये। भावनगर का मन्त्रिमण्डल भी लगभग तय हो गया है। वे लोग आज मिलेंगे तब कुछ तय हो जायगा।

जीवणजी भाई ने कहा कि 'उर्दू हरिजन' बहुत नहीं खपता इसलिए उसमें भारी घाटा उठाना पड़ रहा है। बापू उसके बारे में 'हरिजन' में लिखते हैं। बहावलपुर के लोग भी आये। वे चाहते हैं कि बापू की ओर से कोई वहाँ जाकर प्रत्यक्ष आँखों से सारी स्थिति देख आये। पंडितजी मेजरजनरल और दूसरे भाई सिर्फ भेंट करने के लिए आये थे।

भावनगर की चिन्ता

काठियावाड़ जिले की ओर से आये हुए प्रतिनिधि-मण्डल में मनुभाई पंचोली बलवन्त भाई, मोहन भाई मोतीचन्द (महुवावाला) आदि थे। एक सुझाव यह भी आया था कि नानाभाई भट्ट को भावनगर के उत्तरदायी शासन का प्रधान मन्त्री बनाया जाय। बापू ने कहा : "मैं तो चाहता हूँ कि जैसे रामराज्य में वसिष्ठ मुनि धर्माध्यक्ष थे वैसे ही आप भी नानाभाई को धर्माध्यक्ष नियुक्त करें। वे प्रधान बन कर इससे अधिक उस पद को सुशोभित न कर पायेंगे। अगर प्रजा और राज्य के बीच संघर्ष हुआ तो वे पंची का काम करेंगे। वे अपना कार्यक्षेत्र भी शहर में नहीं 'आंबला' गाँव में ही रखें। मैं नहीं मानता कि इसके लिए नानाभाई ना करेंगे। वे सत्ता के पद पर विशेष सुशोभित न हो सकेंगे। उनका स्थान शिक्षा के पद पर ही हो सकता है। अगर सभी मन्त्री बन जायें तो प्रजा कौन होगी? जैसे मन्त्री शिक्षित चाहिए, वैसे ही प्रजा भी शिक्षित होनी चाहिए न? जब प्रजा शिक्षित होगी तभी वह मन्त्रियों को काबू रख सकती है। देश की समृद्धि का मार्ग तो शिक्षित जनता ही दिखा सकती है। इसकी अपेक्षा मेरी तो निजी राय है कि बलवन्त राय को प्रधान मन्त्री बनाया जाय। वे वहीं पुराने भावनगर के सेवक हैं। फिर बलवन्त में प्रधान मन्त्री बनने की जो योग्यता है, वह नानाभाई में नहीं है और नानाभाई में जो है, वह बलवन्त राय में नहीं हो सकती। अकेले ढेबर से भी काठियावाड़ का काम चलना कठिन है। पूरे काठियावाड़ में अगर ये दोनों रहें तो फिर मुझे तनिक भी चिन्ता नहीं। इस समय सारे काठियावाड़ का बोझ अकेले ढेबर पर डालने का भी कोई अर्थ नहीं।"

दूसरी एक विशेष बात का ध्यान रखते हुए बापू ने कहा : 'इस उत्सव में पट्टणी को बड़े आदर के साथ रखना चाहिए, यह मेरी निजी सलाह है। लेकिन अगर उन्हें बुलाकर उनकी निन्दा करनी हो तो मत बुलाइये। किसी भी प्रकार का पूर्वग्रह रखेंगे तो सदैव पिछड़ जायेंगे। इनसे बहुत कुछ सीखना है। कितनी बार तो इनके अनुभवों से ही इस राज्य की उन्नति किया जा सकता है। लेकिन यह तो मेरी बिना माँगी हुई सलाह है। मानें न मानें, तो पूरी तरह स्वतंत्र हैं। फिर भी ऐसा न मानिये कि बापू ने इतना कहा उन्हें यह अच्छा लगेगा इसलिए कहना ही

चाहिए और करते हैं। मुझे दिखाने के लिए कुछ करेंगे तो दिखानेवाला और मैं दोनों पिछड़ जायेंगे।

आज तो निर्वासित भी काफी आये। कितने ही निर्वासितों ने यहाँ के मुसलमानों के साथ संपर्क होने के कारण ये शर्तें रखीं कि वे यहाँ के मुसलमानों को वहाँ के अपने घर दे दें और वहाँ के हिन्दुओं को यहाँ के मुसलमानों के घर मिलें। इस तरह निजी समझौते के कारण उन्होंने आपस में ही अदला-बदली कर ली है। किन्तु सरकार विदेशी राजदूतों की व्यवस्था के लिए उनसे वे मकान खाली करवा रही है। यह भी बापू को अच्छा नहीं लगा। सरकार, जनता और नेता लोग एक के बाद एक ऐसी-ऐसी भूलें कर बैठते हैं कि मुश्किल से एक आपत्ति का अन्त होता नहीं तब तक दूसरी खड़ी हो जाती है।

आज के प्रवचन में बापू ने कहा : 'बहावलपुर में एक मन्दिर था और आज भी है। लेकिन अब वह हिन्दुओं के पास नहीं रहने दिया गया है। वहाँ के मुखियाओं मेरे पास आये और बड़ी ही कठिन स्थिति से बचकर आये हैं। वे कुछ बहनों को तो बचा सके पर सभी न बचा सके। अब यहाँ आ पड़े हैं, उनकी कुछ-न-कुछ व्यवस्था तो होनी ही चाहिए। एक मानव से जितना हो सकता है, उतना तो मैं कर ही रहा हूँ। वास्ते एक-दूसरे के राज्य में एक-दूसरा कायम न रहे, इसलिए मैं अधिक क्या कर सकूँगा इसकी जामिन तो ये ही नहीं सकता। मैं तो यही कहता हूँ कि ईश्वर के सिवा और किसी पर भरोसा रखना मूर्खता ही है।

'आज मेरे पास अमुक भाई-बहन आये थे। उन्हें सरकार ने विदेशी राजदूतों के रहने के लिए मकान की आवश्यकता बतलाकर उसे खाली करने की सूचना दी है। इसमें सचाई कितनी होगी यह तो मैं नहीं कह सकता। उन लोगों का दावा है कि उन्होंने यहाँ रहनेवाले मुसलमानों के साथ आपसी अदला-बदली कर ली है। लेकिन उनके पास कोई प्रमाण तो है नहीं। ऐसी स्थिति में इस मामले में मैं एक ही बात कह सकता हूँ कि किसी भी रहनेवाले आदमी को किसी भी सरकार द्वारा यह कभी नहीं कहा जा सकता कि आप सड़क पर जाकर रहिये या चाहे जहाँ रहिये पर मकान खाली कर दीजिये। विदेशी राजदूतों के लिए मकान अवश्य माँग सकते हैं, पर उनमें रहनेवाले लोगों का समाधान करके हो। फिर भी मैं कोई सरकारी आदमी नहीं। मेरी

यहाँ कौन सुने ? इन लोगों से भी कहता हूँ कि आपके पास किसी भी तरह का प्रमाण तो है ही नहीं। इसलिए सरकार को ऐसा भी लगा हो कि क्या वे लोग दूसरों की तरह तो कुछ नहीं गये ? चाहे जो हो फिर भी सरकार व्यवस्था करने के बाद ही मकान खाली करा सकती है।

एक भाई ने मुझे बतलाया कि मैं बिड़ला-हाउस में रहता हूँ, इसलिए गरीब यहाँ आ नहीं पाते। मैं हरिजन-बस्ती के बदले यहाँ क्यों रहता हूँ ?'

बापू : 'मैं दिल्ली में आया तो यहाँ मारकाट चल रही थी और हरिजन-बस्ती शरणार्थियों से भर गयी थी। इसी कारण मैं यहाँ रहा हूँ। मुझे कुछ इस महल में रहने का शौक नहीं है। लेकिन अगर वहाँ की हरिजन-बस्ती शरणार्थियों के सम्पर्क में काम आ रही हो तो उसे खाली करवाना मुझे पसन्द नहीं। यहाँ जिसे आना हो वह आ ही सकता है। मैं तो यहाँ पड़ा-पड़ा जितनी भी आश्वासन दे सकता हूँ, देने का प्रयत्न करता हूँ।"

शेष सारा कार्यक्रम रोज जैसा ही साधारण रहा। प्रार्थना के बाद टहलते समय श्रीमन्नारायणजी साथ थे। फिर ब्रिटेन के हवाई-विभाग के अधिकारी 'आर्थर' आये। बापू उनसे हवाई जहाज किस तरह चलता है, कितनी देर में कहाँ पहुँचता है आदि बातों को ध्यान से सुनते रहे। कुछ विनोद भी चलता रहा। इस बीच बापू ने कहा : 'मैं अब कमर कसने के सिवा अपने लिए दूसरा कोई रास्ता ही नहीं देखता। मुझे तो करना या मरना ही है। हाँ, रात में मैं कई बार जहाज की हरी-लाल बत्तियाँ देखता हूँ, तो वे आकाश में तारों जैसी लगती हैं। ऐसी अजीब चीजों के सामने भी मानव का मस्तिष्क ऐसा पागलपन और दुर्बुद्धि अपनाकर इस तरह भीषण मारकाट करता है, यह सोचकर तो स्तब्ध ही हो जाना पड़ता है। नन्ही-सी बुद्धि क्या-क्या कर गुजरती है !"

बापू इनके वर्णन में इतना रस ले रहे थे कि मैं पूछ ही बैठी : बापू ! अब आपको हवाई जहाज चलाना तो नहीं सीखना है न ?" बापू ने कहा : 'हाँ, रोज इन सबके साथ हवाई मौके जैसी गप तो लगाते ही हैं !" छोटी-छोटी बात भी इतने ध्यान से सुनते हैं कि यह कैप्टन भी उतना ही खिल उठा।

फिर पण्डितजी दूसरी बार आये। उनके साथ 'हेण्डरसन' भी थे। वे बैठे

ये यहाँ रह रहे हैं। उन्होंने निश्चय ही कर लिया है कि करना है या मरना है। आपके रोज रेडियो पर या अखबारों में जो प्रार्थना-प्रवचन आते हैं, उन पर मनन करेंगे तो आपको प्रकाश मिलेगा।

बापू यह पढ़कर खुश भी हुए। यों तो जब से मैं बापू के पास आयी हूँ, तभी से कई बार इस तरह उत्तर भेज दिया करती हूँ। लेकिन अगर इस कामकाज के क्रम में बापू के नाम आयी चिट्ठियों के बारे में उन्हें न बताया जाय, तो यह उन्हें अधिक पसन्द नहीं पड़ता। एक बार तो उनका गरमागरम यह व्याख्यान भी सुनना पड़ा था : "लिखनेवाला [illegible] कितनी आशा से मुझे पत्र लिखता होगा। भले ही मैं उन्हें उत्तर न दे पाऊँ, लेकिन मुझ पर दया करने के लिए आयी हुई चिट्ठियों को मुझे न बताने का अधिकार आप किसीको भी नहीं है। मेरी दया करनेवाला तो बैठा ही है। उसे मेरी आवश्यकता होगी तो मुझ पर दया करेगा। नहीं तो कोई बात नहीं।" इसीलिए आयी हुई सभी चिट्ठियाँ उन्हें बतानी ही पड़ती हैं।

बापू कुछ देर सो गये थे। उसके सिवा आज तो खास कोई न था। हम घर के ही लोग थे। सचमुच कई बार बापू अत्यधिक गम्भीर दिखाई पड़ते हैं। हम सबों के साथ हँसते-खेलते हैं। सब कुछ करते हैं। लेकिन कभी मुझे तो ऐसा ही लगता है कि बापू अब किसी के वातावरण से ऊब गये हों, दुःखी हो उठे हों और उसमें से कुछ रास्ता निकालने की सोच रहे हों। चाहे जो हो, बापू का वातावरण गरम है ऐसा मालूम पड़ता है। "रामेश्वर आना चाहते हैं, ऐसा लगता है।" तो कहा : "मेरा मन इतना अधिक अस्वस्थ है कि अब यह सब देखना नहीं चाहता। अब कैसा कदम उठाऊँगा इसका मुझे ही पता नहीं।"

वचन का मोल

शाम के समय बापू को एक धमकी-सा पत्र आ गया। उसमें भी बापू अत्यधिक थके तो हैं ही। वे कहते हैं : "मैं काम से थकता नहीं। लेकिन लोग कभी कुछ और कभी कुछ कहा करते हैं। एक नियम पर टिक नहीं रहते। मुझे खुश रखने के लिए मेरे सामने तो मेरे अनुकूल बातें कही जाती हैं और इस बिरला-हाउस के बाहर निकलते ही पैंतरे बदल जाते हैं कि किसके सामने कैसा बरताव करें जिससे आगे आ सकें।" ... के बीच के मतभेद भी दिन-दिन कम होते जा

रहे हैं। किसीको समझा नहीं सकते। पाकिस्तान बँटे समय हमने वचन दिया था कि ५५ करोड़ रुपये देंगे। इस सम्बन्ध में मतभेद खड़ा हुआ है। अब हम मुकर जायें तो हमारा मूल्य ही क्या रहा? जिसे अपने वचन का मूल्य नहीं वह तो कौड़ी का है।

बाद में बापू ने मुझसे ये बातें कहीं। इससे लगता है कदाचित् मेरा यह अनुमान ठीक ही निकले। इन सभी मानसिक परेशानियों से या भीतर-ही-भीतर खपते हुए इस वातावरण के कारण ही बापू इतने गम्भीर विचार में मग्न हैं।

स्थानीय मुसलमान भाई आये। उन्होंने बापू से रोज की तरह ही अपनी शिकायतें कहीं। बापू ने कहा : 'अब तक आपको जितनी प्रतीक्षा करनी पड़ी उतनी अब नहीं करनी पड़ेगी। इतने महीने धैर्य रखा तो सप्ताहभर और धीरज रख देखें कि क्या होता है।"

पटनी साहब के साथ प्रीवीपर्स के बारे में बातें कीं। महाराज की क्या मिल्कियत है, आदि पूछा। भावनगर के महाराज ने तो बापू प्यार-व्यवहार जो भी दें, वही लेना तय किया है।

बापू ने माउथिस साहब को सलाह दी कि कल जो पाकवाले निर्वासित आये थे उन्हें न खदेड़ा जाय। माउथिस साहब ने कहा कि "हमें मेहमानों को रखना है।"

बापू ने चिढ़कर कहा : 'तो पहले मुझे निकालने की नोटिस दीजिये और इस बिरला-भवन का कब्जा लीजिये। इसी तरह आप सभी मन्त्री अफसर बड़े-बड़े बँगले दबाये बैठे हैं तो अपनी आवश्यकतानुसार दो-चार कमरे रखकर आपको चाहिए कि बाकी का सारा भाग खाली कर दें, उस पर कब्जा करें। जो आश्रित अपने जमे हुए बैठे हैं, उन्हें क्योंकर निकाला जाय? मैंने इस बारे में जवाहर से भी कहा है। वह तो तत्काल समझ गया कि मेरी बात ठीक है। जवाहर में यह एक महान् गुण है वह अपनी भूल बगैर झंझट के स्वीकार कर लेता है। "

माउथिस साहब ने भी तय कर लिया कि बापू के बँगले में रहनेवाले निर्वासितों को नहीं निकाला जायगा। वे सरकारी मेहमानों के लिए स्थान का अलग प्रबन्ध करेंगे।

सचमुच बापू ये सभी करते हैं। उनके पास चीज तो जमा ही नहीं पाती। दिल्ली के चीफ कमिश्नर साहब भी आये। उनके साथ बातचीत करते हुए बापू ने कहा: 'अब तो आप छुट्टी हैं या भगवान् छुट्टी दे, तभी आराम किया जा सकता है न?'

दिल्ली का वातावरण तो काफी बिगड़ चुका है। राजकुमारी बहन ने तो' के साथ हुई बातें कहीं। डॉ. ... साहब जिन्होंने मेरा आपरेशन किया था हमें भोजन का निमन्त्रण देने आये थे। बापू ने स्वीकृति दे दी। लेकिन मुझे बुखार आया करता है इसलिए अब पुनः चीरकर दिखाने के लिए कहेंगे। मैंने कहा: बापू! आपका यह धंधा तो खूब रहा। डॉक्टर चीर करके तो रोगी से फीस लेता है, पर आप तो उसके बदले मुझे उनके घर खाने के लिए भेज रहे हैं! बापू ने कहा: 'और खाने के लिए जाने की मैं छुट्टी देता हूँ, उसकी फीस नहीं!' इस तरह थोड़ी देर विनोद हुआ।

ईरान और पाक की समस्या

ईरान के राजदूत बापू से मिलने आये थे। उन्होंने कहा: 'ईरान और भारत के बीच मधुर सम्बन्ध तो है ही। लेकिन साथ ही यहाँ के भारतीय ईरानियों को मुसलमान मानकर दुश्मन समझकर हैरान करते हैं, यद्यपि बम्बई-सरकार या भारत सरकार के प्रति हमारी कोई भी शिकायत नहीं है। इसी तरह हम लोग भी ईरान में रहनेवाले भारतीयों की पूर्ण रक्षा करने के लिए आतुर हैं और रहेंगे। किन्तु अगर यहाँ के भारतीय ईरानियों को हैरान करेंगे तो कह नहीं सकता कि ईरान के भारतीयों को ईरानी सुरक्षित रहने देंगे या नहीं। "

बापू ने कहा: 'ईरान अफगान चीन जापान, हिन्द या पाकिस्तान—सभी देशों को मैं एक, पूरा एशिया खण्ड एक ही मानता हूँ। अगर केवल हमारा एशिया खण्ड ही मजबूत हो जाय एक दूसरे की ओर अविश्वास की दृष्टि से न देखते हुए पूरी मित्रता के साथ रहें और तदनुसार आचरण करें, तो जमीन पर स्वर्ग ही उतर पड़े। जिस सत्य और अहिंसा पर रचा गया यह आर्य-देश सारी दुनिया के सुख-शान्ति का विश्राम-स्थान बने। यहाँ की सरकार सख्त है, फिर भी ईरानियों को भय तो रहता ही है। ऐसी स्थिति में ईरान में रहनेवाले भारतीयों के साथ आप

जितने ही प्रेम से बर्ताव करेंगे उतना ही असर वहाँ होता जायेगा। इस तरह यहाँ के ईरानियों की तो आप यहाँ बैठे-बैठे ही रक्षा कर सकते हैं।

आज का प्रवचन शुरू हो रहा था कि इसी बीच एक साधु जैसे आदमी ने चिल्लाना शुरू किया। उसे शान्त करने के बाद पूछा गया तो वह कहने लगा : "मुझे अपना पत्र यहीं खड़ा होकर बापू को सुनाना है।

बापू ने कहा : "यह देखने लायक बात है कि आज हम कहाँ तक गिर गये हैं। ये साधु पुरुष होने का दावा करते हैं, गीता-पाठ भी करते हैं, फिर भी इतनी समझ नहीं कि इस तरह बहस नहीं करनी चाहिए।" वह साधु बड़ी कठिनाई से शान्त हो पाया।

फिर बहावलपुर के बारे में चर्चा करते हुए बापू ने कहा : "मुझे यह समाचार मिला कि बहावलपुर के लोग प्रार्थना-सभा में गड़बड़ी पैदा कर सभा पर पत्थर फेंकने और सभा भंग करने का इरादा कर रहे हैं। लेकिन मेरे मना करने पर वे लोग मान गये। आप सबको यह आदर्श अपनाना चाहिए। इन्हें भी दुःख सहने पड़े हैं, उसका मैं साक्षी हूँ। नवाब साहब ने यह आश्वासन दिया है कि वहाँ के सभी हिन्दू-सिख यहाँ सकुशल आ जायेंगे। आखिर आपको इस पर विश्वास तो करना ही चाहिए। नवाब साहब तो यह भी कहते हैं कि भविष्य में बहावलपुर के लोगों का अहित न हो पाये इसकी वे भरपूर सावधानी बरतेंगे। इसी तरह यहाँ की सरकार भी बेखबर तो है ही नहीं।

फिर भी ये सारे चिह्न अच्छे नहीं। हमारा देश एक था उसके दो टुकड़े हुए। इसके अतिरिक्त दोनों राज्य परस्पर दुश्मन बने और अपने ही वतन में दुश्मन बने। सिन्ध में तो इससे भी भयानक स्थिति है। अब परिस्थिति इतनी नाजुक होती जा रही है कि आखिर भारत पर भी इसका क्या प्रभाव पड़ेगा कल्पना नहीं की जा सकती। ऐसे मौके पर गुस्सा तो करना ही नहीं चाहिए। गुस्सा करने से कुछ भी सुधार नहीं हो सकता। ऐसे समय यही एक अच्छा उपाय है कि हम सोचें परिस्थिति किस तरह काबू में आ सकती है इसका शान्त चित्त से विचार कर योग्य आचरण करें।

"ईरान के राजदूत मेरे पास आये थे। उन्होंने कहा कि बम्बई में रहनेवाले ईरानियों का—अधिकतर तो वहाँ ईरानियों के होटल ही हैं—भी नुकसान पहुँचाया जा रहा है। अवश्य ही वहाँ ईरानियों की चाय काफी पसन्द की जाती है। लेकिन

वहाँ कुछ भीतर-ही-भीतर झगड़ा हुआ बात बढ़ गयी और कई ईरानी मारे गये। फिर भी उन्होंने बम्बई और सिन्ध-सरकार के इन्तजाम की तारीफ की। एक तरह से ईरानी और भारतीय सभी आर्य ही हैं। 'जेंदावेस्ता' देखेंगे तो उसमें आपको कितने ही संस्कृत शब्द मिलेंगे। आपस में बहुत ही पुराना मधुर सम्बन्ध है। अगर वह बिगड़ जाय तो सभी के लिए शर्म की बात होगी।

“अखबार पर से कम्युनिक पढ़ लेने से जनता मुझे धन्यवाद देती है। लेकिन मैं कोई ईश्वर नहीं कि लाभ होगा या हानि यह पहले से कह सकूँ। मेरे पास किसी तरह के दिव्यचक्षु भी नहीं हैं। मेरे पास तो आँख कान पैर जो भी कुछ कहें, जनता ही है। इसलिए आखिर आपको ही अपना भविष्य तय करना है। मैं कहता हूँ, इसलिए किसीको मेरी बात मान ही लेनी चाहिए या मुझ जैसे बीस-बीस महात्मा बतलानेवाले मिलें तो भी उनका कहना सच ही होगा ऐसा भी मानने की कोई जरूरत नहीं। सभी को अपनी बुद्धि से ही विचार करना सीखना चाहिए। तभी सुखी हो सकेंगे।

इस समय बापू काफी थक गये थे। उनके मन में कुछ विशेष चिन्ता और बोझ है। रोज की तरह १ बजे कसरत करके सोने की तैयारी हुई। प्रार्थना-प्रवचन देखा। पंडितजी के साथ बातें कीं। सुबह लिखने की सामग्री अवश्य इकट्ठी की।

• • •

संकुचितता और भ्रष्टाचार : १२ :

बिरला-भवन नयी दिल्ली
११-१-'४८

कांग्रेस में भ्रष्टाचार

नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थना से पहले बापू ने कहा : “हमारा इतना अधिक नैतिक अधःपतन हो रहा है—जिसे मैं अभी समझ पाया हूँ—कि हमारा सत्याग्रह या सारी लड़ाइयाँ दुर्बलता की थीं। अगर कांग्रेस के मुख्य जन इस बारे में स्थिर और दृढ़निश्चयी न रहें, तो यह संस्था चूर-चूर हो जायगी। इससे बेहतर है

कि इसका विसर्जन ही कर दिया जाय। संस्था का ध्येय तो स्वराज्य लेने तक ही सीमित था। मुझे आज ही इस संस्था के बुरे दिनों की आगमदी हो रही है। मन्त्री और संस्था के कर्मचारी ठीक-ठीक काम करने में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। आज ही आया हुआ इस का पत्र देखकर तो मैं अत्यन्त व्यग्र हो उठा हूँ। हर तरह की पूँजी लगानेवाले और केन्द्र में बैठे जैसों के लड़के भी किस तरह पैसा कमाया जाय इसके लिए धमाचौकड़ी मचाते हैं। आखिर यह सब किस बात का संकेत है? अगर हम सचमुच ऐसे हो रहे तो कहना पड़ेगा कि हम गुलाम ही रहने लायक हैं। जैसे लोग भी जिन्होंने बम्बई सरीखे विलासप्रिय आमद शहर में बसते हुए भी सोलह है जान-बूझकर धन कमाना त्याग दिया हो सिर्फ कांग्रेस संस्था और पार्टी के हिस्से की बदौलत मनमाने ढंग से चारों ओर से अन्धाधुन्ध कमाई करते रहें, तो आखिर यह सब कहाँ जाकर रुकेगा? मैं तो यह सब जानकर स्तब्ध हो गया हूँ। अब तो कम-से कम इस धन-माद की तरह भगवान् ही स्वयं समझकर मेरी लाज रख लें तो मैं उसके अनन्त उपकार मानूँगा।"

बड़े तड़के बापू ने अत्यन्त दुःखभरी आवाज में ये बातें कहीं। मुझे कल से ही मालूम पड़ रहा था कि बापू किसी गहरे विचार में हैं, पर कारण ध्यान में नहीं आ रहा था। वो वे सबेरे ही गम्भीर मालूम पड़ते थे पर उनका विनोद, मेरा कार्यकर्ताओं से बातचीत और अन्य कार्यक्रम—भोजन आदि, सारा नित्य की तरह ही चलता रहा जिससे बाहरी लोग इसे समझ ही न सकें। फिर भी बापू की जरा-सी गम्भीरता का भी असर इस कमरे में तो फैल ही जाता है। मालूम है कि जैसे बम्बई के विख्यात व्यक्ति के बारे में भले ही कदाचित् ये बातें सही हों फिर भी ऐसी बातें क्यों फैलती हैं? यद्यपि इस घटना में कुछ तथ्य है ही लेकिन इससे अकल्पित और न माने जा सकनेवाले कितने ही धोखे पैदा हो जाते हैं। इसीसे बापू को अत्यधिक हृदयाघात हुआ होगा यह समझ सकते हैं।

मिश्र-खाद और किसानों की तालीम

प्रार्थना के बाद भावनगर के ग्राम-दक्षिणामूर्तिवाले हरिभाई भाई ने पैदावार कैसे बढ़ायी जाय इस बारे में कुछ सुझाव दिये थे। उन्हें नोट के साथ 'हरिजन' में छापने के लिए बापू ने यह नोट लिखवाया :

"भाई हरिभाऊ के सुझावों में कोई नयी बात नहीं। फिर भी आज जिसके हाथ में देश की बागडोर है, वह किसान नहीं है। इसलिए ये सुझाव उपयोगी हो सकते हैं। अगर हम लोग राजनीति से अवकाश पाकर रचनात्मक काम में लगें और कृषि-सुधार को उचित महत्त्व दें, तो किसानों को बहुत कुछ सिखा सकते हैं और उनसे भी बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

जमीन को मिश्र-खाद या कम्पोस्ट देने से खेत बहुत दिनों तक बिना जोते रखने की जरूरत नहीं रहती। यह खाद उसे सदैव ताजा रखती है। मिश्र-खाद को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने की जरूरत नहीं पड़ती। थोड़े से अनुभव से हर गाँव में यह खाद सरलता से तैयार हो सकती है। लेकिन ये काम मन्त्रवत् नहीं होते। हर क्षेत्र से उपयोगी ज्ञान प्राप्त कर मौलिक प्रयोगों द्वारा देश करोड़ों किसानों में सच्ची तालीम दे सकता है।

स्व० तोतारामजी

तोतारामजी के देहावसान पर यह जोर दिखाया कि क्योंकर तोतारामजी किसीसे भी सेवा लिये बगैर ही गये। वे साबरमती-आश्रम के भूषण थे। विद्वान् तो नहीं पर ज्ञानी थे। भजनों के भण्डार थे फिर भी गायनाचार्य न थे। अपने इकतारे और भजनों से आश्रमवासियों को मुग्ध कर देते थे। जैसे वे वैसे ही उनकी पत्नी भी थीं। पर तोतारामजी पहले ही चल बसे।

"जहाँ आदमियों का समाज रहता है, वहाँ तरह-तरह के झगड़े चलते ही रहते हैं। मुझे ऐसा एक भी मौका याद नहीं जिसमें इस दम्पति ने भाग लिया हो या वे किसी तरह के झगड़े की जड़ बने हों। तोतारामजी को धरती प्यारी थी। खेती उनका प्राण थी। आश्रम में वे बरसों पहले आये और कभी उसे नहीं छोड़ा। छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष उनके मार्गदर्शन के भूखे रहते। उनसे अमूल्य आश्वासन पाया करते।

"वे कट्टर हिन्दू थे पर उनका हृदय हिन्दू, मुसलमान और अन्य धर्मियों के प्रति समान रहा। उनमें अस्पृश्यता की बू तक न थी और न किसी तरह का व्यसन ही था। राजनीति में उन्होंने भाग नहीं लिया। फिर भी उनका देशप्रेम चाहे किसीकी तुलना में खड़ा रह सके, इतना उज्ज्वल रहा। त्याग उनमें सहज ही था। उसे ही वे शोभित करते थे।

"वे फीजी द्वीप में गिरमिटिया के तौर पर गये थे। दीनबन्धु एण्ड्रूज ने ही उन्हें छोड़ निकाला था। उन्हें आश्रम में लाने का श्रेय भी बनारसीदास चतुर्वेदी को है। अन्तिम घड़ी तक जो कुछ अच्छी सेवा हो सकती थी वह भाई गुलाम रसूल कुरैशी की पत्नी और इमाम साहब की बहन ने की थी। 'परोपकाराय सतां विभूतयः' दीनारामजी में यह अक्षरशः सत्य रहा।"

बापू करीब १ मिनट सो गये। मैं भी सो गयी थी। ६॥ बजे उठी नाश्ता किया और बापू के साथ टहली। सरला भी साथ थी। ७॥ बजे बापू के पैर धोये मालिश की तैयारी की। मणिलालभाई और हमिदा (रंगूनवाले डॉ० प्राणजीवन मेहता की पोती) की सगाई से सरला और उसके परिवारवालों को सन्तोष नहीं है, क्योंकि सारी बातें हुईं। बापू भी इसकी सभी बातों में पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं। इसलिए बापू कमिशन के इस व्यवहार पर अति दुःखी थे और दो-चार शब्द बाद उन्होंने अपने पुराने मित्र की पोती की सगाई में इतना अपमान सह लिया।

राह में बापू ने मुझसे एक तीसरी ही बात बतलाते हुए कहा : "तू बोलती क्यों नहीं?...मैं सारी बातें मैं जानता हूँ, लेकिन तू दुःखी रहे, यह मुझे नहीं भाता। तेरा मुँह जरा भी गम्भीर देखता हूँ, तो मुझे अच्छा ही नहीं लगता। अगर मैं तेरी दृष्टि से तेरा माँ-बाप होऊँ, तो तुझे मन में किसी भी तरह का बोझ न रखना चाहिए।

साढ़े बारह बजे हम लोग डॉ० भार्गव के यहाँ भोजन के लिए गये और पौने दो बजे वहाँ से लौटे। बापू के लिए मिट्टी रखकर गये थे। आकर हम लोग रोज जहाँ संगीत सीखते हैं, वहाँ गये। इस कारण आज १२॥ से २॥ तक की मुलाकातियों की बातें नोट नहीं की जा सकीं। दोपहर में बापू के भोजन के समय शंकररावजी और राजेन्द्र बाबू आये हुए थे। उनके साथ बहावलपुर की और ५५ करोड़ की बातें हुईं। भोजनोत्तर सफर ने भी बहावलपुर का बहुत-सा विवरण बताया। लेकिन अब मामला कुछ काबू में आ रहा हो ऐसा मालूम पड़ता है।

मौलाना हफीज-उल-रहमान साहब और स्थानीय अन्य मुसलमानों ने शिकायत की कि "अब तो हमें इंग्लिश का ही विरोध करना है, तो अच्छा हो। आज तक हम लोगों ने कांग्रेस में पापड़ बेले।" शिकायतें जाहिर कीं। लेकिन आज जब हमें कांग्रेस ही नहीं अपनाती तब पाकिस्तान में तो हमारे लिए स्थान ही कहाँ?"

बापू को यह बात अत्यन्त चुभ गयी। उन्होंने कुछ नाराज होकर कहा : "आपको आपके देशबान्धव हैरान कर रहे हैं, यह मैं जानता हूँ। इसीलिए तो मैं यहाँ पड़ा हूँ। लेकिन ये देशबान्धव कदाचित् पागल हो गये हैं और आपको अमन चैन से नहीं रहने देते। आखिर यह कितने दिनों तक चलेगा? और कितने दिन चलना? कुछ दिनों से आप पर इस आफत दिन में थोड़ी आफत आ गयी तो क्या आपको गुलामी प्यारी है? फिर यह सारी जाएगी तो उन्हींकी नीति को जानती है। फिर भी क्या आपको अपने देश-भाइयों के हाथों मरने की अपेक्षा गुलाम रहना ही पसन्द है? क्या यही है आपका यह स्वराज्य और यह आत्म-सम्मान? जिन्दगी के बनिस्बत गुलामी प्यारी है?" खूब कही!

लेकिन बापू यह तो इतनी वेदना से बोल रहे थे कि इस वेदना की अग्नि वे ही सह सकते थे। इसके साक्षी तो बापू के भगवान् ही होंगे। इससे बापू का (रक्तचाप) भी बढ़ गया। ये सारे लक्षण अच्छे नहीं मालूम पड़े। जाने क्यों मुझे भी कहीं अच्छा नहीं लगता। बापू ने सुबह चाय में मुझसे विनोद में कहा था कि तू जरा भी उदास मत रहना। लेकिन किसी भी बात में मन नहीं लगता। बहुत दिन हुए, घर से भी बहन और भाई के पत्र नहीं आये। जो कुछ हो मेरा मन कह रहा है कि दो-चार दिनों के वातावरण से यह समझ में ही नहीं आता है कि अब बापू क्या करेंगे?

दक्षिण अफ्रीका के बापू के साथी श्री सोराबजी भाई, रुस्तमजी और प्रागजी भाई के साथ घूमते हुए बापू ने दक्षिण अफ्रीका के बारे में बातें कीं।

पाँच बजे पटनी साहब और माँ (यशोमती बहन पटनी) आयीं। वे भावनगर राज्य के दीवान-दम्पति के नाते अन्तिम प्रणाम करने आये थे। वे भावनगर जा रहे हैं। साठ-सत्तर साल की पिता-पुत्र की दीवानगिरी या राज्य की एकनिष्ठा से सेवा करने में यह परिवार आगे रहा है। आज वह इसे प्रजा को सौंप रहा है। पटनी साहब की आँखों से आँसू उमड़ आये। मुझसे कहने लगे : "बापू पर मेरा बहुत हक है।" बापू विनोद में कहने लगे : "तो इसे भावनगर राज्य का दीवान बना दीजिये!"

पटनी साहब : "यह आपके पक्ष की इस 'लड़की' की दीवानगिरी छोड़कर कहाँ जाने लगी?"

मैंने कहा : "बापू को सौरम बना दीजिये और बादाम और साग बगैर मुझे दे दीजिये तो काम बन गया !" इस तरह बातें करती रही कि प्रार्थना का समय हो गया।

रोज रेडियो पर बापू का जो भाषण आता है, उसमें बहनों और बच्चों की आवाज भी शामिल हो जाती है। इसलिए ठीक तरह कोई भी बापू का भाषण सुन नहीं पाते। आज के प्रवचन में बापू ने कहा :

"आज आप लोग ज्यादा शोर-गुल नहीं करते इसलिए आपको मेरा धन्यवाद। आप आपस में बातें करते रहते हैं और बच्चे रोते रहते हैं। अगर ऐसा हो तो प्रार्थना में आने का लोभ छोड़ देना चाहिए। इस बूढ़े को देखने से क्या लाभ ? बूढ़े की कही बात जरा भी कान धरें तो उससे कुछ लाभ भी हो सकता है। सिर्फ मुझे देखने से क्या मिलेगा ?

"आज तो मुझे दुःख की बातें कहनी हैं, यद्यपि रोज यही होता है। आज आसाम से मेरे पास एक दर्द से भरा और मेरी आँखें खोल देनेवाला पत्र आया है। उन बूढ़े भाई को मैं जानता हूँ। उन्होंने लिखा है कि १५ अगस्त को जब से हमें आजादी मिली तब से हम लोग यह मानने लग गये हैं कि हम चाहे जहाँ चाहे जैसे काम कर सकते हैं। स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए कांग्रेस और जनता ने अनगिनत बलिदान किये हैं। लेकिन उनके फलस्वरूप आज कांग्रेस इतनी नीचे क्यों गिर गयी ? उसे ऊँचा उठना चाहिए था न ? कभी कोई एक दिन भी जेल का दुःख हो या प्यारी पत्नी हो तो नेता बनने की उधेड़-बुन में अनेक दाँवपेंच रचते हैं। एम. एल. ए. या एम. एल. सी. या लोकसभा के सदस्य बनने और मनमाना पैसा ऐंठने का काम करते हैं। इस तरह कैसे चलेगा ? इसलिए धारासभा और लोकसभा के सदस्यों की संख्या कम कर दी जाय तो बहुत अच्छा होगा। उस भाई ने इस तरह की बातें लिखी हैं।

"उस प्रान्त को मैं भलीभाँति जानता हूँ। मेरे लिए तो यहाँ रहूँ या वहाँ जाकर रहूँ उसमें कोई फर्क नहीं। सारा देश मेरा ही है और मैं सारे देश का हूँ। पाकिस्तान को मैं अपने मन में जरा भी विदेश नहीं मानता। इस प्रदेश में साम्यवादी और समाजवादी भाई हैं। वे सब यही चाहते हैं कि जिस किसी तरह हो कांग्रेस

को तोड़ दिया जाय। लेकिन अगर इस तरह सभी हिन्दुस्तान का कब्जा लेने के लिए तैयार हों तो उसकी क्या हालत होगी? मेरी तो हर भारतीय से यही सलाह है कि हम हिन्द के बनें और हिन्द को अपना बनायें। यह समय इतनी कठिनाई का है कि एक तो हम हिन्दू मुसलमान लड़कर एक-दूसरे के सिर काटते हैं और उसमें भी इस तरह अपने पर लगाते चले जायें तो पुनः भयानक स्थिति में गिर पड़ेंगे। अगर हम सिर्फ खुद और अपने सगे-सम्बन्धियों को सरकारी नौकरी में लगाने और उनकी सारी व्यवस्थायें करने में जुट जायें तो हमें ईश्वर कभी क्षमा नहीं करेगा।

"आज मेरे पास कुछ मुसलमान भाई आये थे। उनकी हमेशा की शिकायत तो है ही। लेकिन अब वे कहने लगे हैं कि हम यह सारी हैरानी कब तक सहते रहेंगे? इसकी अपेक्षा हम यहाँ से चले जायें तो सारा झगड़ा ही मिट जाय। पाकिस्तान में तो हम लोगों के लिए जगह है ही नहीं। अब तो इंग्लैण्ड ही बाकी रहा है। और कुछ भी नहीं सूझता।

इन भाइयों से मैं एक ही बात कहता आया हूँ और आगे भी कहता रहूँगा कि आप लोग थोड़ी शान्ति रखिये। चुप रहिये। सरकार तो हर सम्भव कोशिश करती ही है। फिर भी जो कुछ हो सकना मुश्किल होगा वह और देखा जायगा। आज तो 'यूनियन' में जो बैठे हैं उन्हें यह भूल जाना चाहिए कि मैं हिन्दू हूँ या मुसलमान सिक्ख हूँ या पारसी या यहूदी। हम सभी हिन्दुस्तानी हैं, इतना ही याद रखना चाहिए। धर्म तो सबकी निजी चीज है, उसे हमें राजनीति में नहीं घसीटना चाहिए। जो दूसरों को दबाने की कोशिश करता है, वह खुद दब जाता है। गड्ढा खोदनेवाला ही उसमें गिरता है, यह प्राकृतिक नियम है। हम सब भारतीय हैं। अगर हम भारत और भारतीयों की रक्षा करते-करते मर जायें तो हमारे लिए अच्छी मृत्यु कौन-सी हो सकती है? मानवमात्र के लिए एक दिन मरना लिखा है। जन्म के साथ ही मृत्यु मुँह बाये खड़ी है। फिर उससे डर क्यों?

प्रार्थना के बाद जल्द ही बापू ने मौन लिया। मैंने और बृजकृष्णजी ने प्रवचन तैयार कर देखने के लिए दिया। उस समय बापू कुछ अधिक व्यस्त थे। हम दोनों के कन्धों पर झुककर हमें गुदगुदाते थे। हमें डर लगती है उसे समझने के लिए ही बापू ऐसा कर रहे हों!

रात में विश्राम करना। गोपू और बच्ची आयी थीं। गोपू के साथ हम सभी खेले। गोपू आता है, तो आनन्द और खेल से भरपूर बापू का गम्भीर वातावरण भी हल्का हो जाता है। राजकीय कमरा मानो बाल-भवन का कमरा ही हो ऐसा बन जाता है।

आज तो बापू का मौन है। इसलिए सामान्य वैसे तो पूरी शान्ति ही है। और कोई खास बात नहीं हो पायी। सारा कार्यक्रम नियम के अनुसार चल रहा है। काम के बाद बापू भी प्रफुल्लित दीखते थे जिससे कुछ तो अच्छा लगा। ● ● ●

अनशन का निर्णय

: १२ :

बिरला-भवन नयी दिल्ली
१२ १ '४८

३॥ बजे प्रार्थना। फिर मैं बापू को भीतर ले गयी। मौन-दिवस होने से आज तो बापू सब कुछ हाथ से ही करेंगे। बापू को कपड़ा ओढ़ाकर मैं भी सो गयी। ५॥ बजे जगी और नाश्ता करके ६॥ बजे उठी। इसी बीच बापू ने 'हरिजन' के लिए लेख लिखा और वे भी ६ बजे सो गये थे। ठीक ७ बजे उठे। आज सुबह बापू घण्टाभर सोये। मालिश, स्नान आदि नियम के अनुसार ही हुआ। आज बापू अत्यन्त प्रफुल्लित दीख रहे हैं। थकान के कारण भी मन पर बोझ रहा हो, इसलिए सुबह घण्टेभर सो गये यह बहुत ही अच्छा हुआ। भोजन के समय जवाहरलाल काका आये थे। १॥ पर भोजन समाप्त हुआ। इसी बीच सरदार दादा आये। कश्मीर की स्थिति पर बातें कीं। शेख साहब कश्मीर से महाराज को हटाना चाहते हैं। महाराज बड़ी उलझन में पड़ गये हैं। उन्होंने सलाह भी माँगी थी। कश्मीर में शेख साहब (शेख अब्दुल्ला) के हाथ सब कुछ सौंपकर बैठे हैं। इसमें भी सरदार दादा को उलझना दिखा। बापू का आज मौन होने से मुँह से किसीको उत्तर देने की तो बात ही नहीं।

बापू के पैर दबाकर मिट्टी रखी। दोपहर में हम संगीत सीखने के लिए गये और ३॥ बजे वहाँ से लौटे। इस बीच बापू ने कमेटी में भाषण किया और दूसरे

कहा कि 'अब हम लोग अनुवाद कर डालें।' हर सोमवार को बापू के भाषण का हिन्दी अनुवाद सुशीला बहन करती हैं। वे मुझे लिखवाती और मैं तेजी से लिखती जाती हूँ, जिससे सबका समय बच जाता है।

अनशन का निर्णय

जहाँ बापू की मीटिंग होती है और आजकल जहाँ प्यारेलालजी और उनके साथ आयी हुई बंगाली बहन रहती हैं, वहाँ खाली जगह होने से मैं और सुशीला बहन अनुवाद करने बैठीं। सुशीला बहन एकाएक चीख उठीं 'अरे! मनु! बापू तो कल से अनशन करने जा रहे हैं!' एकाएक यह चौंकानेवाली आवाज सुन मैं तो भौंचक-सी हो रह गयी। 'हैं! एकदम बोल उठी। वे दौड़ीं बापू के पास। बापू ने किसीको भी खबर करने से इनकार कर दिया। "शाम पढ़ोगी तब बातें होंगी। अभी तो जो अनुवाद हो वही करो।" फिर वे (सुशीला बहन) गयीं घनश्यामदासजी के पास—उनसे पण्डितजी और सरदार दादा को खबर देने के लिए कहा।

हम दोनों के पास पलभर भी समय नहीं था। आज प्रवचन का अनुवाद अन्तिम घड़ी में करने बैठे। इसलिए मैंने सुशीला बहन से कहा अब हम बातों में समय बिता देंगी और अनुवाद समय पर न हो पायेगा तो बापू नाराज हो जायेंगे। इसलिए हम लोग पुनः अनुवाद करने के लिए बैठ गये। इस बार बापू ने अजीब ढंग से यह निर्णय किया। दोपहर में सरदार दादा पण्डितजी सभी आ गये थे और हम सब भी थे। फिर भी बापू ने इस बार अनशन करने के निर्णय का पता अपनी अन्तरात्मा के सिवा और किसीको भी नहीं लगने दिया।

लेकिन मुझे गत सप्ताह से ही बापू की बातों रंग-ढंग मुलाकातियों के साथ बातचीतों और प्रश्नोत्तरों से यह लगता था कि बापू किसी गहरे चिन्तन में तो हैं ही। खुद मुझे भी कहीं अच्छा नहीं लग रहा था। बापू कई बार पूछते कि 'तू उदास क्यों रहती है?' लेकिन आखिर मेरा अनुमान सच निकला। बापू को कुछ होनेवाला हो तो स्वभावतः ही मुझे चैन नहीं पड़ता। कई बार मन उदास हो जाता और बुखार चढ़ जाता है। जब यह सब होने लगता है, तो मुझे ईश्वर जरूर की आगाही करा देता है। बापू से कहती तो वे कहते कि "यह तेरा भ्रम है।

मुझ पर एक तरह की छाप पड़ गयी है। लेकिन यह तो मेरा अनेक अनुभवों में से प्रत्यक्ष अनुभव है। परसों और कल मेरी डायरी बापू देख रहे थे तब भी मुझे व्यंग्य में कहा : "मालूम पड़ता है कि तुम तू बीमार पड़ेगी। तू खुश नहीं रहती इसका असर तेरी डायरी पर भी है। तुझे को बीमारी या बुखार आता है, वह अधिकतर तेरे स्वभाव पर ही निर्भर है। जब खुश और प्रफुल्लित रहती है, तब बड़ी सुहावनी लगती है और उदास हो जाती है, तो १ २ डिग्री तक बुखार चढ़ जाता है, यह भी गजब है।

फिर इस अनशन में क्या होगा कहा नहीं जा सकता। अभी छह महीने पूर्व कलकत्ते में बापू का भयंकर अनशन देखा। लेकिन वहाँ का उत्तरदायित्व तो सुहरावर्दी साहब ने अपने ऊपर ले लिया था। लेकिन यहाँ तो जनता पँचरंगी है। कोई विशेष नेता नहीं। फिर कौन उत्तरदायित्व उठायेगा? यों तो बापू के ये अनशन इस प्रकार के अपराधों के लिए हैं ही नहीं लेकिन नेताओं में जो यदि द्वेष और भीतर ही भीतर जो खूब भाईगीरीबाजी चलती है, उसके लिए है। इस अग्नि-परीक्षा में क्या होगा!

प्रवचन

आज का प्रवचन संक्षेप इस प्रकार था : "लोग सेहत सुधारने के लिए सेहत के कानून के मुताबिक उपवास करते हैं। जब कभी कुछ दोष हो जाता है और इन्सान अपनी गलती महसूस करता है तब प्रायश्चित्त के रूप में भी उपवास किया जाता है। इन उपवास करनेवालों को अहिंसा में विश्वास रखने की जरूरत नहीं। मगर ऐसा मौका भी आता है, जब अहिंसा का पुजारी समाज के किसी अन्याय के सामने विरोध प्रकट करने के लिए उपवास करने पर मजबूर हो जाता है, वह ऐसा तभी कर सकता है, जब अहिंसा के पुजारी की हैसियत से उसके सामने दूसरा कोई रास्ता खुला नहीं रह जाता। वैसा ही मौका मेरे लिए आ गया है।

जब मैं ९ सितम्बर को कलकत्ते से देहली आया तो पश्चिमी पंजाब जा रहा था। मगर वहाँ जाना नसीब में नहीं था। खूबसूरत दिल्ली से मेरी दिल्ली उस दिन मुर्दों के शहर के समान दीखती थी। जैसे ही मैं ट्रेन से उतरा मैंने देखा कि हरएक के चेहरे पर उदासी छायी हुई थी। सरदार, जो हमेशा हँसी-मजाक करके

खुश रहते थे, वे भी उदासी से बचे न थे। मुझे उस समय इसका कारण मालूम नहीं था। वे स्टेशन पर मुझे लेने के लिए आये हुए थे। उन्होंने सबसे पहली खबर मुझे यह दी कि 'यूनियन' की राजधानी में दंगा फूट निकला है। मैं फौरन समझ गया कि मुझे दिल्ली में ही करना या मरना होगा। फौज और पुलिस के कारण आज दिल्ली में ऊपर से तो शान्ति है, मगर दिल के भीतर आग भभक रही है। किसी भी समय वह फूटकर बाहर आ सकती है। इसे मैं अपनी 'करने' की प्रतिज्ञा की पूर्ति नहीं समझता जो कि मुझे मृत्यु से बचा सकती है। मृत्यु से जिसके समान दूसरा मित्र नहीं मुझे बचाने के लिए पुलिस या फौज द्वारा रखी हुई शान्ति ही पर्याप्त नहीं। मैं हिन्दू, सिख और मुसलमानों में दिली दोस्ती देखने के लिए तरस रहा हूँ। कल तो ऐसी दोस्ती थी; मगर आज बड़े-से-बड़े मुसलमानों की जिन्दगी हिन्दू या सिख की छुरी गोली या बम से सुरक्षित नहीं है। यह ऐसी बात है, जिसे कोई हिन्दुस्तानी देशभक्त (जो इस नाम के लायक है) शान्ति से सहन नहीं कर सकता।

उपवास आखिरी हथियार

मेरे अन्दर से आवाज तो कई दिनों से आ रही थी। मगर मैं अपने कान बन्द कर रहा था। मुझे लगता था कि कहीं यह शैतान की यानी मेरी कमजोरी की आवाज तो नहीं है? मैं कभी लाचारी महसूस करना पसन्द नहीं करता। किसी भी सत्याग्रही को नहीं करना चाहिए। उपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरों की तलवार की जगह लेता है। मुसलमान भाइयों के लिए सवाल था कि 'अब वे क्या करें?' मेरे पास कोई जवाब नहीं। कुछ समय से मेरी यह लाचारी मुझे खाये जा रही थी। उपवास शुरू होते ही यह मिट जायगी। मैं पिछले तीन दिनों से इस बारे में विचार कर रहा हूँ। आखिर निर्णय बिजली की तरह मेरे सामने चमक गया और अब मैं खुश हूँ। कोई भी इन्सान—जो पवित्र है—अपनी जान से ज्यादा कीमती चीज कुरबान नहीं कर सकता। मैं आशा रखता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि मुझमें उपवास करने लायक पवित्रता हो। नमक, सोडा और खट्टे नीबू के साथ या इन चीजों के बगैर पानी पीने की छूट मैं रखूँगा। उपवास कल सुबह पहले खाने के बाद से शुरू होगा।

'उपवास का अरसा अनिश्चित है। जब मुझे यकीन हो जायगा कि सब कौमों

के दिल मिल गये हैं—और वह बाहर के दबाव के कारण नहीं बल्कि अपना-अपना धर्म समझने के कारण—तब मेरा उपवास छूटेगा ।

'आज हिन्दुस्तान का सम्मान सब जगह कम हो रहा है । एशिया के हृदय पर और उसके द्वारा सारी दुनिया के हृदय पर हिन्दुस्तान का साम्राज्य आज तेजी से गायब हो रहा है । अगर इस उपवास के निमित्त हमारी आँखें खुल जायँ तो वह सब वापस आ जायगा । मैं यह विश्वास रखने का साहस करता हूँ कि अगर हिन्दुस्तान की आत्मा खो गयी तो तूफान से दुःखी और भूखी दुनिया की आशा की (आँख की) किरण का लोप हो जायगा ।

''कोई मित्र या दुश्मन—अगर ऐसे कोई हैं, तो—मुझ पर गुस्सा न करें । कई ऐसे मित्र हैं, जो मनुष्य-हृदय को सुधारने के लिए उपवास का तरीका ठीक नहीं समझते । वे मेरी बरदाश्त करेंगे और जो आजादी वे अपने लिए चाहते हैं, वह मुझे भी देंगे । मेरा सलाहकार एकमात्र ईश्वर है, वह निश्चय मुझे किसी और की सलाह के बिना ही करना चाहिए । अगर मैंने भूल की है और मुझे उस भूल का पता चल जाता है, तो मैं सबके सामने अपनी भूल स्वीकार करूँगा और अपना कदम वापस लूँगा । मगर ऐसी सम्भावना बहुत कम है । अगर मेरी अन्तरात्मा की आवाज स्पष्ट है और मैं दावा करता हूँ कि ऐसा है, तो उसे रद्द नहीं किया जा सकता । मेरी प्रार्थना है कि मेरे साथ इस बारे में दलील न की जाय । जिस निर्णय को बदला नहीं जा सकता उसमें मेरा साथ दिया जाय । अगर सारे हिन्दुस्तान पर या कम-से-कम दिल्ली पर ठीक असर हुआ तो उपवास जल्दी ही छूट सकता है । मगर जल्दी छूटे या देर या कभी भी न छूटे ऐसे मौके पर किसीको कमजोरी नहीं बतानी चाहिए ।

उपवास आत्मशुद्धि के लिए

''मेरे जीवन में कई उपवास आये हैं । मेरे पहले के उपवास के बाद आलोचकों ने कहा है कि उपवास से लोगों पर दबाव डाला । अगर मैं उपवास न करता तो जिस मकसद के लिए मैंने उपवास किया उसके सर्वथा *गुण-दोष* के विचार से निर्णय विरुद्ध जानेवाला था । अगर यह साबित किया जा सके कि मकसद अच्छा है, तो विरुद्ध निर्णय की क्या कीमत ! शुद्ध उपवास भी शुद्ध धर्म-पालन की

तरह है। उसका बदला अपने-आप मिल जाता है। मैं कोई परिणाम लाने के लिए उपवास नहीं करना चाहता। मैं उपवास करता हूँ, क्योंकि मुझे करना ही चाहिए।

"मेरी सबसे बड़ी प्रार्थना है कि वे शान्तचित्त से इस उपवास का तटस्थ वृत्ति से विचार करें। अगर मुझे मरना ही है, तो शान्ति से मरने दें। मैं आशा करता हूँ कि शान्ति तो मुझे मिलने ही वाली है। हिन्दुस्तान का, हिन्दू-धर्म का, सिख धर्म का और इस्लाम का बेबस बनकर नाश होते देखने के बनिस्बत मृत्यु मेरे लिए सुन्दर रिहाई होगी। अगर पाकिस्तान में दुनिया के सब धर्मों के लोगों को समान हक न मिले, उनकी जान और माल सुरक्षित न रहे और यूनियन भी पाकिस्तान की नकल करे, तो दोनों का नाश निश्चित है। उस हालत में इस्लाम का हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में ही नाश होगा, बाकी दुनिया में नहीं। मगर हिन्दू-धर्म और सिख-धर्म हिन्दुस्तान के बाहर है ही नहीं।

"जो लोग दूसरे विचार रखते हैं वे मेरा जितना भी कड़ा विरोध करेंगे, उतनी ही मैं उनकी इज्जत करूँगा। मेरा उपवास लोगों की आत्मा को जाग्रत करने के लिए है, उसे मार डालने के लिए नहीं। जरा सोचिये तो सही, आज हमारे प्यारे हिन्दुस्तान में कितनी गन्दगी पैदा हो गयी है! तब आप खुश होंगे कि हिन्दुस्तान का एक नम्र सेवक, जिसमें इतनी ताकत है और शायद इतनी पवित्रता भी है, इस गन्दगी को मिटाने के लिए कदम उठा रहा है। अगर इसमें ताकत और पवित्रता नहीं, तब तो वह पृथ्वी पर बोझरूप है। जितनी जल्दी यह उठ जाय और हिन्दुस्तान को इस बोझ से मुक्त करे, उतना ही उसके लिए और सबके लिए अच्छा है।

"कोई उपवास की खबर सुनकर लोग दौड़ते हुए मेरे पास न आवें। अपने आसपास का वातावरण सुधारने का प्रयत्न करें तो काफी है।

आश्रम का पत्र

मैंने कल अपने भाषण में आये हुए दो तारों का जिक्र किया था। तार भेजनेवालों में एक मित्र देशभक्त चौधरी ईश्वरदास साहब हैं। मैं उनके तार का कुछ हिस्सा दे रहा हूँ।

राजनीति का—आर्थिक प्रश्न के सिवा—एक बड़ा बेचैन करनेवाला सवाल यह है कि कांग्रेस के लोगों का नैतिक पतन हो गया है। इस प्रश्न के बारे में तो मैं बहुत

कुछ नहीं कर सकता मगर मेरे प्रान्त में हालत बहुत खराब है। राजनीति की हवा पाकर लोगों के दिमाग ठिकाने नहीं रहे। लेजिस्लेटिव असेम्बली और लेजिस्लेटिव कौंसिल के कई मेम्बर इस मौके का अपने लिए पूरा-पूरा फायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं।

"वे अपनी जान-पहचान का फायदा उठाकर पैसा बना रहे हैं और मजिस्ट्रेट की कचहरियों में पहुँचकर न्याय के रास्ते में भी रुकावट डालते हैं। डिप्टी कमिश्नर और दूसरे आला-अफसर भी नाराजी से अपना काम अदा नहीं कर सकते। कौंसिल के मेम्बर उसमें दखल-अन्दाजी करते हैं। कोई ईमानदार अफसर ज्यादा दिन तक अपनी जगह पर रह नहीं सकता। उसके खिलाफ मिनिस्टरों के पास रिपोर्ट पहुँचायी जाती है और मिनिस्टर ऐसे बे-असूल और खुद-गरज लोगों की बातें सुनते हैं। स्वराज्य की लगन एक ऐसी चीज थी कि जिसके कारण सभी स्त्री-पुरुष अपने उसूल को मानने लगे थे। मगर मकसद हल हो जाने पर ज्यादातर कांग्रेसी लोगों के नैतिक बन्धन छूट गये हैं। बहुत-से पुराने लोग जो अब तक हमारी हुकूमत के कट्टर विरोधी थे आज हमारा साथ दे रहे हैं। अपना मतलब निकालने के लिए वे लोग आज कांग्रेस में अपना नाम लिखा रहे हैं। मसला दिन-ब-दिन ज्यादा पेचीदा बनता जा रहा है। नतीजा यह है कि कांग्रेस की और कांग्रेस सरकार की बदनामी हो रही है। लोगों का कांग्रेस पर से विश्वास उठ रहा है। अभी-अभी यहाँ म्युनिसिपैलिटी के चुनाव हुए थे। वे चुनाव बताते हैं कि कितनी तेजी से जनता कांग्रेस के काबू से बाहर जा रही है। चुनाव की पूरी तैयारी करने के बाद गुन्टूर में लोकल बोर्ड के मन्त्री का 'चोरी सन्देसा' आने से चुनाव रोक दिये गये।

"मैं समझता हूँ कि करीब दस साल से यहाँ सब सत्ता एक नियुक्त की हुई कौंसिल के हाथों में रही है और अब करीब एक साल से म्युनिसिपैलिटी का काम-काज एक कमिश्नर के हाथों में है। अब ऐसी बात चलती है कि सरकार शहर की म्युनिसिपैलिटी का कारोबार सँभालने के लिए कौंसिल नियुक्त करेगी।

"मैं बूढ़ा हूँ, टाँग टूट गयी है। लकड़ी के सहारे लँगड़ाते-लँगड़ाते घर में थोड़ा-बहुत चलता-फिरता हूँ। मुझे अपना कोई स्वार्थ नहीं साधना है। इसमें शक नहीं कि जिले की और प्रान्त की कांग्रेस-कमेटी किन्हीं दो पार्टियों में बँटी हुई है,

सुहरावर्दी साहब का गहरा ऋणानुबंध (पूर्व जन्म की लेन-देन) मालूम पड़ता है।"
बापू ने उनसे कहा : 'देखो यह लड़की क्या कह रही है !"

इसी बीच जवाहरलालजी आये। सभी बाहर चले गये। सुशीला बहन सरदार दादा के पास गयीं। सरदार दादा बड़ी ही चिन्ता में हैं और नाराज भी हैं।

सिक्ख-हिन्दुओं की एक ट्रेन पेशावर से आयी है। उस पर असाधारण हमला हुआ। बापू ने किसीसे सलाह-मशविरा किये बगैर अनशन शुरू किया इसलिए" बहुत नाराज हैं।

बापू कहते हैं 'मैं गत सितम्बर से यहाँ हूँ। देख रहा हूँ कि लोग मेरे मुँह पर एक बात कहते हैं और होती है दूसरी बात। फलतः मैं तो भरोसा कर लेता हूँ और जनता मुझ पर भरोसा करती है। के बीच के गंभीर मतभेदों का दण्ड आम जनता को भुगतना पड़ रहा है। के भीतर भारी गन्दगी बढ़ती ही जा रही है। इस अनशन को जो किसी व्यक्ति के लिए तो है नहीं माउण्टबैटन भी मान गये हैं और वे भी मेरी बात समझ सके हैं कि इससे शुभ परिणाम ही निकलेगा। अगर हिन्दुस्तान सुधर जाय तो उसके साथ बाकी सब सुधर जायगा।

१ बजे बापू बड़े ही प्रसन्न होकर बिस्तर पर लेटे। मैंने बापू के सिर में तेल मला। देवदास काका और जमनादास काका आये थे। उन्होंने बापू के प्रवचन में आवश्यक संशोधन किया। देवदास काका ने उपवास के विरुद्ध तो बहुत दलीलें नहीं कीं लेकिन यह अवश्य पूछा कि 'आखिर यह अनशन पाकिस्तान के सम्मुख ही है न !"

बापू : 'हाँ एक दृष्टि से यह ठीक है। मेरे अनशन सभी के सम्मुख हैं। सभी को अपनी आत्मा की शुद्धि करनी चाहिए।"

जमनादास काका को बापू ने विनोद में कहा : मर्द ! लगता है कि तू तो मुझे अनशन करवाने के लिए ही आया है !'

जमनादास काका कहने लगे : 'कौए का बैठना और ताड़ का गिरना—यह काकतालीय न्याय बन ही गया तो और क्या करूँ !

बापू प्रवचन आदि से निवृत्त होकर करीब १२॥ बजे ही सोये और सभी लोग १२॥ बजे अलग हुए।

बापू का वात्सल्य

प्रार्थना के बाद बापू ने मुझसे भी चर्चा करते हुए कहा : "कल से तू मेरी फिक्र में पड़ी है। इसके बदले तुझमें जो तड़पन है, उसका उपयोग कर हिम्मत के साथ तू से पूछ और उसे समझा। तुझसे बड़े हैं या छोटे, यह प्रश्न कोई विशेष महत्त्व नहीं रखता। इस समय कलकत्ते की अपेक्षा स्थिति एकदम भिन्न है। तू मेरी चिन्ता का विचार भगवान् को सौंप दे और उसके बदले प्रेम से किसी तरह सभी बात समझाने से उसका समाधान कर और हम सबका काम होगा—इसका विचार कर। यह तड़पन तुझमें है ही पर हिम्मत नहीं है। तू अपने में विश्वास बढ़ा तो सब कुछ अपने-आप होकर रहेगा। अगर वे यात्री करना चाहते हों तो उन्हें कर देनी चाहिए। इस तरह तो वे जैसे हैं वैसे ही दीखेंगे इससे समझौता आसान है। इस बार का यह आन्दोलन सिर्फ हिन्दू-मुसलमानों के लिए ही नहीं है—बल्कि सभी जैसे हैं, वैसे नहीं दीखते अपनी आत्मा को मुझे और समाज को भी जो ठग रहे हैं—उनके सम्मुख मेरा यह आन्दोलन है। इन्हीं अज्ञानियों के कारण भाई-भाई के बीच मारकाट का रोग फैल गया है। इस तरह मैं तुझसे बहुत आशा रखता हूँ। तू हिम्मत कर, तो सब कुछ हो जायगा। अगर इसमें तू डर जायगी तो सदा के लिए दुखी ही रहेगी। भले ही सब कोई मुझे छोड़ चले जायँ पर मैं अकेला ही रहूँगा। यह महायज्ञ की दूसरी मंजिल है। तुझे तो अभी सहना होगा। इस तरह ढीली होने से काम न चलेगा।

मैं तो फूट-फूटकर रोने लगी। कुछ नहीं कह पायी। बापू के ये उपदेशपूर्ण हार्दिक वचन मेरी जगह कोई दुश्मन भी सुनता तो काँप उठता! बापू को अपने कहे जानेवाले लोगों की भी बेवफाई का शिकार बनना पड़ता है। फिर भी वे सभी गांधीजी के व्यक्ति के नाते बच जाते हैं। है न भगवान् की बलिहारी! नोआखाली में रहते हैं और अब किसी तरह का भी विरोध नहीं करते। राजकोट से भी कोई विरोध नहीं। इस तरह लोग बापू के नाम पर भलीभाँति बच निकलते हैं फिर भी दंभ दिखाते हैं। किन्तु बापू की इस सहनशीलता और अखिल शान्ति का परिणाम क्या होगा यह तो भगवान ही जाने

मैं तेरा अपराधी!

भगवान् की मुझ पर सचमुच अपार कृपा ही है कि बापू को मेरे बारे में और

किसी भी तरह का असन्तोष नहीं है। मैंने विशेष रूप से इस सम्बन्ध में उनसे पूछा तो कहने लगे — 'तेरी तबीयत का ही इतना असन्तोष है कि इस अनशन में कदाचित् भगवान् मुझे उठा ले तो मेरे प्राण इसीलिए अटके रहेंगे कि तुझे स्वस्थ नहीं कर पाया। मेरे बाद तेरा कौन ध्यान रखेगा यह मैं सोच नहीं पाया। तू इतनी कमजोर हो गयी है, इसका दोषी भी आखिर मैं ही हूँ न! मैंने तुझ जैसी १६-१७ वर्ष की लड़की से रोज १८ से २० घण्टे तक काम लिया। मैं तेरी माँ बना हूँ, इसीलिए अकुलाता हूँ। अगर तू थोड़ी-सी सावधान बने तो मुझे बचा सकती है।

मैं स्वयं इतनी शिथिल हो गयी हूँ कि इस समय यही लगता है कि कदाचित् बापू को खो न देना पड़े। मेरे प्रति बापू का प्रेम और विश्वास भी दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। पहले ही मेरी कमजोरी देखी। यद्यपि नव वयस्क में कलकत्ते में बापू को अनशन करते हुए मैंने जीवन में पहली ही बार देखा फिर भी उस समय मेरा मन इतना दुर्बल नहीं हुआ। लेकिन इस बार कुछ विचित्रता का ही अनुभव करती हूँ। भगवान् से मैं हृदय से यही प्रार्थना करती हूँ कि प्रभो! भले ही मुझसे कुछ भी न बन पड़े पर इतना अवश्य हो कि मैं जाने-अनजाने कभी बापू को वेदना न मानूँ। बापू को इतने दुःख में मैं और दुःखी न बनाऊँ, इतनी शक्ति मुझे दे!

बापू के आशीर्वाद

बापू की आत्म-वेदना की सीमा ही नहीं है। सचमुच आज महादेव काका याद आ रहे हैं। बापू और नेताओं के बीच कड़ी के रूप में अब कोई नहीं रहा। बापू और बापू के अपने कहलानेवाले निजी मित्रों तथा लोगों के बीच भी कोई कड़ी के रूप में नहीं। भगवान् ने क्या सोचा होगा यह तो वही जानें। मैं तो यही चाहती हूँ कि मेरे हाथों ऐसा कोई भी अनुचित काम न हो और न ऐसी कोई अनुचित करना ही पड़े।

सुबह की बापू की यह गम्भीरता और साथ ही मेरे प्रति अति वात्सल्य एवं अति विश्वासभरी उनकी वाणी सुनने के बाद पू. देवदास काका का दिया हुआ वह पत्र बापू को देने की मेरी हिम्मत ही न हो पायी। इतना रोना आ गया कि कदाचित्

ही कभी ऐसी रोयी होऊँ। यह जागरी रात १२॥ बजे लिख रही हूँ। लेकिन बापू का स्नेहभरा मीठा हाथ मेरी पीठ सहला रहा है और जो कुछ कह रहा है, उससे मैं कुछ अलग ही भविष्य का अनुभव कर रही हूँ। उसकी आवाज मेरे कानों में गूँज रही है।

सोने से पहले बापू ने मुझे एक चिट्ठी भी दी।

चि. मनुड़ी

अगर तू हिम्मत रखने लगे तो मेरा रंग ही बदल जाय। तुझमें अनन्य सामर्थ्य है, पर वह पूरी तरह खिल नहीं सकता। इसका कारण तेरा संकोच ही है। तू विचार कर—यह संकोच तुझे मार डालता है। 'मेरे माँ-बाप को अच्छा लगता है, इसलिए यहाँ आना मेरा धर्म है'—इस तरह बापू के साथ यहाँ भी रहने की हिम्मत होनी चाहिए। इतना अवश्य मंजूर करना चाहिए कि मैंने इसे निश्चित करना नहीं सीखा। इसलिए इसके पास जाऊँ, तो इसकी मर्जी में आवे वह और उतना खाऊँ। फिर मुझे आदत पड़ जायगी—यह बेधड़क सभी से कहना चाहिए। ऐसा करने पर ही तेरे भीतर के गुण बाहर व्यक्त हो सकते हैं और खिल सकते हैं। तू जानती नहीं कि मैं तेरे बीमार रहने से कितना दुःखी होता हूँ। तेरा मुझ पर [illegible] का कितना अटल विश्वास है। इसलिए अगर तू ठीक-ठीक नहीं सुधरती, तो हृदय और शरीर से मुझे बहुत दुःख होगा।

११-१-४८ बापू के आशीर्वाद।"

यह चिट्ठी पढ़कर मैं एक कोने में जा बैठी और कोई देख न पाये इस तरह फूट-फूट कर रोयी। इस वात्सल्य भरे प्रेम से सँभालने का बदला मैं कैसे चुका सकूँगी! अपनी इतनी सारी बड़ी कसौटी में भी बापू मुझे नहीं भूले!

बापू के अनशन

बापू के जीवन में यह १५ वीं बार का अनशन है।

१. सर्वप्रथम १९१३ में दक्षिण अफ्रीका के फिनिक्स-आश्रम में [illegible]के नैतिक पतन के लिए उन्होंने ७ दिनों का अनशन किया था।

२. सन् १९१४ में दूसरी बार फिनिक्स-आश्रम में [illegible] ने बापू को दिये हुए वचन

का और असा और बापू का विश्वासघात किया। इसलिए उन्होंने १४ दिनों का अनशन किया।

३ सन् १९१८ में अहमदाबाद में मजदूर-हड़ताल के समय ३ दिनों का अनशन किया।

४ सन् १९२१ में जब प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आये थे तो उनके स्वागत और बहिष्कार को लेकर सहयोग-असहयोग का झगड़ा रोकने के लिए ४ दिनों का अनशन किया।

५. सन् १९२४ में हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष होने पर प्रायश्चित, प्रार्थना और आत्मशान्ति के लिए दिल्ली में २१ दिनों का अनशन किया।

६ सन् १९२४ में साबरमती-आश्रम में विद्यार्थियों के चारित्रिक दोष के लिए १ सप्ताह का अनशन किया।

७ सन् १९३२ में अप्पासाहब पटवर्धन ने यरवदा के सेण्ट्रल जेल में भंगी का काम करने की माँग की। जेल-अधिकारियों ने इसका विरोध किया। फलतः उन्होंने आमरण अनशन शुरू कर दिया। उनकी सहानुभूति में बा ने १ दिनों का अनशन किया।

८ सन् १९३२ में हरिजनों के लिए आमरण अनशन का ऐलान किया। लेकिन सप्ताहभर में उसका निर्णय हो जाने से उसे रोक दिया।

९ सन् १९३३ में यरवदा-जेल में २१ दिनों तक हरिजन-आन्दोलन और साथियों की आत्मशुद्धि के लिए अनशन किया। लेकिन बापू को जेल से रिहा कर देने के कारण पूना की पर्णकुटी में वह उपवास पूरे किये गये।

१० व्यक्तिगत सत्याग्रह करने के कारण बापू को यरवदा-जेल में रखा गया। वहाँ उन्होंने केवल 'हरिजन' कार्य ही करने की अनुमति माँगी। पर सरकार ने अनुमति नहीं दी; इसलिए अनशन शुरू किया और ७ वें ही दिन बापू को छोड़ दिया गया।

११ सन् १९३४ में हरिजन-यात्रा के समय अजमेर की एक आम सभा में एक सनातनी ने हरिजन को मारा। इसके प्रायश्चित्तस्वरूप सेवाग्राम-आश्रम में ७ दिनों का अनशन किया।

१२ राजकोट-सत्याग्रह के समय (सन् १९३९ में) अनशन किया। लेकिन वाइसराय की सफल मध्यस्थता के कारण ४ दिनों में यह अनशन समाप्त हो गया।

१३ सन् १९४२ में आगा खाँ महल में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समय उचित न्याय पाने के लिए २१ दिनों का अनशन किया।

१४ हिन्दू-मुसलिम एकता के लिए कलकत्ते के बेलियाघाट में ७३ घन्टे का अनशन किया। और

१५ सन् १९४८ में दिल्ली में दिलों दोस्ती करने या मरने के संकल्प के साथ यह अनशन होने जा रहा है।

शान्तिपर्यन्त अनशन

उसके समय सोरावजी रुस्तमजी प्यारेलालजी और ब्रजकृष्णजी के भाभी भाई तथा मोहनलाल अमरसी साथ थे। उससे पूर्व बापू ने रेहाना तैयबजी की एक पुस्तक की प्रस्तावना लिखकर दी।

उसी समय एक व्यक्ति ने कहा। "अगर इस उपवास में मृत्यु हो जायगी तो यूनियन में एक भी मुसलमान जीता नहीं रह सकता।

इस पर बापू ने कहा 'आपमें से किसीकी सलाह या अनुमति काम नहीं आ सकती। क्यों? इसका जवाब मैं नहीं दे सकता। जवाहरलाल पर तो मैं यकीन करता हूँ। उसने इस बारे में मेरे साथ जरा भी सलाह नहीं की। लेकिन अब सरदार मान जायें तो ठीक। जवाहर को न हर्ष है और न शोक ही।

साथ में राजकुमारी बहन आयी हुई थीं। मालूम पड़ता है कि इन्हें बापू का यह काम उचित मालूम पड़ता है। वे यह भी मानती हैं कि इससे देश का काम ही होगा। ५५ करोड़ रुपये पाकिस्तान को देने के बारे में बातें हुईं। सरदार दादा को समझाना होगा। इस बीच बाहर तो बड़े पत्रकार और फोटोग्राफर, कमरे का वैद्यराज भगत तथा अन्य अनेक लोग आये हुए थे।

बापू ने अनशन के पूर्व का अपना अन्तिम भोजन इस प्रकार किया। दो रोटियाँ आठ औंस साग १६ औंस दूध तीन टुकड़े ग्रेप फ्रूट। ठीक ११ बजे बापू ने अन्तिम भोजन समाप्त किया और प्रार्थना शुरू हो गयी।

भलीभाँति जानते हैं और वे भी आपको भलीभाँति जानते हैं। दुनिया को बतलाइये कि काठियावाड़ के राजा और दीवानों के बीच के ये कौटुम्बिक सम्बन्ध दोनों ने परस्पर किस तरह निभाये हैं। मैं वह दिन देखने के लिए आतुर हूँ कि सभी राजा लोग स्वेच्छा से भावनगर के महाराज की तरह प्रजा को अपना सर्वस्व समर्पण कर उसकी सेवा के लिए खड़े हो जायँ और रामराज्य की मेरी कल्पना भारत के इस कोने में साकार करने का यत्न करें। तब मुझे काठियावाड़ और भावनगर में अपने घर ले जाइये। नहीं तो मुझसे आया ही नहीं जा सकता।

महुआ के लिए आग्रह

'वहाँ से तरवा किनारे एक सुन्दर गाँव है। आपके पिता के समय मैं वहाँ गया था। वहाँ नरसिंह मेहता को भगवान् का साक्षात्कार हुआ ऐसा माना जाता है। बापू को गाँव का नाम याद नहीं आ रहा था इसलिए वे जरा रुक गये। इस बीच पत्नी साहब ने कहा: गोपनाथ्! बापू ने कहा: "हाँ-हाँ! मुझे वह बहुत ही पसन्द पड़ा था। उस समय मेरे साथ महादेव भी था। आपके पिताजी ने चरखा कातते हुए भजन भी सुनाया।

मैंने बीच में ही कहा: 'तब तो बापू! मेरा महुआ बिलकुल पास है।' पत्नी साहब ने कहा: यह लड़की मुझे बताती है और महुआ-महुआ करती है। गन्दा से गन्दा गाँव है वह। मैंने कहा: "आपके कारण ही न? उन्होंने कहा: 'हमने तो कब से वहाँ की म्युनिसिपैलिटी को वह सौंप दिया है। प्रजा के म्युनिसिपैलिटी के अभ्यास में ही कुछ कम न हो तो क्या हो सकता है?' लेकिन भावनगर की बात चलती है तो मेरा महुआ पड़ा ही रह जाता है।" "अच्छा! बापू को पहले भावनगर तो आने दे फिर तेरे महुआ को देखा जायगा। पत्नी साहब ने अपनी स्वाभाविक दृष्टि में कहा।

बापू हँस पड़े। लेकिन उन्होंने बापू को प्रणाम कर विदा लेने के लिए हाथ जोड़कर नमस्कार किया। आँखों से आँसुओं की धाराएँ निकलीं। मेरे भी रोंगटे खड़े हो गये।

अनुभव से लाभ उठायें!

उनके जाने के बाद बापू ने कहा "उपवास के कारण मैं जरा निराश हो गय

रामराज्य स्थापित करें !

कातने के बाद पटेलसाहब आये। वे बापू के चन्द ऐतिहासिक फोटो पर उनके हस्ताक्षर कराने के लिए मुझे दे गये थे। हर फोटो पर 'बापू के आशीर्वाद' इस तरह हस्ताक्षर कराये गये। वे मुझे दो हजार रुपये इस शर्त पर दे गये कि मैं किसी देनेवाले का नाम न बताऊँ और बापू की मर्जी के अनुसार उसका उपयोग करूँ। लेकिन मैंने उन रुपयों को उनके सामने ही बापू को सौंप दिया। मुझसे कहने लगे : "तुम पर मेरा हक नहीं और मुझ पर तेरा हक है।" यद्यपि यह भाव समझने में मुझे जरा देर लगी लेकिन मैं हँस पड़ी।

वे कल भावनगर जा रहे हैं। बापू ने तो उन्हें इस उत्सव में भाग लेने की आग्रह सलाह दी।

आज से बापू का उपवास खत्म हो रहा है। वातावरण विषाद से भरा हुआ है। कल क्या होगा कहा नहीं जा सकता। ऐसे वातावरण में उन्हें जाना पसन्द नहीं आया। फिर भावनगर के महाराज साहब और दीवान साहब की प्रबल इच्छा थी कि इस अवसर पर बापू भी उपस्थित हों। उनका गला भर आया और उन्होंने बापू से कहा : "आप अपनी अनुकूलता देख अगर मेरे यहाँ के ५ मानसिंह रावबाले मकान में पधारें तो मुझे बड़ी खुशी होगी।"

बापू ने कहा : "जहाँ तक मुझे स्मरण है, मैं वहाँ आ ही गया हूँ। लेकिन अब तो दिल्ली में करना या मरना है। यदि कुछ होगा तो यहीं से मैं तो मुक्त ही हूँ न ! फिर तो भावनगर मैं आपके यहाँ ही आऊँगा। अगर यहाँ कहीं हुआ होता और शान्ति होती तो इस अवसर पर मैं अवश्य ही आता। लेकिन अपनी सभी इच्छाएँ पूर्ण थोड़े ही होती हैं ! अब मुझे लगता है कि इसका कुछ परिणाम अवश्य होगा। ईश्वर को मुझसे काम लेना हो तो वह लोगों को अवश्य सद्बुद्धि देगा। अथवा यदि मेरा काम पूरा हो गया हो तो मुझे उठा लेगा तो भी मेरा कल्याण ही है। इस बीच आपको मुझे बहुत काम देना है और उसमें आप अपनी पूरी मदद दीजिये।

"भावनगर का राज्य प्रजा को सौंपने के बाद काठियावाड़ के अन्य राजाओं को इसी मार्ग पर आने की सूचना करें। काठियावाड़ के राजाओं को आप

भलीभाँति जानते हैं और वे भी आपको भलीभाँति जानते हैं। दुनिया को बतलाइये कि काठियावाड़ के राजा और दीवानों के बीच के ये कौटुम्बिक सम्बन्ध दोनों में परस्पर किस तरह निभाते हैं। मैं वह दिन देखने के लिए आतुर हूँ कि सभी राजा लोग स्वेच्छा से भावनगर के महाराज की तरह प्रजा को अपना सर्वस्व समर्पण कर उसकी सेवा के लिए खड़े हो जायें और रामराज्य की मेरी कल्पना भारत के इस कोने में साकार करने का यत्न करें। तब मुझे काठियावाड़ और भावनगर में अपने घर ले जाइये। नहीं तो मुझसे आया ही नहीं जा सकता।

महुआ के लिए आग्रह

'यहाँ से दरिया किनारे एक सुन्दर गाँव है। आपके पिता के समय में वहाँ गया था। वहाँ नरसिंह मेहता को भगवान् का साक्षात्कार हुआ ऐसा माना जाता है।' बापू को गाँव का नाम याद नहीं आ रहा था इसलिए वे जरा रुक गये। इस बीच पट्टणी साहब ने कहा : 'गोपनाथ ?' बापू ने कहा "हाँ-हाँ! मुझे वह बहुत ही पसन्द पड़ा था। उस समय मेरे साथ महादेव भी था। आपके पिताजी ने करताल बजाते हुए भजन भी सुनाया।

मैंने बीच में ही कहा 'तब तो बापू! मेरा महुआ बिलकुल पास है।' पट्टणी साहब ने कहा 'यह लड़की मुझे बतलाती है और महुआ-महुआ करती है। कश्मा से अच्छा गाँव है यह!" मैंने कहा 'आपके चरण हों न ?' उन्होंने कहा : "हमने तो कब से वहाँ की म्युनिसिपैलिटी को यह सौंप दिया है। प्रजा के म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष में ही कुछ दम न हो तो क्या हो सकता है?' लेकिन भावनगर की बात चलती है तो मेरा महुआ गायब ही हो जाता है। पगली! बापू को पहले भावनगर तो आने दे, फिर तेरे महुआ का दौरा जमेगा। पट्टणी साहब ने अपनी व्यावहारिक शैली में कहा।

बापू हँस पड़े। लेकिन उन्होंने बापू को प्रणाम कर बिदा लेने के लिए हाथ जोड़कर नमस्कार किया। आँखों से आँसुओं की धाराएँ निकलीं। मेरे भी रोंगटे खड़े हो गये।

अनुभव से लाभ उठावें।

इसके जाने के बाद बापू ने कहा। "राजाओं के कारण से मैं निराश हो गया

है। उन्होंने कहा है और तेरी भी इच्छा हो तो एक दिन के लिए जाना हो तो चली जा। दिल बहल ही जायगा। मैंने इनकार कर दिया। अलबत्ता खुद न पूछा होता तो कुछ सोचती।

बापू ने कहा : "मेरे बदले तुझे देखकर भी वे प्रसन्न हो जायेंगे। देख वे भी तो जा रहे हैं न? क्योंकि मेरी सलाह मानना इन्हें अच्छा लगता है। नहीं तो इनका स्वभाव भी कम जिद्दी नहीं है। फिर भी मेरी बातें खूब मानते हैं। देख तो सही कि वे तुझ पर अपनी औरस लड़की से भी अधिक ममता रखती हैं, क्योंकि तू मेरी सेवा करती है। सामने मेरी कही हुई बात को इच्छा या अनिच्छा से भी मानती है। उन्हें मेरे प्रति पूर्ण श्रद्धा है कि बापू की सलाह मानने में मेरा कल्याण ही हो सकता है। 'यही सोचकर वे मेरी सलाह मान लेते होंगे।

मैंने पूछा : 'ये दीवान का पद छोड़ देंगे तो फिर क्या करेंगे?'

बापू ने कहा : 'देख अगर मैं इस उपवास से जीवित रहा तो उनसे बहुत-सा काम लेनेवाला हूँ। ये कुशल व्यक्ति हैं। चाहे काम दें, सिर्फ उनसे काम लेने की योग्यता चाहिए। जिसे काम लेना आता हो उसी को ये काम देते हैं, दूसरों को नहीं। इसलिए मैं तो इनके अनुभवों से काम उठाऊँगा ही। मैं मानता हूँ कि अगर हम ऐसे अनुभवी आदमी के सामने पूर्वग्रह रखकर उनसे काम न उठायें तो ठोकर खायेंगे। तुमने देख ही लिया कि मैंने बलवन्त राय को खास सूचना दी है और मनुभाई से भी कहा है कि इनके सुझाव एवं अनुभवों से काम उठाने में कभी मत चूकिये। ममता अवश्य रखनी चाहिए। देखें, अब क्या होता है!"

बापू को अभी आज कुछ थकान या कमजोरी मालूम पड़ती हो ऐसा नहीं लगता। वे कहते हैं : 'मैं रोज की अपेक्षा आज अधिक स्फूर्ति का अनुभव कर रहा हूँ। कारण मानसिक बोझ हल्का हो गया है।

पाँचवाँ दिन

नियमानुसार बापू प्रार्थना-सभा में बड़ी ही स्फूर्ति से गये। उन्होंने आरम्भ में कहा : 'मुझे जो कुछ कहना होगा उसे १५ मिनट में ही पूरा कर देने की उम्मीद रखता हूँ। लेकिन आज कहने के लिए इतना अधिक है कि कदाचित कुछ मिनट और भी लग जायें।

आज तो उपवास का पहला ही दिन है और फिर सुबह खाया भी है। ९॥ बजे खाना शुरू किया पर बीच में इतने अधिक लोग आ गये कि मैं अपना भोजन ठीक ११ बजे पूरा कर पाया। सम्भव है कि कदाचित् कल से मैं प्रार्थना स्थान तक चलकर न आ सकूँ। अगर आप सबकी इच्छा हो कि प्रार्थना होनी ही चाहिए, तो आप सभी आ सकते हैं। इन लड़कियों में से सभी या एक आध कोई यहाँ प्रार्थना करायेगी।

कल मैंने बहावलपुर के शरणार्थियों के बारे में कहा। सरदार के मंत्री श्री शंकर अपनी इच्छा से मुझसे मिलने नहीं आ सकते इसमें कुछ गलतफहमी हो गयी है। मणिबेन ने इस बारे में बताया कि वे दो बजे नहीं आ सकते और छः बजे आ सकते हैं। यह मुझे ठीक समझ में नहीं आया इसीलिए ऐसा घोटाला हुआ। लेकिन यह कोई बड़े महत्त्व की बात नहीं है। मैं यह आशा ही नहीं करता कि सरकारी नौकर गैर-सरकारी व्यक्तियों के यहाँ चक्कर काटते रहें। लेकिन इन लोगों को मेरी इमेजिन्ड पसन्द नहीं आयी इसलिए आज इसका खुलासा करना मुझे आवश्यक मालूम पड़ा।

अपना अपराध स्वीकार करें!

अस्तु, अब मुख्य बात पर आयें। आज दिनभर में मेरे पास अनगिनत लोग आ गये। सभी एक ही सवाल पूछते हैं कि यह अनशन किसके खिलाफ है? यह आक्षेप किस पर है? लेकिन आक्षेप करनेवाला मैं कौन होता हूँ? और मान लीजिये इस अनशन से मैं जीवित न रहा तो वह आक्षेप मुझ पर ही है, यही समझिये। अगर मैं नालायक साबित होऊँ, तो ईश्वर मुझे जीने ही नहीं देगा। आज हिन्दू अपने धर्म का पालन नहीं करते इसका मुझे बहुत दुःख है, क्योंकि मैं एक आदर्श हिन्दू हूँ। आज हिन्दू और सिख यह हठ रखते हैं कि यहाँ से एक-एक मुसलमान को खदेड़ दिया जाय। लेकिन यह अच्छी नहीं है। इस तरह तो वे अपने धर्म और अपनी जाति को अधर्मी बना रहे हैं। यह सच है कि मैं अल्पसंख्यकों का पक्ष लेता हूँ; लेकिन निरपराध लोगों को नेताओं या समुदों के निर्णयों की बलि होना पड़े और उन्हें निराधार बनाकर रखा जाय तो उन सबको उचित मदद करना मानवमात्र का कर्तव्य ही है। इसलिए अब पूछें तो यह उपवास

मेरी आत्मशुद्धि के लिए ही है। भगवान् सभीको शुद्ध करें तथा सम्मति दें इसलिए है। आगे सभीको शुद्ध होना है। यह नहीं कि हिन्दू, सिख शुद्ध हों और मुसलमान नहीं। मुसलमानों को भी सर्वांगशुद्ध होना चाहिए। यहाँ के मुसलमान भी सर्वथा निर्दोष नहीं हैं। इस तरह सभीको अपना-अपना अपराध स्वीकार करना ही चाहिए। मैंने कभी भी किसीकी खुशामद के लिए अनशन नहीं किये। एकमात्र भगवान् की ही खुशामद करता हूँ।

'जब भारत का विभाजन नहीं हुआ था उस समय भी मुसलिम लीग ने देश के टुकड़े कराने के सिवा दिल के टुकड़े करवाने में भी कम हिस्सा नहीं लिया। मुसलिम लीग जैसी संस्था इस अमानुष कृत्य के लिए अत्यन्त और गम्भीर जिम्मेदार है। लेकिन अन्य मुसलमान हिन्दू और सिखों ने भी भूलें तो की ही हैं। अब इन तीनों के दिलों में फिर दोस्ती करनी हो तो सबको अपने-अपने दिल साफ करने चाहिए।

मुसलमान भाइयों के प्रति

अब दो शब्द अपने मुसलमान भाइयों से अदब के साथ कहना चाहता हूँ। यह अनशन उनके नाम से शुरू हुआ है, इसलिए उनकी जिम्मेदारी बढ़ गयी है। उन्हें कम-से-कम इतना तो निश्चय करना ही चाहिए कि हम हिन्दू और सिखों के दोस्त बनकर रहेंगे। जो यूनियन में रहना चाहते हों वे यूनियन के प्रति वफादार रहें। वे लोग कहते तो हैं कि हम वफादार रहेंगे पर आचरण वैसा नहीं करते। मैं तो कहूँगा कि कम बोलो पर करके ज्यादा दिखाओ।

"बहुत से मुसलिम भाई मुझसे कहते हैं कि जवाहरलालजी अच्छे हैं, पर सरदार मुसलमानों के साथ सहानुभूतिपूर्ण बर्ताव नहीं करते। इससे मैं स्तब्ध ही हो जाता हूँ। ऐसी बातें मुसलमान करें तो कैसे चलेगा? सरदार और जवाहर मिलकर ही सारी हुकूमत चलाते हैं। ये सभी आपके सेवक ही हैं और सभीकी मंत्रिमण्डल जैसी पूरी ही जिम्मेदारी है। सरदार ने सचमुच ऐसी कुछ भूलें की हों तो निडर होकर मुझे बतलाइये। मैं अपनी से जो कुछ बन पड़ेगा देख लूँगा। लेकिन सिर्फ अफवाहों से इस तरह पूर्वग्रह नहीं बनाया जा सकता। मैं तो अपना न्याय अनशन ही ढंग से दूँगा। मैं कहूँगा कि सरदार, जवाहर गांधी या मुसलिम लीग किसीके भी भरोसे न रहो, सिर्फ ईश्वर के भरोसे ही रहना हितावह होगा।

"मैं जानता हूँ कि कदाचित् सरदार की जीभ पर काँटा हो, कड़वाहट हो, पर उनके हृदय में काँटा या कड़वाहट बिलकुल नहीं है। हाँ, वे सच्ची बातें किसीसे भी कहने में नहीं डरते और न कहने से चूकते ही हैं। उन्होंने लखनऊ में कहा है कि मुसलमानों को भारत में रहना हो तो खुशी से रह ही सकते हैं। लेकिन सभी मुसलमानों का उन्हें कोई भरोसा नहीं। इसमें उन्होंने कुछ अयोग्य कहा, ऐसा मैं नहीं मानता। आदमी को जैसा मालूम हो वैसा ही कहना चाहिए। और सन्देह रखने का उन्हें अधिकार है ही। लेकिन उस सन्देह का मुसलमानों को गलत अर्थ नहीं करना चाहिए। यों मैं तो यह माननेवाला हूँ कि सन्देह रखना ही नहीं चाहिए और अपराधी सिद्ध हुआ तो उसे योग्य दण्ड देना चाहिए। लेकिन सरदार तो सरदार ही हैं। उनके सिर पर बड़ी जिम्मेदारी है।

'एकला चलो'

"आज अभी 'एकलो चलो रे' 'एकला चलो' भजन गाया गया। यह भजन मुझे बहुत ही प्रिय है। नोआखाली की मेरी यात्रा के बीच रोज यह गाया जाता था। इसमें कहा गया है कि तेरे साथ कोई भी न आवे तो भी तू अपने रास्ते अकेले ही चला जा। ईश्वर तो तेरे साथ है ही। इसलिए हिन्दू-सिख अगर यहाँ के अल्पसंख्यकों को सँभाल न सकें, तो फिर मुझे जीकर ही क्या करना है? मैं तो कहूँगा कि चाहे पाकिस्तान में सभी हिन्दू-सिख कट जावें तो भी यहाँ एक छोटा-सा मुसलिम बच्चा भी सुरक्षित रहना चाहिए। जो कमजोर हैं, निराधार हैं, उन्हें मारना बुजदिली ही है।

अल्पसंख्यक अरक्षित

"दिल्ली की आज ही कमजोरी है। मेरी शर्त इतनी ही है कि भारत के चाहे जिस भाग में या पाकिस्तान में चाहे जितनी मार-काट मचे, तो भी दिल्ली अपने धर्म से न डिगे। दिल्ली की शान्ति जैसी है वैसी ही बरकरार रहे। दिल्ली को अपनी आबरू रखे और [illegible] जिसे दिल्ली का [illegible] बन सकता है, चाहे जहाँ आदमी भी घूम-फिर [illegible]। आज भी मुसलमानों [illegible] जैसे को यहाँ दिल्ली [illegible] में भी खतरा देख रहा है [illegible] और [illegible] ही [illegible] ही [illegible] है। अगर उनका अपमान होता है तो उसमें मैं अपना ही अपमान समझता हूँ। इसलिए

यहाँ नहीं आ सकता। लेकिन मुझे इतना अवश्य कहना पड़ेगा कि वे चाहे जैसे हों पर कलकत्ते में मुझे उनका पूरा-पूरा साथ था। यहाँ तो उन्होंने—जितने मुसलमान हिन्दुओं के मकान दबाकर बैठे थे—उन सबको निकाल बाहर किया और उनके घर हिन्दुओं को सौंप दिये। सभी कौमें यानी हम सब भारतीय अन्तर्मुख बनें, सच्चे भारतीय बनें और हैवानी को मिटाकर आदमियत कायम करें। अगर ऐसा नहीं होता तो कम-से-कम अब मेरा जीना ही व्यर्थ है।

बापू ने आज से व्याख्यान बन्द कर दिया। प्रवचन देने के बाद पंडितजी के साथ बहुत-सी बातें कीं। बापू का वजन १११ पौण्ड हुआ।

आज की बापू की शारीरिक स्थिति इस प्रकार रही : दिन में ११। बजे गरम सादा पानी। फिर पाखाने गये। फिर १२ औंस मिश्री लेकर सो गये। दो बजे ८॥ औंस गरम सादा पानी। ४ बजे ८ औंस पानी और फिर कताई। प्रार्थना के बाद गरम सादा ८ औंस पानी। रात ९ बजे सोने की तैयारी। ९॥ बजे सभी अलग-अलग हो गये। आज तो परिचित-अपरिचितों की मुलाकातों की सीमा ही नहीं रही।

प्रार्थना के बाद हम लोग बिड़ला-मन्दिर गये। आज कुल पानी १६॥ से ४ औंस तक पेट में गया पर निकला कम ही। गत उपवास से ही 'किडनी (गुर्दा) खराब है। देखें इस बार क्या होता है! संभव है, इसी कारण वजन में अन्तर नहीं पड़ा। रात में सोते समय आवाज में और चेहरे पर सर्वत्र काफी कमजोरी मालूम पड़ रही है। यों आज परिश्रम भी काफी हुआ है।

अब यह डायरी पूरी कर रही हूँ। किन्तु सोने से पूर्व भगवान् से यही हार्दिक प्रार्थना करती हूँ कि हमारे इन बापू की आखिरी कसौटी पर मत कसो जो करोड़ों के आश्रय हैं, देश के बालक, स्त्री-पुरुष, युवक, गरीब अमीर राजा से रंक तक सभी की मुश्किलें मिटानेवाला अस्सी बरस का बुड्ढा एकमात्र आधार है और जो उनका आश्वासन-स्थान है!

● ● ●

अनशन का स्पष्टीकरण

: १५ :

बिड़ला-भवन नयी दिल्ली
१४ १ ४८

पिता-पुत्र का अन्तिम पत्र

रात में दो बार मैं जग पड़ी। यों बहुत सोयी ही नहीं और नींद में भी बापू की चिन्ता तो थी ही। सही देख है इसलिए अधिक चिन्ता हो रही है। रात तो एक तरह से ठीक ही बीती। बापू ने अपने बल पर ही रोज की तरह खड़े होकर स्नान किया। मैंने पूछा : "बापू, कमजोरी तो नहीं मालूम पड़ती?" बापू ने कहा : 'आज ऐसा नहीं मालूम पड़ता कि अनशन कर रहा हूँ।' फिर उन्होंने उत्तम के साथ बातें कीं 'तुझे अपना कार्यक्रम स्वयं ही बना लेना चाहिए। अभी मैं तुझ पर मुग्ध हो सकूँ ऐसा नहीं दीखता।'

प्रार्थना के बाद मैं बापू को भीतर ले गयी। रात का देवदास काका का पत्र सुना पड़ा। उत्तर दिया। पिता-पुत्र के बीच असंख्य पत्र-व्यवहार हुआ होगा लेकिन यह पत्र और यह उत्तर दोनों के जीवन में अन्तिम ही सिद्ध हुए। देवदास काका का पत्र और बापू का जवाब दोनों अनुपम हैं।

ता १५ १ ४८ सुबह ६। बजे

परमपूज्य पिताजी की पवित्र सेवा में

आपका अनशन बड़ी उतावली में हो गया है। अभी बहुत से सुधार हो सकते थे। अनशन के औचित्य के विषय में मुझे बहुत कुछ कहना था; लेकिन मुझे तो आपने सूचना भी दी ही नहीं और न किसीने यह खबर देने का कष्ट ही उठाया। मैं बहुत जल्दी आ सकता और मुझे भी कहना था कहता। किन्तु अभी ही चि. मनु ने मुझे यह खबर दी। मेरी मुख्य चिन्ता और दलील यह है कि आखिर आप अधीरता के वश हो गये। यह काम ही धैर्य का था। आपने दिल्ली आने के बाद जितनी अधिक सफलता सिर्फ धैर्यपूर्वक मेहनत करके पायी है—इसका आपको खयाल नहीं। आपकी मेहनत से हजारों बच गये हैं और लाखों बचेंगे। लेकिन आप एकाएक धै-

को बैठे हैं। आप जीते हुए जो कर सकते हैं, वह इस बारे में मरकर नहीं कर सकते। यही एक विचार मन में रखकर इस समय अनशन छोड़िये यही प्रार्थना है।

—देवदास के प्रणाम।

१३-१-४८ मकर संक्रान्ति

चि. देवदास

तेरा पत्र सुबह प्रार्थना के बाद पढ़ गया। कल तूने जो थोड़ी-सी बातें कीं उन्हें भी समझ गया। मेरा वक्तव्य तू जिस दृष्टि से उतावली में दिया हुआ मानता है, वैसा नहीं है। हाँ मेरी अपनी दृष्टि से उतावलीभरा अवश्य है। कारण उसके देने में साधारणतः मुझे जितना समय लगना चाहिए, उससे कम समय लगा। उससे पहले चार दिनों का विचार-मंथन था और प्रार्थना थी। यह वक्तव्य मंथन और प्रार्थना के फलस्वरूप था। इसलिए उसे मेरी भाषा या किसी भी व्याकरण की भाषा में 'उतावलीपूर्ण' कहा ही नहीं जा सकता। ऐसे वक्तव्य के विचार को भी भाषा सुधारने या उसमें शब्दमात्र के सुधार की गुंजाइश जरूर थी और तेरे सुझाने के साथ ही मैंने सुधार भी किया। उपवास की योग्यता के बारे में तुमसे या और भी किसीसे मैं कुछ सुनना नहीं चाहता था। जो सुन लिया वह मेरे विवेक और धैर्य की ही निशानी है। सूचना तो तुझे पहले ही मिल चुकी थी। तेरी सुन्दर चिन्ता और दलील सर्वथा निरर्थक मानी जायगी। तू मित्र तो अवश्य है और यह भी सच है कि ऊँचे पद पर पहुँच गया है, फिर भी 'पुत्र' तो किसी भी हालत में मिट नहीं सकता। इसलिए तेरी चिन्ता स्वाभाविक मानता हूँ। लेकिन तेरी दलील तेरे छिछले विचारों और अधीरता का ही प्रदर्शन है।

इस कार्य को मैं अपने धैर्य की पराकाष्ठा मानता हूँ। जो धैर्य वर्षों का इन्तजार करे उसे धैर्य माना जाय या मूर्खता? मेरे पिछले कामों के बाद जो परिणाम हुए हों उसके लिए मैं श्रेय नहीं ले सकता। ले लूँ तो वह मोह ही माना जायगा। मेरे परिश्रम से एक या अनेक कर्म हों दुनिया में उसका मूल्य हो ही नहीं सकता। उसका मूल्य तो केवल ईश्वर ही निर्धारित कर सकता है। जिसने सितम्बर के प्रारंभ से आज तक धैर्य रखा उसे 'एकाएक धैर्य खो दिया' यह कहना अज्ञान नहीं तो और क्या कहा जा सकता है? व्यावहारिक दृष्टि से विचार करें तो अब मैं पुरुषार्थ

से हार गया, तभी ईश्वर की गोद में सिर रखा। 'उपवास' का यह अर्थ समझने के लिए तू 'गजेन्द्रमोक्ष' को पढ़ और समझ जो दुनिया का महाकाव्य कहा गया है। तभी तू कदाचित् मेरे कार्य का मूल्य कर सकेगा।

तेरे पत्र का अन्तिम वाक्य तेरे प्रेम का सुन्दर प्रदर्शन है। इस प्रेम का मूल अज्ञान या मोह है। यह मोह सार्वजनिक है, इसलिए यह ज्ञान का स्थान प्राप्त नहीं कर सकता। जहाँ हम जन्म-मरण के प्रश्न को ही हल नहीं कर सकते वहाँ यह कहना कि 'जीकर ही अमुक कार्य हो सकता है' आकाश-कुसुमवत् है। 'जीओ तब तक सीखो' यह अच्छा है, लेकिन इतना अध्याहार समझ लेना चाहिए कि 'यह सीखना ही निष्काम भाव से'। अब शायद तू समझ जायगा या नहीं। तेरी प्रार्थना मानने योग्य नहीं है। इसलिए उपवास जिसने करवाया वह राम ही अगर छुड़वाना हो तो उसे छुड़ा सकेगा। इस बीच में तू और सभी यह समझें और मानें कि 'राम मारेगा तो भी प्रिय है और राम जिलायेगा तो भी श्रेय है।' मुझे तो एक ही प्रार्थना करनी थी कि हे राम उपवास के बीच मेरा मन स्वस्थ रखो जिससे मैं जीने के लालच की उतावली में उपवास न छोड़ बैठूं। विचारपूर्वक लि मनु से लिखवाये इस पत्र को तू संग्रह कर रखना और मौके-मौके इसे पढ़ते रहना।

—बापू के आशीर्वाद।"

गुजराती भाई-बहनों के नाम पत्र

यह चिट्ठी मैं बुधवार की सवेरे पन्न-पन्न लिखवा रहा। आज उपवास का दूसरा दिन है फिर भी अभी चौबीस घंटे नहीं बीते। 'हरिजन' की डाक भेजने का यह अन्तिम दिन है। इसलिए गुजरातियों को दो शब्द लिखना ठीक मानता हूँ।

'इस अनशन को मैं साधारण नहीं मानता। गम्भीर विचारपूर्वक यह शुरू किया गया है। फिर भी उसका प्रेरक विचार नहीं बल्कि विचारों का स्वामी राम कहो या रहमान कहो वही है। यह अनशन किसीके लिए नहीं या सभीके लिए है। इसके पीछे किसी प्रकार का क्रोध नहीं और न रत्तीमात्र उतावली ही है। सभी चीजों का एक मौका होता है। वह मौका चूक जाने के बाद उसके करने का मूल्य ही क्या? इसलिए अब सोचना इतना ही है कि क्या प्रत्येक भारतीय के लिए कुछ करना चिन

है। भारतीय में गुजराती का मर्म और यह गुजराती भाषा में लिखा जा रहा है इसलिए गुजराती बोलनेवाले सभी भारतीयों के लिए है।

"दिल्ली हिन्दुस्तान की राजधानी है। अगर हम हृदय से हिन्दुस्तान के हिन्दू और मुसलमान—ये दो विभाग न मानें यानी हिन्दू और मुसलमान को भेद न मानें—तो अब तक हम हिन्दुस्तान का जो नक्शा जानते आये हैं, आज दिल्ली उसकी राजधानी नहीं हुई है, यद्यपि यह तो सदा से ही भारत की राजधानी रही है। हस्तिनापुर भी यहीं है और इन्द्रप्रस्थ भी यहीं है। उनके खँडहर आज भी पड़े हैं। यही दिल्ली हिन्दुस्तान का हृदय है। इसे हिन्दुओं या सिखों का कहना मूर्खता की पराकाष्ठा है। यह कहने में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है। भले ही आपको यह कठोर मालूम पड़े पर है कुछ सत्य ही। इस पर कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक और कराची से लेकर आसाम के डिब्रूगढ़ तक रहनेवाले और इस प्रदेश को सेवाभाव और प्रेमभाव से अपना बनानेवाले सभी हिन्दू, मुसलमान सिख ईसाई, पारसी और यहूदियों का हक है। इसमें बहुसंख्यकों का ही स्थान है या अल्पसंख्यकों की अवहेलना है—यह कहा ही नहीं जा सकता। जो इसका दुरुपयोग करता है वह बड़ा-से-बड़ा गुनहगार है। इसलिए यहाँ से मुसलमानों को खदेड़नेवाला दिल्ली का पहले नम्बर का दुश्मन है और इसी कारण हिन्दुस्तान का भी। दुर्भाग्य से आज हम इसी स्थिति पर पहुँच रहे हैं।

"इस कुअवसर को टालने के लिए हर भारतीय को भाग लेना चाहिए। वह किस तरह लिया जा सकता है? देखिये अगर हम पंचायत-राज चाहते हों लोकतंत्र स्थापित करना चाहते हों तो हमें मानना होगा कि छोटे-से-छोटा भारतीय बड़े-से-बड़े भारतीय जितना ही हिन्द का राजा है। इसके लिए सभी शुद्ध होना चाहिए और न हों तो बनना चाहिए। वह जैसे शुद्ध हो वैसा ही समान होना चाहिए, जिससे जाति भेद, धर्म-भेद का विचार न बने। वह सबको अपने समान माने और दूसरों को अपने प्रेमपाश में बाँध ले। उसकी दृष्टि में कोई अस्पृश्य न हो और उसके हृदय में मजदूर और महाजन एक समान हों इससे वह करोड़ों मजदूरों की तरह पसीने की रोटी कमाना जानेगा और कलम तथा कुल्हाड़ी को समान मानेगा। यह शुभ अवसर सिद्ध करने के लिए वह खुद भंगी बनेगा। समझदार हो तो अफीम और शराब को छूयेगा ही क्यों? वह सहज ही स्वदेशी व्रत का पालन

करेगा। पत्नी के अतिरिक्त सभी स्त्रियों को अवस्था के अनुसार माता, बहन या लड़की मानेगा। किसी पर कुदृष्टि न रखेगा और मन में भी बुरी भावना न रखेगा। वह अपने समान ही स्त्रियों का हक समझेगा। मौका आने पर स्वयं मरेगा पर दूसरों को कभी न मारेगा और वह सिखों के गुरु जैसा बहादुर होगा। अकेले सवा लाख के सामने खड़ा हो जायगा और एक कदम भी पीछे न हटेगा। ऐसा भारतीय पूछेगा ही नहीं कि मुझे इस युद्ध में क्या भाग लेना चाहिए।

१४-१-'४८ मो० क० गांधी"

अन्याय और पाप का प्रायश्चित्त

आठ बजे बापू चलकर मालिश के टेबुल तक गये। ९ बजे टब में आये। टब में सुशीला बहन ने देश-विदेश से आये हुए तार पत्र सुनाये। सुहरावर्दी की बातें करते हुए बापू ने कहा : "यह आदमी अत्यन्त बुद्धिमान् है। इसे जिन्नासाहब ने तरह-तरह से मन्त्रिमण्डल में या वह जिस सम्मान्य पद को चाहें वहाँ आने के लिए निमन्त्रित किया था। जब उन्होंने मुझसे पूछा तो मैंने एक ही जवाब दिया। 'आपने हिन्दुओं के साथ जो अन्याय और पाप किया है, उसका प्रायश्चित्त लेना हो तो हिन्दुओं का व्यवहार मित्र होना चाहिए और यह मोह छोड़ देना चाहिए।' इसने यह छोड़ भी दिया है। अब मैं इसे पूर्वी बंगाल में भिजवाऊँगा।"

हम मानव बनें

के कसर बापू टब में नाराज हो गये। "एक ही बात दूसरे ढंग से रखी जाय तो बापू अत्यन्त दुःखी हो जाते हैं। बापू की कमजोरी अभी मालूम पड़ रही है। एक बात पर उन्होंने कहा इस कड़वे को भी मैं चाँपता हूँ। यह दंभ या असत्यता अग्नि-परीक्षा में अपने-आप जल जायगी। मैंने इन दोनों को इस तरह का नहीं समझा था। महादेव ने मुझे आगाह तो जरूर किया था, पर अब उसका कुछ फल नहीं। ईश्वर जो कुछ दिखाता है, देख ही लेना चाहिए। आखिर युधिष्ठिर जैसे चक्रवर्ती राजा ने भी जब स्वर्गारोहण किया तो अपनी माता और पत्नी सहित चार-चार भाइयों को गलने (मरते) का दृश्य अपनी आँखों देखा ही।"

इतना समझाते हुए बापू को थकान हो आयी। मैंने उनसे कहा कि आज आप टब में इतना अधिक बोले हैं कि अब न बोलें तो! बापू कहने लगे : "बहुत

बोलने के लिए मेरा प्रयत्न होना ही नहीं चाहिए। लेकिन मैं जो कुछ बोलता हूँ, वह भी मेरी इस अग्नि-परीक्षा और यज्ञ के अविभाज्य अंग के रूप में ही है। अगर मैं तुमसे लेकर सभी मण्डली और बिरला-भवन दिल्ली और उसके द्वारा भारत एवं समस्त मानव-जाति को समझा सकूँ तथा उनके हृदय के द्वार खुल जायें तो कदाचित् ये अमानुष कृत्य होने से रुक जायें। हम लोग आलसी बनें। इसीलिए मैं कहता हूँ।

मैं उस समय चुप ही रह गयी। हम दलील करते हैं, तो बापू समझाने के लिए खूब बोलते हैं। आज तो आवाज बहुत ही धीमी हो गयी है। बापू के मुँह के पास कान लगाने पड़ते हैं। वे उपवास के बीच हजामत भी नहीं बनवाते इसलिए हजामत बनवाते समय पाँच-दस मिनट सोया करते थे, वह भी बन्द हो गया।

मीठी चुटकी

बाथ से निकलकर बाहर धूप में बैठे। सरला को गीता सिखाने के लिए बापू ने मुझसे कहा। १ से १२ तक जवाहरलालजी, मथाई, षण्मुखम् चेट्टी और सरदार दादा (मन्त्रिमण्डल) के साथ बातचीत की। हम लोग मणिबेन के पास बैठे। उन्होंने बापू के बारे में अपनी चिन्ता व्यक्त की। सरदार दादा बहुत ही चिन्ताग्रस्त हो उठे हैं। वे जब तक भावनगर में रहें, तब तक रोज फोन द्वारा बापू की तबीयत का हाल सूचित करने के लिए उन्होंने मुझसे कहा है। कराची में तो बहुत ही आतंक है। १५ आदमी कत्ल हुए। फिर भी कोई राष्ट्रीय मुसलमान कुछ भी नहीं बोलता।

११॥ बजे स्थानीय मौलाना लोग आये। उनके साथ एक हबीब-उल रहमान भी थे जिन्होंने ११ तारीख को बापू से कहा था कि हमें विलायत भेज दीजिये"। बापू ने उनसे मीठी चुटकी लेते हुए, पर बड़े ही गम्भीर होकर कहा : "क्यों आप तो रहते हैं न! मैंने आपके लिए विलायत के टिकट की व्यवस्था कर दी है और मैं कहूँगा कि हिन्दुस्तान के पैदा मुसलमान विलायत जा रहे हैं।

ये भाई तो इस बात के अर्थ पर क्या बोलते! उनमें से एक भाई बोले : आपको दुःख हुआ हो तो मैं अपने शब्द वापस लेता हूँ।"

बापू ने कहा : 'यह तो आप अंग्रेजी राज चला रहे हैं—चला-चलाकर फिर माफी माँगना। आपको यह कहते शर्म आनी चाहिए कि अंग्रेजी हुकूमत अच्छी थी। मानो हम गुलाम थे वह ज्यादा अच्छा था। इसलिए हम फिर अंग्रेजों से अपने ही भाइयों से रक्षा करने के लिए उनकी गुलामी की भिक्षा माँगते हैं—यह कितनी वाहियात बात है।

"लेकिन अब आपके मन में जो भरा है वह दीख पड़ा। आप सोचिये—शुद्ध होकर सच्चे बनिये। अगर ऐसे ही रहेंगे तो भारतीय कब तक सहन करेंगे?' —बापू ने भी खरी-खरी सुना दी।

तीन बजे मिट्टी का प्रयोग किया। उसी समय मृदुला बहन का तार आया कि पाकिस्तान के मुसलमान पूछ रहे हैं कि गांधीजी का अनशन छुड़ाने के लिए हम लोग क्या करें?"

बापू ने मुझसे कहा : "देख अगर फोन आये तो कह देना कि आज के प्रार्थना-प्रवचन में मैं इस बारे में कहूँगा। फिर भी यहाँ के मुसलमानों से जो कहता हूँ, वही उन पर भी लागू है।

दूसरी एक बात पर 'मैं तो ईश्वर का कैदी हूँ। उसने जो अनशन करवाया उसे कर रहा हूँ, जब वह छुड़वायेगा तभी वे समाप्त होंगे। अगर इस कैद से जीवित निकला, तो नया जीवन प्राप्त होगा तब पाकिस्तान जाऊँगा। नहीं तो मृत्यु को ही अपना मित्र मानता हूँ। औसतन आज बापू प्रसन्न हैं और उन्होंने ठीक-ठीक काम किया है। आज मुलाकातों का तो अन्त ही नहीं रहा।

शाम को बापू पैदल प्रार्थना-स्थल तक गये और बोले भी। अन्दर आकर बैठने के बाद कहने लगे : "आज मैं बहुत तरोताजा हूँ।" सुशीला बहन ने पैदल चलकर जाने और बोलने से मना किया था। उसके उत्तर में बापू ने कहा : "मैं तो ईश्वर के ही हाथ में हूँ, और किसीके भी हाथ में नहीं।"

रात में यहाँ किन्हीं दो सिख पंजाबी चिल्लाते हुए आये। बापू को गालियाँ भी दे रहे थे। दिल्ली में इन्हें कहीं काम में लगा दिया जाय तो हो सकता है; लेकिन यह कोई आसान बात नहीं है।

सहानुभूति के तार

आज के प्रवचन में बापू ने कहा : 'हिन्दुस्तान और विदेशों से मेरे पास तारों का ढेर जम गया है। कितने ही तारों में तो मेरे अनशन के निर्णय का स्वागत किया गया है और मुझे ईश्वर की गोद में रखा है। थोड़े-से लोग अनशन तोड़ने के लिए प्रेमपूर्वक दलील कर प्रार्थना करते हैं। तारों का ढेर बढ़ता ही जा रहा है। हर कौम और हर देश से तार आये हैं।

'पहले तो इन सभी भाई-बहनों ने मेरे लिए जो चिन्ता व्यक्त की है, उसके लिए मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ। लाहौर से पाकिस्तान के गण्यमान्य मुसलमान मित्र भी मेरी तबीयत की फिक्र करने के साथ यह भी सूचित करते हैं कि हम लोग इसमें किस तरह मदद कर सकते हैं। इस सूचना से मैं खुश होता हूँ। मेरा यह अनशन तो जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, आत्मशुद्धि के लिए ही है। इसलिए जो लोग इस अनशन के प्रति सहानुभूति दिखलाते हों वे सभी आत्म-शुद्धि करें यही मेरी प्रार्थना है।'

पाकिस्तान के प्रति दो शब्द

"आज तो मैं पाकिस्तान से दो शब्द अदब के साथ कहना चाहता हूँ। पाकिस्तान को मैं अपना मित्र ही मानता हूँ, इसलिए मित्रता के नाते जो सच मालूम पड़े वह मुझे कहना ही चाहिए।

"पाकिस्तान में मुसलमानों ने अपराध किया है और अभी भी वहाँ मारकाट चल रही है। हजारों हिन्दू, सिख कटे जा रहे हैं और अब तो वहाँ कोई हिसाब ही नहीं रह गया है। कितनी ही लड़कियाँ भगायी गयी हैं। पंजाब के गुजरानवाला रेलवे-स्टेशन पर गाड़ी भी लूटी गयी। अगर पाकिस्तान में ऐसा ही चलता रहा तो भारत कब तक सहन करेगा ? और उसके बाद मेरे जैसा एक आदमी अनशन करे या १ साधु भी अनशन करें तो यह निश्चित है कि भारतीय जनता का रोष काबू में नहीं लाया जा सकता। इसलिए पाकिस्तान के मुसलमानों को अब विचार कर सदाचरण करना चाहिए। साथ ही हिन्दू और सिखों को हिम्मत से विश्वास में लाकर उनसे कहना चाहिए कि अब हम आपको जाने न देंगे। अपनी जान-माल लगाकर भी आपकी रक्षा करेंगे। अगर आप ऐसा करेंगे तो पाकिस्तान

सचमुच पाक और पवित्र बनेगा। पाकिस्तान ऐसा पाक होना चाहिए कि जिन्ना साहब की जान-माल जितनी सुरक्षित है पाकिस्तान में रहनेवाले प्रत्येक मानव-मात्र की जान-माल उतनी ही सुरक्षित रहनी चाहिए। ऐसा पाकिस्तान कभी भी नहीं मरेगा। तब पाकिस्तान की माँग को एक पाप के रूप में माना है, उसके विषय में भी मैं अपना खेद सचमुच घोषित कर दूँगा।

सदाचरण, सत्कर्म की माँग

आज तो मैं हिम्मत के साथ कहता हूँ कि पाकिस्तान एक पाप ही है। मैं पाकिस्तान के नेताओं के वेश या भाषण देखना नहीं चाहता। मैं तो माँगता हूँ उनका सदाचरण सत्कर्म! और यही देखने के लिए जीना भी चाहता हूँ। अगर ऐसा होगा तो भारत के लोग अपने-आप सुधर जायेंगे।

"आज मुझे शर्म के साथ कहना पड़ता है कि हम लोग सचमुच पाकिस्तान की बुराइयों की ही नकल कर रहे हैं। अगर इन बुराइयों की जड़ गहरी पहुँचेगी तो भविष्य में भारत का क्या होगा इसकी कल्पना करना ही कठिन है।

ध्येयपूर्ति के लिए मदद की याचना

"बचपन से ही मुझे हिन्दू-मुसलिम एकता का अनुपम शौक रहा है। मेरी जीवन-उषा की यह उत्कण्ठा जीवन-सन्ध्या में पूर्ण होगी तो मैं एक नन्हें बच्चे की तरह नाच उठूँगा और प्रसन्न होऊँगा। १२५ साल जीने की मेरी इच्छा जो अभी मर गयी है, पुनः जाग्रत हो उठेगी। मेरा यह स्वप्न सफल होने पर ही आपको सच्चा स्वराज्य प्राप्त होगा। भले ही पाकिस्तान और भारत भौगोलिक दृष्टि से अलग रहें, पर दिल से एक होंगे तो यह ध्येय आपके और मेरे लिए बड़ा ही आनन्दमय और भव्य है। जब तक यह कार्यरूप में परिणत नहीं होता तब तक किसी प्रसिद्ध चित्रकार के चित्र के नमूने की तरह मुझे मरना भी सन्तोष न देगा। इससे कम सिद्धि के लिए मैं जीना नहीं चाहता और अभी जिन्दा हूँ, तो भी मरा हुआ ही मानिये। इसलिए पाकिस्तान के मेरे मुसलिम मित्र मुझसे जो सलाह माँगते हैं, उनसे कहूँगा कि मेरा यह ध्येय पूरा करने में वे मदद दें।

ईश्वरेच्छा बलीयसी

"सन् १८९६ में मैं एक बार दिल्ली और आगरे का किला देखने गया था,

तो उसके एक दरवाजे पर इस आशय की कविता पढ़ी कि दुनिया में जो कुछ स्वर्ग है तो यह यहीं है। अपना इतना वैभव होते हुए भी यह किला मेरी दृष्टि में स्वर्ग जैसा तो नहीं ही लगा। किन्तु अगर पाकिस्तान इसके योग्य बने और उसके दरवाजे दरवाजे ऐसी कविताएँ लिखी जायें तो सचमुच ही मुझे अत्यधिक सन्तोष होगा भले ही ऐसा स्वर्ग भारत में हो या पाकिस्तान में। इस स्वर्ग में कोई गरीब न होगा कोई पूँजीपति न होगा। कोई करोड़ों का करोड़पति न होगा तो कोई आधा-पेट काम करनेवाला मजदूर भी न होगा। सबको समान और पूरा कमाई की रोटी खाने को मिलेगी। स्त्री और पुरुष समान हक और समान रहन-सहन से रहेंगे और अपनी स्त्री को छोड़ सभी स्त्रियाँ अपनी माँ बहन या लड़कियाँ होंगी। ऐसे देश में अस्पृश्यता नहीं रहेगी। सर्वधर्म समभाव भरपूर रहेगा। जो कोई मेरी इस स्वप्न कल्पना को पढ़े या सुने वह—इस काल्पनिक आनन्दमयी मेरी कल्पना में आज मैं बह गया—इसके लिए मुझे माफ करेगा। लेकिन जो लोग 'ऐसा होगा या नहीं' ऐसी शंका रखते हों उन सबको मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मेरा अनशन जल्दी टूटे इसका मुझे जरा भी उत्साह नहीं। मुझ जैसे बेवकूफ और तरंगी लोगों की तरंग में दीखनेवाले स्वप्न कभी न फलें, तो उसमें मुझे जरा भी घबड़ाहट नहीं। समय की प्रतीक्षा करने का धैर्य मुझमें है। लेकिन सिर्फ मुझे बचाने के लिए ही अगर कोई मुझे ठगेगा तो उससे मेरा दुःख और भी बढ़ जायगा। ईश्वर की इच्छा पर ही मैंने अनशन शुरू किया है और उसकी इच्छा होगी तभी यह टूटेगा। उसकी इच्छा के बगैर एक पत्ता भी हिल नहीं सकता। उसकी इच्छाएँ कोई टाल न सका और न भविष्य में ही टाल सकता है।

शारीरिक स्थिति और स्वास्थ्य

३॥ बजे बापू जगे। दातुन कर १५ मिनट बातें कीं। लेटे ही लेटे देवदास काका का पत्र पढ़ा। ३॥। बजे प्रार्थना—आश्रम पढ़े। ४। बजे सादा गरम पानी ७ औंस। ५-२५ बजे सोये। आधे घंटे तक पत्र और नोट लिखवाये। ७॥। बजे सादा गरम पानी ६ औंस। बजे मालिश के लिए गये। उससे पहले 'फूट बाथ' यानी गरम पानी में पैर डुबोये। ४ मिनट टेबुल पर मालिश और अखबार पढ़ा। १० बजे बाथ में गये। अखबार सुना। राजकुमारी बहन और मेरे साथ बातें कीं। ११॥ बजे बाथ से लौटे। – ५ बजे सादा गरम पानी आठ औंस। १ से १२

की रखा। फिर भी उन्होंने पूज्य बापू के इस अनशन के सम्मान में राजकीय भोज रद कराया—ऐसी खबर रात में गवर्नमेण्ट हाउस से मिली। ● ● ●

पत्रकारों को संदेश : १६

बिरला-भवन नयी दिल्ली
१५-१-'४८

राम का कराया उपवास

रात ठीक बीती। दो बजे बापू जग गये और रात में जिन प्रश्नों पर वक्तव्य देना था उसे लिखाने बैठ गये। भाई साहब से बिजली जलाने के लिए कहा। मुझसे कहा कि अभी सोती ही रह और प्रार्थना के समय उठ, पर नींद आने जैसा वातावरण ही न था। मुन्नालालभाई (आश्रमवासी) आये तब बापू सोये हुए थे।

३॥ बजे प्रार्थना। प्रार्थना के बाद बापू को मैं भीतर ले गयी और उनके पास बैठ गयी। पैर दबाये। रात २॥ बजे से जो वक्तव्य लिखाना शुरू किया था उसे पुनः लिखाने लगे; लेकिन बीच में कमजोरी के कारण आँखें मूँद ली थीं।

सात बजे बापू बिस्तर पर लेटे। बिरलाजी के साथ बातचीत करते हुए उन्होंने कहा, "मैं राम का कराया उपवास कर रहा हूँ। जब आप सबके साथ दलील करता हूँ तो मेरा मन मुझसे कहता है कि 'ऐ बाबा! तू क्यों दलील करता है? क्या तुझे ईश्वर पर श्रद्धा नहीं? अगर मेरी मृत्यु हो जाय और दुनिया में अशान्ति फैले तो भी अच्छा ही है। इसलिए आप सब मेरी चिन्ता छोड़ अपना-अपना काम कीजिये। सरदार को दुःखी होने की कोई भी बात नहीं। मेरा ही आग्रह था कि उन्हें भावनगर जाना जरूर चाहिए। फिर वे जहाँ रहेंगे आखिर मेरा ही काम करनेवाले हैं न?

अन्त में बिरलाजी ने कहा, "आप तो किसीकी भी माननेवाले नहीं हैं। आप ईश्वर के हाथ में हैं, यह तो हम लोग मानते ही हैं।"

८॥ बजे बापू मालिश के लिए गये। ८॥ बजे गरम पानी से उनके पैर धोये गये।

आत्मशुद्धि की अपेक्षा

…ने बापू को बड़ी चिट्ठी लिखकर अपने अन्तर की पीड़ा उँडेल दी है। उन्होंने लिखा है कि 'उनके हट जाने से सारी व्यवस्था सुधरती हो तो वे मंत्रिमण्डल में रहने के लिए जरा भी तैयार नहीं।' पत्र एक दृष्टि से हृदयद्रावक भी है।

बापू जब स्नान में आये तो गरम पानी का स्नान बैठे-बैठे सुशीला बहन ने कुछ कठिनाई से करायी। फिर बापू ने प्रार्थना में सुनायी जानेवाली अखबारी प्यारेलालजी से लिखवाना शुरू किया। बापू को बोलने में प्यारेलालजी को उसे नोट करना मुश्किल हो रहा था, क्योंकि आज तो आवाज बहुत ही धीमी पड़ गयी है। बाद में उन्हें चक्कर भी आ रहे थे, इसलिए तुरन्त टब में बिठाकर पकड़ रखना पड़ा। बाद में कुर्सी पर ही बाहर धूप में लाया गया। आज तो स्नान में मैं अकेली ही रही और बापू को चक्कर आ रहे थे, इसलिए बहुत डर लग रहा था। सुशीला बहन को इंगित कर रोका था, इसलिए उनकी सहायता से मैंने बापू का शरीर तत्काल ही पोंछ डाला।

२ बजे एनिमा तैयार करना। उसे तैयार करने में १५-२ मिनट तो सहज लगते ही हैं, इतने में बापू नाराज हो गये, पर तुरन्त ही मानो अपने से भूल हो गयी हो इस तरह कहने लगे। "मैं इतना अधीर कैसे हो सकता हूँ! अभी भी मुझमें इतनी खामी रह गयी है। यह मिट जायगी तभी मैं हिन्दुस्तान के लोगों से आत्म-शुद्धि की अपेक्षा रख सकता हूँ। तब तक मैं उसकी अपेक्षा कैसे करूँ? इसका पता भी ऐसी परीक्षा वाले उपवास करने से ही चलता है।" इतना कहते हुए वे थक गये।

मैंने कहा। "बापू, मेरी भी भूल थी न! आपका उपवास शुरू हुआ तभी से मुझे रोज शाम पानी को कम-से-कम उतना तैयार रखना ही चाहिए था। फिर चाहे वह काम में आये या न आये।" इस पर कहने लगे "नहीं-नहीं इस तरह व्यर्थ आग जलाने से मुझे उल्टा अनिष्ट दुःख ही होगा। मेरी गलती है ही नहीं क्योंकि मुझे तुमसे आध घंटा पहले कहना चाहिए था या जब कहा तब से तैयार होने तक धैर्य रखना चाहिए था।" मैं चुप हो गयी, क्योंकि हम एक वाक्य कहें, तो बापू भी चार कहने लगते हैं और उससे उनकी ही शक्ति क्षीण होती जाती है।

मनु के प्रति

एनिमा में मल काफी निकला। बापू को यह पसंद भी आया। लेकिन बहुत ही थक गये। बापू की हालत ऐसी हो गयी है कि उन्हें देखते-देखते कदाचित् ही किसी पाषाणहृदय मानव की आँखों में आँसू न आयें। उसमें भी विशेषता यह एनिमा जैसे पखाना कराने जैसे काम भी खास तौर पर वे मेरे द्वारा ही करवाते हैं। अतः उस समय तो बापू सफेद पूनी की तरह हो जाते हैं। उसमें भी मैं घबरा जाऊँ या मुझे रोना आ जाय तो मेरी पूरी शामत ही समझिये। कलकत्ते के उपवास की अपेक्षा यहाँ काफी क्षीण होने पर भी न जाने क्यों मुझे इस आखिरी कसौटी में घड़ी-घड़ी और पल-पल डर लगता है। कई बार सोचती हूँ कि कहीं मेरे नसीब में कलंक का टीका तो नहीं लगा है? बापू बिस्तर पर लेटे रहते हैं, तब उनके लिए सभी काम आसान होते हैं, लेकिन जब वे उठते-बैठते हैं, तब उन्हें चक्कर आता है, कमजोरी मालूम पड़ती है और सफेद पड़ जाते हैं। फिर किसीको बुलाने भी नहीं देते और यही कहते हैं कि 'राम को मेरी जरूरत होगी तो वही रखेगा। मैं उसीके करवाये उपवास करता हूँ। इस बात में तेरे सिवा और कोई हिस्सेदार नहीं है' आदि। बापू कहते ही रहते हैं। भगवान् इस मँझधार से नाव पार करना है, तो कर।

एनिमा के बाद विमल बाबू और डॉक्टर गिल्डर साहब आये। बापू कहने लगे: 'एनिमा नम्बर वन और एनिमा नम्बर टू आये।'

आज से बापू की हालत की बुलेटिन प्रकाशित हुआ करेगी। ४॥ बजे बापू ने प्रार्थना के लिए जो लिखवाया था उसका हम लोगों ने अनुवाद किया। हम सभी प्रार्थना के लिए गये। बापू प्रार्थना-सभा में आये नहीं थे। घर से ही खाट पर लेटे-लेटे उन्होंने अत्यधिक धीमी आवाज में रेडियो-ब्राडकास्ट पर और रेकार्ड करने के लिए निम्नलिखित भाषण दिया

मृत्यु अपरिहार्य

भाइयो और बहनो, मेरे लिए यह एक नया अनुभव है। मुझे इस तरह लोगों को सुनाने का कभी अवसर नहीं आया और न मैं चाहता ही था। मैं इस वक्त जिस जगह प्रार्थना हो रही है वहाँ जा नहीं सकता। इसलिए प्रार्थना में जो

लोग जाते हैं, वहाँ तक आप लोगों तक, जिधर आप बैठे हैं—मेरी आवाज़ पहुँच सके, तो आपको आश्वासन मिलेगा और मुझे भी बड़ा आनन्द होगा। मैंने लोगों के सामने रखने के लिए जो तैयार किया है, उसे तो लिखवा दिया है। ऐसी हालत कब होगी या नहीं मैं नहीं जानता।

"आप लोगों से मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि हरएक आदमी दूसरे क्या करते हैं, उसे न देखे और स्वयं जितनी आत्मशुद्धि कर सके, करे। मुझे विश्वास है कि जनता बड़े परिमाण में आत्मशुद्धि कर लेगी तो उसका हित होगा और मेरा भी हित होगा हिन्दुस्तान का कल्याण होगा और सम्भव है कि जो यह उपवास चल रहा है, उसे मैं जल्दी से छोड़ सकूँ। मेरी फिक्र कोई न करे, फिक्र अपनी फिर ही की जाय। हम कहाँ तक आगे बढ़ रहे हैं और देश का कल्याण कहाँ तक हो सकता है, इसका ध्यान रखें। आखिर में सभी इन्सानों को मरना है। जिसका जन्म हुआ है, उसे मृत्यु से मुक्ति नहीं मिल सकती। ऐसी मृत्यु का भय ही क्या! और उसका शोक भी क्या करना! मैं समझता हूँ कि मृत्यु हम सबके लिए आनन्ददायक मित्र है। वह हमेशा धन्यवाद के लायक है, क्योंकि मृत्यु से अनेक प्रकार के दुःखों से हम एक बार तो बच ही जाते हैं।"

बापू इतने शब्द बोले। फिर सुशीला बहन ने बापू से लिखवाये हुए प्रवचन का अनुवाद पढ़ सुनाया। वह लिखित सन्देश इस प्रकार था :

पत्रकारों को उत्तर

"एक शाम को प्रार्थना के दो घण्टे बाद अखबारवालों ने मुझे सन्देश भेजा कि उन्हें मेरे उपवास के बारे में कुछ बातें पूछनी हैं। वे मुझसे मिलना चाहते थे। मगर मैंने दिनभर काम किया था। प्रार्थना के बाद भी काम में फँसा रहा; इसलिए थकान और कमजोरी के कारण उनसे मिलने की मेरी इच्छा नहीं हुई। मैंने प्यारेलालजी से कहा कि उनसे कहो कि वे मुझे माफ करें और जो सवाल पूछने हों वे लिखकर कल सुबह ९ बजे के बाद मुझे दे दें। उन्होंने ऐसा ही किया है।"

पहला सवाल यह है कि "आपने उपवास ऐसे वक्त शुरू किया है, जब कि भारत के किसी हिस्से में कुछ झगड़ा हो ही नहीं रहा है।"

बापू : "लोग जबरदस्ती मुसलमानों के घरों का कब्जा लेने की बाकायदा

नियमपूर्वक कोशिश करें तभी यह झगड़ा नहीं बढ़ पायेगा। यह झगड़ा यहाँ तक बढ़ा कि फौज को इच्छा न रहते हुए भी नामुनासिब इस्तेमाल करनी पड़ी और भले ही हवा में ही मगर कुछ गोलियाँ भी चलानी पड़ीं। तब कहीं लोग हटे। मेरे लिए यह सरासर बेवकूफी होती कि मैं मुसलमानों का ऐसे ही तरह निकाला जाना आखिर तक देखता रहता। इसे मैं मुझ-मुझकर मारना कहता हूँ।'

सरदार के लिए अनशन ?

प्रश्न। आपने कहा है कि मुसलमान भाई अपने डर की और असुरक्षा की कहानी लेकर आपके पास आते हैं, तो आप उन्हें कोई जवाब नहीं दे सकते। उनकी शिकायत यह है कि सरदार, जिनके हाथों में यह विभाग है, मुसलमानों के खिलाफ हैं। आपने यह भी कहा है कि सरदार पटेल पहले आपकी हाँ में हाँ मिलाते थे और 'जी हुजूर' कहलाते थे। मगर अब ऐसी हालत नहीं रही। इससे लोगों के मन पर यह असर होता है कि आप सरदार का हृदय पलटाने के लिए अनशन कर रहे हैं। आपका अनशन गृह-विभाग की नीति की निन्दा करता है। अगर आप इस चीज को साफ करेंगे तो अच्छा होगा।

बापू: "मैं समझता हूँ कि मैं इस बात का साफ जवाब दे चुका हूँ। मैंने जो कहा है, उसका एक ही अर्थ हो सकता है। जो अर्थ लगाया गया है, वह तो मेरी कल्पना में भी नहीं आया। अगर मुझे पता होता कि इसका ऐसा अर्थ भी लिया जा सकता है तो मैं पहले ही इस चीज को साफ कर देता।

"कई मुसलमान दोस्तों ने शिकायत की थी कि सरदार का रुख मुसलमानों के खिलाफ है। मैंने कुछ दुःख से उनकी बात सुनी मगर कोई सफाई पेश न की। उपवास शुरू होने के बाद मैंने अपने ऊपर जो रोक-थाम लगा दी थी वह उठ गयी। इसलिए आलोचकों से कहा कि सरदार को मुझसे और पंडित नेहरू से अलग करके तथा मुझे और नेहरू को नाहक आसमान पर चढ़ाने की गलती करते हैं, इससे उन्हें फायदा नहीं पहुँच सकता। सरदार के बात करने के ढंग में एक तरह का अक्खड़पन है जिससे कभी-कभी लोगों का दिल दुख जाता है। मगर सरदार का इरादा किसी को दुःखी करने का नहीं होता। उनका दिल बहुत बड़ा है, उसमें सबके लिए जगह है। सो मैंने जो कहा उसका मतलब यह था कि अपने जीवनभर के वफादार

साथी को एक ऐसा इल्जाम से बरी कर दूँ। मुझे यह भी डर था कि सुननेवाले यह न समझ बैठें कि मैं सरदार को अपना 'जी हुजूर' मानता हूँ। सरदार को प्रेम से मेरा 'जी हुजूर' कहा जाता था, इसलिए मैंने उनकी तारीफ करते समय कह दिया कि वे इतने शक्तिशाली और मन के मजबूत हैं कि किसीके 'जी हुजूर' हो ही नहीं सकते। जब वे मेरे 'जी हुजूर' कहलाते थे तब वे ऐसा कहने देते थे क्योंकि जो कुछ मैं कहता था वह अपने-आप उनके गले उतर जाता था। वे अपने क्षेत्र में बहुत बड़े थे।

सरदार के प्रति

'अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी में उन्होंने शासन चलाने में बहुत काबिलियत दिखायी थी। मगर वे इतने नम्र थे कि उन्होंने अपनी राजनैतिक तालीम मेरे नीचे शुरू की। उन्होंने इसका कारण मुझे बताया था कि जब मैं हिन्दुस्तान में आया और उन दिनों यहाँ जिस तरह का राज-काज चलता था, उसमें हिस्सा लेने का उनका मन नहीं होता था। मगर अब जब सत्ता उनके हाथ में आ पड़ी, तब उन्होंने देखा कि जिस अहिंसा को वे आज तक सफलतापूर्वक चला सके, अब नहीं चला सकते। मैंने कहा कि मैं समझ गया हूँ कि जिस चीज को मैं और मेरे साथी 'अहिंसा' कहा करते थे, वह सच्ची अहिंसा नहीं थी। वह तो नकली चीज थी, जिसका नाम है, 'मन्द विरोध'। हाँ किसीके द्वारा मन्द विरोध किसी काम की चीज हो सकती है? जरा सोचिये तो सही कि एक कमजोर आदमी जनता का प्रतिनिधि बने तो वह अपने मालिकों की हँसी और बेइज्जती ही करवा सकता है। मैं जानता हूँ कि सरदार कभी उन्हें सौंपी हुई जिम्मेदारी को दगा नहीं दे सकते। वे उसका पतन बरदाश्त नहीं कर सकते।

इन्सान खुद जिम्मेदार!

"मैं उम्मीद करता हूँ कि यह सब सुनने के बाद कोई ऐसा खयाल नहीं करेगा कि मेरा मकसद गृह-विभाग की निन्दा करनेवाला है। अगर कोई ऐसा खयाल करता है, तो मैं उससे कहना चाहता हूँ कि वह अपने-आपको नीचे गिराता है और अपने आपको नुकसान पहुँचाता है, मुझे या सरदार को नहीं। मैं जोरदार शब्दों में कह चुका हूँ कि कोई बाहरी ताकत इन्सान को नीचे नहीं गिरा सकती, इन्सान को नीचे

गिरानेवाला इन्सान जल्द ही बन सकता है। मैं जानता हूँ कि मेरे उपवास के साथ इस वाक्य का कोई ताल्लुक नहीं है। मगर यह एक ऐसा सत्य है कि हर मौके पर दोहराया जा सकता है।

"मैं साफ शब्दों में कह चुका हूँ कि मेरा अनशन भारत के मुसलमानों के लिए है, इसलिए वह भारत के हिन्दू और सिक्खों तथा पाकिस्तान के मुसलमानों के सामने है। इस तरह यह अनशन पाकिस्तान की अकलियत के खातिर भी है। जो विचार मैं पहले समझा चुका हूँ, उसे यहाँ बाद में दोहराने की कोशिश कर रहा हूँ।

"मैं यह आशा नहीं रख सकता कि मेरे जैसे अपूर्ण और कमजोर इन्सान का अनशन दोनों तरफ की अकलियतों को सब तरह के खतरों से पूरी तरह बचाने की ताकत रखे। अनशन सबकी आत्मशुद्धि के लिए है। उसकी पवित्रता के बारे में किसी तरह का शक करना गलत होगा।

फाका पागलपन छुड़ाने के लिए

प्रश्न : "आपका अनशन ऐसे वक्त शुरू हुआ है, जब कि संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-समिति बैठनेवाली है। साथ ही अभी कराची में फसाद हुआ है। हम नहीं जानते कि विदेश के अखबारों में इन वाकयात की तरफ कहाँ तक ध्यान दिया गया है। इसमें शक नहीं कि आपके अनशन के सामने ये वाकयात फीके पड़ने लगे हैं। पाकिस्तान के प्रतिनिधियों के पिछले कारनामों से हम समझ सकते हैं कि वे जरूर इस चीज का फायदा उठायेंगे और दुनिया से कहेंगे कि गांधीजी अपने हिन्दू अनुयायियों से—जिन्होंने हिन्दुस्तान में मुसलमानों की जिन्दगी खतरे में डाल रखी है—पागलपन छुड़वाने के लिए अनशन कर रहे हैं। सारी दुनिया में सच्ची बात पहुँचने में तो देर लगेगी। इस दरमियान आपके अनशन का यह नतीजा हो सकता है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ पर हमारे विरुद्ध प्रभाव पड़े।"

बापू : 'इस सवाल का लम्बा-चौड़ा जवाब देने की जरूरत थी। दुनिया की हुकूमतों और दुनिया के लोगों पर, जहाँ तक मैं जानता हूँ—यह कहने की हिम्मत करता हूँ कि उपवास का असर अच्छा ही हुआ है। बाहर के लोग जो हिन्दुस्तान के वाकयातों को निष्पक्ष भाव से देख सकते हैं, मेरे फाके का उलटा अर्थ नहीं लगायेंगे। फाका भारत और पाकिस्तान के रहनेवालों से पागलपन छुड़ाने के लिए है।

"अगर पाकिस्तान में मुसलमानों की अक्लियत सीधी तरह न चले वहाँ के मर्द और औरतें शरीफ न बनें तो भारत के मुसलमानों को बचाया नहीं जा सकता। मगर मुझे खुशी है कि मृदुला बहन के बयान पर से ऐसा लगता है कि पाकिस्तान के मुसलमानों की आँखें खुल गयी हैं और वे अपना फर्ज समझने लगे हैं।

संयुक्त राष्ट्रसंघ यह जानता है कि मेरा उपवास उसे ठीक निर्णय करने में मदद देगा ताकि वह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का उचित पथ प्रदर्शन कर सके।"

प्रार्थना के बाद लोगों को बापू का दर्शन करने की उत्कट इच्छा होना स्वाभाविक ही था। खाट बरामदे में रखी गयी। पहले बहनें और बाद में भाई लोग दर्शन करते गये। बापू इस समय सो गये थे। चेहरा अत्यन्त शान्त तेजस्वी और दयनीय मालूम पड़ता था। मुट्ठीभर हड्डियों का यह मानव सिर्फ मानवता के सुख के लिए ही एकता की रट लगाने के निमित्त घुल रहा है, फिर भी मानव नहीं समझता। थोड़ी देर में बापू जागे। सामने हाथ जोड़कर खड़े रहे। यह दृश्य भी अद्भुत रहा।

हम लोग खा-पीकर बापू के पास बैठे। सभी लिखते हैं कि रोज एक चिट्ठी सिर्फ बापू की तबीयत के बारे में ही लिखिये। लेकिन मन ही कहीं नहीं लगता और अभी तो दिल्ली का यह हाल है, मानो कुछ हो ही नहीं रहा है। कलकत्ते में तो अनशन के पहले ही दिन से सभी जाग्रत हो गये थे। जो न हो वही थोड़ा है।

शारीरिक स्थिति और प्रवृत्ति

बापू ने रात २॥ बजे पेशाब की; [illegible] ही किया। ३॥ बजे दातुन और प्रार्थना की तैयारी। ४॥ बजे प्रार्थना; बाद गरम पानी ८ औंस प्यारेलालजी ने पिलवाया। ६॥ बजे सोये। ७॥ बजे जगे। ७-१५ बजे उठकर तकिया लगाकर बैठे। ७-४ बजे पेशाब की। ७-४१ बजे गरम पानी ८ औंस। अखबार सुने। ७-५५ पर घनश्यामदासजी बिड़ला के साथ बातें। ८-५ तक अनशन के बारे में। ८-१५ बजे पुनः उठ बैठे। उठते समय सहारा देना पड़ता है। ८-८ बजे पेशाब की। ८-४५ बजे मालिश की तैयारी। उस समय मालिश के टेबल पर बैठे-बैठे ८ औंस गरम पानी लिया और 'फूटबाथ' लिया। राजकुमारी बहन आयी थीं। डॉ॰ जीवराज मेहता डॉ॰ विधान बाबू और और डॉ॰ सुशीला बहन ने बापू की परीक्षा की। ९-१५ बजे चलकर बाथरूम में आये (मालिश के लिए चलते हुए

दी गये थे)। पखाना या पेशाब नहीं हुआ। बाद में चक्कर आने लगा। कुर्सी पर बैठे। १ ४ बजे बाथरूम से बाहर आये। वजन १०७ पौण्ड हुआ ब्लड प्रेशर १८०/११० ; इस समय पंडितजी भी थे। बापू का वजन पण्डितजी ने ही लिया। १० ॥ बजे गरम सादा पानी ८ औंस। ११॥ बजे जवाहरलालजी गये। स्थानीय मौलाना लोग आये। मौलाना हिफ्जुल रहमान मौलाना हबीबुल रहमान डॉ० जाकरी १८ मिनट रहे। ११ ११ बजे गये। ११ २५ बजे पण्डित सुन्दरलाल के साथ बातें। १२। बजे गोस्वामी गणेशदत्त। बैठे-बैठे ही बात सुनी। इसी बीच बैठे-बैठे भी समझाया। १२ २५ बजे उठ बैठे। सुशीला बहन को भाषण लिखवाया। तुरन्त ही वी० टी० कृष्णमाचारी कस्तूरभाई, मफतभाई और घनश्यामदासजी ब्रजमोहनजी बिरला आये। ये सभी सिर्फ बापू को देखने आये। १२॥। सोये और १ १ बजे जगे। १ १५ बजे गरम पानी ८ औंस। २॥। बजे एनिमा लिया। मेरे साथ बातें कीं। ३ बजे मिट्टी का प्रयोग किया और ४ बजे उसे उतारा। ४ बजे गरम पानी सादा ८ औंस। डॉ० विधानबाबू शंकररावजी आचार्य जुगलकिशोरजी पीर साहब महाराज देवास राजेन्द्र बाबू उनकी पत्नी और बच्चे सुरेन्द्र अहमद नगर और उनकी पत्नी लिय सिमिफ्तर, दोस्ते और डॉ० मिस्टर साहब गये। डॉक्टर भीमराज जब बड़े ही चौकीदार हैं। इनकी आज्ञा पाने पर ही भीतर जाया जा सकता है और वे बातें करने की मनाही की शर्त करवाकर ही भीतर जाने देते हैं।

बापू ५ बजे प्रार्थना में नहीं जा सके। लेटे-लेटे ही रेडियो पर बोले। सुशीला बहन ने बापू का सन्देश पढ़ सुनाया। फिर सभी भाई-बहन कतार बाँध शांति से बापू का दर्शन करते हुए लौटे। १५ मिनट सोये। ५ ५ बजे गरम पानी ४ औंस पीया। शाहनवाज साहब आये। ६। बजे से ७-२५ तक सोये। ७ बजे देवदास काका और भाभी आयीं। जयरामदासजी राजकुमारी बहन जवाहरलालजी निर्मोगी और मथुरादास भी आये। ९ १ बजे तक मीटिंग हुई। ८ बजे सादा गरम पानी चार औंस पीया। ९॥। बजे पेशाब करने के बाद लेटकर बिस्तर तक गये।

कुल पानी ६८ औंस पेशाब २८ औंस—इस तरह बापू की शारीरिक स्थिति है। पानी पीने के अनुपात से पेशाब नहीं होती इससे सबको बहुत चिन्ता है।

बापू का वजन पहले साधारणतः १०८ पौण्ड के आसपास रहता था। लेकिन कलकत्ते के उपवास के बाद १११-११२ तक भी हो जाता था। इसका कारण भी यही है कि गुर्दे में दोष होने से पानी पेट में भरा रहता है। ● ● ●

महायज्ञ का प्रभाव : १७

बिरला-भवन नयी दिल्ली

१६-१-'४८

बचपन के संस्मरण

३॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना। बापू प्रार्थना के लिए एकदम अपने-आप ही उठ गये। प्रार्थना के बाद भी रोज की तरह ही वे भीतर के कमरे में अपनी बैठक में जाकर गये। बापू को ओढ़ाकर हम सब वहीं बैठ गये। बापू ने कहा : "आज सुब्बय्या (आश्रमवासी) प्रार्थना में क्यों नहीं आये? क्या वे यहाँ नहीं सोये थे? कनायम् (ग्रहस्थ) भी नहीं था। तो क्या वह बहुत देर से सोता है?'

मैंने कहा कि 'वह तो हमेशा देर से ही सोता है। कोई काम न हो तो आखिर वह गुजराती ही सिखाने बैठ जाता है।

बापू ने कहा : 'मुझे पता नहीं कि वह भी बाहर वैसा बड़ा आदमी हो गया है। कलकत्ते में तो इन लड़कियों के साथ वह भी मेरे पास ही सोता था और वह मुझे अच्छा भी लगता था। अगर ३॥ बजे उठ सकता है तो प्रार्थना में क्यों नहीं आता? मैं तो अपने ही बारे में सोचता हूँ कि मुझमें कुछ ऐब होगा। यहाँ तो समस्त लोग प्रेम से यहाँ आते हैं, फिर भी प्रार्थना जैसे कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं होते तो बात क्या है?" बोलते-बोलते बापू थक गये। दो मिनट चुप रहे। फिर हम लोगों की ओर देखकर कहा : "आप लोग सो जाइये। 'इस तरह सबकी चिन्ता करते ही रहते हैं।

७ बजे बापू उठे। जागकर अखबार सुना। लगभग एक घंटा सोये। अखबार के लिए एक तार भेजना था पर वह रह गया। इस पर बापू नाराज हो गये। १५ मिनट तक बड़े दुःख के साथ कहने लगे : 'इसमें मैं सूक्ष्म असत्य देखता हूँ। लेकिन

आप अकेले ऐसा करते हैं, यह कहना नहीं चाहता। सारी दुनिया ऐसा करती है। यह मामला ऐब निकालने के लिए नहीं कहता। मैंने भी ऐसे पाप किये हैं बचपन में और इंग्लैण्ड में।" फिर अपनी माता को एकपत्नीव्रत और मांस न खाने के जो वचन दिये थे उसके बारे में चर्चा की। अन्त में कहने लगे: "मैं बहुत थका हूँ, इसलिए इतना कहा। ईश्वर की कृपा है। अगर ऐसा ही रहा तो मैं बहुत दिन जिन्दा रहूँगा। इस बीच अगर लोग लड़ेंगे तो मरना है और एक हो जायेंगे तो पाया है। 'एक होंगे' का मतलब यह है कि अगर पाकिस्तान से मुसलमान यहाँ आयें तो हिन्दुस्तान द्वारा अत्यधिक मूर्खता बरतने के बावजूद वे उसे भूल जायेंगे और यह कहने लगेंगे कि विभाजन तो हुआ सही लेकिन ये लोग विभक्त जैसे कुछ भी दिखाई नहीं देते।"

बापू मालिश के लिए कुर्सी पर बैठकर ही गये। पैर नहीं दबवाये। बापू को खाँसी भी गयी। कमजोरी तो बढ़ती ही जा रही है। १-३० बजे बाथ में पहुँचे। बाथ में गिरे, तो सिर पर ठंडे पानी का कपड़ा रखा गया। आज से बाथ में हम दो-दो व्यक्ति साथ रहते हैं। पहले मैं और भाई साहब थे। फिर सुशीला बहन आयीं। बापू कह रहे थे कि अब कैसे चक्कर नहीं आते। सिर ठंडा रखने के कारण ही ऐसा हुआ है। वजन किया तो १०७ ही हुआ क्योंकि अब पानी पेट में ही रह जाता है।

पचपन करोड़ देना तय

स्थानीय मुसलमान भाइयों ने बताया कि शहर की हालत सुधर रही है। बापू ने कहा: "जो कुछ करें सोच-समझकर ही करें और वैसा ही करें। मुझे खुश करने के लिए कुछ भी न करें।" बापू यह भी कह रहे थे कि मुझे कल की अपेक्षा आज बहुत अच्छा लगता है।

यह भी खबर मिली कि मन्त्रिमण्डल ने पाकिस्तान को ५५ करोड़ रुपया देना तय कर लिया है।

आज तो एनिमा भी पहले से ही तैयार कर रखी थी जिससे बापू जब कहें, तभी तुरंत वह दिया जा सके और उन्होंने ठीक ९ बजे एनिमा लेने को कहा भी।

लगभग सारा दिन बापू के आसपास ही बीता है। ४ बजे हम लोग भाषण का अनुवाद करने के लिए गये। बिरलाजी ने कहा कि 'आज के भाषण का सम्पाद-

जवाब उत्तर नहीं मिल सकता। जो कुछ हो रहा है, सिर्फ बापू की सेवा करने के लिए ही। मैं तो बापू से कहता ही हूँ कि मैं सिर्फ आपकी सेवा करने के लिए ही खादी पहनता हूँ। खादी में मेरी निष्ठा नहीं; अगर निष्ठा रखता तो मिल क्यों चलाता?"

शहर में विभिन्न स्थानों में सभाएँ हो रही हैं। आज प्रार्थना के समय मैं और सुशीला बहन प्रार्थना-प्रवचन का अनुवाद करती रहीं इसलिए हम लोग प्रार्थना में पाँच मिनट देर से पहुँचे। प्रार्थना तो अन्य लोगों ने शुरू कर ही दी थी।

पद का स्पष्टीकरण

प्रार्थना के बाद बापू खाट पर बैठे ही बैठे बोले। वह प्रार्थना-स्थल तक सुनायी पड़ता रहा। बापू ने निम्नलिखित भाषण किया:

भाइयो और बहनो! मुझे आशा नहीं थी कि आज भी मैं बोल सकूँगा। लेकिन यह सुनकर आप खुश होंगे कि कल मेरी आवाज में जितनी शक्ति थी आज उससे ज्यादा शक्ति महसूस करता हूँ। इसका मतलब तो यही समझा जायगा कि ईश्वर की बड़ी कृपा है। बीच रोज मुझमें—जब-जब मैंने उपवास किया है—इतनी शक्ति नहीं रहती; लेकिन आज तो है। मुझे उम्मीद है कि अगर आप सब लोग आत्मशुद्धि का यज्ञ करते रहेंगे तो बोलने की मेरी शक्ति आखिर तक बनी रह सकती है। मैं इतना तो कहूँगा कि मुझे किसी प्रकार की जल्दी नहीं है। जल्दी करने से हमारा काम नहीं बनता। मैं परम शान्ति में हूँ। मैं नहीं चाहता कि कोई अधूरा काम करे और मुझे सुना दे कि ठीक हो गया है। सारा-का-सारा काम जब ठीक होगा तभी सारे हिन्दुस्तान में ठीक होगा। इसलिए मैं समझता हूँ कि अब इर्द-गिर्द में सारे हिन्दुस्तान में और सारे पाकिस्तान में शान्ति नहीं हुई, तो मुझे जिन्दा रहने में दिलचस्पी नहीं है। यही इस पद का अर्थ है।

बापू ने इतने शब्द कहे। आवाज बहुत ही क्षीण थी और एक-एक शब्द पर श्वास चढ़ रहा हो ऐसा मालूम पड़ता था।

हिन्दुस्तान का कलंक

बाद का भाषण सुशीला बहन ने पढ़ सुनाया। बापू ने इसे अंग्रेजी में लिखवाया था जिसका यह अनुवाद है:

"किसी जिम्मेदार हुकूमत के लिए सोच-समझकर किये हुए अपने किसी फैसले को बदलना आसान नहीं होता। फिर भी हमारी हुकूमत ने—जो हर मानी में जिम्मेदार हुकूमत है—सोच-समझकर और तेजी से अपना तय किया हुआ फैसला बदल डाला है। इसे कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और कराची से लेकर आसाम की हद तक सारे मुल्क की मुबारकबादी देनी चाहिए।

मैं जानता हूँ कि दुनिया के सभी लोग कहेंगे कि ऐसा बड़ा काम हमारी हुकूमत जैसी बड़े दिलवाली हुकूमत ही कर सकती थी। इसमें मुसलमानों को सन्तुष्ट करने की बात नहीं है। यह तो अपने-आपको सन्तुष्ट करने की बात है। कोई भी हुकूमत जो बहुत बड़ी जनता की प्रतिनिधि है, बेसमझ जनता से तालियाँ पिटवाने के लिए कोई कदम नहीं उठा सकती। जहाँ चारों तरफ पागलपन फैला हुआ हो वहाँ आपके बड़े-से-बड़े नेता बहादुरी से अपना दिमाग ठंडा रखकर जो जहाज चला रहे हैं, उसे क्या वे डूबने से न बचायें?

"हमारी हुकूमत ने यह कदम क्यों उठाया? इसका कारण मेरा उपवास था। उपवास से उनकी विचारधारा ही बदल गयी। उपवास के बिना वे कानून उनसे जितना करवाता—उतना ही करनेवाले थे। मगर हिन्दुस्तान की हुकूमत का यह कदम सच्चे मानों में दोस्ती बढ़ाने और विश्वास पैदा करनेवाली चीज है। इससे पाकिस्तान की भी परीक्षा हो जायगी।

'नतीजा यह आना चाहिए कि न सिर्फ कश्मीर का बल्कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जितने मतभेद हैं, उन सबका आज-कल आपस में फैसला हो जाय। आज की दुश्मनी की जगह दोस्ती ले ले। न्याय कानून से बढ़ जाता है।

'अंग्रेजी में एक मशहूर कहावत है कि जहाँ मामूली कानून काम नहीं देता वहाँ न्याय हमारी मदद करता है। बहुत दिन नहीं हुए जब कानून और न्याय के लिए वहाँ अलग-अलग कचहरियाँ हुआ करती थीं।

इस तरह देखा जाय तो इसमें कोई शक नहीं कि हिन्दुस्तान की हुकूमत ने जो किया है, वह सब तरह से ठीक है। अगर मिसाल की जरूरत है, तो मेकडॉनल्ड एवार्ड (निर्णय) हमारे सामने है। वह सिर्फ मेकडॉनल्ड का निर्णय नहीं बल्कि सारे ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल का और दूसरी गोलमेज परिषद् के अधिकतर सदस्यों का

भी निर्भय था। मगर भारत के इतिहास ने रातोंरात यह निश्चय बदल दिया। मुझे कहा गया है कि मैं भारत की हुकूमत को इस बड़े काम के लिए समझाऊँ।

मौत से भय नहीं

"मैं जानता हूँ कि जैसे-जैसे मेरा उपवास लम्बा होता जाता है, वैसे ही वैसे उन डॉक्टर लोगों की चिन्ता बढ़ती जाती है, जो स्वेच्छा से अपना त्याग करके मेरी देख भाल करते हैं। मेरे गुर्दे ठीक तरह से काम नहीं करते। उन्हें इस चीज का खतरा नहीं है कि मैं आज मर जाऊँगा। मगर उपवास लम्बा चला तो हमेशा के लिए शरीर की मशीन को जो नुकसान पहुँचेगा उससे वे डरते हैं।

"मगर डॉक्टर लोग कितने ही होशियार क्यों न हों मैंने उनकी सलाह से उपवास शुरू नहीं किया। मेरा रहनुमा और मेरा हकीम एकमात्र ईश्वर रहा है। वह कभी गलती नहीं करता। वह सर्वशक्तिमान् है। अगर उसे मेरे इस कमजोर शरीर से कुछ और काम लेना होगा तो डॉक्टर लोग कुछ भी न करें, वह मुझे बचा लेगा। मैं ईश्वर के हाथों में हूँ, इसलिए ऐसी आशा करता हूँ। आप विश्वास रखें कि मुझे न मौत का डर है और न अपंग होकर जिन्दा रहने का।

"मगर मुझे लगता है कि अगर देश को मेरा कुछ भी उपयोग है, तो डॉक्टरों की इस चेतावनी के परिणामस्वरूप लोगों को तेजी के साथ मिलकर काम करना चाहिए। इतनी मेहनत से आजादी पाने के बाद हमें बहादुर तो होना ही चाहिए। बहादुर लोग जिन पर दुश्मनी का शक होता है, उन पर भी विश्वास रखते हैं। वे अविश्वास को अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। अगर दिल्ली के हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों में ऐसी एकता स्थापित हो जाय कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बाकी हिस्सों में आग भभके तब भी दिल्ली शान्त रहे, तो मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण हो जायगी।

दोस्ती असली

"शरणार्थियों से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान—दोनों तरफ के लोग अपने-आप समझ गये हैं कि उपवास का अच्छे-से-अच्छा जवाब यही है कि दोनों उपनिवेशों में ऐसी दोस्ती पैदा हो कि हर धर्म के लोग दोनों तरफ बिना किसी खतरे के आ जा सकें और रह सकें। आत्मशुद्धि के लिए इतना तो कम-से-कम होना ही चाहिए।

'हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लिए दिल्ली पर बहुत ज्यादा बोझ डालना ठीक न होगा। भारत के रहनेवाले भी तो आखिर इन्सान हैं। हमारी हुकूमत ने लोगों के नाम से एक बहुत बड़ा उदार कदम उठाया है और उसे उठाते समय उसकी कीमत का ख्याल तक नहीं किया। इसका जवाब पाकिस्तान क्या देगा? इरादा हो तो रास्ते बहुत हैं। मगर क्या इरादा है?

प्रार्थना के बाद बापू खाट पर बैठे हुए थे और कल के जैसे ही आज भी लोग कतार बाँध दर्शन कर लौटते थे। बापू जी एक भामा के साथ बातें कर रहे थे।

संखिया लूँ तो?

बापू को पेशाब नहीं होती इसलिए मौलाना साहब ने जरा हिम्मत करके कहा कि 'पानी के साथ जरा मौसम्मी का रस लें तो?'

'ऐसे मैं नहीं ले सकता। जरा मौसम्मी के रस के बदले संखिया लूँ, तो क्या होगा? सिर्फ गर्म नीबू के सिवा कुछ भी नहीं लिया जा सकता। मैं तो कभी से समझ गया हूँ कि शरीर में कुछ दरार पड़ गयी है। इतना राम-नाम कच्चा नहीं है।

बिरलाजी कहने लगे: "दूसरे अनशनों की अपेक्षा इस बार आपकी तबीयत अच्छी लगती है। इसका कारण तो दिल्ली है।"

बापू ने कहा: 'नहीं, राम-नाम है।'

आज बापू को पानी नहीं भाता। आज से उनका स्वास्थ्य चिन्ताजनक हो गया है।

किन्तु, सिर्फ बापू के पास आने पर उनका असर बापू पर कुछ हुआ हो— ऐसा नहीं दीखता। जवाहरलालजी, ब्रजकृष्णजी, सुशीला बहन—सभी कहने लगे कि 'वातावरण बदल गया है। बहुत-सी सभाएँ हो रही हैं।"

कोठियावाली से बापू ने कहा: 'आप सभी सच्चे दिल से काम करें। मैं कोई इस तरह मर जानेवाला नहीं। लेकिन जो काम करें ठोस होना चाहिए।'

रात ९ बजे बापू बिस्तर तक चलते हुए पहुँचे। बापू की पेशाब की परीक्षा हर घंटे करते रहने की डॉक्टरों ने सलाह दी।

शारीरिक प्रवृत्ति

सुबह ३॥ बजे जागे। दतुवन और प्रार्थना। ३ १५ बजे पेशाब। ४। बजे सादा गरम पानी आठ औंस। ५॥ बजे सोये। फिर चिट्ठी लिखायी। ७ बजे सोये और जगे भी। लेकिन ७। बजे ठीक-ठीक सोये। ८ १ बजे जागे। बातें की बंगाली लिखा। ८॥ बजे मालिश के लिए गये। कॉमोडरी में शौच की। ब्लड-प्रेशर १७ /१ है। ९ ४ बजे बाथरूम में नहाने के लिए पहुँचे। पखाना नहीं हुआ। पेशाब हुई। गरम पानी का बाथ लिया। उस समय सिर पर ठंडे पानी का कपड़ा रखा। ठंडे पानी में बैठे। चक्कर नहीं आ रहे थे। १ ॥ बजे बाथरूम से बाहर आये। वजन लिया गया १ ७ पौण्ड हुआ। १०-१५ बजे सादा गरम पानी आठ औंस। घनश्यामदासजी बिड़ला के साथ १ मिनट बातें। १०-४ बजे देवदास गांधी। १०-५५ बजे राजेन्द्रबाबू आये। ११ बजे लेटे-लेटे ही अखबार पढ़ा। ११ ५ बजे गोस्वामी गणेशदत्तजी महाराजा पटियाला, नाभा और पन्ना सिर्फ दर्शनार्थ आये। इस बीच ११ से १ बजे तक पैर में घी मलवाया। १२ बजे डॉ. ... ने शारीरिक प्राप्त किया। १२। बजे गरम सादा पानी आठ औंस। १२ १५ बजे मौलाना हिफ्जुल रहमान, अहमद सैय्यद, डॉ. जाकिर और एस. एस. अब्दुल्ला। १ ४ बजे मिट्टी का पोल्टिस १-५५ बजे उसे उतारा। २ बजे गरम सादा पानी आठ औंस। १-२ बजे जवाहरलालजी आये और १-५५ बजे गये। २ बजे मृदुला बहन १ मिनट। २ २ बजे एनिमा लिया दस्त साफ हुआ। २-५ बजे मौलाना साहब जवाहरलालजी प्रभावती बहन दीर्घकारी बहन (एक आश्रमवासी बहन)। ३॥ बजे सादा गरम पानी। ३॥ बजे सुशीला बहन को लेटे-लेटे लिखाया। ४-८ बजे गरम पानी। गरम और ठंडे पानी का हिप बाथ और पुटें पर, पेशाब लाने के लिए डॉक्टरजी ने प्रयत्न किया; लेकिन सफलता नहीं मिली। बजे प्रार्थना फिर बाद बाहर से भीतर आये। प्रार्थना लेटे हुए सुन सके, इसकी व्यवस्था की गयी थी। ~ बजे मामा के साथ १ मिनट। ६ बजे गरम सादा पानी आठ औंस। ६-५ बजे गोस्वामी गणेशदत्तजी और ... देवी के १५ सदस्यों के साथ १५ मिनट बातें। ६ २ जवाहरलालजी अमृतकौरजी राजकुमारी बहन। १५ मिनट जवाहरलालजी के साथ १ मिनट राजकुमारी बहन और उसके बाद पीर साहब और महाराज पटियाला।

७-१ बजे सैर। ८-१ बजे गरम खारा पानी आठ औंस 'साल्ट्रेट' की एक पुड़िया १ मेन की ली। ८ बजे शंकररावजी राममनोहर लोहिया। ८-१ बजे सुचिता बहन और आचार्य साहब। ९ बजे बिस्तर पर बैठे। तेल मलवाया। इस तरह दिन तो बीता।

फिर भी तबीयत तो अच्छी है ही नहीं हृदय भी बिगड़ने लगा था। कदाचित् आज रात से प्रतरनाक हालत शुरू हो जाय तो कुछ कहा नहीं जा सकता। प्रभु को जैसा मंजूर होगा वैसा ही होगा।

सिक्ख-प्रतिनिधि-मण्डल

७ बजे शाम को सिखों का जो प्रतिनिधि-मण्डल लेकर गोस्वामी गणेशदत्तजी आये थे उनके साथ निम्नलिखित बातें हुईं। गोस्वामीजी ने कहा, "जो दो दिनों में वातावरण में फर्क हो गया है, वह केवल आपकी तपश्चर्या है। ये सब आपकी सेवा में हाजिर हैं। इनका कहना है कि हम पानी और धर्म से ईश्वर को साक्षी करके कहते हैं कि हम मिलकर रहेंगे किसी प्रकार की अशान्ति नहीं होने देंगे। करोलबाग के चार एस एस के नेता भी आये हुए हैं। अब आप व्रत पूर्ण कीजिये।"

बापू "आप कहते हैं यह *लिख* दें और दस्तखत दे दें, इतना ही कहूँगा।"

मास्टरसिंहजी (सिख) "हमारी खुशकिस्मती है कि आपका जन्म हमारे नहीं हुआ है। मगर हमारे मुल्क में कुछ भी हो जाय और हमें अपनी जिन्दगी भी देनी पड़े तो भी इस कलंक को नहीं लगने देंगे। जो सेवा आप माँगेंगे हम देंगे।

बापू 'मुझसे कहते हो कि छोड़ो लेकिन एकाएक यह मन नहीं छोड़ूँगा। बहस करना नहीं चाहता। इस तरह सब लोग कहते ही रहते हैं। देखता हूँ, आपको धीरज रखना है। ईश्वर मुझे बचाना चाहेगा तो कोई नहीं रोक सकता। मुझे अभी असर नहीं दीखता कि अभी छोड़ूँ। मैं पानी तो पचाता ही हूँ। पानी को इतनी बरदाश्त करें तो बड़ा उपवास है। मैं शांति से पड़ा हूँ। अभी ज्यादा बहस करना नहीं चाहता।'

● ● ●

तो यह भी उन्हें अच्छा नहीं लगता। मगर मैं भगवान् पर कितना भरोसा रखता हूँ! अगर इस्लाम से नाम लेता हूँगा तो गुर्दे का कार्य अपने-आप सुधर जायगा।

बिरलाजी : 'मेरा दिल तो यहीं पड़ा है। यहीं रहना भी चाहिए। कल श्यामाप्रसाद ने कहा तो यह विचार हुआ कि जाऊँ—वादा किया था इसलिए और सरदार का चेहरा—उस दृढ़ आदमी का चेहरा—दीन हो गया इसलिए उन्होंने भी फोन से कहा कि आ सकते हो तो आ जाओ। दुःख तो भरा ही था। कहा अभी भी उपवास क्यों चलता है?' मैंने कहा 'उपवास लंबा नहीं चलेगा ऐसा मानता हूँ, तो भी यहीं रहना अच्छा लगता है।'

विचार-शुद्धि बड़ा काम

बापू : 'यही एक चीज थी जिसका पाकिस्तान गलत फायदा उठा सकता था। ५५ करोड़ देने से भारत की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी है। अब उन्हें लड़ना हो तो एक मासूम बच्चा भी समझेगा कि वे भारत के पैसे से लड़ रहे हैं। आखिर कितने दिन लड़ेंगे?

तुम जाओ वहाँ जमीन तो है ही। काम चलता रहेगा। जहाँ जाओ वहाँ शुद्धि का काम तो होता ही है। नहीं तो विचार करने की बात है ही नहीं। विचार शुद्धि भी बड़ा काम है।

बिरलाजी : काम तो ईश्वर करता ही है। वह अपने-आप होता रहता है। मगर मनुष्य को लगता है कि मैं भी कुछ करता हूँ।"

बिरलाजी ने नचिकेता और यमराज की कथा बतलाते हुए कहा कि "नचिकेता उसके दरवाजे पर अनशन कर रहा था तो उससे यमराज भी घबरा उठे। फिर एक महात्मा जिसके यहाँ अनशन करते हों बतलाइये उसे कितनी चिन्ता होगी?"

इसी तरह बातचीत चल रही थी कि राजकुमारी बहन आयीं जिससे बातें बंद हो गयीं। मालिश के बीच विधान बाबू, डॉ॰ जीवराज मेहता डॉ॰ [illegible] वगैरह ने बापू की जाँच की। उनका कहना था कि बापू सिर्फ दो औंस संतरे का रस लें तो काफी है। अब उदर की हालत भी सुधर गयी है।"

बापू ने कहा : "ऐसा करूँ तो मुझे २१ दिन बिताने की इच्छा है।" सुशीला बहन ने इनकार किया। मगर इस क्षेम के लिए कोई विरोध करें तो कदाचित् बापू आमरण अनशन ही शुरू न कर दें।

१

१ ॥ बजे बापू बाथ में आये। मैंने और भाई साहब ने उन्हें स्नान कराया। बाथ में सुशीला बहन ने (बिरला-हाउस में रिचर्ड नामक एक यूरोपियन रोगी को गाइनाइड होने पर उन्हें बापू की सेवा-शुश्रूषा में जिस कमरे में रखा था वह) एक कमरा बिरलाजी के पास से माँगने की बापू से आज्ञा चाही। बापू ने कहा : "हम तो उनके हिस्से से आगे बढ़ ही नहीं सकते।" १ ॥। बजे बापू धूप में आये। सुशीला बहन कार्यव्यस्तता के कारण कभी-कभी पेशाब नापना या तौलना भूल जातीं। लेकिन बापू उन्हें समय-समय पर याद दिला देते थे।

शुभ संवाद

स्थानीय मौलाना लोग आये। उन्होंने कहा : 'शहर की हालत बहुत ही सुधर गयी है। यहाँ के जो मुसलमान भागकर कराची चले गये हैं, उनका तार आया है कि हम प्रार्थना करते हैं, आप स्वस्थ हों। हम लोग यहाँ आने के लिए छटपटा रहे हैं। कब आयें ?

बापू ने कहा : 'इसे बहुत अच्छा लक्षण माना जा सकता है। अगर वे लोग दिल्ली आकर रह सकें, तो मैं उसे सच्ची परीक्षा समझूँगा।

१२ बजे मिट्टी का प्रयोग किया। फिर एनिमा की तैयारी की गयी। बापू ने आज एनिमा लिया। आज अधिक मल नहीं निकला। गर्म और ठंडे पानी से सेंक किया गया। मौलाना साहब आये थे। वे कह रहे थे कि आज शाम तक अमनअमान हो जाता है। शहर की हालत काफी सुधर गयी है। बापू ने सात शर्तें रखी हैं। उन पर सभी प्रतिनिधि हस्ताक्षर कर दें तभी अनशन छूट सकता है। बापू की आज अत्यन्त बेचैनी है।

कर्मों का दाग

सब्जी मण्डी के व्यापारी आये। उन्होंने कहा : 'हम लोगों ने अपनी दुकानों पर से मुसलमानों का नाम ऐसा बदला दिया था। किन्तु आज से हम लोग अपनी दुकानें सभी के लिए खोल रहे हैं, जो चाहे, वह आकर ले जाय।

इसी समय एक करुण दृश्य उपस्थित हो गया। अकसर मुझे उनके प्रति तिरस्कार हुआ कि अगर मैं चित्रकार या फोटोग्राफर होती तो ! उस समय बलवन्तसिंहजी आये हुए थे। बापू की (मन और शरीर की) बेचैनी देख इनकी

"भाइयो और बहनो! ईश्वर की कृपा है कि आज उपवास का पाँचवाँ दिन है, तो भी मैं बगैर परिश्रम के आपको दो शब्द कह सकता हूँ। जो मुझे कहना है, वह तो लिखवा दिया है। उसे प्रार्थना-सभा में सुशीला बहन सुना देंगी।

'मुझे इतना ही कहना है कि जो भी कुछ आप करें उसमें परिपूर्ण शुद्धि होनी चाहिए। अगर वह नहीं है, तो कुछ भी नहीं है। अगर आप मेरा उपवास रखें कि इसे कैसे जिन्दा रखा जाय तो बड़ी भारी गलती करेंगे। मुझे जिन्दा रखना या मारना किसीके हाथ में नहीं है। वह सिर्फ ईश्वर के हाथ में है। इसमें मुझे शक नहीं और किसीको भी नहीं होना चाहिए।

अहिंसा के नियम

'इस उपवास का मतलब यह है कि अन्तःकरण स्वच्छ हो और जाग्रत हो—ऐसा करें। तभी सबकी भलाई है। मुझ पर दया करके आप कुछ न कीजिये। जितने दिन उपवास के काट सकता हूँ, काटूँगा। ईश्वर की इच्छा होगी तो मर जाऊँगा। मैं जानता हूँ कि मेरे बहुत-से मित्र दुःखी हैं और सभी कहते हैं कि आज ही उपवास क्यों न छोड़ा जाय। किन्तु आज मेरे पास ऐसा कारण नहीं है। यह मित्र जान तो न छोड़ने का आग्रह न करेंगे। अहिंसा का नियम है कि मर्यादा पर कायम रहना चाहिए। अभिमान नहीं करना चाहिए। नम्र होना चाहिए। मैं जो कुछ कह रहा हूँ, उसमें अभिमान नहीं है शुद्ध प्यार से कह रहा हूँ। ऐसा जो जानता है, वही रहनेवाला है।"

घटते-घटते भी बयान कह रही थी वह भी माइक पर स्पष्ट सुनाई पड़ने लगी। बाद का लिखित सन्देश इस प्रकार है :

आध्यात्मिक उपवास का रहस्य

'मैं पहले भी कह चुका हूँ और आज फिर दोहराता हूँ कि बाहर के दबाव से कई बातें बनती जाती हैं और दबाव खतम होने के बाद फिर टूट जाती हैं। अगर ऐसा कुछ हुआ तो बहुत बुरी बात होगी। ऐसा कभी होना ही नहीं चाहिए। आध्यात्मिक उपवास एक ही काम करता है और वह है दिल की सफाई। अगर दिल की सफाई ईमानदारी से की जाय तो जिस कारण से वह की गयी उसके मिट जाने पर भी सफाई नहीं मिटती। किसी प्रियजन के आगमन के उपलक्ष्य में हमारे

में सफेदी आ जाती है, तो उसके आकर चले जाने पर भी वह मिट नहीं जाती। यह तो जड़ वस्तु की बात है। कुछ अर्से बाद सफेदी मिटने लगती है और फिर से उसे करवाना पड़ता है। लेकिन दिल की सफाई तो एक दफा हो गयी तो मरने तक कायम रहती है। मरने का दूसरा कोई योग्य मकसद नहीं हो सकता।

दिल की बात

'राजा-महाराजा और आम लोगों के तारों का ढेर बढ़ता जा रहा है। पाकिस्तान से भी तार आ रहे हैं। वे अच्छे हैं, मगर पाकिस्तान के दोस्त और शुभचिन्तक की हैसियत से मैं पाकिस्तान के रहनेवालों और जिन्हें पाकिस्तान का भविष्य बनाना है उनसे कहना चाहता हूँ कि अगर उनका विवेक जाग्रत न हुआ और अगर वे पाकिस्तान के गुनाह को कबूल नहीं करते तो वे पाकिस्तान को कभी कायम नहीं रख सकेंगे। इसका यह मतलब नहीं कि मैं यह नहीं चाहता कि हिन्दुस्तान के दोनों टुकड़े अपनी-अपनी रजा से फिर से एक हों। मगर मैं यह साफ करना चाहता हूँ कि जबरदस्ती से उन्हें मिलाने का मुझे खयाल तक नहीं आ सकता। मैं उम्मीद रखता हूँ कि मृत्युशय्या पर पड़े मेरे ये वचन किसीको नहीं चुभेंगे।

"मैं उम्मीद रखता हूँ कि सब पाकिस्तानी समझ जायेंगे कि अगर कमजोरी की वजह से या उनका दिल दुखाने के डर से मैं उनके सामने अपने दिल की सच्ची बातें न रखूँ तो मैं अपने प्रति और उनके प्रति गलत साबित हो जाऊँगा। अगर मेरे हिसाब में कुछ गलती हो तो मुझे बताना चाहिए। मैं वादा करता हूँ कि अगर मैं गलत समझा होऊँ, तो अपना वचन वापस ले लूँगा। मगर जहाँ तक मैं जानता हूँ पाकिस्तान के गुनाह के बारे में दो विचार हो ही नहीं सकते।

अन्तरात्मा की आवाज

"मेरे उपवास को किसी तरह भी राजनैतिक न समझा जाय। यह तो अन्तरात्मा की जबर्दस्त आवाज के जवाब में धर्म समझकर किया गया है। महान् यातना भुगतने के बाद मैंने उपवास करने का फैसला किया है। दिल्ली के मुसलमान भाई इस बात के साक्षी हैं। उनके प्रतिनिधि करीब-करीब रोज मुझे दिनभर की रिपोर्ट देने आते हैं। इस पवित्र मौके पर मेरा उपवास तुड़वाने के हेतु मुझ पर बेजा दबाव राजा-महाराजा, हिन्दू, सिख और दूसरी कौम न अपनी हिम्मत करेंगे और न

'हरिजन'

एक भाई लिखते हैं : "उर्दू हरिजन के बारे में आपका लेख देखा। यदि वह आपका लेख न होता तो मैं यही समझता कि किसीने बहुत ही क्रोध में लिखा है। जीवनजी भाई ने जो कुछ लिखा है, उससे सिर्फ यही साबित होता है कि लोगों को उर्दू लिपि में हरिजन की जरूरत नहीं है। पर आप उसके कारण 'नागरी हरिजन सेवक' को क्यों बन्द करें? क्या आप समझते हैं कि पहले 'हिन्दी नवजीवन' निकालते थे (उर्दू नहीं) तो कोई गुनाह करते थे? उसके बाद भी 'नागरी हरिजन सेवक' निकलता रहा। पर आपने 'उर्दू हरिजन' उस समय नहीं निकाला।

'अगर आपने उर्दू और 'नागरी' 'हरिजन' केवल हिन्दुस्तानी का प्रचार करने के लिए निकाले होते तो बात ठीक भी थी। पर नागरी 'हरिजन सेवक' पहले से ही निकल रहा है। उसमें घाटा हो तो आप भले ही बन्द करें। आपने 'नागरी हरिजन' बन्द करने की जो चेतावनी दी है, उसमें मुझे एक प्रकार का बलात्कार दीखता है।

क्या 'अंग्रेजी हरिजन' से भी ज्यादा 'नागरी हरिजन सेवक' ने गुनाह किया है? सच बात तो यह है कि पहले अंग्रेजी का हरिजन बन्द हो जाना चाहिए। पर होता यह है कि अंग्रेजी के 'हरिजन' को जितना महत्त्व मिलता है उतना दूसरे संस्करणों को नहीं।

'यह कितने बड़े दुःख की बात है कि आप अपने भाषण-प्रवचन हिन्दुस्तानी में देते हैं पर उनका सारांश आपके दफ्तर में अंग्रेजी में रहता है। फिर उसका उल्था नागरी और उर्दू 'हरिजन' में छपता था—यह समझकर कि अंग्रेजी से अब तो वह नहीं लिया रहता शायद अब सीधा हिन्दुस्तानी में ही लिया जाता हो।

"आपने कई वर्ष पहले लिखा था कि जहाँ तक सम्भव हो आप केवल गुजराती में या हिन्दुस्तानी में ही लिखेंगे और उसका अनुवाद अंग्रेजी में होगा। पहले ऐसा क्रम भी था लेकिन बाद में यह सिलसिला शिथिल हो गया।

"मैं फिर आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप 'अंग्रेजी हरिजन' बन्द कर दें और दूसरे संस्करण जारी रखें।"

शब्द का सही प्रयोग

बापू : "जो बात वाजई सही है, वह अगर कही जाय तो उसे क्रोध मानना शब्द का सही प्रयोग नहीं होगा। क्रोध में आदमी बेतुका काम कर बैठता है। अगर 'उर्दू हरिजन' बन्द करना पड़ा तो साथ-साथ नागरी भी बन्द करना लाजिमी यानी आवश्यक हो जाता है। लाजिमी बात करने में क्रोध कैसा ! जिसे मैं लाजिमी समझूँ, उसे दूसरे न भी समझें—जैसे इस पत्र के लेखकों पर—इससे मुझे क्या ! हम जिसे लाजिमी मानें वही सारा जगत् भी माने—ऐसा होना जरूरी नहीं। हर चीज के कम-से-कम दो पहलू होते ही हैं।

नागरी के साथ उर्दू

'अब यह बताना रहा कि एक को छोड़ूँ या दोनों को ! यह ठीक है कि जब मैंने नागरी में 'नवजीवन' निकाला और 'हरिजन' निकालना शुरू किया तब दो लिपियों की चर्चा नहीं थी। अगर थी तो मुझे उसका पता नहीं था।

'बीच में जब भाई जमनालालजी की इच्छा से हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा कायम हुई। इससे *'उर्दू रिसाला'* निकालना लाजिमी हो गया। अब मानो कि *'उर्दू रिसाला'* बन्द हो और नागरी निकलता रहे तो यह मेरी निगाह में बड़ा ही अनुचित होगा। क्योंकि हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा की हिन्दुस्तानी का अर्थ यह है कि वह जैसी नागरी लिपि में लिखी जाती है, वैसे ही उर्दू लिपि में भी लिखी जा सकती है।

"इसलिए जो अखबार दोनों लिपियों में निकलता था उसे वैसे ही निकलना चाहिए। यह भी एक ऐसे मौके पर, जब कि हिन्द के लोग चारों ओर से कह रहे हैं कि राष्ट्रभाषा हिन्दी ही है और वह नागरी लिपि में ही लिखी जाय। यह विचार ठीक नहीं है—यह बताना मेरा काम हो जाता है। यह दलील अगर ठीक है, तो मेरा कर्तव्य हो जाता है कि मैं नागरी लिपि के साथ उर्दू लिपि भी रखूँ; और न रख सकूँ, तो मुझे उर्दू 'हरिजन-सेवक' के साथ नागरी 'हरिजन-सेवक' का भी त्याग करना चाहिए।

नागरी सर्वोत्तम

'लिपियों में मैं सबसे अच्छा दरजे की लिपि नागरी को ही मानता हूँ। यह कोई छिपी बात नहीं है। यहाँ तक कि मैंने दक्षिण अफ्रीका में गुजराती लिपि के

बरसे मैंने नागरी लिपि में गुजराती सब लिखना शुरू किया था। इसे मैं समय के अभाव में आज तक पूरा न कर सका। नागरी लिपि में भी सुधारने की गुंजाइश है, जैसे कि करीब-करीब सब लिपियों में है। लेकिन यह दूसरा विषय हो जाता है। यह इशारा जो मैंने किया है, सो यह बताने के लिए कि नागरी लिपि का विरोध मेरे मन में जरा भी नहीं है। लेकिन जब नागरी के पक्षपाती उर्दू लिपि का विरोध करते हैं, उसे दूसरी लिपियों के मुकाबले में बतलाते हैं और अन्त में उसका साम्राज्य होने की बातें करते हैं, तो मुझे यह कहना पड़ता है कि यह भूल है। इस दृष्टि से देखा जाय तो मेरा फैसला निर्दोष मानना चाहिए और जरूरी भी।

जीत हिन्दुस्तानी की

हिन्दुस्तानी के बारे में मेरा पक्षपात सही है। मैं मानता हूँ कि नागरी और उर्दू लिपियों के बीच अन्त में जीत नागरी लिपि की ही होगी। इसी तरह लिपि का सवाल छोड़कर भाषा का ही सवाल करें तो जीत हिन्दुस्तानी की होगी क्योंकि संस्कृतमय हिन्दी बिलकुल बनावटी है और हिन्दुस्तानी बिलकुल स्वाभाविक। इसी तरह फारसीमय उर्दू अस्वाभाविक और बनावटी है। मेरी हिन्दुस्तानी में फारसी शब्द बहुत कम आते हैं, तो भी मेरे मुसलमान दोस्तों और पंजाबी तथा उत्तर के हिन्दुओं ने मुझे सुनाया है कि मेरी हिन्दुस्तानी समझने में उन्हें दिक्कत नहीं होती।

दुखदायी स्मरण

हिन्दी के पक्ष में मैं तो बहुत कम दलील पाता हूँ। सच्ची बात यह है कि पहले पहल जब हिन्दी साहित्य सम्मेलन में मैंने हिन्दी की व्याख्या की तब उसका विरोध नहीं के बराबर था। विरोध कैसे शुरू हुआ इसका इतिहास बड़ा दुखदायक है। मैं उसे याद भी नहीं रखना चाहता। मैंने यहाँ तक बताया था कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन नाम ही राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए सूचक नहीं था और न वह आज भी है।

लेकिन मैं साहित्य के प्रचार की दृष्टि से सम्मेलन नहीं बना था। स्व. भाई जमनालालजी और दूसरे अनेक मित्रों ने मुझे बताया था कि नाम चाहे कुछ भी हो उन लोगों का मन साहित्य में नहीं था और इसीलिए मैंने दक्षिण में राष्ट्रभाषा का प्रचार बड़े जोर से किया।

प्रायश्चित्त उपवास के छठे दिन प्रार्थना के बाद बैठे-बैठे मैं यह लिखता रहा हूँ। कितने ही दुखदायी स्मरण ताजे होते जा रहे हैं, पर उन्हें और बढ़ाना मुझे अच्छा नहीं लगता।

नाम नहीं, काम

'नाम का झगड़ा मुझे बिलकुल पसंद नहीं है। नाम कुछ भी हो लेकिन काम ऐसा हो जिसमें सारे राष्ट्र का देश का कल्याण हो। उसमें किसी भी नाम का द्वेष होना ही नहीं चाहिए।

क्या करूँ?

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा—इक़बाल के इस वचन को सुनकर किस हिन्दुस्तानी का दिल न उछलेगा? अगर न उछले तो उसे कमनसीब समझूँगा। इक़बाल के इस वचन को मैं हिन्दी कहूँ, हिन्दुस्तानी कहूँ या उर्दू कहूँ? कौन कह सकता है कि इसमें राष्ट्रभाषा नहीं भरी है? इसमें मिठास नहीं है? विचार की पुख्तगी नहीं है? भले ही इस विचार के साथ आज मैं अकेला होऊँ। साफ है कि कौम कभी भी संस्कृतमय हिन्दी की होनेवाली नहीं है, न फारसीमयी उर्दू की। कौम तो हिन्दुस्तानी की ही हो सकती है। जब हम अंदरूनी द्वेषभाव को भूलेंगे तभी हम *इन बनावटी झगड़ों को भूल जायेंगे, उससे शर्मिन्दा होंगे।*

हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा, अंग्रेजी विश्वभाषा!

'अब रही *'अंग्रेजी हरिजन'* की बात! यहाँ मैं छोटी बात मानता हूँ। 'अंग्रेजी हरिजन' को छोड़ नहीं सकता। क्योंकि अंग्रेज लोग और अंग्रेजी के विद्वान् हिन्दुस्तानी लोग मानते हैं कि मेरी अंग्रेजी में कुछ खूबी है। पश्चिम के साथ का मेरा सम्बन्ध भी बढ़ रहा है। मुझमें अंग्रेजों का या दूसरे पश्चिमी लोगों का द्वेष न कभी था न आज है। उनका कल्याण मुझे उतना ही प्रिय है, जितना हमारे देशवासियों का। *इसलिए मेरे छोटे-से वाक्-भंडार में से अंग्रेजी भाषा का बहिष्कार कभी न होगा।* मैं उस भाषा को कभी भूलना नहीं चाहता और न चाहता हूँ कि सारा हिन्दुस्तान अंग्रेजी भाषा को छोड़ या भूल जाय। मेरा आग्रह इतना ही है कि अंग्रेजी को उसकी योग्य जगह से बाहर न ले जाया जा रहा है। वह कभी राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती और न हमारी तालीम का जरिया हो। ऐसा करके हमने अपनी भाषाओं को कंगाल बना रखा है।

विद्यार्थियों पर इसने बड़ा बोझ डाला है। यह करुण दृश्य—जहाँ तक मुझे इल्म है—सिर्फ हिन्दुस्तान में ही देखा जाता है। भाषा की इस गुलामी ने हमारे करोड़ों लोगों को बहुतेरे ज्ञान से बरसों तक वंचित रखा है, इसकी हमें न समाज है, न धर्म और न परमात्मा ही! यह कैसी बात है! यह सब साफ-साफ जानते हुए भी मैं अंग्रेजी भाषा का बहिष्कार नहीं कर सकता। जैसे तमिल आदि प्रान्तीय भाषाएँ हैं और हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा ठीक उसी तरह अंग्रेजी विश्वभाषा है जगत् की भाषा है—इससे कौन इनकार कर सकता है? अंग्रेजों का साम्राज्य जायगा क्योंकि वह दूषित था और है। लेकिन अंग्रेजी भाषा का साम्राज्य कभी नहीं जा सकता।

"मुझे ऐसा लगता है कि गुजराती भाषा में या अंग्रेजी भाषा में कुछ भी लिखूँ तो भी अंग्रेजी 'हरिजन' और गुजराती 'हरिजन-बंधु' अपने पैरों पर खड़े रहेंगे।"

५॥। बजे तक इतना लिखवाया।

सात शर्तें

बापू ने अपना उपवास छोड़ने की निम्नलिखित सात शर्तें रखी हैं:

१ महरौली में ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार की मजार है, वह मुसलमानों के लिए बिलकुल सुरक्षित होनी चाहिए। दरगाह के खिदमतगारों की जान का कोई खतरा न हो। सात-आठ दिनों में वहाँ मुसलमानों का जो उर्स का मेला लगनेवाला है, उसमें वे बिना किसी खतरे के आ-जा सकें। महरौली के हिन्दू और सिख यह विश्वास दिलायें कि वहाँ मुसलमानों की जान का कोई खतरा नहीं होगा।

२ दिल्ली की ११७ मसजिदें जिन पर हाल के उपद्रवों में हिन्दू और सिख शरणार्थियों ने कब्जा किया है या जिनको मन्दिर बना लिया गया है, लेकर वे मुसलमानों को वापस लौटा दी जायँ और उनमें उनको इबादत करने दी जाय। भिन्न-भिन्न इलाकों में मसजिदें हैं, वहाँ के हिन्दू और सिख यह विश्वास दिलायें कि ये मसजिदें दंगों से पहले जैसी थी वैसी ही रहेंगी।

३ करोलबाग, सब्जीमंडी और पहाड़गंज में मुसलमान आजादी से आ-जा सकें और उनकी जान को वहाँ कोई खतरा न हो।

४ दिल्ली के जो मुसलमान डर कर पाकिस्तान चले गये हैं, वे अगर वापस आकर यहाँ बसना चाहें, तो हिन्दू और सिख उनका रास्ता न रोकें।

रेलों में मुसलमान बिना किसी खतरे के सफर कर सकें।

६ मुसलमान दुकानदारों का बहिष्कार न किया जाय।

७ दिल्ली शहर के जिन हल्कों में मुसलमान रहते हैं, उनमें हिन्दुओं और सिक्खों के बसने का सवाल वहाँ के मुसलमानों की रजामंदी पर छोड़ दिया जाय।

मौलाना अबुल कलाम आजाद साहब ने करीब तीन लाख हिन्दू-सिक्खों की विराट् सभा के समक्ष इन सात शर्तों की घोषणा की। राजेन्द्रबाबू उस सभा के अध्यक्ष थे। इसलिए उसका प्रभाव भी काफी अच्छा पड़ा होगा।

आज सुबह से शुभ शकुन हो रहे हैं। मालूम पड़ता है कि कदाचित दोपहर तक अनशन छूट ही जाय। ८॥ बजे बापू मालिश के लिए गये। वहाँ डॉ. विधानबाबू, डॉ. जीवराज भाई और सुशीला बहन ने बापू की परीक्षा की। बापू आज पेट दुखने की शिकायत कर रहे थे और सिर भी भारी लग रहा था। विधानबाबू ने पुनः रस लेने के लिए दलील शुरू की। लेकिन बापू ने कहा कि फिर तो अभी आज से पुनः २१ दिनों का अनशन करेंगे चाहे शान्ति हो या न हो। इसे सभी ने इन्कार कर दिया। देखें आज का दिन कैसा बीतता है!

यह सब तो ठीक है। लेकिन अभी भी जिन्ना साहब एक भी शब्द नहीं बोले, यह आश्चर्य की बात है।

आज सुशीला बहन मालिश में नहीं थीं। राजेन्द्रप्रसादजी के यहाँ सभा में गयी थीं। बाथ में बापू काफी बेचैन थे। वहाँ एक घंटा सोया। वजन १ ७ पौण्ड हो रहा। जरा भी कम-बेशी नहीं हुआ। इस कारण सभी काफी फिक्र में पड़े हैं। आज प्रवचन के समय पंडितजी आ पहुँचे थे। उन्होंने ही प्रवचन लिया। वे तो इतने अधिक खिन्न हैं कि मुझे बापू को देख जितना दुःख नहीं होता उतना पंडितजी को देखकर होता है।

प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर

आज तो असंख्य लोग आते-जाते रहे। कहीं भी स्थान-भर खाली न थी। मैं तो ऊपर नहाने चली गयी। नीचे आयी तो बापू के कमरे में सौ से अधिक लोग

गया थे। जवाहरलालजी राजेन्द्रबाबू, हिन्दू, सिख मुसलमान ईसाई! सैकड़ों-भाइयों की तो भीड़ ही उमड़ पड़ी थी। वातावरण कुछ उत्साहभरा मालूम पड़ा। इसलिए मैं तो वहाँ खड़े रहने की भी जगह न होने पर भी धीरे-धीरे बापू के पास ही जाकर इसलिए घुसकर बैठ गयी कि सिलसिला न छूट जाय।

प्रमुख व्यक्तियों में—जवाहरलालजी शंकररावजी [illegible] वगैरह मन्त्रिमण्डल हिन्दू महासभा और आर. एस. एस. के लाला हरिश्चन्द्र, अनेक हिन्दू और मुसलमान भाई, पाकिस्तान के हाई कमिश्नर जनाब जहीद हुसेन भी थे। राजेन्द्रबाबू ने उनकी ओर से कहा:

"पिछली रात को सब लोग मेरे घर पर इकट्ठे हुए थे और पूरी चर्चा के बाद सबने तय किया कि उसी वक्त और वहीं प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये जायँ। चूँकि कुछ संस्थाओं के प्रतिनिधि उस बैठक में उपस्थित न थे इसलिए हमने महसूस किया कि हस्ताक्षर किया हुआ प्रतिज्ञा-पत्र लेकर आपके पास तुरन्त न पहुँचा जाय; बल्कि जब तक सबों के हस्ताक्षर न हो जायँ तब तक रुका जाय। इसके मुताबिक सवेरे फिर हमारी बैठक हुई और पिछली रात की बैठक में जो लोग अनुपस्थित थे उन्होंने भी इस बैठक में शामिल होकर अपने हस्ताक्षर कर दिये।

"सवेरे की बैठक के दौरान में देखा गया कि पिछली रात को जिन लोगों के दिलों में थोड़ी हिचकिचाहट थी वे भी पूरे आत्मविश्वास के साथ कहते थे कि हम पूरी जिम्मेदारी की भावना से गांधीजी से अनशन छोड़ने के लिए कह सकते हैं। उन लोगों ने एक साथ और अलग-अलग जो गारण्टी दी उसे ध्यान में रखकर मैंने कांग्रेस के सभापति के नाते इस मसविदे पर हस्ताक्षर किये। उसके बाद दिल्ली के चीफ कमिश्नर जनाब खुरशीद और डिप्टी कमिश्नर श्री रंधावा ने—जो वहाँ हाजिर थे—शासन की ओर से उस पर हस्ताक्षर किये। यह तय किया गया है कि इस प्रतिज्ञा-पत्र पर अमल करने के लिए कुछ कमेटियाँ कायम की जायँ। मुझे उम्मीद है कि अब आप अपना अनशन छोड़ देंगे।"

पाकिस्तान सरकार के नाम

उसके बाद लाला देशबन्धु ने कहा: "आज सुबह मुसलमान भाइयों का जुलूस हिन्दू मुहल्लों में पहुँचा था और वहाँ हिन्दुओं ने बड़े प्रेम से उन्हें फल दिये और

नाश्ता कराया। इन सबसे मालूम पड़ता है कि लोगों के दिल बदल गये हैं। आप भारत की ४० करोड़ जनता के नाथ हैं। इसलिए अनशन छोड़िये यही प्रार्थना है।"

तो यह दगा होगा

इस तरह विभिन्न प्रतिनिधियों के भाषणों के बाद बापू अत्यन्त क्षीण आवाज में बोले। उसे लिख लेने के बाद प्यारेलालजी उसको जोर से पढ़ सुना देते थे। बापू की आवाज बड़ी मुश्किल से सुनी जा सकती थी। मैं तो बिलकुल बापू के मुँह के पास ही कान लगाकर लिखती रही इसलिए ठीक लिखा जाता था और फिर प्यारेलालजी को देती जाती थी। वे उसे सबको सुना देते थे। यह सारा कार्यक्रम ११॥ बजे पूरा हुआ।

बापू ने इस प्रकार कहा : 'यह सुखी जनक तो लगता है मगर एक बात अगर आपके दिल में न हो तो यह सब निकम्मा समझिये। इस मसविदे का अगर यह अर्थ है कि दिल्ली को आप सुरक्षित रखेंगे और बाहर चाहे जितना भी आग जले उसकी आपको परवाह न होगी तो आप बड़ी गलती करेंगे और मैं भी उपवास छोड़कर मूर्ख बनूँगा। इलाहाबाद में क्या हुआ सो तो आपने अखबार में पढ़ा ही होगा। न पढ़ा हो तो पढ़िये। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिन्दू महासभा भी इस समझौते में शामिल हैं—ऐसा मैं समझता हूँ। अगर यहाँ के लिए वे इस समझौते में शामिल हैं और दूसरी जगह के लिए नहीं तो यह भी बड़ा दगा होगा। मैं देखता हूँ कि ऐसा दगा आज हिन्दुस्तान में बहुत चलता है।

"दिल्ली तो हिन्दुस्तान का दिल है—पायतख्त है। यहाँ हिन्दुस्तान के बड़े लोग इकट्ठे हुए हैं। सभी ही मनुष्य जानवर बनें मगर यहाँ जो हैं, वे इन की मर्यादा बैठे हैं। वे अगर सारे हिन्दुस्तान को इतना भी न समझा सकें कि हिन्दू, मुसलमान और दूसरे सब धर्मों के लोग भाई-भाई हैं, तो यह दोनों उपनिवेशों के भविष्य के लिए बुरा होगा। अगर हम आपस में लड़ते रहे, तो हिन्दुस्तान का क्या होगा। "

शुभ भगवान् की तरफ

इतना कहते-कहते बापू बहुत ही थक गये। मानव-पुष्प को इस प्रकार वेदना से वे चौंकने लगे। हृदय रो रहा था। प्यारेलालजी भी बोल नहीं पाते थे इसलिए

सुशीला बहन ने ही पद सुनाया। दो मिनट बाद पुनः भाषण शुरू करते हुए बापू ने कहा :

"मैं घबराहट में पड़ गया। बचपन है, इसलिए अपनी बात पूरी न कर सका। हम ऐसा कोई काम न करें जिसके लिए बाद में हमें पछताना पड़े। हमें आगे दोनों को बहादुरी दिखानी है। हम यह कर सकेंगे या नहीं सो तो देखना है; अगर नहीं कर सकते तो मुझे प्राण छोड़ने को न कहिये। आपको और सारे हिन्दुस्तान को यह करना है। इसका यह मतलब नहीं कि यह आज के आज ही जायगा। मुझमें यह ताकत नहीं। मगर इतना कहूँगा कि आज तक हमारा मुँह शैतान की तरफ रहा अब भगवान् की तरफ रहेगा। अगर जो बात मैंने आपके सामने रखी है उसे आप दिल से मंजूर नहीं करते या आपने यह मान लिया है कि यह आपके काबू के बाहर है, तो आपको साफ-साफ यह बात मुझे बता देनी चाहिए।

समझकर निश्चय करें !

यह कहना कि हिन्दुस्तान सिर्फ हिन्दुओं के लिए ही है और पाकिस्तान सिर्फ मुसलमानों के लिए ही—तो इससे बड़ी बेवकूफी क्या हो सकती है! शरणार्थी यह समझें कि पाकिस्तान का उद्धार भी दिल्ली से ही मालूम होगा।

"मैं फाके से डरनेवाला आदमी नहीं हूँ। मैंने बहुत बार फाके किये हैं और सफल हुए, तो फिर भी कर सकता हूँ। इसलिए आप जो भी करें बार-बार सोच-समझकर करें।

दृढ़ निश्चय समझकर करें

"जो मुसलमान भाई हमेशा मेरे पास आते और ऐसी बातें करते हैं कि अब दिल्ली ठीक हो गया है और हिन्दू-मुसलमान साथ रह सकेंगे उनके दिल में अगर कुछ भी खटकता है—मन में ऐसा लगे कि आज तो मजबूरन चुप रहना है, न रहें तो जायँ कहाँ! लेकिन आखिर कभी-न-कभी बदला लेंगे ही—तो उन्हें यह बात मुझे साफ-साफ कह देनी चाहिए। सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को ठीक करना बड़ा मुश्किल काम है। मगर मैं तो बड़ी उम्मीद रखनेवाला इन्सान हूँ। दीवाना हूँ, तो वह काम उस तक भी न हो सकेगा! हिन्दुओं और मुसलमानों का समझौता आज

१

आप कहते हैं। मगर हिन्दू मानें कि मुसलमान तो यवन हैं, असुर हैं, ईश्वर की पहचान ही नहीं सकते और मुसलमान हिन्दुओं के बारे में ऐसा ही मानें तो इससे बढ़कर कुफ्र नहीं।

एक को दगा, सबको धोखा

'रास्ते में मुझे एक मुसलमान भाई प्रेम से एक किताब दे गया था। जिसने बनाया बड़ा मुसलमान है। उस किताब में लिखा है कि 'खुदा फरमाता है कि हर काफिर—और हिन्दू काफिर है—एक जहरी जानवर से भी बदतर है। उसे मार सकते हैं। उसे धोखा देना फर्ज है। उसके साथ बराबरी क्या करना ?' यह चीज अगर मुसलमानों के दिल में छिपी-छिपी भी पड़ी है तो यह कहना कि हम अपने रहेंगे' हिन्दुओं के साथ धोखेबाजी है। एक को धोखा दिया तो सबको दिया।

'मैं अगर सच्चे दिल से पत्थर को पूजा करता हूँ, तो उसमें किसीको धोखा नहीं देता। मेरे उस पत्थर में भगवान् है। मैंने सोचा अगर दोनों के दिलों में कुफ्र ही भरा है, तो मैं जीकर क्या करूं।

'आज जो तार आये हैं, उनमें बड़े-बड़े मुसलमानों के भी तार हैं। उनसे मुझे खुशी होती है। ऐसा लगता है कि वे समझ गये हैं कि राज चलाने का यह तरीका नहीं।

यहाँ के बाद पाकिस्तान

'यह सब सुनकर भी आप मुझे उपवास छोड़ने को कहेंगे तो मैं छोड़ूँगा। पीछे आप मुझे विदाई दे देंगे। आज तक तो दिल्ली में ही रहकर करने-मरने की बात थी। यहाँ अगर काम हो गया हो तो मैं पाकिस्तान चला जाऊँगा और वहाँ के मुसलमानों को समझाऊँगा। दूसरी जगह कुछ भी हो यहाँ के लोग शान्त रहें। यहाँ के शरणार्थी समझ लें कि अगर पाकिस्तान से दिल्ली के कोई लोग वापस आते हैं, तो उन्हें अपना भाई समझकर रखना है। यहाँ वे परेशान पड़े हैं। मुसलमान जो [illegible] कर रहे थे वह सब हिन्दू छीन नहीं गये हैं, तो अच्छा है, वे आ जायें। मधु-पुरे लगते हैं। यह सब सोच-समझकर आप सब मुझे कह दें कि उपवास छोड़ो तो मैं छोड़ूँगा। मगर हिन्दुस्तान वैसा-का-वैसा रहे, तो वह बेकस-सा हो जायगा। इससे बेहतर है कि मुझे आप फना करने दें। ईश्वर की इच्छा होगी तो मुझे उठा लेगा।

मौलाना के उद्गार

बापू के बाद मौलाना साहब ने कहा : "महात्माजी ने जो पूछा है, उसका साम्प्रदायिक शान्ति की गारण्टी से ताल्लुक है। वह दिल्ली के नागरिकों के प्रतिनिधियों द्वारा दी जा सकती है। किताब के बारे में कहूँगा कि इस्लाम के नाम पर यह कलंक है। इस्लाम को बदनाम करनेवाली यह किताब है। इस्लाम के पैगम्बर साहब ने 'कुरानशरीफ' में एक ऐसी उम्दा बात बतलायी है कि तमाम इस्लाम भाई-भाई हैं, फिर वह किसी भी जाति का या मजहब का क्यों न हो। महात्माजी ने इन मुसलमान दोस्तों के जिन विचारों का जिक्र किया है, वे इस्लाम की सीख के बिल्कुल खिलाफ हैं। वे सिर्फ उस पागलपन को जाहिर करते हैं, जो थोड़े समय पहले कुछ धर्म के लोगों पर सवार था।"

वफादारी का फरमान

इसके बाद स्थानीय मुसलमान भाई हबीब-उर रहमान ने फरमाया : "दो ही बातें ऐसी हैं, जिनके मुताबिक कह सकता हूँ। एक तो यह बिल्कुल गलत है कि मेरे धर्म-भाई हिन्दुस्तान को अपना मुल्क नहीं मानते। हम यहाँ पाँच बजे आते थे हमने ३ साल से कांग्रेस के झण्डे के नीचे काम किया है। जब हमसे हिन्दुस्तान की तरफ अपनी वफादारी दिखलाने के लिए कहा जाता है तो हम इसे अपनी राष्ट्रीयता का अपमान समझते हैं। मुझे याद है कि हाल के दंगों में एक मौके पर हमारे कांग्रेसी दोस्तों और साथियों ने हमें दिल्ली के बाहर एक सुरक्षित जगह देने की बात कही थी। क्योंकि उन्हें इस बात का यकीन नहीं था कि वे हमें दंगाइयों से अच्छी तरह बचा सकेंगे। लेकिन हमने उस प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया और भगवान् पर भरोसा रखकर शहर में रहना और घूमना पसन्द किया।

जहाँ तक जमीयतुल उलेमा का सम्बन्ध है, मैं कह सकता हूँ कि उसके मेम्बर मौलाना आजाद साहब के और कांग्रेस के पक्के अनुयायी हैं। जो पाकिस्तान चले गये हैं, वे सिर्फ अपनी जान बचाने के लिए और दूसरी बदतर बातों के डर से ही वहाँ गये हैं। हम सब हिन्दुस्तान के नागरिकों की तरह आत्मसम्मान और इज्जत से हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं न कि दूसरों की दया पर। मैं निश्चय के साथ कहता हूँ कि अगर हिन्दुस्तान पर हमला हुआ तो हम सब अपने मुल्क हिन्दुस्तान

के आखिरी आदमी तक हिफाजत करेंगे। हमने बार-बार साफ शब्दों में कहा है कि जो ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हैं, उन्हें हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तान चले जाना चाहिए।

शुभ शकुन

आज की परिस्थिति जो बदल गयी है, इसे हम बहुत ही अच्छा शकुन समझते हैं। हमें सन्तोष है कि प्रवाह बदल गया है और अब वह विरोधियों के मेल-जोल और शान्ति की तरफ बह रहा है, जब कि पहले कटुताहट की तरफ बह रहा था। जब कि पहले कड़ुवाहट और नफरत की वजह से दंगे हो रहे थे अब चूँकि जनता के प्रतिनिधियों द्वारा दिये गये आश्वासनों पर हुकूमत की तरफ से दस्तखत हो गये हैं, हमें सन्तोष है कि इन आश्वासनों पर अमल होगा। अब मैं अपने पूज्य महात्माजी से अनशन तोड़ने की प्रार्थना करता हूँ।"

इसके बाद गोस्वामी गणेशदत्तजी ने कहा कि 'श्री महाराज ने इतनी तपस्या की है, तो बहुत परिवर्तन हुआ है। तब तो ७५ प्रतिशत हृदय-परिवर्तन था मगर अब ९ प्रतिशत हो गया है। तो हम आपकी आज्ञा का सम्पूर्ण पालन करेंगे।"

घर-घर रोना

आर० एस० एस० के श्री हरिश्चन्द्रजी ने कहा "हम सब आपके सामने शपथ लेते हैं कि आपकी आज्ञा का पूरा पालन करेंगे। आपके अनशन से घर-घर रोना मच गया है। हम शपथ लेकर कहते हैं कि पूर्ण शान्ति रहेगी। हम मकान नहीं माँगेंगे और न नौकरी ही माँगेंगे। ईश्वर जैसे रखेंगे वैसे रहेंगे।'

पाकिस्तान की अपनी

पाकिस्तान के हाई कमिश्नर जाहिद हुसैन साहब ने कहा : 'मैं इसलिए हाजिर हूँ कि पाकिस्तान के लोग बेचैन हैं। सब पूछते हैं कि आपकी तबीयत कैसी है। इस बारे में हम जो मदद कर सकें करने को तैयार हैं।

आज्ञा पालन करेंगे!

सिखों के प्रतिनिधि श्री हरनाम सिंहजी ने जो दिल्ली निवासी हैं, कहा — आज गुरु गोविन्दसिंह का जन्म-दिन है। मैं गुरुद्वारे से आ रहा हूँ। वहाँ आपके लिए प्रार्थना की गयी है। वहाँ सबको आपका सन्देश सुनाया गया। मुझे कोई शिक

ऐसा नहीं मिला जो मुसलमानों को मारना चाहता हो। बल्कि सब यही कहते हैं कि हमें महात्माजी की जान बचानी है। आप व्रत की पारणा कर दें। जो सिख यहाँ हैं वे पूरी तरह आपकी आज्ञा का पालन करेंगे।

श्री रंधावा

डिप्टी कमिश्नर श्री रंधावा ने कहा : 'टाउनहाल में जलसा हुआ था तो मैंने प्रार्थना की थी कि जितनी जल्दी हो सके, हम सब महात्माजी को बचाने के लिए प्रयत्न करें। मुझे खुशी है कि पिछले तीन-चार दिनों से दिल्ली की हुकूमत को पहले की आग नहीं है। जो आपकी शर्तें हैं, हम अपनी तरफ से (हुकूमत की ओर से) उनका संपूर्ण पालन करेंगे। हम पूरी मुहब्बत से रहेंगे।

राजेन्द्रबाबू ने पुनः कहा : 'मैंने तो सभा की तरफ से दस्तखत किये ही हैं। अब आप उपवास छोड़ें।

यह सारा सुनने के बाद बापू ने कहा : "मैं उपवास छोड़ूँगा। ईश्वर की मर्जी होगी वह होगा। आप सब साक्षी बनते हैं, तो बनें।

हे गोविन्द राखो शरण!

बापू ने पहले प्रार्थना करने के लिए कहा और वातावरण में उत्साह की एकदम अनोखी लहर दौड़ पड़ी। सारा कमरा पवित्र उत्साह से भर गया। सभी हम लोगों की प्रार्थना में शामिल हो गये।

पहले 'नम्यो हो रेंगे क्यो' यह बुद्ध मंत्र पढ़ा गया। फिर दो मिनट शान्ति! उसके बाद रोज़ प्रार्थना—'अउज़ु बिल्लाह' और अल्फातिहा की नमाज़ हुई। फिर ईशावास्य 'जन्दुस वास' और अन्त में असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।

और—

हे गोविंद राखो शरण अब तो जीवन हारे!
नीर पिवन हेतु गयो सिंधु के किनारे
सिंधु बीच बसत ग्राह चरण धरि पछारे!
हे गोविंद राखो शरण...
चार पहर युद्ध भयो ले गयो मझधारे
नाक कान डूबन लागे कृष्ण को पुकारे!

हारथ में धम्म गयो और मचो भारी
वेग चक्र गहा पग मग में सिधारे।
सूर कहै स्याम सुनो शरण है तिहारे
अबकी बार पार करो नंद के दुलारे।

इस भजन के समय तो हरएक की आँखों में आँसू और गला रुँध जाय ऐसे हालात भर आये। मानो सचमुच भगवान् कृष्ण इस मँझधार दरिया के तूफान के समय ही उपस्थित न हुए हों। इस दृश्य का वर्णन शब्दों में करना कठिन है। बापू की आँखें बंद थीं। चेहरे पर अनुपम तपश्चर्या का तेज चमक रहा था। चाहे जितना ही पापी आदमी अगर इस समय भी बापू की झाँकी देख ले, तो सचमुच उसका सारा पाप धुल ही जाय। यह इतना पवित्र अवसर रहा। कलकत्ते के अनशन की अपेक्षा इस बार की यह झाँकी कुछ अजब ही है।

उसके बाद रसकुंभ और फिर १२ औंस ग्लूकोज मिले रस का गिलास मौलाना साहब ने बापू के हाथ में थमाया। फोटोग्राफर लोग अपनी मशीनें दबाने लगे। १२.२५ बजे अनशन छूटा। पूरे बिरला-भवन में आनन्द छा गया। जवाहरलालजी के चेहरे का वर्णन करना असंभव ही है। आनन्द ही हो तो यह स्वाभाविक है, पर यह होते हुए उन्हें यह ग्लानि भी थी कि मेरे प्रधानमंत्रित्व में सिर्फ छह महीनों के भीतर ही बापू को ऐसी कसौटी से पार करवाना पड़ा। मानो इसके लिए वे स्वयं को भयानक अपराधी न मानते हों। उनके चेहरे से यही भावना टपक रही थी कि इतना आनन्द होते हुए भी उनसे मुस्कुराया ही नहीं जा रहा हो। इसके बाद बापू ने सभीको मेवा और संतरे का प्रसाद बाँटा।

सच्ची बहादुरी

इस चीज के बाद बापू ने गुरुद्वारे में होनेवाले गुरु गोविन्दसिंह जन्मोत्सव की विराट् सभा के लिए निम्नलिखित सन्देश लिखवाया जिसकी सिखों ने माँग की थी: सिख भाइयों ने बड़ी बहादुरी दिखायी है कि वे अपना गुस्सा पी गये। यही तो सच्ची बहादुरी है। गुरु महाराज ने भी यही सिखाया है। 'एक सिख सवा लाख के सामने खड़ा रह सके' इसका अर्थ यही है कि 'सिखों की जय हो।'"

आज तो बापू काफ़ी थके हुए हैं। हम लोगों का समय भी इस तरह आने-जाने में ही बीता। प्रार्थना में बहुत-से लोग थे। रिमझिम रिमझिम मेह बरस रहे थे। मानव-हृदय के आमन्त्रित हृदय-मन्त्र के साथ प्रकृति की भी आमन्त्रित सहानुभूति थी। आज आवाज़ (शोर) भी खूब हो रहा था। बापू का प्रवचन लगभग ६ मिनट तक चला। रोज़ की तरह बिस्तर पर से ही माइक पर बोले और मालिश तो रोज़ की तरह हो किया किया था।

आज़ादी को हेंगे

"आज का दिन मेरे लिए तो मंगल है, आपके लिए भी मंगल-दिन माना जाय। कितना अच्छा है कि आज ही गुरु गोविन्दसिंह की जन्मतिथि है। इसी शुभ तिथि पर मैं आप लोगों को दया से चला छोड़ सका हूँ। जो दया आप लोगों ने —दिल्ली के निवासियों ने दिल्ली में जो दु:खी शरणार्थी पड़े हैं, उनसे और यहाँ की हुकूमत के सब कारबार से—मुझे मिली है उसे मुझे लगता है कि, मैं जिन्दगीभर भूल न सकूँगा। कलकत्ते में ऐसी ही प्रेम का अनुभव मैंने किया। वहाँ मैं यह कैसे भूल सकता हूँ कि शहीद साहब ने कलकत्ते में बड़ा काम किया। अगर वे मदद न करते तो मैं वहाँ ठहरनेवाला न था। शहीद साहब के लिए हम लोगों के दिल में अभी भी बहुत शक है। उससे हमें क्या ? आज हम सीखें कि कोई भी इन्सान हो कैसा भी हो उसके साथ हमें दोस्ताना तौर पर काम करना है। हम किसीके साथ किसी हालत में दुश्मनी नहीं करेंगे दोस्ती ही करेंगे। शहीद साहब और दूसरे चार करोड़ मुसलमान पाकिस्तान में पड़े हैं। वे सब-के-सब फरिश्ते तो हैं नहीं। वैसे ही सब हिन्दू और सिख भी फरिश्ते थोड़े ही हैं। इसमें अच्छे लोग भी हैं और बुरे भी। हमारे यहाँ जिन्हें हम जरायमपेशा जातियाँ कहते हैं, वे लोग भी पड़े हैं। उन सबके साथ मिल-जुलकर हमें रहना है। मुसलमान बड़ी कौम है। यहीं नहीं सारी दुनिया में मुसलमान पड़े हैं। अगर हम ऐसी उम्मीद करें कि सारी दुनिया के साथ हम मित्रभाव से रहेंगे दोस्ती के तौर से रहेंगे तो क्या वजह है कि हम यहाँ के मुसलमानों से दुश्मनी करें ? मैं भविष्यवक्ता नहीं हूँ। फिर भी ईश्वर ने मुझे अक्ल दी है, दिल दिया है। उन दोनों को टटोलता हूँ और आपको भविष्य सुनाता हूँ कि अगर किसी-न-किसी

कारण एक-दूसरे से दोस्ती न कर सकें, पर मैं यहाँ के ही नहीं बल्कि पाकिस्तान के और सारी दुनिया के मुसलमानों से हम दोस्ती न कर सके तो हम समझ लें—इसमें मुझे कोई शक नहीं—कि हिन्दुस्तान हमारा न रहेगा पराया हो जायगा। गुलाम हो जायगा—पाकिस्तान गुलाम होगा यूनियन भी गुलाम होगा और जो आजादी हमने पायी है उसे हम खो बैठेंगे।

"आज मुझे इन्होंने सोनी में आशीर्वाद दिये हैं, सुनाया है, यकीन दिलाया है कि हम सब हिन्दू, सिख, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी भाई-भाई बनकर रहेंगे किसी भी हालत में कोई कुछ भी करे। दिल्ली के हिन्दू, सिख और मुसलमान, पारसी, ईसाई—सब जो यहाँ के बाशिंदे हैं, और सब शरणार्थी भी दुश्मनी नहीं करनेवाले हैं यह छोटी बात नहीं है। इसके मानी यह है कि अबसे हमारी कोशिश यह रहेगी कि सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जितने लोग पड़े हैं, वे सब मिलकर रहेंगे। हमारी कमजोरी के कारण हिन्दुस्तान के टुकड़े हो गये लेकिन वे भी दिल से मिलते हैं। अगर हम सोचें के टूटने का यह अर्थ नहीं है, तो मैं बड़ी नम्रता से कहूँगा कि उपवास छुड़वाकर आपने कोई अच्छा काम नहीं किया।

इन्सान का फर्ज

"दिल्ली में और दूसरी जगह में भेद क्यों हो? जो दिल्ली में हुआ और होगा वही सारे यूनियन में होगा तो पाकिस्तान में भी होना चाहिए। इसमें आप शक न रखें। आप डर न करें। एक बच्चे को भी डरने का काम नहीं है। अब तक मेरी निगाह में हम शैतान की तरफ जाते थे। आज से मैं उम्मीद करता हूँ कि हम ईश्वर की ओर जाना शुरू करते हैं। लेकिन हम तय करें कि एक वक्त हमने अपना चेहरा मुँह ईश्वर की ओर घुमाया तो वहाँ से कभी नहीं हटेंगे। ऐसा हुआ तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों मिलकर हम सारी दुनिया की सेवा करेंगे—सारी दुनिया की सेवा कर सकेंगे और सारी दुनिया को ऊँचा उठा सकेंगे। मैं और किसी कारण जिन्दा रहना नहीं चाहता। इन्सान जिन्दा रहता है इन्सानियत को ऊँचा उठाने के लिए। ईश्वर और खुदा की तरफ जाना ही इन्सान का फर्ज है। जबान से ईश्वर, खुदा, सतश्री अकाल—कुछ भी नाम लो वह सब ठीक है, अगर दिल में वह नाम नहीं

है। जब एक ही हस्ती है, तो फिर कोई कारण नहीं कि हम उस चीज को भूल जायँ और एक-दूसरे को दुश्मन मानें।

सर्व-धर्म-समभाव

"आज मैं आपसे ज्यादा कुछ कहनेवाला नहीं हूँ। लेकिन आज के दिन से हम निर्णय कर लें कि हम लड़ेंगे नहीं। मैं चाहूँगा कि हिन्दू कुरान पढ़ें, जैसे कि वे भगवद्गीता पढ़ते हैं। सिख भी वही करें। और मैं चाहूँगा कि मुसलिम भाई-बहन भी अपने घरों में ग्रन्थ साहब पढ़ें, उसके अर्थ समझें। जैसे हम अपने धर्म को मानते हैं, वैसे ही दूसरों के धर्म को भी मानें। उर्दू-फारसी—किसी भी जबान में बात लिखी हो, अच्छी बात तो है। जैसे कुरान शरीफ, वैसे ही गीता और ग्रन्थ साहब हैं। मेरा मजहब यही है, चाहे आप मानें या न मानें। अभी तक मैं ऐसा कर रहा हूँ। मैं आपको दावे के साथ कहूँगा कि मैं पत्थर की पूजा नहीं करता। मगर मैं सनातनी हिन्दू हूँ, मैं पत्थर की पूजा करनेवाले से नफरत नहीं करता। खुदा पत्थरों में भी पड़ा है। जो पत्थर की पूजा करता है, वह उसमें पत्थर नहीं, खुदा देखता है। पत्थर में ईश्वर न मानें तो कुरान शरीफ छपाई किताब है, वह क्यों माना जायगा? क्या वह बुत-परस्ती नहीं है?

ईश्वर सद्बुद्धि दे!

"दिलों में भेद न रहे, तो हम यह सब सीख सकते हैं। ऐसा हो तो फिर यह नहीं रहेगा कि यह हिन्दू है, यह सिख है, यह मुसलमान है। सब भाई-भाई हैं, सब मिल-जुलकर काम करनेवाले हैं। पीछे दोनों में आज जो अनेक किस्म की परेशानियाँ होती हैं—आदमी फेंक दिये जाते हैं, लड़कियों को फेंक दिया जाता है, औरतें फेंक दी जाती हैं—वह सब मिट जायगा। हर कोई आजादी से हर जगह रह सकेगा, वहाँ किसीको डर न होगा। यूनियन ऐसा बने, पाकिस्तान भी ऐसा होना चाहिए। तभी मुझे शान्ति मिलेगी। तब तक मुझे परम शान्ति नहीं मिलनेवाली है, जब तक वहाँ के शरणार्थी जो पाकिस्तान से दुःखी होकर आये हैं, अपने घरों को वापस न जा सकें और जो मुसलमान यहाँ से हमारे डर से तथा मार-पीट से भागे हैं पर वापस आना चाहते हैं, वे आराम से यहाँ न रह सकें।

अब इतना ही कहना है। ईश्वर हम सबको और सारी दुनिया को अच्छी अक्ल

है, सम्मति दे, होशियार करे और अपनी तरफ खींच ले जिससे हिन्दुस्तान और सारी दुनिया सुखी हो।

अनशन सत्य के नाम पर

इतना बोलने के पश्चात् बापू का निम्नलिखित सन्देश पढ़ सुनाया गया : "मैंने सत्य के नाम पर यह उपवास शुरू किया जिसका जाना-पहचाना नाम ईश्वर है। जीते-जागते सत्य के बिना ईश्वर कहीं नहीं है। ईश्वर के नाम पर हम झूठ बोलते हैं, हमने बेरहमी से लोगों की हत्याएँ की हैं और इसकी भी परवाह नहीं की कि वे अपराधी हैं या निर्दोष मर्द हैं या औरतें बच्चे हैं या बूढ़े। हमने भी ईश्वर के नाम पर लड़कियाँ और औरतें भगायी हैं। जबरन धर्म बदलवा दिया है। मैं नहीं जानता कि किसीने ये काम सत्य के नाम पर किये हों। उसी नाम का उच्चारण करते हुए मैंने अपना उपवास तोड़ा है। हमारे लोगों का दुःख असह्य था। राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू १[illegible] आदमियों को लाये जिनमें हिन्दुओं मुसलमानों और सिखों के प्रतिनिधि थे; हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रतिनिधि थे तथा पंजाब से आये हुए और सिंध के शरणार्थियों के प्रतिनिधि भी थे। इन्हीं प्रतिनिधियों में पाकिस्तान के हाई कमिश्नर जाहिद हुसैन साहब थे दिल्ली के चीफ कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर थे तथा आजाद हिन्द फौज के प्रतिनिधि जनरल शाहनवाज भी थे। मूर्ति की तरह मेरे पास बैठे हुए पंडित नेहरू और मौलाना साहब भी थे।

"राजेन्द्रबाबू ने इन प्रतिनिधियों के हस्ताक्षरयुक्त एक दस्तावेज पढ़ा जिसमें मुझसे कहा गया था कि मैं उन पर ज्यादा चिन्ता का बोझ न डालूँ और अपना उपवास छोड़कर उनके दुःख को दूर करूँ। पाकिस्तान से और यूनियन से तार पर तार आये हैं, जिनमें मुझसे उपवास छोड़ने की अपील की गयी है। मैं इन सारे दोस्तों की सलाह का विरोध नहीं कर सका कि इस इकरार में हिन्दुओं मुसलमानों सिखों ईसाइयों पारसियों और यहूदियों में पूरी-पूरी दोस्ती रहेगी—ऐसी दोस्ती जो कभी न टूटेगी। इस दोस्ती को तोड़ने का मतलब राष्ट्र की आत्मा खतम करना होगा।

मानव-प्रतिज्ञा की सभा

"जब मैं यह लिखता रहा हूँ, मेरे पास हेडन और बोद [illegible] को कामनावाले

है, वैसे ही—सभी लोग एकाएक, एक साथ बापू के दर्शनार्थ दौड़ पड़े। बापू को कुर्सी पर बिठाया गया। वे बरामदे में ही बैठे　जिससे नन्हे-से-नन्हा बच्चा भी उन्हें देख सके। यह दृश्य तो इतना अद्भुत आनन्ददायक और भव्य था कि मुझे रामायण के उत्तरकांड का एक छंद याद आ जाता है। भगवान् रामचन्द्र चौदह वर्षों का वनवास और विरह सहकर अयोध्या पधारे हैं। लोग आनन्दोत्सव मनाते हैं और वनवास दिलाने का प्रायश्चित कर वरदान माँग रहे हैं कि 'प्रभो! एक ही वरदान चाहिए और वह है, भक्ति।' आज लोगों और बापू के बीच का चित्र भी हूबहू वैसा ही बना हो जाता है। मानो अनेक कठिनाइयाँ सहकर इस तपश्चर्या से बापू उबरे हैं। यह संध्या कभी भी भूल नहीं सकती। मैं मन ही मन यह छंद गाती रही।

जय राम रमारमनं समनं। भवताप भयाकुल पाहि जनम्॥
अवधेस सुरेस रमेस बिभो। सरनागत माँगत पाहि प्रभो॥
दससीस बिनासन बीस भुजा। कृत दूरि महा महि भूरि रुजा॥
रजनीचर बृंद पतंग रहे। सर पावक तेज प्रचंड दहे॥
महि मंडल मंडन चारुतरं। धृत सायक चाप निषंग बरं॥
मद मोह महा ममता रजनी। तम पुंज दिवाकर तेज अनी॥
मनजात किरात निपात किये। मृग लोग कुभोग सरेन हिये॥
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे। बिषया बन पावँर भूलि परे॥
बहु रोग बियोगन्हि लोग हये। भवदंघ्रि निरादर के फल ये॥
भवसिंधु अगाध परे नर ते। पद पंकज प्रेम न जे करते॥
अति दीन मलीन दुखी नितहीं। जिन्हके पद पंकज प्रीति नहीं॥
अवलंब भवंत कथा जिन्हके। प्रिय संत अनंत सदा तिन्हके॥
नहिं राग न लोभ न मान मदा। तिन्हकें सम बैभव वा बिपदा॥
एहि ते तव सेवक होत मुदा। मुनि त्यागत जोग भरोस सदा॥
करि प्रेम निरंतर नेम लिये। पद पंकज सेवत सुद्ध हिये॥
सम मानि निरादर आदर ही। सब संत सुखी बिचरंति मही॥

मुनि मानस पंकज भृंग भजे। रघुबीर महा रनधीर अजे॥
तव नाम जपामि नमामि हरी। भव रोग महागद मान अरी॥
गुन सील कृपा परमायतनं। प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं॥
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं। महिपाल बिलोकय दीन जनं॥

इतना ही जानिये कि बापू के धर्म की स्तुति प्रजा कर रही हो और फिर माँग कर रही हो कि—

बार-बार बर माँगउँ, हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥

रामदास गांधी आये थे। डॉ. मेहता, जहाँगीरजी और जमशेदजी भी आये। इन सबके साथ बापू ने बातचीत की। बापू ने कताई शुरू कर दी। आज के दिन न कातने के लिए बहुत समझाया पर बापू ने कहा कि "यज्ञ किये बिना खाना चोरी का अन्न कहा जाता है। मैंने अब खाना शुरू कर दिया है, तो मुझे यज्ञ करना ही चाहिए।

१ बजे बापू बिस्तर पर बैठे।

आज की स्थिति

२॥ बजे जागे। तुरन्त पेशाब ६ औंस। ३॥ बजे प्रार्थना। ४। बजे गरम पानी एक चम्मच नीबू का रस और नमक। ५॥ बजे 'हरिजन' के लिए लिखवाना शुरू किया। सो गये। ८ बजे जाग गये। ९-५ बजे पेशाब की। ९। बजे मालिश के लिए गये। १०-२ बजे बाथ में आये। वजन १०७ रहा।

११ बजे गरम पानी आठ औंस। फिर तो अर्जेन्ट लोगों का आवागमन शुरू हो गया। उनके साथ बातें। १२। बजे अनशन छूटा।

अनशन के बाद की खुराक आठ औंस संतरे का रस दो टेबल स्पून ग्लूकोज के साथ। १ बजे मुसम्मी का पानी १२ औंस। ३॥ बजे गरम पानी शहद के साथ और नीबू। ७ बजे आठ औंस दूध ४ औंस गरम पानी के साथ मिलाकर, चार संतरे। ९॥ बजे गरम पानी शहद के साथ आठ औंस।

इस तरह आज का दिन बिताया। अब रात के १२ बज रहे हैं। सब लोग थककर, अपने बिछौनों पर सोने के लिए जा रहे हैं। ● ● ●

तार सुनाकर जाहिर करता हूँ। इनमें तो जो कोई कुछ कहे, उस पर विश्वास करना चाहिए। अगर उनके हृदय दूसरी तरह के होते तो ऐसे तार क्यों भेजते! तार निम्नलिखित हैं।

दो ऐतिहासिक तार

'नवाब साहब सूचित करते हैं : 'आपने सभी जातियों के हृदयों को जोड़ने के लिए जो अपील की है उसे भारत और पाकिस्तान के सभी भले आदमियों का अवश्य ही समर्थन प्राप्त होगा। पिछले वर्ष हम लोग सभी जातियों के भीतर प्रेम मैत्री और सद्भाव की भावना फैलाने का प्रयत्न करते रहे हैं, जिसके फलस्वरूप भोपाल राज्य की शान्ति में बाधा डालनेवाली कोई भी अवांछनीय घटना नहीं हो सकी। हम आपको इस बात का विश्वास दिलाते हैं कि मैत्री की इस भावना का और अधिक विस्तार करने में हम अपनी पूरी शक्ति लगाने में कोई कमी न करेंगे।'

और अब यह देखिये पश्चिमी पंजाब के मुख्य मन्त्री का तार 'पश्चिमी पंजाब का मन्त्रिमण्डल महत्त्वपूर्ण कदम के प्रचार के लिए आपके नये कदम की सराहना और प्रशंसा करता है। हमारा मन्त्रिमण्डल अल्पसंख्यकों के जीवन सम्मान और सम्पत्ति की रक्षा करने के लिए और उन्हें नागरिकता के समान अधिकार प्रदान करने के लिए सदा ही प्रयत्नशील रहा है। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हमारा मन्त्रिमण्डल इस नीति के पालन में अब पहले से भी अधिक शक्ति लगायेगा। हम इस बात के लिए उत्सुक हैं कि सारे भारतवर्ष की स्थिति में तत्काल सुधार होगा जिससे आप अपना अनशन भंग कर सकें। इस प्रान्त में आप सरीखे अमूल्य जीवन की रक्षा करने के लिए कोई भी उपाय उठा नहीं रखा जायगा।

बापू की चेतावनी

आगे बापू ने कहा "मुझे आप लोगों को एक और चेतावनी देनी है कि अभी-अभी लोग बिना सोचे और चाहे जो आदमी चाहे जब अनशन कर रहा है। देखना है कि थोड़े ही समय में इस तरह फल की अपेक्षा रखकर किये गये अनशनों से कदाचित निराशा ही हाथ लगे। अन्यथा इसके अनशन जैसे अमोघ हथियार का इस तरह दुरुपयोग हो तो उसका असर भी रह ही नहीं जायगा। अनशन करनेवाले

को खूब विचार करना चाहिए। अगर ईश्वर के प्रति पूर्ण श्रद्धा न हो और अपना स्वार्थ हो तो उस अनशन की कौड़ी भी कीमत नहीं। उसके लिए तो ईश्वरीय आदेश होना चाहिए।

बीती ताहि बिसारि दे!

'अब दिल्लीवासियों और निराश्रितों पर असीम उत्तरदायित्व आ पड़ा है। सभी को एक-दूसरे के प्रसंग में अभी अभी मिलते-जुलते रहने का यत्न करना चाहिए। बीती बिसार देनी चाहिए। आज बहुत-सी मुसलिम बहनें मुझसे मिलने आयी थीं। उनमें से कितनी ही परदा रखती थीं। लेकिन मेरे पास उन्होंने परदा छोड़ दिया। इन सब बहनों से मिलकर मुझे संतोष हुआ। अब हम काम यह भली भाँति समझ लें कि हम कानून अपने हाथ में न लेंगे। अन्याय का बदला हम न लेंगे बल्कि यह काम सरकार के सिपुर्द कर देंगे। साथ ही शान्ति-समिति कायम रहे।

प्रार्थना के बाद शाम को ६॥ बजे जमशेदजी जहाँगीरजी और दिनशाह मेहता के साथ बातें हुईं।

जिन्ना का हृदय-परिवर्तन?

बापू कहने लगे: मुझ पर पाकिस्तान के बारे में क्या असर हुआ यह बतलाता हूँ। आप कहते हैं कि जिन्ना साहब का हृदय-परिवर्तन हो गया है; लेकिन इसका सबूत क्या है? फिर वे अब भी सरदार के लिए चाहे जैसा बोल रहे हैं। उनकी दलील उल्टी है। उनसे यहाँ कहलाता है न कि आप न आप औचित्य देंगे'!"

जहाँगीरजी ने दलील की कि "बंबई में गांधी-जिन्ना की भेंट के समय की स्थिति भिन्न थी और आज भिन्न है।

बापू: मेरी दृष्टि से जरा भी भिन्न नहीं। फिर मैं तो काम को मानता हूँ, बातों को नहीं। जैसा वे कहते हैं, वैसा ही हो तो सरदार के बारे में वे सब बातें क्यों उठाते हैं?

जहाँगीर पटेल: "मैं ऐसा समझता हूँ कि आपकी काफी गलतफहमी होती है। गुलाम मुहम्मद का वक्तव्य पढ़ा!"

उन्होंने ही कराया। आज बापू का वजन १०७ हुआ। एक पौंड और बढ़ गया। बापू अब पहले की तरह ही खाने-पीने में तरल पदार्थ ही लिये। मिट्टी और स्नान, मुलाकातें आदि नियमानुसार ही चल रहे हैं। ४ बजे एनिमा दिया गया। एनिमा लेने के बाद कमजोरी मालूम पड़ी। अभी कमरे में सीधे पैर नहीं रख पाते। कमजोरी तो बहुत ही है। लगभग पूरा दिन बापू के पास ही बीतता है। जो कोई बापू की तबीयत का हाल पूछता है, तो उन सबको चिट्ठी से जवाब देना पड़ता है। अर्जेन्ट लिफाफे और पोस्टकार्ड तो ऐसे आते हैं कि उनमें जवाब के लिए टिकट भी होते हैं। इसलिए जवाब देने का काम मैंने लिया है।

भावनगर का उत्तरदायी शासन

एक समाचार मिला है कि भावनगर के उत्तरदायी शासन बनने के बाद सभी राजा लोग एकत्र होकर काठियावाड़ को एक बनाने के निर्णय पर लगभग पहुँच गये हैं। बापू भावनगर में उत्तरदायी शासन सौंपते समय अपने [illegible] के कारण व्यक्तिगत रूप से कुछ भी सन्देश नहीं भेज सके। इसलिए आज प्रार्थना में उसका उल्लेख करने का जोर मुझे दिलाया।

जोर का धड़ाका

प्रार्थना में जाते समय ग्वालियर से बापू के नाम एक तार आया है कि वहाँ मुसलमानों को लूट लेने और मारने के प्रयत्न चल रहे हैं। इस पर से मालूम पड़ता है कि सारे देश में अन्दर अन्दर आग सुलग रही है।

आज बापू प्रार्थना-सभा में कुर्सी पर ही गये थे। प्रवचन चल रहा था कि यहीं कहीं एकाएक इतने जोर का धड़ाका हुआ कि कान बहरे हो हो जायें। अभी बापू की आवाज बहुत ही धीमी हो जाने से मैं तो बिलकुल उनके पास बैठकर लिखती रही और इस धड़ाके से इतनी डर गयी कि एकदम बापू के पैर ही पकड़ लिये। प्रार्थना की ओर के लोग भी यहाँ-वहाँ भाग गये। बापू लोगों को शान्त करने के लिए प्रवचन देने लगे। हाथ से बैठ जाने का संकेत करने लगे। लेकिन कौन कहाँ मानता है! मुझसे कहने लगे "क्यों डर गयी? अरे! कोई सैनिक लोग गोलीबार की तालीम ले रहे होंगे। यह तो ठीक, लेकिन मुझे और मुझे अगर कोई सचमुच गोली मारने के लिए आवे तो क्या करोगी?" लोगों से भी बापू ने यही कहा कि 'कोई सैनिक लोग तालीम लेते होंगे' और प्रवचन जारी रखा।

ग्वालियर को हैरानी

मैं यहाँ आ रहा था तो ग्वालियर के मुसलमानों का मेरे नाम यह सन्देशा आया है कि वहाँ मुसलमानों को बेहद हैरानी भुगतनी पड़ रही है। आपकी मार्फत मैं वहाँ के लोगों को सूचित करता हूँ कि इस तरह करने से हम लोग यहाँ किये हुए अपूर्व कार्य पर पानी फेर देंगे।

मुझे ऐसे समाचार मिले हैं कि काठियावाड़ में छोटे-बड़े लगभग १२ देशी नरेश हैं। उन सभी नरेशों ने मिल-जुलकर यह निश्चय किया है कि एक राज्य बनाया जाय। अगर यह निर्णय सच हो तो स्वागताई है और एक सभ्य काम वे कर दिखायेंगे। भावनगर राज्य ने अपना राज्य स्वेच्छा से त्यागमय रीति से प्रजा को सौंप दिया है। इसलिए मैं वहाँ के महाराज और प्रजा को हार्दिक धन्यवाद और मुबारकबादी आपकी मार्फत भेज रहा हूँ।"

हत्या का षड्यंत्र

प्रार्थना से जब हम लोग अन्दर गये तो पता चला कि वह तो बापू को मार डालने का एक षड्यंत्र था। मदनलाल नामक एक निर्वासित युवक बापू को मारने की कुछ फिराक में ही था। उसका विचार तो यह था कि हम लोग जहाँ बैठते हैं, उसके पीछे बिरलाजी का नौकर रहता है और वहीं से बम फेंककर एक साथ हजारों का खात्मा कर दिया जाय। लेकिन सौभाग्य से बिरलाजी के नौकर ने स्पष्ट कह दिया कि जैसे सब बैठते हैं, वैसे ही प्रार्थना-सभा में बैठिये न! इसलिए उसने इस तरह बम फेंका। वह बम फेंककर भाग रहा था कि एक पंजाबी बहन ने बहादुरी के साथ उसे पकड़ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया।

बहादुरी कब ?

यह समाचार देखते-देखते दिल्लीभर फैल गया और मुबारकबादी के टेलीफोन पर टेलीफोन आने लगे। हम लोग फोन उठाते उठाते थक गये। आखिर रिसीवर नीचे ही रख दिया। लेडी माउण्टबैटन भी यह समाचार सुनकर बापू के पास दौड़ी आयीं। बापू बच गये इसके लिए उन्हें मुबारकबादी दी। लेकिन उस वक्त बापू ने तो यही कहा कि "यहाँ मिलिट्री में नैमित्तिक अभ्यास ही होता होगा।" और के बारे

में बापू ने कहा कि "इसमें कुछ भी बहादुरी नहीं। जब मुझे सचमुच कोई मारनेवाला सामने हो आये और मैं उसका वार हँसते-हँसते झेलूँ और मन में 'राम' रटता रहूँ, तभी मुबारकबादी के लायक माना जाऊँगा।"

मदनलाल का बयान

हम लोग तो इस आदमी को जिस कमरे में जाँच चल रही थी वहीं थे। जहाँ बापू बैठते हैं, वहाँ से ७५ फुट दूर यह बम फेंका गया। मदनलाल की उम्र अन्दाजन २५ साल की होगी। वह हिम्मत के साथ सारा बयान दे रहा था और कह रहा था कि महात्मा गांधी को मार डालने के लिए ही मैंने यह बम फेंका है। उसकी जेब में से और भी हाथ से बनाये बम के गोले भी निकले। जमशेदजी भी आये हैं। बापू ने शाम को ७॥ बजे का समय उन्हें दिया था। उन्हें तो कुछ पता ही न था। बिरला-भवन में खूब भीड़ और पुलिसवाले देख वे जिस किसी तरह भीतर तो आ पाये। वे कहने लगे: "कराची में ऐसे लड़कों ने तो इसी तरह के काम किये जाते हैं। मैंने तो अब सब बहुत देखा है। इन लोगों को यह तालीम दी रहती है कि अगर पकड़ लिये जायें तो किसी भी तरह का उत्तर नहीं देना और हँसते ही रहना चाहिए।" मदनलाल ने तो एक ही जवाब दिया कि "हमें गांधीजी की मुस्लिम-शान्ति पसन्द नहीं थी इसलिए हमने ऐसा किया है।"

रात को जवाहरलालजी, राजकुमारी बहन वगैरह सभी एक के बाद एक आते-जाते रहे। यों बापू को मिलने बुलाने के लिए राजी हैं, यद्यपि पण्डितजी को उनके इन कदमों में विशेष तथ्य नहीं दीखता। १ बजे बापू सोये। यह दिन अभी हलचल-सा रहा है। मैं बापू से कहा, ऐसा करने में महान् पाप देख रहा हूँ। इसको अपेक्षा मन में छोटी या राजनीतिक पार्टी बात या राष्ट्रीय स्वयंसेवक में संकीर्णता भी लगेगी, क्योंकि इस बारे में बापू और नारायणप्रसाद एक ही विचार रखते हैं। लेकिन मुझे आश्चर्य हो रहा है कि अब नारायणप्रसाद जैसे या बापू जैसे भी कुछ निश्चय पर नहीं पहुँचते। इसलिए जो होना चाहिए, वह नहीं हो पाता।

● ● ●

जाको राखे साइयाँ !   २२

बिड़ला-भवन नयी दिल्ली
२१-१-४८

डरूँ क्यों ?

नियमानुसार प्रार्थना। रात में तो मेरे मन में लगातार, मदनलाल ने बापू को मारने के लिए जो षड्यन्त्र रचा था उसीके विचार घूमते रहे। इस अशुभ कल्पना का चित्र आँखों के सामने ही घूम रहा था। अगर कुछ हो जाता तो क्या हाल होता! 'जाको राखे साइयाँ' यह कहावत सर्वथा सत्य है। इन लोगों का कितना बड़ा षड्यन्त्र होगा! बापू ने तो सबको एक ही जवाब दिया कि 'भगवान् को मेरी जरूरत होगी तब तक मुझे रखेगा और जरूरत न होने पर उठा लेगा। मैं तो उसका दास हूँ, सेवक हूँ। मैं क्योंकर चिन्ता करूँ ?'

आज शाम को ही बिड़ला-भवन में मिलिटरी रखी गयी। यों तो एक सुझाव यह भी दिया गया था कि प्रार्थना में आनेवालों की तलाशी ली जाय, लेकिन साफ-साफ इसे इनकार कर दिया और काफी वाद-विवाद के बाद सरदार दादा के सन्तोष के लिए इतना पहरा रहने दिया।

प्रार्थना के बाद बिड़लाजी ने कहा भी कि 'मुझे तो डर था कि आप इतनी पुलिस को कैसे रहने देंगे!

मेरा रक्षक राम !

बापू ने कहा — 'आपको जितनी दहशत लगती है, उतनी मुझे नहीं। फिर भी मैं इसे 'ना' कह दूँ, तो सरदार और जवाहर की इन सब चिन्ताओं में एक मेरी भी चिन्ता बढ़ जायगी। आज इन दोनों पर असीम जिम्मेदारी है और मैं तो मानता हूँ कि मेरा रक्षण करनेवाला राम ही है। उसे मुझे उठा लेना हो तो लाखों मनुष्यों का चाहे जितना रक्षण हो फिर भी कोई मुझे बचा ही नहीं सकता। लेकिन लाखों को मेरी इस अहिंसा पर श्रद्धा नहीं है। उनकी यही श्रद्धा है कि मुझे पुलिस का यह पहरेदार बचा सकेगा। तब भले ही वैसा किया जाय। इन दिनों अहिंसा को माननेवाला कदाचित् एक मैं ही हूँ। ईश्वर से एक ही प्रार्थना है कि ऐसी अहिंसा

कम-से-कम अकेला मैं ही दिखा सकूँ, ऐसी इच्छा है। इसलिए मेरी रक्षा के लिए यहाँ पुलिस हो या न हो सेना के बड़े-बड़े लोगों का सरंजाम रहे या न रहे, मेरे लिए सब समान ही है। कारण मेरा रक्षक तो राम है। बाकी सब बेकार ही है, इस विचार पर मैं अत्यन्त दृढ़ होता जा रहा हूँ।

आज युधिष्ठिर कहाँ?

नियमानुसार सारा दैनिक कार्यक्रम चलता है। अभी कमजोरी तो रहेगी ही लेकिन मालिश के लिए धीमे-धीमे पैर रखते हुए चलकर जाना शुरू कर दिया है। अब के इस फाके के बाद शायद बापू अपने बारे में और भी अधिक बेपरवाह न बन गये हों! हर बारे में और हर मौके पर वे यही कहते हैं कि 'मेरी क्या बात है! ईश्वर को अभी मुझसे काम लेना होगा इसीलिए उसने बचाया है। यों तो मानव ने जिस दिन जन्म लिया उसी दिन से मृत्यु उसके साथ लगी है। उसकी चिन्ता हम लोग क्यों करें!

एक बातचीत में—अभी-अभी के बीच अमुक विषयों में एक विचार चला है। उसे यह बापू से कहा : 'बापू! आप ऐसा क्यों नहीं सोचते कि किसीमें अमुक शक्ति कम होती है, तो किसीमें अधिक। किसी शक्कर में मीठा कम होता है तो किसीमें अधिक। आप जब शुद्ध धर्म की बातें करते हैं, तब दूसरे आश्रमों की बातें करते हैं। युधिष्ठिर का जब स्वर्गारोहण हुआ तो आगे ही आगे चलते गये और बाकी के सभी भाई एक के बाद एक गिरते गये।" बीच में ही एक व्यक्ति बोल उठा : 'लेकिन युधिष्ठिर के साथ कुत्ता भी तो था न! और आपके कथन के अनुसार स्वर्ग पहुँचनेवाला आज ऐसा कुत्ता भी कौन है! फिर वह तो पशु था जब कि यहाँ मैं मानव की बात कर रहा हूँ—ऐसा कोई मानवीय व्यक्ति तो नहीं है न!' इस पर बापू ने कहा : "लेकिन आज ऐसा युधिष्ठिर भी कहाँ है!" और सब हँस पड़े!

दुश्मनी नहीं, दोस्ती

सिखों के एक प्रतिनिधि-मंडल के साथ वार्तालाप में स्वामी करतारसिंह ने सिखों पर हुए अत्याचारों का वर्णन किया।

बापू ने एक बात नोट करते हुए कहा : 'मैं जानता हूँ कि यहाँ क्या हो रहा है। मगर इस तरह दुश्मनी करके हमारा काम चलनेवाला नहीं है। मैंने आज एक बात

उनका एहसान मानता हूँ। इतना दुःखद होते हुए भी मेरा उपवास छुड़वाने के लिए जब सबने तमाम शर्तें मंजूर कर ली हैं यह कोई कम नहीं है। मगर एक इन्सान जितना ज्यादा-से-ज्यादा कर सकता है, उतनी कोशिश मैं कर रहा हूँ।

जिन्ना का हुक्म

'मेरे पास तीन पारसी आये हैं। वे लोग जिन्ना साहब और पाकिस्तान के नेताओं से मिलकर आये हैं। उन्होंने कहा कि कराची में बहुत ज्यादा लोगों को परेशानी तो जरूर हुई। मगर कराची में खून खराबे भी हुए हैं। कोई ऐसा नहीं कहता कि हमारी गलती नहीं हुई। अब जिन्ना साहब ने हुक्म दिया है कि एक भी आदमी इस तरह गुनहगार होगा तो उसे कड़ी सजा होगी। अब यह आम अखबारों के पर्चों में से निकाला गया है। इसलिए मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि मुझसे जितनी सेवा हो सकेगी उतनी करनेवाला ही हूँ। आखिर मुझे तो करना है या मरना है। कब ही आपको देखना होगा मगर मैं मानता हूँ कि इस को अभी भी मेरे पास से कुछ काम लेना ही है, तो मुझे करना ही है।

प्रार्थना-सभा में पहुँचने में दस मिनट देर हुई। बापू ने सबसे माफी माँगी और अपने प्रवचन में कहा

सौभाग्य की प्रतीक्षा

'कल जो धड़ाका हुआ और उसके बावजूद मैंने जो शान्ति रखी, इसलिए बहुत-से लोग मुझे शाबाशी देते हैं। मुबारकबादी के तार और टेलीफोन तथा चिट्ठियाँ मिल रही हैं। लेकिन वस्तुतः देखा जाय तो इसमें किसी तरह की बहादुरी को यह कहा ही नहीं जा सकता। जब बम का धड़ाका हुआ तब मुझे नहीं लगा कि आमतौर पर नहीं, मिलिटरी लोग अभ्यास करते होंगे। लेकिन बाद में ही यह पता लगा कि यह तो मुझे मारने का षड्यन्त्र ही था। सच्ची बहादुरी तो तभी कही जायगी जब मेरे सामने ही बम फूटे और मैं न डरूँ और आप देख सकें कि उस समय भी मैं हँसता हुआ ही आदमी दिखा था। उस सौभाग्य की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। लेकिन आज आप जो मेरी प्रशंसा कर रहे हैं, मैं उसके योग्य हूँ ही नहीं।

अपराधी दण्ड न पाये

आप सबसे मेरी यह विनम्र प्रार्थना है कि जिस भाई ने यह काम किया है,

पूँजीपति। लेकिन जिसका मन साफ है, उसके पास सभी कुछ है। चाहे जो हो, लेकिन आप उनका मेरे प्रति जो अपार प्रेम है मैं उसके लायक बनूँ, यही भगवान से प्रार्थना है।

पाक सरकार से प्रार्थना

बहावलपुर के भाई अत्यधिक घबरा उठे हैं। आज ही मेरे पास वहाँ के नवाब साहब ने तार भेजा है कि उनसे जितनी बनेगी पूरी मेहनत करेंगे। बम्बई से सिख भाइयों का तार है कि सिंध में दस-पन्द्रह हजार सिक्खों का जान-माल भारी संकट में पड़ गया है। मैं यहीं से पाकिस्तान सरकार से प्रार्थना करता हूँ कि वे सिक्खों को विश्वास दिलायें कि आप वहीं रहें, तो हम आपकी रक्षा करेंगे? अगर ऐसा न कर सकें तो सभी सिक्खों को एक जगह इकट्ठा कर पूरी सुरक्षा के साथ यहाँ भेज दें। सिक्खों जैसी बहादुर जनता पर और उसकी इज्जत-आबरू पर हाथ डालने की किसीकी ताकत नहीं देखता। सिख जनता धैर्य रखे। मैंने हालत देखने के लिए आज ही अपने तीन मित्र पारसी भाइयों को भेजा है।

बयालीस का ही परिणाम

एक भाई ने १९४२ के और अभी के मेरे आचरण की तुलना करते हुए लिखा है कि अगर आपका शरीर छूट जाय तो और भी अधिक हिंसा फूट पड़ेगी आदि।

"यह सच है कि १९४२ में मेरे जेल जाने के बाद हिंसा फूट पड़ी। आज हम उसीके परिणाम भुगत रहे हैं। अगर उस समय सारा देश अहिंसक बना रहता तो आज हमारी यह दशा कभी भी न होती। मुझे बचाना होगा तो भगवान् ही बचायेगा। अगर अहिंसा से भरा मानव मरता है, तो भी नुकसान नहीं होगा। मैं तो गरीब मनुष्य हूँ। मुझे किसी बात का विषाद नहीं है। ईश्वर तो बिना बिसात के गरीब मानव को निमित्त बनाकर जो भी चाहता है, करने में समर्थ ही होता है।

दिल्ली में अब हिन्दू-मुसलिम दंगे नहीं होते यह सुनकर मुझे सन्तोष हुआ। मुसलिम बहनें भी अब निर्भयता से घूम-फिर रही हैं, इससे भी मुझे सन्तोष होता है। हम अपने हृदयों अपने दिलों को भगवान् का मन्दिर बनावें यही प्रार्थना है।"

खतरा मिटा नहीं

प्रार्थना के बाद बापू कुर्सी पर ही भीतर गये। मुलाकातों का तांता ही लगा हुआ है। भागे के बाद प्रवचन देखा। सिन्ध की यह भयंकर कहानी सुनकर समीक्षक हृदय द्रवित हो उठता था। देखें अब बापू कौन-सा नया कदम उठाते हैं !

रात में पण्डितजी के साथ घण्टेभर बातचीत की। अवश्य ही यह ममताम और बम की घटना भयानक थी। लेकिन मालूम पड़ता है कि अभी बापू पर से खतरा नहीं मिटा। फिर भी उनके लेखों विचारों और प्रार्थियों से अभी भी कुछ नया ही जा सकता की समस्या देनेवाला हल करने का रंग-ढंग दीख रहा है। दो दिनों में कार्यसमिति की बैठक भी होने जा रही है। उसमें क्या होता है, देखें। अभी तो सभी जगह वैसा ही चलता है। शान्ति का कोई असर नहीं दीखता।

पाप को किसीका सहारा नहीं

९॥ बजे सोने की तैयारी हुई। मैं तो भाई साहब के साथ बातें करने और लिखने में रोक ली गयी। अब सबको समझ में आने लगा है और सभी एक ही बात कहते हैं कि अब पता चलता है कि सभी बापू के कितने वफादार हैं। सस्ती कीर्ति मिल जाती है इसलिए सभी बापू के पास पहुँचते हैं। लेकिन बापू कितने उदार हृदय हैं कि सभीका कितने प्रेम से स्वागत करते हैं।

मेरे मन में विचार आया कि नारायणदास काका जैसे और कितनों को लगा। उनको भाई ने उपदेशात्मक पत्र तो लिखे पर उन्होंने बुरी बात नहीं मानी। लेकिन अब तो मुझे उन पर अपार दया आती है। उनमें एक बंगाली बहन जो नोआखाली से आयी हैं, भी चर्चा की विषय बन गयी है। उनकी अपेक्षा 'विवाह ही कर लें, तो सभीके लिए शोभास्पद होगा' यही दीखता है। बापू मुझसे कहते : "सभी जैसे हैं, अपने भाव दीख पड़ेंगे। उनमें वैसा विचारणा में कोई निमित्त न बने इसीमें लाभ है। मैंने आज ही प्रार्थना में कहा है न कि पाप को किसीका भी सहारा नहीं होता। इसी कारण सभीको बैठाकर इतने भारी विरोध के बीच भी मुझे तार कर मदुरा से ठेठ नोआखाली तक बुलाने का यही उद्देश्य था। उनकी दृष्टि से ही इन सबको देखना हो। हम कौन कहाँ हैं, कहाँ थे और कहाँ जायेंगे !"—पैर धोते हुए बापू ने ये शब्द कहे।

● ● ●

बारे में कहते या लिखते हैं, तो अच्छा ही नहीं लगता। जहाँ इतना ऊँचा चढ़ा है, तो कभी गिरने का समय न आ जाय। इसकी अपेक्षा बीच की स्थिति ही ठीक है।

दूसरा जवाहर नहीं

रामदास काका १२ बजे आये थे। वे आज नागपुर जानेवाले हैं। बापू इन्हें मेरठ की बहावलपुर भेजनेवाले हैं। एक बात की खोज के लिए। बापू कहने लगे: 'जवाहर के साथ तुलना हो ही नहीं सकती। इस परिवार की किस्मत ही अलग है। भारत में बैरिस्टरों या धनवानों की कमी नहीं। मुझे बता कि क्या भारत में दूसरा भी कोई जवाहर है?'

बापू का और सब तो नियमानुसार ही काम चलता है। भोजन में अभी बादाम शुरू नहीं किया है। वजन १०८ पर कुछ स्थिर है। अब तो मुसलमान कोई खास शिकायत नहीं करते। दिल्ली में भलीभाँति शान्ति दीख रही है।

सब कुछ भगवान् के हाथ

आज बापू धीरे-धीरे प्रार्थना-सभा तक चलकर ही गये। उनके पैरों में अभी ताकत नहीं आयी। जब तक हाथ था तब साधारण तरीके से बापू के देखने का वजन मालूम नहीं पड़ता था। लेकिन आज हाथ के देखने का वजन मालूम पड़ता था। यही बताता है कि अभी बापू की कमजोरी तो है ही।

फिर भी यह सच है कि चलते हुए जाते देख सभी को बहुत आनन्द हुआ। बापू ने आज के प्रवचन में कहा: "आप देख सकते हैं कि ईश्वर धीरे-धीरे मेरे शरीर में ताकत भर रहा है। मैं आशा करता हूँ कि अब जल्दी ही पहले जैसा हो जाऊँगा। लेकिन आखिर सब कुछ भगवान् के ही हाथ में है।

"एक भाई का अभी मुझे एक विचित्र सन्देश मिला है कि जवाहरलालजी और अन्य मंत्रियों या अधिकारियों ने अपने अपने घरों में रहने की व्यवस्था कर दी है, लेकिन उनमें कितने समा सकते हैं? और यह लोग तो जाने ही करना चाहते हैं।

यह सन्देश लिखनेवाले भाई की बात तो सच्ची है कि इतने भर से शरणार्थियों को चैन नहीं आ सकता। लेकिन ऐसा करने से एक प्रकार का आदर्श

बारे में कहते या लिखते हैं, तो समझ ही नहीं सकता। जहाँ इतना ऊँचा चढ़े हैं, तो कभी गिरने का समय न आ जाय। इसकी अपेक्षा बीच की स्थिति ठीक है।

दूसरा जवाहर नहीं

रामदास भाई ११ बजे आये थे। वे लोग नागपुर जानेवाले हैं। बापू सुशीला बहन को बहावलपुर भेजनेवाले हैं। "एक बात की खोज के लिए।" बापू कहने लगे: "नये जवाहर के साथ तुलना हो ही नहीं सकती। इस परिवार की मिसाल ही अलग है। भारत में बैरिस्टरों या धनवानों की कमी नहीं। मुझे बता कि क्या भारत में दूसरा भी कोई जवाहर है।

बापू का और सब तो नियमानुसार ही काम चलता है। भोजन में अभी अनाज शुरू नहीं किया है। वजन १०८ पर पुनः स्थिर है। अब तो मुसलमान कोई बात शिकायत नहीं करते। दिल्ली में भलीभाँति शान्ति दीख रही है।

सब कुछ भगवान् के हाथ

आज बापू धीरे-धीरे प्रार्थना-सभा तक चलकर ही गये। उनके पैरों में अभी ताकत नहीं आयी। अभी तक हाथ या तन साधारण तबीयत से बापू के देखने का वजन मालूम नहीं पड़ता था। लेकिन आज हाथ के देखने का वजन मालूम पड़ता था। यही बताता है कि अभी बापू को कमजोरी तो है ही।

फिर भी यह सच है कि चलते हुए उनको देख सभी को बहुत आनन्द हुआ। बापू ने आज के प्रवचन में कहा: आप देख सकते हैं कि ईश्वर धीरे-धीरे मेरे शरीर में ताकत भर रहा है। मैं आशा करता हूँ कि अब जल्दी ही पहले जैसा हो जाऊँगा। लेकिन आखिर सब कुछ भगवान् के ही हाथ में है।

एक भाई का अभी मुझे एक दिलचस्प खरीता मिला है कि जवाहरलालजी और अन्य मंत्रियों या अधिकारियों ने अपने-अपने घरों में रहने की व्यवस्था कर दी है। लेकिन उनमें कितने समा सकते हैं। और बड़े लोग तो बातें ही करना जानते हैं।

यह सवाल लिखनेवाले भाई की बात दी तो कहती है कि इतने भर से शरणार्थियों को पोसा नहीं जा सकता। लेकिन ऐसा करने से एक प्रकार का आदर्श

प्रजा सभीको समान रूप से ही अपना भाग अर्पण करना होगा। तभी आज की दुनिया को इस कठिन परिस्थिति से उबार पा सकते हैं।

प्रार्थना के बाद बापू घूमने नहीं गये। धीरे-धीरे आये। डॉक्टर और सभी मुलाकाती बैठे ही हुए थे। आकर उनसे बातचीत की। वर्किंग कमेटी में पेश किये जानेवाले मुद्दों पर चर्चा हुई। पण्डितजी आये। उसके बाद प्रवचन लिखकर देने की तैयारी हुई।

असीम वात्सल्य

मैं मालिश कर रही थी तो पुनः मुझसे कहा : "मैंने सुबह तुझे जो-जो बातें कही हैं, उन्हें नोट कर कल मुझे देना। उस बारे में अभी किसीसे चर्चा करने की जरूरत नहीं। मुझे तो तुझे बतलाना ही चाहिए। अगर न बताऊँ, तो मेरा धर्म भ्रष्ट हुआ माना जायगा। इसीलिए तुझसे कहा। तू सुखी और स्वस्थ रहेगी तो मैं जीत गया।"

बापू के अपार प्रेमभरे वात्सल्य की तो सीमा ही नहीं। इतनी-इतनी कठिन समस्याएँ रहने पर भी इनकी वात्सल्यता और कार्यदक्षता की कदाचित् ही कोई उपमा दी जा सकती है। कुछ अजीब ही सेवा ले रहे हैं।

मैं भी बातचीत कर और अपना काम पूरा कर ११ बजे सोयी। आज बापू के लिए दातुन ढूँढने में काफी देर हो गयी। वहाँ ढूँढा जाय जिससे बिरला-भवन में सोये हुए लोगों को शोर न हो। आखिर दरवाजे पर जाकर ढूँढा। पुलिस का पहरा है इसलिए कम्पाउण्ड और बंगला काफी सजग है। • • •

अहिंसक साम्राज्य का अवसर : २४

बिरला-भवन नयी दिल्ली
२१-१-'४८

सेवा सफल हो!

नियमानुसार प्रार्थना के बाद बापू ने मेरी डायरी ही माँग ली। उसे देखा और उसके बारे में अपना निम्नलिखित अभिप्राय लिखवाया :

दोस्ती असम्भव

(१) आपके अनशन के पाँच-सात दिनों के भीतर हिन्दू-मुसलमानों के बीच दिली दोस्ती हो जाय यह असंभव है। हाँ ऐसी एकता हो गयी है, कि दिल्लीवाले जुलूस और सभाओं के प्रदर्शन काफी होंगे। वे हों यह ठीक ही है। फिर भी पूरी तरह हृदय की एकता के सबूत के तौर पर नहीं। इसीलिए आपका अनशन छूट जाय तो हम भ्रम में न रहें कि हृदय की एकता भी आ गयी है। कलकत्ते की शान्ति को मैं हृदय की एकता नहीं मानता। लेकिन आपके अनशन से इतना हो सकता है कि हिन्दू अपना गुस्सा काबू में रखकर निर्दोष मुसलमानों का कत्ल न करें। मैं मानता हूँ कि आपके अनशन छूटने के लिए इतना काफी होगा।

गृह-युद्ध की सूचना

(२) आपने अपनी तपस्या से जनता के हृदय में अपूर्व स्थान पाया है। इसी और कौमी में शरीर मरे, तो उसकी चिन्ता ही क्या है! आत्मा अमर है, ऐसा ज्ञान पैदा नहीं हुआ है। इसलिए आपका शरीर क्षीण होता हुआ देखने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। अतः इस शरीर को बचाने के लिए लोग अपना गुस्सा और तिरस्कार दबा देंगे। दबा क्रोध मौका पाकर भभक उठता है। मुझे लगता है कि इसी विचार के कारण आपने देश के सामने भारत का विभाजन करने की अपेक्षा 'सिविल वार' ही पसंद करने की सूचना पेश की हो।

केन्द्रित उत्पादन क्यों?

(३) अगर लोगों के दिलों से द्वेष और क्रोध निकाल फेंकना हो तो सरकार को चाहिए कि उन्हें अपना जीवन रचनात्मक कार्यक्रम पर ही रचने की शिक्षा देनी चाहिए। लेकिन आज तो मैं अखबारों में पढ़ता हूँ कि थोड़े ही दिनों में १   ट्रैक्टर और १   से अधिक अमोनियम सल्फेट खाद विदेश से यहाँ आनेवाली है। देश की सुरक्षा के लिए देश के औद्योगीकरण की बात तो ठीक है। लेकिन जीवन की मुख्य आवश्यकताओं—अन्न और वस्त्र—को केन्द्रित उत्पादन का सिद्धान्त क्यों लगाया जाता है, यह समझ में नहीं आता। जहाँ आज अमेरिका में लोग प्राकृतिक खाद की ओर आकृष्ट हो रहे हैं, वहाँ हम लोग रासायनिक खाद की शुरुआत करते हैं।

मुसलमान पूर्ण निर्दोष नहीं

(४) भारत के मुसलमान हमें जितने निर्दोष दीख पड़ते हैं, उतने नहीं हैं। यह बात मैं अपने निजी अनुभव से कह रहा हूँ। फिर जिले के मुसलमान आपको अपनी जो करुणाजनक स्थिति बताते हैं, उससे यह न समझें कि हिन्दुस्तान के सभी मुसलमान या उनमें अधिकतर निर्दोष हैं और दयनीय स्थिति में जी रहे हैं। इसके विपरीत बहुत बड़ा भाग यह आशा लगाये बैठा है कि कब पाकिस्तान चढ़ाई कर देता है और हम अपना सौभाग्य प्राप्त करते हैं। कितने ही गाँवों के लोगों की कल्पना नहीं करता लेकिन ये लोग भी कहीं की छोटी लकड़ी का काम करेंगे। इसलिए मैं मानता हूँ कि आज पाकिस्तान जो अपनी मर्यादा नहीं समझता उसका कारण यह है कि उसका पूरा विश्वास है कि भारत के मुसलमान हमारे ही हैं। वे हमारी इच्छा से पूरा काम उठायेंगे। सिवा इसके पीछे किन्हीं स्वार्थी राष्ट्रों की मदद भी है ही ऐसा मैं मानता हूँ।

(५) इन सभी विचारों के आधार पर मैं मानता हूँ कि आपका आश्वासन हिन्दुओं से कुछ संयम रखने की ही अपेक्षा रखता है।

(६) मैं मानता हूँ कि मुसलमानों का झगड़ा दो ही तरह से शान्त हो सकता है। एक तो अगर हिन्दू इस हद तक नम जायें तो लेकिन यह आशा तो अब से मिथ्या हो गयी है।

निर्बलों की अहिंसा

आपने ही कहा है कि आज तक की कांग्रेस की लड़ाई दुर्बलों की अहिंसा थी। इसलिए जब सत्ता हाथ आयी है, तो यह संस्था दूसरे छोर से हिंसा के रास्ते ही जायेगी। आजकल की कांग्रेसी सरकार का रुख देखते हुए यह बात प्रमाणित हो सकती है। दूसरा रास्ता नहीं है कि भारत-सरकार दृढ़ता से काम ले। मुझे लगता है कि वह अभी ऐसा नहीं करती और जितने अंशों में यह आपके असर और अपनी भलाई की आभारी है, उतने अंशों में देश की हानि है।'

इस पत्र का उत्तर बापू ने निम्नलिखित दिया

राष्ट्रीय एकता स्वतन्त्रता का स्तम्भ

'ऊपर का पत्र विचारशील होने से प्रकाशित किया गया है। रूप में इस-

अहिंसा को मरनेभर भी पहचान सकूँ और पहचनवा सकूँ, ऐसी शक्ति भगवान मुझे दे यही प्रार्थना है। इस प्रार्थना में तू भी साथ देना।

—बापू के आशीर्वाद"

सुभाष-जन्मतिथि पर

बापू खुराक में अभी तरल पदार्थ ही ले रहे हैं। दोपहर को अस्पताल से लौटे। जाड़ा अभी खूब ही है। दिन में जहाँ तक बनता है, धूप में ही रहते हैं और सिर पर नोआखालीवाली टोपी ही पहनते हैं।

जूनागढ़ अब शान्त हो गया ऐसा दीखता है। बापू तो कहते ही हैं कि अगर नवाब साहब भाग न गये होते तो उनका उचित सम्मान तो होता ही। उन्हें आर्थिक दृष्टि से हैरान न होना पड़ता। लेकिन पाकिस्तान की बनाई के कारण ही ऐसा हुआ। इस बीच यहाँ आते थे। उसमें भी बापू को कुछ रहस्य मालूम पड़ता है। कदाचित् उन्हें पैसा भी छीनना हो। बलवन्त भाई के आने पर उनके बारे में पूछताछ करने के लिए बापू ने मुझसे कहा है। कार्यसमिति होने से सब आयेंगे ही।

पंडितजी सुचेता बहन कृपलानीजी और अन्य स्थानीय नेता तो आना-जाना ही करते हैं। लेडी माउण्टबेटन भी कभी-कभी बापू की तबीयत का हाल पूछ जाती हैं। कैलाश भाई ने खबर दी कि आज नेताजी (सुभाष बाबू) का जन्मदिन है, इसलिए बापू प्रार्थना में उनके बारे में कुछ कहें।

'सन्त हंस गुन गहहिं पय

आज प्रार्थना में बहुत शोर-गुल हो रहा था। इस कारण सुनने में कठिनाई हो रही थी। रेकार्ड में भी आवाज आया ही करती है।

बापू ने कहा : "आज सुभाष बोस का जन्म-दिवस है। यद्यपि मैं किसी का जन्म-दिवस कदाचित् ही याद रखता हूँ, फिर भी आज मुझे इसकी याद कराई गई। इसलिए खुश हूँ।

"सुभाष बाबू हिंसा के पुजारी रहे और मैं अहिंसा का। लेकिन इसमें क्या ? तुलसीदासजी ने रामायण में लिखा है

सन्त हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकारि।

हंस जैसे पानी छोड़ दूध पी जाता है, वैसे ही मानव में गुण-दोष होते ही हैं; पर हमें तो गुणों का ही पुजारी बनना चाहिए। सुभाष बाबू कितने देशभक्त थे इसका वर्णन करना असामयिक होगा। उन्होंने देश के लिए जिन्दगी का जुआ खेलकर दिखा दिया। कितनी बड़ी सेना खड़ी की और वह भी किसी भी तरह के जात-पाँत के भेदभाव के बगैर। उनकी सेना में प्रान्तीय भेदभाव भी नहीं था और न रंगभेद ही था। स्वयं सेनापति होने के बावजूद यह बात न थी कि स्वयं विशेष सुख-सुविधा भोगें और दूसरे कम। सुभाष बाबू सर्व-धर्म-समभाव रखते थे इसी कारण उन्होंने सारे देश के भाई-बहनों के हृदय जीत लिये थे। स्वयं निर्धारित काम पूरा किया। उनके इन गुणों को याद रखकर हम उन्हें अपने जीवन में उतारें यही उनकी स्थायी स्मृति होगी।

मुसलमान भाइयों से

'मुझे ग्वालियर से तार मिला है कि वहाँ किसी गाँव में भीतर-ही-भीतर कुछ झगड़ा चल रहा था। हिन्दू-मुसलमान के बखेड़े की बात ही न थी। इस समाचार से मुझे प्रसन्नता हो रही है। दो शब्द मुसलमान भाइयों से कहना चाहता हूँ। मैं तो जो बात मेरे पास पहुँचती है, उसे जनता के सामने रख देता हूँ और इस रेडियो द्वारा वह तत्काल वहाँ पहुँच जाती है। लेकिन जो मुसलमान भाई इस तरह बनावटी बातें करेंगे या पूर्वाग्रह रखकर झूठी-सच्ची कल्पनाएँ करेंगे तो उनके प्रति सम्मान या प्रेम नहीं रहेगा। उनके बारे में अन्यथाभाव उत्पन्न हो जायगा। इसलिए कोई भी बात बढ़ा-चढ़ाकर कहनी ही नहीं चाहिए। हमेशा अपनी भूलों को पहाड़-सी समझने और पराये की भूलों को राई जैसी माननेवाला ही आगे बढ़ सकता है। खुदा के दरवाजे पहुँचने की यह एक बड़ी आसान तरकीब है।

"मैसूर के बारे में मैंने वहाँ की सरकार को लिख दिया है कि घटना की सच्ची रिपोर्ट दीजिये। जूनागढ़ के मुसलिम भाइयों के तार आये हैं कि जब से सरदार साहब की देखरेख में जूनागढ़ का कारोबार चलने लगा है तब से हमें न्याय मिलने लगा है। अब जूनागढ़ में कोई फूट नहीं डाल सकता। यह सुनकर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ।

हंस जैसे पानी छोड़ दूध पी जाता है, वैसे ही मानव में गुण-दोष होते ही हैं, पर हमें तो गुणों का ही पुजारी बनना चाहिए। सुभाष बाबू कितने देशभक्त थे इसका वर्णन करना असामयिक होगा। उन्होंने देश के लिए जिन्दगी का जुआ खेलकर दिखा दिया। कितनी बड़ी सेना खड़ी की और वह भी किसी भी तरह के जात-पाँत के भेदभाव के बगैर। उनकी सेना में प्रान्तीय भेदभाव भी नहीं था और न रंगभेद ही था। स्वयं सेनापति होने के बावजूद यह बात न थी कि स्वयं विशेष सुख-सुविधा भोगें और दूसरे कम। सुभाष बाबू सर्व-धर्म-समभाव रखते थे इसी कारण उन्होंने सारे देश के भाई-बहनों के हृदय जीत लिये थे। स्वयं निर्धारित काम पूरा किया। उनके इन गुणों को याद रखकर हम उन्हें अपने जीवन में उतारें यही उनकी स्थायी स्मृति होगी।

मुसलमान भाइयों से

'मुझे ग्वालियर से तार मिला है कि वहाँ किसी गाँव में भीतर-ही-भीतर कुछ झगड़ा चल रहा था। हिन्दू-मुसलमान के झगड़े की बात ही न थी। इस समाचार से मुझे प्रसन्नता हो रही है। मैं आज मुसलमान भाइयों से कहना चाहता हूँ। मैं तो जो बात मेरे पास पहुँचती है, उसे जनता के सामने रख देता हूँ और इस रेडियो द्वारा वह सब जगह पहुँच जाती है। लेकिन जो मुसलमान भाई इस तरह बनावटी बातें करेंगे या पूर्वग्रह रखकर झूठी-झूठी कल्पनाएँ करेंगे तो उनके प्रति सम्मान या प्रेम नहीं रहेगा। उनके बारे में अन्यथाभाव उत्पन्न हो जायगा। इसलिए कोई भी बात बढ़ा-चढ़ाकर कहनी ही नहीं चाहिए। हमेशा अपनी भूलों को पहाड़-सी बतलाने और पराये की भूलों को राई जैसी माननेवाला ही आगे बढ़ सकता है। खुदा के दरवाजे पहुँचने की यह एक बड़ी आसान तरकीब है।

'मैसूर के बारे में मैंने वहाँ की सरकार को लिख दिया है कि घटना की पूरी रिपोर्ट दीजिये। जूनागढ़ के मुस्लिम भाइयों के तार आये हैं कि जब से सरदार साहब की देखरेख में जूनागढ़ का कारोबार चलने लगा है तब से हमें न्याय मिलने लगा है। अब जूनागढ़ में कोई फूट नहीं डाल सकता। यह सुनकर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ।

विश्वास आवश्यक

मेरठ के मुसलमान भी कहते हैं कि 'मेरे अनशन का परिणाम अच्छा हो रहा है। आज जो सरकार है, वही हमें चाहिए।'

सरकार बदलने का प्रश्न कहाँ से खड़ा होगा यह भगवान् ही जाने। लेकिन अगर आपको ये लोग ठीक न पड़ते हों तो इन्हें बदलना भी आपके हाथ में ही है। लेकिन मुझे कहना होगा कि आज की स्थिति में उनके बगैर इतना ज्यादा फैला हुआ राज्य चलाना बड़ी ही कठिन बात है। आज का राजकाज आसानी से निभ नहीं सकता। न्याय करने का काम सरकार का है। वह उसे ही करने देना चाहिए।

मेरे नाम मेरी तबीयत की पूछताछ के कई तार आते हैं। उनको व्यक्तिगत रूप से उत्तर दे पाना सम्भव नहीं। लेकिन उन सबके आशीर्वाद सफल हों यही प्रार्थना करता हूँ।

प्रार्थना के बाद एक चक्कर आ गया। अभी पूरी ताकत तो आयी ही नहीं है।

प्रार्थना के बाद भाषण किया। पण्डितजी से बातें कीं। बापू स्वयं ही कांग्रेस की नीति के बारे में मसविदा बना देंगे ऐसा कहा। वे पण्डितजी के आग्रह के कारण ही ऐसा करेंगे।

९। बजे सोने की तैयारी हुई। कदाचित् हमें वर्धा जाना पड़े। वहाँ रचनात्मक संस्थाओं की सुव्यवस्था के निमित्त सेवापुरी में कार्यकर्ताओं की एक बैठक बुलाने का विचार हो रहा है। सेवाग्राम-आश्रम में बापू का स्थिर रूप में रहना तय नहीं। इसलिए अब ये सारी संस्थाएँ किस तरह चलायी जायें इस बारे में भी विचार करना होगा। फिर इस बहाने दिल्ली की परीक्षा भी हो जायगी कि बापू की अनुपस्थिति में कितनी शान्ति बनी रहती है। अगर वैसा होगा तो वे पाकिस्तान जाना भी सोच रहे हैं।

लेटते समय बापू ने मुझसे कहा : "मैं चाहता हूँ कि हम लोग पाकिस्तान जायें उससे पहले जयसुखलाल का मन हो तो जाकर मिल ले।" मैंने कहा : "वे नहीं मिलेंगे। आपको मिलना हो तो मिलिये। क्योंकि मेरे लिखने से वे नहीं आयेंगे।" उन्होंने तब सुबह लिखने के लिए याद दिलाने के लिए कहा है।

• • •

यह ज़िक्र है कि वे सेवाग्राम या यहाँ आ सकते हैं। जमनालालजी की पुण्यतिथि के निमित्त कदाचित् वर्धा जाना पड़े। कुछ तय नहीं है। मुझे तो ऐसा नहीं दीखता कि किसी को छोड़ पाऊँगा। लेकिन इस पर चि. मनु ने कहा कि मैंने ही बात में शर्त रखी थी इसलिए मुझे ही आपको लिखना चाहिए। अतएव यह लिख रहा हूँ। आप अखबारों में देखकर इस तरह जान सकें तो सचमुच मुझे अच्छा लगेगा। तब आप देखेंगे कि मैंने अपने ऊपर का कर्ज चुकता कर दिया है। आपको वह (मनु) अपनी डायरी तो भेजती ही है। उसमें भी इसने काफी प्रगति की है। उसे गौर करने में बड़ा ही रस आता है। जब यह देखता हूँ, तब महादेव का चेहरा मेरी आँखों से हटता ही नहीं।

यह पत्र प्रार्थना के बाद तुरन्त ही लिख रहा हूँ। अपनी चिट्ठियों का ढेर जमा हुआ है। ईश्वर निभायेगा तो हम लोग थोड़े दिनों में अवश्य मिलेंगे। तब बाकी सब बातें होंगी। चि. मनुड़ी मजे में है। उसे मोटा करने की कोई कोशिश आपके पास हो तो मुझे बतलाइये। लड़कियाँ एकदम से मजे में ही होंगी।

—बापू के आशीर्वाद।"

श्री बापू ने लिखवाया "यहाँ की हालत तो ठीक चल रही है। मगर दूसरी जगह गोलमाल तो है ही। सिन्ध और पंजाब का मामला बिगड़ रहा है। मैंने जहाँगीर पटेल और जिनभाई मेहता को जिन्ना साहब लियाकत अली से समझौता-मशविरा करने के लिए भेजा तो है। उम्मीद है कि मुझे पाकिस्तान लिया जाने में सुहरावर्दी साहब की काफी मदद मिलेगी। लेकिन ये सब आसमानी सुल्तानी बातें हैं।

मनचाही मृत्यु का स्वागत

"खुदा की कृपा से मुझमें आहिस्ता-आहिस्ता शक्ति आ रही है। मैं तो राम का दास हूँ। उसकी मर्जी होगी वहाँ तक उसका काम करूँगा। अपने जीवन से सत्य-अहिंसा की सफलता बता सकूँ—ऐसी शक्ति खुदा देगा तभी कामयाब हो सकता हूँ। बीस तारीख को जो हुआ उसमें मेरी कुछ बहादुरी है ही नहीं। मैंने तो माना था कि कोई फौजी तालीम ले रहा है। अगर मौत की खबर होती तो मैं क्या

करता ? इसलिए अभी तो मैं महात्मा नहीं हूँ। लोगों ने महात्मा बना दिया तो इसमें क्या ? अभी तो एक मामूली-सा आदमी हूँ। हाँ अगर मैंने सत्य अहिंसा अस्तेय ब्रह्मचर्य आदि व्रतों का संपूर्ण पालन किया होगा और ईश्वर को साक्षी रखकर किया होगा तब तो वैसी ही मृत्यु आयेगी जैसी मैं चाहता हूँ और प्रार्थना सभा में कहा भी है कि मुझे कोई मारते हों फिर भी मैं उन पर जरा-सा भी गुस्सा न करूँ और राम का नाम लेता-लेता ही मरूँ।

'आज अभी प्रार्थना के बाद एक पत्र मनु के पिता को लिखा और दूसरा यह है। अभी काम तो ढेर ही लगा है। आज से 'वर्किंग-कमेटी' भी चलेगी। इसलिए रात का काम सुबह प्रार्थना के बाद ही होता है।

'वहाँ का हाल लिखा करो। सेवाग्राम आने का अभी कोई निश्चय नहीं है।"

ये दोनों पत्र लिखवाकर बापू थोड़ी देर सो गये। मालिश स्नान वगैरह नियमानुसार ही चला। आज थकान अधिक मालूम पड़ रही थी इसलिए सुबह से मौन ही रखा है। फिर दोपहर को वर्किंग-कमेटी भी थी इसीलिए ऐसा किया। पंजाब में अभी तरह स्वार्थ ही चल रहा है। सुशीला बहन तो बहावलपुर में हैं। प्रवचन का अंग्रेजी अनुवाद तो मेरे हिन्दी के नोटों पर से चाँदवानीजी करते हैं। लेकिन बापू को उसे अच्छी तरह जाँचना पड़ता है।

वीर बहन के गाल पर कुछ होने के कारण उन्होंने एक छोटा ऑपरेशन कराया। उन्हें भी कमजोरी तो है ही। इन्हें ट्रेन से फेंक दिया था उसका असर भी अभी तक बना हुआ है। दोपहर में चाय पीने से उन्हें उल्टी हुई। बापू उनका बहुत ध्यान रखते हैं और हर समय उपचार करते ही हैं। इस तरह अपने उपवास की कमजोरी और काम का अपार बोझ साथ ही देश-विदेश की भरपूर मुलाकातों के बीच भी सबकी देखभाल में बापू तनिक भी कमी नहीं आने देते। दोपहर में ही वर्किंग-कमेटी बैठी थी। उसके बाद बापू तुरन्त प्रार्थना में गये।

विरोध अशोभनीय

१

आज प्रार्थना-सभा में अच्छी भीड़ रही और शोरगुल भी खूब चलता रहा। कश्मीर का प्रश्न भी अब अधिक कम हो गया है।

२

आज के प्रवचन में बापू ने कहा "यह तय हुआ था कि दोनों प्रदेश (हिन्द और पाकिस्तान) अपने कैदियों की अदला-बदली कर लें और भगायी गयी स्त्रियों

न लिखा है कि वे सेवाग्राम या यहाँ आ सकते हैं। जमनालालजी की पुण्यतिथि के निमित्त शायद वर्धा जाना पड़े। कुछ तय नहीं है। मुझे तो ऐसा नहीं दीखता कि दिल्ली को छोड़ पाऊँगा। लेकिन इस पर फिर मनु ने कहा कि मैंने तो मन में सोच रखी थी इसलिए मुझे ही आपको लिखना चाहिए। अतएव यह लिखवा रहा हूँ। आप अखबारों में देखकर इस तरह आ सकें तो सचमुच मुझे अच्छा लगेगा। अब आप देखेंगी कि मैंने अपने ऊपर का काम पूरा कर लिया है। आपको वह (मनु) अपनी डायरी तो भेजती ही है। उसमें भी इसने काफी प्रगति की है। इसे देख करके मैं बड़ा ही खुश होता है। जब यह देखता हूँ, तब महादेव का चेहरा मेरी आँखों से हटता ही नहीं।

यह पत्र प्रार्थना के बाद तुरन्त ही लिखवा रहा हूँ। अपनी चिट्ठियों का ढेर जमा हुआ है। ईश्वर लिखवायेगा तो हम लोग थोड़े दिनों में अवश्य मिलेंगे। तब बाकी सब बातें होंगी। फिर मनुड़ी मजे में है। इसे याद करने की कोई कोशिश आपके पास हो तो मुझे बतलाइये। लड़कियाँ ससुराल में मजे में ही होंगी।

—बापू के आशीर्वाद।"

यों बापू ने लिखवाया — यहाँ की हालत तो ठीक चल रही है। मगर दूसरी जगह गोलमाल तो है ही। सिन्ध और लाहौर का मामला बिगड़ रहा है। मैंने जहाँगीर पटेल और दिनशाह मेहता को जिन्ना साहब लियाकत अली आदि से सलाह-मशविरा करने के लिए भेजा तो है। उम्मीद है कि मुझे पाकिस्तान जाने में सुहरावर्दी साहब की काफी मदद मिलेगी। लेकिन ये सब आसमानी सुल्तानी बातें हैं।

मनचाही मृत्यु का स्वागत

"खुदा की कृपा से मुझमें आहिस्ता-आहिस्ता शक्ति आ रही है। मैं तो राम का दास हूँ। उनकी मर्जी होगी वहाँ तक उनका काम करूँगा। अपने जीवन से सत्य-अहिंसा की सफलता बता सकूँ—ऐसी मौत खुदा देगा तभी कामयाब हो सकता हूँ। बीस तारीख को जो हुआ उसमें मेरी कुछ बहादुरी है ही नहीं। मैंने तो माना था कि कोई कवायदी तालीम ले रहा है। अगर मौत की खबर होती तो मैं क्या

करता ? इसलिए अभी तो मैं महात्मा नहीं हूँ। लोगों ने महात्मा बना दिया तो उससे क्या ? अभी तो एक मामूली-सा आदमी हूँ। हाँ अगर मैंने सत्य अहिंसा अस्तेय ब्रह्मचर्य आदि व्रतों का संपूर्ण पालन किया होगा और ईश्वर को साक्षी रखकर किया होगा तब तो वैसी ही मृत्यु आयेगी जैसी मैं चाहता हूँ और प्रार्थना सभा में कहा भी है कि 'मुझे कोई मारते हों फिर भी मैं उस पर जरा-सा भी गुस्सा न करूँ और राम का नाम लेता-लेता ही मरूँ'।

'आज अभी प्रार्थना के बाद एक पत्र मनु के पिता को लिखा और दूसरा यह है। पत्रों का तो ढेर ही लगा है। आज से 'वर्किंग-कमेटी' भी चलेगी। इसलिए डाक का काम सुबह प्रार्थना के बाद ही होता है।

'यहाँ का हाल लिखा करो। सेवाग्राम जाने का अभी कोई निश्चय नहीं है।'

ये दोनों पत्र लिखवाकर बापू थोड़ी देर सो गये। मालिश स्नान वगैरह नियमानुसार ही चला। आज थकान अधिक मालूम पड़ रही थी इसलिए सुबह से मौन ही रखा है। फिर दोपहर को वर्किंग-कमेटी भी थी इसीलिए ऐसा किया। पंजाब में अभी तरह फसाद ही चल रहा है। सुशीला बहन तो बहावलपुर में हैं। प्रवचन का अंग्रेजी अनुवाद तो मेरे हिन्दी के नोटों पर से प्यारेलालजी करते हैं। लेकिन बापू को उसे अच्छी तरह जाँचना पड़ता है।

आभा बहन के गाल पर कुछ होने के कारण उन्होंने एक छोटा ऑपरेशन कराया। उन्हें भी कमजोरी तो है ही। उन्हें ट्रेन से फेंक दिया था उसका असर तो अभी तक बना हुआ है। दोपहर में चाय पीने से उन्हें ठण्डी हुई। बापू उनका बहुत ध्यान रखते हैं और हर समय ध्यान करते ही हैं। इस तरह अपने उपवास की कमजोरी और काम का असह्य बोझ साथ ही देश-विदेश के भरपूर मुलाकातों के बीच भी उनकी देखभाल में बापू तनिक भी कमी नहीं आने देते। दोपहर में तो वर्किंग-कमेटी बैठी थी। उसके बाद बापू तुरन्त प्रार्थना में गये।

विवेक अशोभनीय

आज प्रार्थना-सभा में अच्छी भीड़ रही और शोरगुल भी कुछ चलता रहा। कश्मीर का प्रश्न भी अब अधिक उग्र हो गया है।

आज के प्रवचन में बापू ने कहा : "यह तय हुआ था कि दोनों प्रदेश (हिन्द और पाकिस्तान) अपनी फौजों को अलग-अलग कर दें और [illegible] किसी

करता ? इसलिए अभी तो मैं महात्मा नहीं हूँ। लोगों ने महात्मा बना लिया तो उससे क्या ? अभी तो एक मामूली-सा आदमी हूँ। हाँ अगर मैंने सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि व्रतों का संपूर्ण पालन किया होगा और ईश्वर को साक्षी रखकर किया होगा तब तो वैसी ही मृत्यु आयेगी जैसी मैं चाहता हूँ और प्रार्थना-सभा में कहा भी है कि 'मुझे कोई मारते हों फिर भी मैं उन पर जरा-सा भी गुस्सा न करूँ और राम का नाम लेता-लेता ही मरूँ'।

'आज अभी प्रार्थना के बाद एक पत्र मनु के पिता को लिखा और दूसरा यह है। पत्रों का तो ढेर ही लगा है। आज से 'वर्किंग-कमेटी' भी चलेगी। इसलिए डाक का काम सुबह प्रार्थना के बाद ही होता है।

'यहाँ का हाल लिखा करो। सेवाग्राम आने का अभी कोई निश्चय नहीं है।"

ये दोनों पत्र लिखवाकर बापू थोड़ी देर सो गये। मालिश, स्नान वगैरह नियमानुसार ही चला। आज थकान अधिक मालूम पड़ रही थी, इसलिए सुबह से मौन ले रखा है। फिर दोपहर को वर्किंग-कमेटी भी थी, इसीलिए ऐसा किया। खुराक में अभी तरल पदार्थ ही चल रहा है। सुशीला बहन तो बहावलपुर में हैं। प्रवचन का अंग्रेजी अनुवाद तो मेरे हिन्दी के नोटों पर से चाँदवानीजी करते हैं। लेकिन बापू को उसे अच्छी तरह जाँचना पड़ता है।

चाँद बहन के गाल पर फुड़ होने के कारण उन्होंने एक छोटा ऑपरेशन कराया। इन्हें भी कमजोरी तो है ही। इन्हें ट्रेन से फेंक दिया था, उसका असर ही अभी तक बना हुआ है। दोपहर में चाय पीने से इन्हें उल्टी हुई। बापू उनका बहुत ध्यान रखते हैं और हर संभव उपाय करते ही हैं। इस तरह अपने उपवास की कमजोरी और काम का असह्य बोझ, साथ ही देश-विदेश की भरपूर मुलाकातों के बीच भी सबकी देखभाल में बापू तनिक भी कमी नहीं आने देते। दोपहर में तो वर्किंग-कमेटी बैठी थी। उसके बाद बापू तुरन्त प्रार्थना में गये।

विलंब असहनीय

आज प्रार्थना-सभा में अच्छी भीड़ रही और रामधुन भी खूब चलता रहा। कश्मीर का प्रश्न भी अब अधिक उग्र हो गया है।

आज के प्रवचन में बापू ने कहा : "यह तय हुआ था कि दोनों डोमिनियन (हिन्द और पाकिस्तान) अपनी फौजों को अलग-अलग कर लें और भगायी गयी स्त्रियों

बापू की विशाल दृष्टि का दर्शन तो उनके ऐसे ही विविध रंगों के दरबार में हुआ करता है। इस दरबार में रहना पूरी कसौटी है। जिस पर ईश्वर की कृपा हो वही पार पा सकता है। बहुतों को लगता है कि महान् व्यक्ति के पास भी ऐसे व्यक्ति हुआ करते हैं और इसीके बीच उनकी महत्ता की कसौटी हुआ करती है।

• • •

हृदय की वेदना

२६ :

बिरला-भवन नयी दिल्ली
१५-१-'४८

अशान्त वातावरण

१० बजे नियमानुसार प्रार्थना। प्रवचन करते हुए बापू ने कहा, "देख रहा हूँ कि कांग्रेस देश और दिल्ली का तथा यहाँ हमारा भी वातावरण अभी शान्त नहीं हो पाया है। आज भी उसमें मुझे बादल नजर आ रहे हैं। मेरे अनशन के पीछे जिस कैसी शुद्धि ही नहीं रही। बल्कि हम सभी समझदार लोगों को अपने मानस की शुद्धि करनी थी। नोआखाली में करना ही जाना तय किया है। यह और भी स्पष्ट कर देना चाहिए। यहाँ आयी हुई बंगाली बहन को भी वे क्या चाहती हैं इसकी ममतापूर्वक पूछताछ करनी चाहिए। आप कहते हैं कि कांग्रेस ठग रही है जिन्ना साहब मुझे ठग रहे हैं। लेकिन मैं समझता हूँ कि मुझे ठगनेवालों में आप जैसे मेरे अपने ही लोग हैं। इसीलिए मैं कहता हूँ कि ऐसे काम करने की अपेक्षा बेहतर है कि आप सबको ऐसा उचित मालूम पड़े (वैसी) सोच जाइये और मुझे अकेले ही रहने दें। इसीमें मेरा आपका और समाज का विशेष कल्याण है। मैं सोचता हूँ कि किसी को भी यह स्पष्ट कर ही देना चाहिए कि उसे क्या करना है। नहीं तो उसे जो करना हो वह करे तो अधिक योग्य हो। मैं नहीं चाहता कि कोई नाराज कर कुछ भी करे। यह कोई मेरी सेवा का अंश नहीं। मनु और मेरी दृष्टि में जरा भी छुपे नहीं है। फिर भी मनु का उचित भी उत्तरदायित्व पर था पर न तो कभी था और न है ही। फिर भी लोगों ने उस उत्तरदायित्व को उठा

किया। लेकिन मैं 'तो' के स्तर है और वह तलवार पड़ी है। फिर भी आश्चर्य की बात है कि सभी एकदम चुप कैसे बैठे हैं। इसी तरह— है। यह सच है कि मेरे हृदय में मनु मेरी पौत्री ही है। फिर भी दूसरी लड़कियाँ नहीं ऐसा बात नहीं। इसका साक्षी तो परमात्मा ही है। सभी लड़कियाँ मेरी पौत्री जैसी हैं और मेरी पौत्री सभी लड़कियों जैसी है। फिर भी यह सच है कि मनु इन सबसे विशिष्ट बन गयी है। कारण यह पहले दिन से इस जलते हुए अग्नि-कुण्ड में कूद पड़ी। इसने सबसे सफलतापूर्वक टक्कर भी ली है। फलस्वरूप मैं जीता रहा और मेरी कसौटी भी ठीक रही। अगर लोगों में सन्मति सुबुद्धि हो तो आप सभी देखेंगे कि इस यज्ञ का इतिहास भावी पीढ़ी को एक नयी ही प्रेरणा देता रहेगा। आज मैं मर जाऊँ या जीवित रहूँ फिर भी मुझे अपने सिद्धान्त और जीवन का स्पष्ट निचोड़ का अगर कभी कुछ अवसर मिला तो वह मेरा यह अन्तिम यज्ञ ही है। भले ही आज किसीको इस यज्ञ का मूल्य न मालूम पड़े। शायद मनु को भी न मालूम पड़े क्योंकि वह इतनी छोटी है कि वह भविष्य की भाषा समझकर मुझसे निश्चिन्त होकर बैठ ही नहीं सकती। फिर भी गहराई से विचार करने पर मुझे यह प्रकाश प्राप्त होता है कि मैं अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण कार्य जो कि पूर्ण रूप से स्थितप्रज्ञ होना है, लगभग पूरा कर चुका हूँ।

टहलन करते हुए बापू ने बड़ी ही गंभीरता के साथ ये बातें कहीं।

कर्तव्य-पालन करें !

प्रार्थना के बाद अन्दर आकर उन्होंने मुझसे कहा "अभी भी मैं यह अनुभव नहीं कर पाता कि परस्पर प्रेम का वातावरण बन गया है। बापू की अमुक बात पसन्द नहीं पड़ती इसीलिए कुछ लोग उससे अलग हैं। लेकिन यही मुझे अच्छा नहीं लगता। आज वर्किंग-कमेटी में भी यही रंग चलता रहा। इसमें मैं अपनी हिंसा ही देखता हूँ। बापू को पसन्द न होने के कारण ही किसी बात से बचने में न तो बापू का कोई काम है, न देश का और न हमारा खुद का ही। वास्तव में यही देखना चाहिए कि हमारा अपना क्या कर्तव्य है। सम्भव यदि वे मेरे उपवास का अर्थ मुझे अपने ही अन्तःकरण की जाँच करना था और है। मैंने जो कुछ कहा उसमें मेरे हृदय की वेदना भरी हुई है। मैं स्वयं तो आज दिन-प्रति

दिन निःसार ही होता जा रहा है, यह कहूँ तो चल सकता है। यही कारण है कि [illegible] अब मुझसे कहता है कि 'अमुक-अमुक बातें जवाहरलाल से कहें और अमुक-अमुक सरदार से कहकर काम करा लें' तो मैं साफ-साफ इनकार कर देता हूँ कि 'अगर वे लोग मेरे सामने बात समझेंगे तभी कहूँगा अन्यथा नहीं'।

आज सुबह से ही वातावरण कुछ गंभीर ही है। यद्यपि बापू का सारा काम क्रम अपने निश्चित रूप से ही चल रहा है, फिर भी दीखता है कि वे कुछ गंभीर विचार में उलझे हुए हैं। दोपहर में ... के साथ एक छोटी-सी घटना हो गयी थी। मैं वर्किंग-कमेटी के समय तकिया रख रही थी कि बापू ने कहा : "...से कह दे कि 'यहाँ शान्ति से रह सकें तो रहें। इतना अधिक क्रोध कर मेरी सेवा न करें।'" बापू दुःख और नाराजगी से यह कह रहे थे। इसी बीच बलवन्त राय मेहता आ गये और बापू के चरण छूने के लिए आगे बढ़े। इसलिए बात वहीं रुक गयी यह अच्छा ही हुआ। मुझे लगा कि मैं व्यर्थ ही धर्म-संकट में आ पड़ी। लेकिन बापू बोले : "इतनी सच्ची बात कहने की अब भी मुझमें हिम्मत नहीं आयी तो कब आयेगी!" आखिर मुझे बापू का सन्देश वहाँ का वहाँ पहुँचाना ही पड़ा। १ बजे से ५ बजे तक वर्किंग-कमेटी की बैठक हुई। काठियावाड़ के राज्यों का एकीकरण प्रायः पूर्णतः तय हो हो गया है। वहाँ के राजा लोग समझ गये हैं कि अब हम ऐसे नहीं रह सकते। यह भी अच्छा ही है कि वे समझ-बूझकर राज्य सौंपें इससे परस्पर सम्बन्ध भी अच्छे रहेंगे।

कांग्रेस की वर्तमान अवस्था के विषय में बापू 'हरिजन' में कुछ लिखेंगे। उन्होंने लोगों का मार्गदर्शन करना भी स्वीकार कर लिया है। बापू ने दिल्ली छोड़ने की इच्छा भी व्यक्त की, लेकिन नेतागण मानते हैं कि अभी यहाँ बापू की आवश्यकता है। कश्मीर में अब तो जरा भी गरमाहट बाकी ही न जाय यह भी तय हो गया। अभी सरकारी की अदला-बदली के बारे में पाकिस्तानी नीति से किसी भी तरह का सुधार नहीं हुआ है। सरदार दादा के शब्दों में 'मुख में से सुरदमन जोर' निकालने जैसा ही उनका इस दिशा में काम चलता है। 'सारवार प्रश्न' के प्रश्न पर भी चर्चा हुई।

अपनी डायरी के साथ इनकी भी रोज डायरी लिख देती हूँ। क्योंकि ये गुजराती में अधिक लिखते नहीं बनता।

और आज भी नहीं। बीस वर्ष पहले से ऐसे प्रस्ताव होते ही आ रहे हैं। आज देश में भी ये दस प्रान्त हैं और सभी केन्द्र के अधीन हैं। फिर और भी अगर प्रान्त बनें तथा वे मिली-शासन के अन्तर्गत रहें, तो कदाचित् ही कुछ हानि हो सकती है। लेकिन यदि सभी प्रान्त स्वतन्त्र रहने की माँग करें और किसीको भी उत्तरदायी न मानें तो पुनः प्रान्त-रचना सम्प्रति भूल होगी। अलग-अलग प्रान्त बनने के बाद कर्नाटक को ऐसा न मालूम पड़ना चाहिए कि अब महाराष्ट्र के साथ मेरा कुछ भी लेन-देन नहीं और न महाराष्ट्र को ही ऐसा लगे कि मेरा कर्नाटक के साथ कोई वास्ता, नाता नहीं। यदि ऐसा हुआ तो हमारा काम बिगड़ जायगा। सभी एक-दूसरे के पूरक बनकर यदि भाषावार प्रान्त बनाये जायँगे तो प्रान्तीय भाषाओं की वर्धन होगी प्रगति होगी। एक दूसरी बात भी बहुतेरे कहते हैं कि प्रान्त के लोगों को हिन्दुस्तानी के माध्यम से ही शिक्षा दी जाय। यह बात भी बिलकुल वाहियात है। अंग्रेजी का माध्यम तो सर्वथा बुरा ही है।

सीमा-बंध बनाने की बात भी मेरे गले नहीं उतरती। हर प्रान्त के लोग अपने नजदीक के प्रान्तों के साथ हिल-मिलकर रहें। इसीको सच्चा लोकतन्त्र कहते हैं। यदि सरकार सब कुछ पूरा ही करेगी तो लोग पंगु बन जायेंगे।"

प्रार्थना के बाद से आज बापू ने मौन ले लिया। ● ● ●

स्वाधीनता दिवस पर बापू के उद्गार २७

बिड़ला-भवन नयी दिल्ली
११ । १ । ४८

हरिजन-मंदिर प्रवेश

नियमानुसार सायंकाल आज मौन का दिन है इसलिए प्रार्थना के बाद बापू की [illegible] में आ गयी।

बापू ने आज 'हरिजन' सम्बन्धी काम पूरे किये। हरिजन-मन्दिर-प्रवेश के बारे में एक सनातनी भाई का पत्र मद्रास से आया था। उन्होंने लिखा था कि "हरिजनों का होटलों प्रवेश हरिजनों की मर्जी के विरुद्ध कराया जा रहा है। किन्तु

रात १० बजे बापू बिस्तर पर लेटे। उन्होंने मौन ले लिया है। मैं तो आज बीमारी में बहुत ही थकी हुई थी। मुझे नये-नये अनुभव प्राप्त होते हैं और उनसे मुझे खूब बड़े तो अपार लाभ है। लेकिन जब कभी किसीके लिए बापू का कोई दुःखद सन्देश पहुँचाना पड़ता है, तब तो कँपकँपी ही छूट पड़ती है। भगवान् से यही मनाती हूँ कि प्रभो! मुझे किसीके दुःख का निमित्त न बनाओ।"

हिन्दू रक्षक बनें

आज के प्रवचन-सन्देश में बापू ने कहा : 'मेरे पास हिन्दू और मुसलमान आया करते हैं। वे सभी अब एक ही बात कहते हैं कि अब दिल्ली में पूर्ण शान्ति है। हम लोग समझ गये हैं कि लड़ते ही रहेंगे तो कोई भी काम न होगा। इसलिए अब आप इस बारे में बिलकुल बेफिक्र हो जायें।

'महरौली में जो दरगाह है, वहाँ कल से उर्स का मेला लगनेवाला है। ऐसी सुन्दर कारीगरी की दरगाह हम लोगों ने तोड़ डाली। लेकिन अब कुछ सुधार-कार्य हुआ है। इसलिए वहाँ प्रतिवर्षानुसार मेला लगेगा। इस मेले में हिन्दू और मुसलमान सभी एक साथ जाया करते थे। अब भी उसी तरह जाइये। लेकिन हिन्दुओं से याचना करूँगा कि आप लोग वहाँ जायँ तो इस तरह का कोई भी वातावरण पैदा न करें जिससे मुसलमानों को डर लगे। मुस्लिम-रक्षण के बदले आप लोग ही उनके रक्षक बनें।

'अब एक दूसरी बात कह रहा हूँ कि दो फरवरी को मुझे कदाचित् वर्धा जाना पड़े। राजेन्द्र बाबू तो मेरे साथ जायँगे ही और जहाँ तक होगा जल्दी ही लौटूँगा। लेकिन मेरा जाना तो तभी हो सकता है, जब कि आप सब मुझे आशीर्वाद दें कि अब आप निश्चिन्त हो वहाँ जाना चाहें जा सकते हैं। इसके बाद मैं पाकिस्तान भी जाना चाहता हूँ। मैं वहाँ जाऊँ, इससे पहले पाकिस्तान-सरकार को ही मुझसे कहना होगा कि यहाँ आइये और प्रसन्नता के साथ अपना काम कीजिये।

भाषावार प्रान्त-रचना

जब-जब यहाँ मेरे पास वर्किंग-कमेटी होती है तब-तब कुछ तो जानने योग्य समाचार मुझे मिल जाते हैं। मैं हमेशा उन्हें आपको बताता रहता हूँ। आज इसी तरह की एक बात भाषावार प्रान्त-रचना सम्बन्धी चर्चा हुई। कांग्रेस का यह प्रस्ताव

अन्य मन्दिरों में जाते हैं। तब जैन, स्वामीनारायण आदि सम्प्रदायों के मन्दिरों में जिन्हें हरिजन विशेष नहीं मानते, बलात् प्रवेश कराने का कोई अर्थ नहीं।" इसके उत्तर में बापू ने सूचित किया कि "इस पत्र में पत्र लिखनेवाले ने जो विषय लिखे हैं, उनमें मुझे कोई वास्तविकता मालूम नहीं पड़ती। स्वामीनारायण के मन्दिर, जैन मन्दिर आदि में हर कोई हिन्दू जा सकता है और जाता भी है। तो उनमें हरिजन भी जाने चाहिए। हरिजन और ब्राह्मण दोनों को समान हक है, यह सिद्ध करने की हलचल वर्षों से चली आ रही है। उसमें अधिकांश सफलता प्राप्त है। अब तो बम्बई-प्रदेश में कानून भी बन गया है। अगर यह लोकतन्त्र के विरुद्ध होगा तो उसका अमल धीमा धीमा होगा। लोकतन्त्र में कानून का अमल बलात् नहीं हो सकता। उसमें सदा विवेक की जरूरत हुआ करती है। सुधारक उसमें अगर व्यवहारी है तो सफल हो सकता है। अगर वह उतावली करता है, तो सब व्यर्थ हो जाता है।

ट्रस्टी लोग मन्दिर के मालिक नहीं हैं। मन्दिर के बनानेवाले जब उन्हें जनता के लिए बना देते हैं, तो उनकी मालकियत खतम हो जाती है। फिर उन मन्दिरों के मालिक भक्त हो जाते हैं। भक्त वे ही हैं, जो उनमें पूजा करने या पूजा का दिखावा दिखाने जाते हैं। इस दृष्टि से जैन, स्वामीनारायण आदि मन्दिर हिन्दुओं के माने जाते हैं। इन मन्दिरों में मैं खुद हो आया हूँ। मुझे या मुझ जैसे औरों को कोई नहीं पूछता कि आप कैसे हैं? हिन्दू जैसा दीख पड़ें तो जाना ही काफी है। इसलिए जहाँ हिन्दू जायें वहाँ हरिजन भी जायें। हरिजनों जैसी अलग जाति आज नहीं है। उसका समावेश चार या अठारह वर्णों में हो जाता है। जबरन अमल नहीं चलता है। उन्हें सम्मान देनेवाला कानून नहीं चलता है। उनके समाज जानेवालों का जबरन साथ चल नहीं सकता। देवताओं में प्राण भरनेवाले भक्त हैं। वे चाहें तो भगवान् भी भागें!"

आग्रह भक्ति नहीं

एक और पत्र है, जिस पर लिखनेवाले का नाम नहीं है। अक्षर सुन्दर लिखे गये हैं और भाषा भी अच्छी ही है। उन्होंने सूचित किया है कि 'उन्हें जन्माष्टमी के दिन स्वामीनारायण का दर्शन करने जाना था लेकिन वहाँ तो सुबह ४ बजे से ही

स्थिति बड़ी ही सूचक थी। ... ने कहा कि "मन्त्रिमण्डल में अलग होना चाहते हैं। बापू उन्हें समझाने का यत्न करेंगे।

की पूछताछ की बाली भी अस्मात बापू के पास पहुँच गयी है। पानी में वे काठियावाड़ के चोरों के गिरोह जाने वाले लोग अपने जिला या और किसी दूसरी पहुँच से इस तरह कमाया करें यह बात बापू के लिए अत्यन्त असह्य हो गयी है। देखना है, और नया गुल क्या खिलता है। आज कदाचित् मदुरा में भाई साहब को बापू की चिट्ठी पहुँच गयी हो और सम्भव है, कदाचित् वे वहाँ से चल भी पड़े हों।

स्वतंत्रता में ही सम्भव

आज का प्रार्थना-सन्देश तो प्यारेलालजी ने उस ही हिन्दी में अनुवाद कर सुनाया। आज स्वाधीनता-दिवस है। जब तक हम लोग परतंत्र थे तब तक इस उत्सव को मनाया करते थे। आज हम लोग स्वतंत्र भी हो गये हैं। 'एक दिन हम लोग स्वतन्त्र हो जायेंगे' यह मान्यता अभी तक केवल भ्रम के रूप में ही थी किन्तु आज उसे हम प्रत्यक्ष साकार देख रहे हैं। तब हम इस उत्सव को क्यों मनायें? क्या हम जिसे भ्रम कहते थे वह सच हो गया इसलिए? आज हम यह उत्सव इसीलिए मना सकते हैं कि हमारी अनेक नयी आशाएँ परिपूर्ण हों। अब भारत के सात लाख गाँव स्वतंत्र होकर यह दिखायें कि भारत का सच्चा शोभा और शरीर तो हम ही हैं। यह नूर दिखाना स्वतंत्रता में ही संभव है।

न्याय के लिए पूरा अवकाश

हम सबको इस भूमि की सर्व-धर्म-समानता की भावना के साथ आजादी के रास्ते के आगे का जी-तोड़ श्रम करना होगा। लेकिन मैं तो आज इससे विपरीत ही स्थिति देख रहा हूँ। हम लोग बात-बात में हड़तालें करते हैं। अपने लिए अयोग्य काम किया करते हैं। यही बताता है कि हमें अपनी आशा पूरी करने के लिए काफी श्रम उठाना पड़ेगा। खासकर मजदूर-वर्ग को अब अपना गौरव पहचानना चाहिए। मजदूर-वर्ग की शक्ति और गौरव हमारी जनता में जो व्याप्त है, उसके समक्ष पूँजीपति हतप्रभ हो जाते हैं। लेकिन वे अपने-आपको पहचान पायें तो सुख और सुव्यवस्थित समाज में अन्याय का स्थान पाने का उन्हें पूरा अवकाश क्या

हुआ है। आज कोयले की खानों और दैनिक जीवन के आवश्यक पदार्थों के उत्पादक कारखानों में हड़तालें देख मुझे दुःख होता है। इससे सारे समाज को और स्वयं हड़तालियों को भी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। यहाँ एक बात का स्पष्टीकरण कर देना आवश्यक समझता हूँ। हड़ताली लोग कहेंगे कि आप खुद ही बड़ी-बड़ी हड़तालें कराते थे और आज हमें यह लम्बा-चौड़ा व्याख्यान देने बैठे हैं! इसपर मैं कह देना चाहता हूँ कि उन दिनों हम लोग दास थे, साथ ही आज जैसी न्याय पाने की स्थिति न थी। लेकिन यह सब देखकर सचमुच मुझे यही लगता है कि पूर्व और पश्चिम के दलों में सत्ता पर कब्जा पाने के लिए जो दाँव-पेंच खेले जाते हैं और जिस तरह की राजनीति खेली जाती है क्या उन बुराइयों से हम बच सकते हैं? फिर भी मैं आशा करता हूँ कि भौगोलिक दृष्टि से विभाजन होने के बावजूद हम लोग दिल के टुकड़े न होने देंगे और दुनिया के समक्ष अन्ततः एक ही होकर खड़े रहेंगे।

कण्ट्रोल

कण्ट्रोल उठा लेने के बाद चारों ओर से इसके लिए काफी स्वागत हुआ है। लेकिन मेरे मन में यह सन्देह हो नहीं है कि जिस देश में इतनी अधिक रुई पैदा होती हो, जहाँ इतने अधिक बुनकर और कातनेवाले मौजूद हों, वहाँ कपड़े की तंगी हो सकती है। उसके बाद ईंधन पर से भी कण्ट्रोल उठ गया है। इसलिए भी लोगों को काफी राहत मिल गयी है। गुड़ भी अब तो बाजार में दिखता है, उसमें अधिक सस्ता मिल जाता है। फिर भी एक भाई अपने गाँव के बारे में लिखते हैं कि माल के हेरफेर की अव्यवस्था के कारण ही उनके यहाँ तंगी मालूम पड़ रही है।

वे भी उतने ही अपराधी

रिश्वत, अप्रामाणिकता और घूसखोरी की चाल बन्द हुई नहीं है। लेकिन इसके लिए सब प्रकार के राजकीय अमल को बदनाम किया जाता है। जब तक प्रत्येक व्यक्ति स्वयं यह न समझेगा कि हम देश के लिए काम कर रहे हैं तब तक हम लोग ऊपर नहीं उठ सकेंगे। भले ही कुछ लोग स्वयं घूसखोरी और व्यापार-व्यवसाय में न फँसे हों लेकिन उनमें फँसे हुए लोगों को जानते हुए भी उनके प्रति उदासीनता बरतते हैं, वे भी उतने ही अपराधी हैं।

आज की प्रार्थना-सभा में बम्बई के नेताओं के भी बनें बापू के पत्र

पहुँची थीं उसी पर से उन्होंने यह बात सरिस में भी कही। अगर समझ जाय, तो अच्छा है। नहीं तो बापू उसकी गहराई में उतरेंगे और कदाचित् जाहिर भी कर दें तो [illegible] का तो बुरा हाल हो जायगा। लेकिन उतना समाज में भी एक रूप बनेगा। कारण बापू जब किसीकी परवाह न करेंगे। प्रार्थना के बाद [illegible] के साथ बहुत बातें कीं। बापू ने [illegible] से पुनः सौभाग्यवती बनने की बात भी कही।

• • •

कांग्रेस की नीति

२८ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२०-१-'४८

नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थना के बाद तत्काल ही आज की कांग्रेस की अवस्था के विषय में स्वयं लिखा और लिखाया। फिर उसे शीर्षक दिया 'Congress Position' (कांग्रेस की स्थिति)। उसे मैं उनके ही शब्दों में उद्धृत कर रही हूँ:

हम ईश्वर के सेवक !

"The Indian National Congress which is the oldest national political organization and which has after many battles fought her non-violent way to freedom can not be allowed to die The Congress can only die with the nation A living organism ever grows, or it dies. The Congress has won political freedom but it has yet to win economic freedom social and moral freedom These freedoms are harder than the political, if only because they are constructive, less exciting and not spectacular All-embracing constructive work evokes the energy of all the units of the millions.

The Congress has got the preliminary and necessary part of her freedom The hardest has yet to come in it's difficult ascent to democracy it has inevitably created rotten boroughs, leading to corruption and creation of institutions popular democratic, only in name. How to get out of the weedy and unwieldy growth ?

The Congress must do away with its special register of the members at no time exceeding one crore not even then easily identifiable It had an unknown register of millions, who could never be wanted It's register should now be co-extensive with all the men and women on the voters, rolls in the country The Congress business should be to see that no false name gets in and no legitimate name is left out On it s own register the Congress will have a body of the servants of the nation, who would be workers doing the work allotted to them from time to time

Unfortunately for the country they will be drawn chiefly for the time being from the city-dwellers most of whom would be required to work for and in the villages of India. The ranks must be filled in increasing numbers from villagers

These servants will be expected to operate upon and serve the voters registered according to law, in their own surroundings Many persons and parties will woo them The very best will win.

पहुँची थीं उसी पर से उन्होंने यह बात सँभाल में भी कही। मगर समझ जायँ, तो अच्छा है। नहीं तो बापू उनकी पढ़ाई में उठेंगे और कदाचित् जाहिर भी कर दें, तो [illegible] यह तो बुरा हाल हो जायगा। लेकिन इतना समाज में भी एक [illegible] रूप बनेगा। कारण बापू अब किसीकी परवाह न करेंगे। प्रार्थना के बाद [illegible] के साथ कुछ बातें कीं। बापू ने [illegible] से पुनः नोआखाली जाने की बात भी कही।

● ● ●

कांग्रेस की नीति

२८९

बिरला-भवन नयी दिल्ली
२७-१-४८

नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थना के बाद तत्काल ही आज की कांग्रेस की अवस्था के विषय में स्वयं लिखा और लिखवाया। फिर उसे शीर्षक दिया : 'Congress Position' (कांग्रेस की स्थिति)। उसे मैं उनके ही शब्दों में उद्धृत कर रही हूँ :

हम ईश्वर के सेवक !

"The Indian National Congress which is the oldest national political organization and which has after many battles fought her non violent way to freedom can not be allowed to die The Congress can only die with the nation A living organism ever grows, or it dies. The Congress has won political freedom but it has yet to win economic freedom social and moral freedom These freedoms are harder than the political, if only because they are constructive, less exciting and not spectacular All-embracing constructive work evokes the energy of all the units of the millions.

यहाँ करने या मरने का संकल्प किया था। कुछ काम तो बन गया है, ऐसा दीखता है। फिर भी बहुत सँभालना होगा ही।

'आज महरौली जानेवाला तो हूँ।

बापू का 'पिनकुशन'

बापू कातते हैं, तो उनके सूत के जो टुकड़े-टुकड़े निकलते हैं, उन्हें वे इकट्ठा किया करते हैं और उसे मारकर वे अपने पुराने रूमाल की चौकोर थैली सी लेते हैं। फिर उसे पिन रखने के लिए 'पिनकुशन' बनवाया। आज महरौली से आकर यही काम किया।

कालिया की दरगाह और बापू

दस बजे हम लोग कुतुबुद्दीन औलिया की दरगाह का दर्शन देखने महरौली गये। यहाँ हिन्दू, सिख मुसलमान हजारों की संख्या में जुटे थे। किसीको जरा भी आशा न थी कि यहाँ इतना सुन्दर मेला लग सकेगा। मौली मसजिद में संगमरमर की पत्थर की जालियाँ तोड़ डाली गयी। कब्र के पास पुराना शरीफ की आसन थी। फिर मौलवी साहबों ने बापू के प्रति बड़ी ही कृतज्ञता व्यक्त की। बापू की तन्दुरुस्ती के लिए दीर्घायु चाही। फिर बापू से दो शब्द कहने की प्रार्थना की। बापू ने कहा :

भाइयो और बहनो !

'बहनों से मेरी प्रार्थना है कि वे बिलकुल खामोश हो जायें। चन्द मिनट मुझे दे दें। मेरे मन में जरा भी यह नहीं था कि यहाँ मुझे बोलना होगा। मैं तो एक यात्री की हैसियत से आया हूँ। मैंने कुछ दिन पहले सुना था कि हर साल जैसा इस साल मेला नहीं होगा। अगर ऐसा होता तो मुझे भारी दुःख होता। आज तो मेरी आपसे इतनी ही प्रार्थना है कि अगर हम हिन्दू, सिख, मुसलमान यहाँ सच्चे दिल से आये हैं तो हम इस पाक जगह पर ऐसा निश्चय करें कि अब कभी भी लड़ाई नहीं होने देंगे। हम लोग दोस्त बनकर एक होकर भाई-भाई बनकर रहेंगे। तब तो दुनिया यही कहेगी कि दो भाई लड़े थे, मगर आखिर एक-दूसरे के दुश्मन नहीं बने। भले ही हम ऊपर से जुदे-जुदे हैं, मगर आखिर एक पेड़ की ही पत्तियाँ हैं। दैत्य की संगति करनेवाले की शान नहीं बढ़ता। मेरी जिन्दगी तो चली जानी है। कोई चीज नयी नहीं है। अभी भी हम यहाँ-वहाँ

Thus, and in no other way can the Congress regain its fast ebbing unique position in the country But yesterday the Congress was unwittingly the servant of the nation, it was Khudai Khidmatagar—God's servant Let the Congress now proclaim to itself and the world that it is only God's servant—nothing more, nothing less. If it engages in the ungainly skirmish for power it will find one fine morning that it is no more. Thank God, the Congress is now no longer in sole possession of the field.

I have only opened to view the distant scene. If have the time and health, I hope to discuss in these columns what the servants of the nation can do to raise themselves in the estimation of their masters, the whole of the adult population, male and female

को लिखा 'जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः'—इस वाक्य को यदि मैं खुद के लिए ही सूत्र बना सकूँ तो अपनी मानूँगा । लेकिन यह तो तभी संभव है, जब कि गोलियों की बौछार प्रसन्नता के साथ छाती पर सहता रहूँ । इसलिए १ तारीख की घटना के बारे में दल को गुनाहगारी के बोझ नहीं समझता । वह तो भगवान् की इच्छा ही मानिये । लेकिन मेरी पूरी तैयारी है कि जब हुक्म आयेगा तभी तैयार रहूँगा । दूसरों को वर्षों आगे की बात तो कह रहा हूँ, लेकिन मुझे कुछ ही नहीं लगता कि या पाऊँगा । कल का कौन जानता है !

आज ही मैंने कांग्रेस की नीति के बारे में लिखा है, वह तुम देखोगे ही । को समझाने की कोशिश कर रहा हूँ । कहते हैं कि मुझे के बिना नहीं चलेगा । और कहते हैं कि मुझे के बिना नहीं चलेगा । अगर एक इतिहास की बात करता है, तो वह तो तैयार ही है । कश्मीर के बारे में मैं मानता हूँ कि हमें सेक्युरिटी तक जाने की कोई जरूरत नहीं । फिर भी देखें क्या होता है !

तो कहते ही हैं। आज तो पता कि सरहद में हिन्दू काटे गये। इसके लिए यहाँ के सब मुसलमानों को दुःख होना चाहिए। हम अपना दिल साबित रखें और रोवें कि जो वहाँ मारे गये वे वापस तो नहीं आयेंगे। इसलिए हम यहाँ लिखें लिखें, तो यही लिखें कि हम इसका बदला किसीको कतल करके नहीं लेंगे बल्कि और प्यार करेंगे व मुहब्बत करेंगे। जब हम यह समझ लेंगे तभी हिन्दू के लिए ठौर है। पाक होने का यही मतलब था कि दिल्ली के हिन्दू मुसलमान पाक बनें। अगर सिर्फ मुझे जिन्दा रखने के लिए ही पाक बनाया हो तब तो यह गलत ही है।"

नाक काटने की तैयारी

११ बजे हम लोग वहाँ से लौटे तो बापू कह रहे थे कि 'यहाँ इतना हुआ है, फिर भी मेरा विश्वास है कि पाकिस्तान में इससे भी ज्यादा हुआ होगा। कम तो नहीं ही। पेशावर में १२ काटे गये यह तो वहाँ की सरकार कहती है। लेकिन मेरा विश्वास है कि इससे कहीं अधिक काटे गये होंगे। फिर भी अभी वहाँ का एक भी मुसलमान यह नहीं कहता कि यह सब बन्द होना ही चाहिए। सिखों से तो जो आशा रखी गयी थी उससे बहुत अधिक बहादुरी उन्होंने दिखाई है, यह मुझे कबूल करना ही होगा। फिर पेशावर में जो हुआ वह किसी कारण के बगैर ही हुआ माना जायगा। 'यू. एन. ओ.' वाले तो सोलहों आने [illegible] पर चढ़े पड़े हैं। वे जवाहर की नाक काटने की तैयारी करते हैं। जवाहरलाल की इतनी सारी मेहनत पर पानी फिर जायगा अगर वे चतुराई से काम न लें।

बापू थक गये थे। पर पहुँचने पर उन्होंने फिर मुस्कराये। मिश्री का प्रयोग किया। हम लोग भी आकर सो गये।

दोपहरभर मुलाकातें ही चलती रहीं। मिलनेवालों में निम्नलिखित नाम उल्लेख्य हैं: [illegible] [illegible] गादन, विजयानगरम् के महाराजकुमार, जनरल शाहनवाज, मेहरचन्द खन्ना, धीरजबहन, रामेश्वरी बहन आदि। श्री मेहरचन्द खन्ना ने पेशावर की बातें बतलाते हुए उन पर अफसोस जाहिर किया।

आज की प्रार्थना-सभा में बापू ने कहा कि "आज यहाँ जितने मुसलिम भाई और बहनें हैं वे हाथ उठायें।" किन्तु एक ही हाथ ऊपर उठा।

घोर जंगलीपन

फिर उन्होंने महरौली की चर्चा की। सभा में वहाँ के हिन्दू और सिख भी अधिक संख्या में उपस्थित थे। 'बड़े दुःख की बात है कि यह दरगाह तो बादशाही जमाने की है। यहाँ मुख्यतः नक्काशी का काम रहा। पुराने जमाने का इतना सुन्दर नक्काशी-काम तोड़ फोड़ डालना कोई समझदारी की बात नहीं। उस औलिया की टूटी-फूटी मजार का काम देख मेरे मन में यह प्रश्न खड़ा हुआ कि क्या हम लोग इतने नीचे उतर आये हैं। मान लीजिये पाकिस्तान में इससे भी अधिक भयंकर और बीभत्स काम हुए हों। लेकिन क्या बुरे कामों में भी प्रतियोगिता की जा सकती है? दूसरी बात यह कि आज मुझे यह खबर मिली है कि सीमाप्रान्त और पाकिस्तान में एक जगह, एक साथ ११ हिन्दू और सिख काट डाले गये। फिर लूट-पाट भी हुई, वह तो अलग ही है। मैं पूछता हूँ कि आखिर इन सबको किसने मारा? इसी तरह मरनेवालों का कुछ अपराध था, यह भी कोई कह नहीं सकता। लेकिन यदि आप लोग यहाँ के इस भयंकर काण्ड का यहीं बदला लें, तो निश्चय ही यह जंगलीपन कहा जायगा। अतः इस पर पूरा ध्यान रखें कि ऐसा कोई भी अनुचित काम आज के शान्तिमय वातावरण में न हो पाये। पाकिस्तान में जो भी कुछ मनमानी चल रही है, उसके विरुद्ध में तो हमारी सरकार सतर्क है ही।

स्वतंत्रता का मूल्य

राजकुमारी अमृतकौर अभी-अभी मुझसे मिलने आयी थीं। वे अजमेर होकर आ रही हैं। उन्होंने बताया कि वहाँ के हरिजनों से जो काम करवाया जाता है, वह सब तो वे करते ही हैं। लेकिन वे जहाँ बसते हैं, वहाँ की गन्दगी को तो पूछिये ही नहीं। आखिर वहाँ तो हमारी सरकार का ही शासन चल रहा है। इसलिए वहाँ के हिन्दू-सिख अधिकारी एक दिन उन बस्ती में जाकर देखें तभी उन्हें पता चलेगा। वे बेचारे हरिजन हैं, इसीलिए उन्हें इस तरह सड़ते हुए रखा जा रहा है। दिल्ली में भी जब मैं भंगी-बस्ती में था तो उनका यही हाल देखा। लेकिन अजमेर तो उससे भी गया-बीता निकला। हम लोगों ने स्वतन्त्रता तो पायी, लेकिन उसके साथ ही अगर ऐसी-ऐसी बुरी दशाओं में सुधार न करेंगे तो इस स्वतन्त्रता का मूल्य ही कौड़ी का हो जायगा। हम लोग आज ईश्वर को भूल गये हैं। एक-दूसरे का ऐब देखने से हमें फुर्सत ही नहीं मिल पाती।

घोर जंगलीपन

फिर उन्होंने महरौली की चर्चा की। सभा में वहाँ के हिन्दू और सिख भी अधिक संख्या में उपस्थित थे। 'बड़े दुःख की बात है कि यह दरगाह तो बादशाही जमाने की है। वहाँ मुख्यतः नक्काशी का काम रहा। पुराने जमाने का इतना सुन्दर नक्काशी-काम तोड़-फोड़ डालना कोई समझदारी की बात नहीं। उस कौमिया की टूटी-फूटी भग्न दशा देख मेरे मन में यह प्रश्न पैदा हुआ कि क्या हम लोग इतने नीचे उतर आये हैं! मान लीजिये पाकिस्तान में इससे भी अधिक भयंकर और बीभत्स काम हुए हों। लेकिन क्या बुरे कामों में भी प्रतियोगिता की जा सकती है! दूसरी बात यह कि आज मुझे यह खबर मिली है कि सीमाप्रान्त और पाकिस्तान में एक जगह, एक साथ ११ हिन्दू और सिख काट डाले गये। फिर उथल-पुथल जो हुई, वह तो बहुत में है। मैं पूछता हूँ कि आखिर इन सबको किसने मारा? इसी तरह मरनेवालों का कुछ अपराध था यह भी कोई कह नहीं सकता। लेकिन यदि आप लोग वहाँ के इस भयंकर काण्ड का यहाँ बदला लें तो निश्चय ही यह जंगलीपन कहा जायगा। अतः इस पर पूरा ध्यान रखें कि ऐसा कोई भी अनुचित काम भारत के शान्तिमय वातावरण में न होने पाये। पाकिस्तान में जो भी कुछ फसादबाजी चल रही है उसके विषय में तो हमारी सरकार सतर्क है ही।

स्वतंत्रता का मूल्य

'राजकुमारी अमृतकौर अभी-अभी मुझसे मिलने आयी थीं। वे अजमेर होकर आ रही हैं। उन्होंने बताया कि वहाँ के हरिजनों से जो काम करवाया जाता है, वह सब तो वे करते ही हैं। लेकिन वे जहाँ बसते हैं, वहाँ की गन्दगी की तो पूछिये ही नहीं। आखिर वहाँ तो हमारी सरकार का ही शासन चल रहा है। इसलिए वहाँ के हिन्दू-सिख अधिकारी एक दिन उस बस्ती में जाकर देखें तभी उन्हें पता चलेगा। वे बेचारे हरिजन हैं, इसीलिए उन्हें इस तरह सड़ते हुए रखा जा रहा है। दिल्ली में भी जब मैं भंगी-बस्ती में था तो उनका यही हाल देखा। लेकिन अजमेर तो उससे भी बदतर निकला। हम गोरों से स्वतन्त्रता पा गये लेकिन उसके साथ ही अगर ऐसी-ऐसी बुरी दशाओं में सुधार न करेंगे तो उस स्वतन्त्रता का मूल्य ही कौड़ी का हो जायगा। हम लोग आज ईश्वर को भूल गये हैं। एक-दूसरे का पैर खींचने से हमें फुर्सत ही नहीं मिल रही।

किससे क्या कहूँ !

आज मेरे पास मीरपुर के लोग आये थे। बेचारे हमलावरों के शिकार
हैं। हमलावर उनकी बहनों और बहुओं को उठा ले जाते और उनकी
करते हैं।

मैं किससे क्या कहूँ ? इतना ही कहता हूँ कि आखिर ऐसे जुल्मों की
सीमा भी है या नहीं ? फिर भी कहते हैं कि आजाद कश्मीर के लिए हम लोग ऐ
काम करते हैं। यदि खाने-पीने के लिए न मिले तो लूट-मार की बात समझ में
आ सकती है। लेकिन छोटी-छोटी छोकरियों को भगाकर ले जाना उन्हें खाना-कमा
देना—क्या यह सब इस्लाम-धर्म और कुरान शरीफ में लिखा हुआ है !

बेचारे मीरपुर के लोग मेरे पास आये थे। दुःख-दर्द में पर बेचारे क्या
रहे। जवाहरलालजी को इस बात का गहरा दुःख है। वे पूरी कोशिश कर रहे
लेकिन उससे जितनी आस-मात्र होती है उसका समाधान कैसे हो सकता है
आज जो भाई मेरे पास आये थे अभी उनके करीब पन्द्रह लोग हमलावरों के हाथ
में पड़े हुए हैं। सारी दुनिया के नाम और ईश्वर के नाम पर यहाँ जो इस्लाम
बन आये हैं, उनसे और उनके पीछे रहनेवाली पाकिस्तान सरकार से प्रार्थना करता
हूँ कि किसीकी भी कैसी ही माँग हो उससे पहले इन ही [illegible]
इज्जत बचायें और बहनों को वापस लौटा दें। मैंने भी इस्लाम-धर्म का अध्ययन
किया है। उसके बारे में काफी पढ़ा है। इस्लाम या दुनिया का और भी कोई धर्म
यह हर्गिज ही नहीं सिखलाता। इसलिए इसमें ईश्वर का सहारा नहीं वरन् शैतान की
ही शक्ति कही जायगी। इसे छोड़ देने में ही आपका और सबका भला है।

प्रार्थना के बाद बापू घूमे। घूमते समय मिस्टर शिमान (Mr Sheeam)
साथ थे। उनसे आजाद-कश्मीर के विषय में बातें हुईं। शाहनवाज साहब भी थे।
वे कश्मीर जाने के लिए तैयार हैं। बाद में पंडितजी आये थे। उन्होंने भी आज
मीरपुर की घटना के बारे में बातचीत की। वे कल माउण्टबेटन के साथ भी इस
बारे में सलाह-मशविरा करेंगे।

९॥ बजे सोने की तैयारी हुई।

• • •

दुखिया-सुखिया के आधार २९

बिरला-भवन नयी दिल्ली
२८ १ ४८

गुण ही अपनायें

मालिश के समय बापू ने बंगाली-पाठ किया। स्नान के समय वे टब में आँखें बन्द करके ही पड़े रहे। मैंने भाई साहब को चिट्ठी भेज दी या नहीं और वे यहाँ कब आयेंगे इस बारे में पूछताछ की। उसके बाद दक्षिण अफ्रीका की समस्या पढ़ी देने के बाद और पत्रों में छपे हुए समाचार पढ़ सुनाये।

खाने के बाद लगभग डेढ़ बजे से ऊपर राजेन्द्र बाबू से बातचीत की। "घूसखोरी की बातों के बारे में बापू आज प्रार्थना में कुछ कहेंगे।

" मुझे ऐसा लगता है कि बापू मेरे 'और' के बारे में पक्षपात करते हैं। बापू कहते हैं: "मैं तो मैं किसीका भी पक्षपात नहीं करता। फिर इसमें तो कौन-सी पक्षपात की बात है? कदाचित् सम्भव है कि मैं अपना दोष न देख पाता होऊँ। मेरे जो दोष हों उन्हें फेंक दिया जाय और जो गुण हों उन्हें ही ग्रहण किया जाय।

बापू भी हम जैसे नन्हें बच्चों को भी इस तरह बयान देते हैं कि आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है। सुशीला बहन आयी थीं इसलिए उनके साथ पाकिस्तान संबंधी बातें कीं। सर सुल्तान अहमद के साथ भी सरहद के बारे में बातचीत की।

सरकार मेरे हाथ में नहीं

दो बजे [illegible] रिलीफ कमेटी मिलने आयी। लोगों को दिये जानेवाले अनाज के बारे में इन लोगों ने बातचीत कर बापू से प्रार्थना की कि "वे इस बारे में ध्यान देने के लिए सरकार से कहें।" बापू ने कहा: "सरकार मेरे हाथ में नहीं है। मैं तो आप जैसी ही उसे प्रार्थना करके देखूँगा। [illegible] के कांग्रेसी मूँगफली की फसल के बारे में बातचीत करके गये। बापू मानते हैं कि मूँगफली की फसल पर भी सरकार को यह नियन्त्रण रखना चाहिए कि इतने भाग में अत्यावश्यक रूप में अनाज की फसल होनी ही चाहिए।"

है। यह हक कोई नहीं छीनता यद्यपि यह सच है कि हम लोग हरिजनों के साथ जुल्म करते हैं।

लेकिन दक्षिण अफ्रीका में तो काले आदमी को अमुक रास्ते से भी जाने नहीं देते तो फिर अन्य अधिकारों की बात ही क्या है। इसका साक्षी स्वयं मैं हूं। यही कारण है कि हमारे लोग वहाँ लड़ाई लड़ रहे हैं। लड़ने के तो अनेक रास्ते हैं, लेकिन वहाँ के प्रवासी भारतीयों ने तो उस लड़ाई का सत्याग्रह का ही नाम दिया है। वहाँ की सरकार उन्हें एक शहर से दूसरे शहर में भी जाने नहीं देती। जैसे—नेटाल ट्रान्सवाल डिस्ट्रिक्ट केपकॉलोनी आदि। अफ्रीका देश तो बहुत बड़ा देश है। वहाँ के यहाँ एक जगह से दूसरी जगह जाना हो तो पासपोर्ट लेना पड़ता है। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है। अतएव कुछ लोग नेटाल से कूदकर ट्रान्सवाल पहुंच गये। मुझे कहना चाहिए कि वहाँ की सरकार ने इतना विवेक और सौजन्यता दिखलायी है कि अभी उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया। बल्कि वहाँ लोगों ने इस कूच का काफी स्वागत भी किया। यह एक बहुत ही बहादुरी का काम माना जायगा। फिर वहाँ तो हिन्दू मुसलमान भी हैं। वे सब हिलमिलकर ही अपना काम करते हैं। जब तक गिरफ्तार न होंगे तब तक वे अपने कूच में आगे बढ़ते जायेंगे। आगे चलकर कदाचित् हम उन्हें इस बहादुरी के लिए धन्यवाद भी दें। अगर भारतीय अपनी जगह पर जिम्मेदारी के साथ रहते हैं, तो गोरों को उनके लिए दुःख होने की क्या बात है? जैसे वे स्वतन्त्र हैं, वैसे ही हम भी स्वतन्त्र हैं। इसलिए यहाँ से मैं दक्षिण अफ्रीका की सरकार को भी यह सन्देश देना चाहता हूँ कि जो कोई जहाँ भी रहे, वहाँ अपना समझकर रहना हो तो उसकी दृष्टि में वह स्थान अपना ही है। मैं बीस वर्ष तक दक्षिण अफ्रीका में रह चुका हूं। इसलिए मैं उस देश को भी भारत की तरह अपना ही देश मानता हूं।

"मैसूर के मुसलमानों ने मुझे तार भेजकर अपनी शिकायतें बतायी हैं। इस सम्बन्ध में कानून और व्यवस्था-विभाग के प्रधान का मेरे पास तार आया है, जिसमें वे लिखते हैं कि मैसूर के मुसलमानों की भलीभांति देखभाल की जा रही है। इस सम्बन्ध में मुझे वहाँ के मुसलमानों से कहना है कि अगर आप अपना भला चाहते हों तो किसी भी तरह की अतिशयोक्ति न करें।

ऐसी भूल न करें

अब हम लोगों के भोलेपन की भी एक बात सुन लें। कितने ही लोग मुझे डाक में पैसे भेजते हैं। बेचारों को समझ में ही नहीं आता कि किस तरह पैसे भेजे जायें। इसलिए वे तो आने के लिफाफे में उसे पैक कर देते हैं। वे नहीं सोचते होंगे कि लिफाफा कौन खोलेगा? इस प्रसंग में मुझे अपने बचपन का एक किस्सा याद आ रहा है। मेरे पिताजी के पास एक कीमती जवाहिरात था और उसे उन्होंने इसी तरह लिफाफे में पैक कर दिया। समय पर उस पत्र की पहुँच न आने पर वे बड़ी ही चिन्ता में पड़ गये और उसका पता लगाने के लिए उन्हें तार करना पड़ा। इसलिए इस तरह किसीके हाथ में पत्र लग जाय और रुपये गलत जगह पहुँच जायें तो दाता का दान भी व्यर्थ चला जायगा और दरिद्रनारायण की पूँजी भी चली जायगी। इसलिए कभी भी कोई ऐसी भूल न करें।

प्रार्थना के बाद राजकुमारी बहन के साथ बातचीत की। 'आज प्रार्थना-सभा में आवाज होती है या नहीं' यह पूछने पर "Were there any noises in your prayer meeting today Bapu?" बापू ने उनसे कहा "No But does that question mean that you are worrying about me? If I am to die by the bullet of a mad man I must do so smiling There must be no anger within me God must be in my heart and on my lips. And any thing happens, you are not to shed one tear "

उसके बाद मन्त्रिमण्डल के विषय में बातचीत हुई। फिर पैर धोकर और [illegible] खाने की तैयारी की।

शाम को भाई साहब का तार आया है कि वे ११ तारीख की सुबह यहाँ पहुँचेंगे। बापू ने कहा 'ठीक है अगर यहाँ आना है तो क्योंकि वर्धा जाना अभी अनिश्चित हो गया जायगा। फिर यदि आना ही हो तो हमारे साथ वर्धा चल सकते हैं। फिर वहाँ से उन्हें मथुरा जाना हो तो जा सकते हैं। वर्धा आने की अपेक्षा में यहाँ न पहुँचकर यहीं आ रहे हैं, यह उनकी बुद्धिमानी ही मानता हूँ।"

मालिश हुई। आज तो सारा बहुत ही हल्का किया गया है।

९॥ बजे सोने की तैयारी हुई। सब कुछ निपटाकर मैं १॥ बजे सोने गयी। जाड़ा तो कम हो ही नहीं रहा है।

● ● ●

बापू का वसीयतनामा

: ३० :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२९-१-'४८

मृत्यु सच्चा मित्र

५॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थना के समय आभा नहीं थी। बापू ने उन्हें गाने से रोक दिया था। मुझसे उन्होंने कहा: "अब मैं किसीका [illegible] समझना नहीं चाहता। सभी अपनी इच्छानुसार ही अपना-अपना धर्म पालें। इसीमें मेरा और आप सबका भला है। तुझे अब इसे कुछ भी न कहना चाहिए।"

फिर चाँदवालीजी के लिखे पत्र का संशोधन किया। वे बेचारे हिन्दी समझ नहीं पाते और न बापू की अंग्रेजी ही पढ़ पाते हैं। बापू इतना कम लिखते हैं कि दो शब्दों में ही सब कुछ समझ में आ जाय। लेकिन चाँदवालीजी का लेख तो लम्बा होता है। वे कल ही मुझसे कह रहे थे कि बापू के साथ रहने का मतलब है—तलवार की धार पर रहना।

फिर सेवाग्राम के लिए सुलोचना बहन की मृत्यु के बारे में उसके पिता के नाम पत्र लिखा:

'तुम्हारी पुत्री सुलोचना के स्वर्गवास की खबर चि० किशोरलाल ने दी। मुझे कुछ भी पता नहीं था। मैं क्या लिखूँ? तुम्हें आश्वासन क्या दिया जाय? मृत्यु सच्चा मित्र है। हमारा अज्ञान ही हमें दुःख देता है। सुलोचना की आत्मा तो कल थी, आज है और भविष्य में भी रहेगी। शरीर तो जाना ही है। सुलोचना अपनी सेवा देकर और दुःख उठाकर गयी है। उसे हम न भूलें। सब काम करने में और सावधान बनो।

—बापू के आशीर्वाद।

"प्रिय किशोरलाल,

आज प्रार्थना के बाद का समय पत्र लिखने में ही दे रहा हूँ। आपकी कन्या की मृत्यु का समाचार आपने ठीक ही दिया। उसे पत्र लिख दिया है। मेरी यहाँ आने की बात हवाई ही समझिये। मैं तो २ से १२ तारीख तक वहाँ रहने की बातचीत कर रहा हूँ। लेकिन दिल्ली में निश्चित क्या कहा जाय! अब प्रतिज्ञा का पालन करने का प्रश्न नहीं। कारण यह यहाँ के साथियों पर ही निर्भर है। कदाचित् कम निश्चय हो सके। मुझे थकान आ रही है। इस समय 'हिन्दू' और 'फौजर' दोनों मिलते हैं। इसका कारण मेरी दृष्टि में रामनाम की कमी है।

—बापू के आशीर्वाद।"

जयप्रकाश और बापू

५-४ बजे बापू चिट्ठियों का काम पूरा करके सो गये। फिर जयप्रकाशजी और प्रभावती बहन अन्तिम बार, दिल्ली छोड़ने से पहले मिलने के लिए ही आये। बापू ने उनके समक्ष अपना दुःख व्यक्त किया। उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि "समाजवादी लोग जिस तरह आजादी के लिए पुरजोश होकर कांग्रेस के साथ थे उसी तरह आज आजादी के बचाने में भी साथ दें तभी 'समाजवाद' सच्चे अर्थ में निखार उठेगा। उनकी ओर से भी यह कथन किया गया कि 'जब तक बापू जीवित हैं, तब तक तो वे बापू का हुक्म हमेशा सिर चढ़ायेंगे।" किन्तु बापू 'हुक्म' नहीं, 'धर्म' को मानते हैं। फिर भी जयप्रकाश जैसे वफादार और बुद्धिमान लोग हैं कहाँ! बापू तो गुणग्राहक हैं, इसीलिए वे इन्हें संगठित किये हुए हैं।

शाम के समय बापू से हम उनके बारे में बातें कीं। मैंने कहा। "वे तो उम्र में छोटे हैं। इसलिए उनके बारे में आप मुझसे कुछ भी कहते हैं, तो मुझे अच्छा नहीं लगता। और उनसे बातचीत के लिए समय मिलना चाहिए।" बापू ने कहा "मैं उम्र का छोटा या बड़ापन देखता ही नहीं। लेकिन उनसे काम लेना बड़ा कठिन है। आज उन्हें समय दिया। यह एक ही मुझसे क्यों नहीं कहती!"

भोजन के समय पं० नेहरू के साथ एकान्त में बातचीत हुई। ९-३० बजे राधा बहन, कृष्णा बहन हठीसिंह, इन्दिरा बहन गांधी और तारा बहन (श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित की कन्या) आयी थीं। बापू ने उनके साथ विनोद करते हुए

कहा : (सभी नेहरू-परिवार के स्त्री-सदस्य होने के कारण) आइये क्या ये पत्नियाँ मुझसे मिलने आयी हैं? सभी खिलखिलाकर हँस पड़ीं। बापू ने कहा कि सभी लोग यहाँ आई, बैठें। बापू जाड़े के कारण धूप में नीलाआसमानवाला हैट लगाकर बैठे थे। इन चारों बहनों के परिवारों की हालचाल पूछी। नसीमा बहन ने कहा : 'बापू, क्या यह नयी हैट है? बापू ने कहा — सुन्दर नयी हैट तो नसीमाका है। तब तो मैं बहुत ही सुन्दर दीखता हूँगा न? सभीने खूब-खूब मजाक किया। आखिर बापू ने कहा — अब तुम सब लड़कियाँ भाग जाओ। नहीं तो जो बाहर लोग हैं, वे तुम लोगों को गालियाँ देंगे।"

"मैंने बापू से एकान्त में मिलने के लिए समय माँगा क्योंकि बहुत लोगों के बीच उन्हें बोलना पसन्द नहीं पड़ता। उन्होंने कहा — 'हर बार एकान्त में मिलना अब कठिन हो गया है। अब तो आप लोगों की भीड़ में ही मिल सकते हैं।

इसके बाद स्थानीय मौलाना आये। उनके साथ मदरसे और सिन्ध के बारे में बातचीत की। अब दिल्ली में तो प्रायः शान्ति हो गयी है।

मिट्टी स्नान आदि सभी नियमानुसार ही चलता रहता है। सुधीरदास ने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में छपे पण्डितजी और सरदार दादा के मतभेदों की खबर सुनायी। बापू तो यह समझ ही गये हैं कि कोई हम लोगों के बीच फूट डाल रहा है लेकिन हम लोग इसके लिए इतना हायतोबा क्यों मचायें? बापू तो उन दोनों से बड़ी काम करनेवाले हैं। फिर ग्वालियर के दीवान और श्रीनिवासजी आये। श्रीनिवासजी ने मद्रास की अनाज की तंगी के बारे में बातचीत की।

मिस मार्गरेट के साथ बापू

श्रीमती राजेन नेहरू अमेरिका जा रही हैं, इसलिए बापू को प्रणाम करने आयी थीं। २॥ बजे मिस मार्गरेट आयी थीं। वे अमेरिका में रहती हैं। उन्होंने अपना परिचय एक सतानेवाली (Torturer) के तौर पर दिया। वे प्रेस-रिपोर्टर हैं। मुझे पसन्द आयी थीं क्योंकि वे भारतवासी बनी हुई थीं। उन्होंने 'ट्रस्टीशिप' के विषय में बापू के विचार पूछे। बापू ने इसके जवाब में यह कहा

"A trustee is one who discharges the obligations of his trust faithfully and in the best interests of his words."

"चि० किशोरलाल

आज प्रार्थना के बाद का समय पत्र लिखने में ही दे रहा हूँ। [illegible] कन्या की मृत्यु का समाचार आपने ठीक ही दिया। उसे पत्र लिख दिया है। मेरी यहाँ आने की बात इधर ही समझिये। मैं तो २ से ११ तारीख तक यहाँ रहने की बातचीत चला रहा हूँ। लेकिन दिल्ली में निश्चित क्या कहा जाय! अब प्रतिज्ञा का पालन करने का प्रश्न नहीं। कारण यह यहाँ के साथियों पर ही निर्भर है। कदाचित कुछ निश्चय हो सके। मुझे थकान आ रही है। इस समय 'हरिजन' और '[illegible]' दोनों लिखने हैं। इसका कारण मेरी दृष्टि में रामनाम की कमी है।

—बापू के आशीर्वाद।"

जयप्रकाश और बापू

५-४ बजे बापू चिट्ठियों का काम पूरा करके सो गये। फिर जयप्रकाशजी और प्रभावती बहन अन्तिम बार दिल्ली छोड़ने से पहले मिलने के लिए ही आये। बापू ने उनके समक्ष अपना मुख्य मत व्यक्त किया। उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि "समाजवादी लोग जिस तरह आजादी के लिए एकदिल होकर कांग्रेस के साथ थे उसी तरह आज आजादी के जमाने में भी साथ दें तभी 'समाजवाद' सच्चे अर्थ में निखार उठेगा। उनकी ओर से भी यह वचन दिया गया कि 'जब तक बापू जीवित हैं, तब तक तो वे बापू का हुक्म हमेशा सिर चढ़ायेंगे।' किन्तु बापू 'हुक्म' नहीं 'धर्म' को मानते हैं। फिर भी जयप्रकाश जैसे समझदार और बुद्धिमान लोग हैं कहाँ! बापू तो गुणग्राहक हैं, इसीलिए वे इन्हें संग्रहीत किये हुए हैं।

बाद के समय बापू ने इन सबके बारे में बातें कीं। मैंने कहा। "[illegible] उम्र में छोटी हूँ। इसलिए उनके बारे में आप मुझसे कुछ भी कहते हैं, तो भी अच्छा नहीं लगता। कोई जरिये बातचीत के लिए समय मिलना चाहिए।" बापू ने कहा "मैं सब का चेहरा या [illegible] देखता ही नहीं। लेकिन ऐ काम ऐसा बड़ा कठिन है। आज उसी समय देता। वह खुद ही मुझसे क्यों नहीं कहती!"

भोजन के समय पं० नेहरू के साथ एकान्त में बातचीत हुई। १॥ बजे पद्मजा बहन, कृष्णा बहन हठीसिंह, इन्दिरा बहन गांधी और तारा बहन (श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित की कन्या) आयी थीं। बापू ने उनके साथ विनोद करते हुए

बापू को लगा कि इस बहन का लोभ मिट नहीं सकता। अतः अन्तिम फोटो पर सही करने के साथ ही घड़ी की ओर देखकर कहा "आपके दो मिनट तो खर्च हो गये। देखिये दो मिनट पर कितने सेकण्ड हो गये हैं!

उसके बाद तुरत ही दूसरी अमेरिकन बहन भी मिलने आयी थीं। वे जनरल सेक्रेटरी आफ दि वर्ल्ड हेड क्वार्टर्स ऑफ दि वाई डब्ल्यू सी ए थीं। वे स्विट्जरलैण्ड में रहती हैं। इन दिनों भारत में आयी हैं। इन्हें भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक प्रश्नों में विशेष रुचि है। उन्होंने बापू से इस विषय में पथ प्रदर्शन पाने की इच्छा व्यक्त की कि 'हिन्दुस्तान की अच्छे-से-अच्छे रूप में किस तरह सेवा हो सकती है अथवा भारत को इस तरह देखना हो तो उसके लिए क्या करना चाहिए?" बापू ने कहा

"American visitors should endeavour to see India could go round and offer friendly and constructive criticism but to describe its dirty spots as India would be a caricature"

बापू ने इसी प्रसंग में Emily Kinnaired की याद कराते हुए कहा कि "वे सेवाग्राम से बापू के पास आये थे और उनके साथ बसकर प्रार्थना-सभा में जाते थे। वे शुद्ध शाकाहारी थे। मरने तक उनके और मेरे बीच आत्मचिन्तन के विषय में बहुत ही अच्छा पत्र-व्यवहार चलता रहा।"

उसके बाद भारत के ईसाइयों के बारे में किये गये सवाल के जवाब में बापू ने कहा :

"The best course would be to leave them to their own resources to help them settle down as sons of the soil."

ईश्वर की आवाज़

उसके बाद कुछ लोग मिलने आये। वे बापू के निकट आश्वासन पाने के लिए पाकिस्तान से आये हुए थे। अन्त में बन्नू के लोग आये। वे अपनी करुण कहानी बड़ी ही नाराज़गी और आवेश के साथ सुना रहे थे। एक बूढ़े मर्द ने तो बापू का

फिर उन्होंने पूछा कि क्या भारत में ऐसा आदर्श रखनेवाला कोई आपके ध्यान में है ? बापू ने कहा :

"\o – though some instance my host Shri G D Birla I hopo ho is not deceiving mo If I see him do so I would not live under his roof"

उन्होंने बापू से एक दूसरा सवाल पूछा कि 'आप १२५ वर्ष जीने की जो इच्छा रखते हैं, उस पर दृढ़ हो हैं ?"

बापू ने कहा : "I have lost that hopo because of the terrible happenings of the world I don't want to live in darkness'

उन्हें बापू ने सिर्फ दो मिनट का समय दिया था। आज का समय तो काफी है। लेकिन उन्होंने कुछ बापू के फोटो लिये थे। उन पर हस्ताक्षर करने के लिए उन्हें बापू के सामने रखा और साथ ही साथ बातचीत भी समाप्त करते हुए उन्होंने पूछ ही लिया कि 'क्या बापू चाहते हैं कि अमेरिका को अणुबम नहीं बनाना चाहिए ? उन्होंने कहा :

'Would you advise America to give up the manufacture of Atom bombs ?"

बापू ने जोर देकर कहा

"Most certainly As things are, the war ended disastrously and the victors are vanquished by jealousy and lust for power Already a third war is being canvassed which may prove even more disastrous Ahimsa is a mightier weapon by for then the Atom bomb Even if the people of Hiroshima could have died in their thousands with prayer and good will in their hearts the situation would have been transformed as if by a miracle

बापू को लगा कि इस बहन का क्षोभ मिट नहीं सकता। अत: अन्तिम फोटो पर सही करने के साथ ही घड़ी की ओर देखकर कहा : आपके दो मिनट खर्च हो गये। देखिये, दो मिनट पर कितने सेकण्ड हो गये हैं !'

उसके बाद तुरत ही दूसरी अमेरिकन बहन भी मिलने आयी थीं। वे जनरल सेक्रेटरी आव दि वर्ल्ड हेडक्वार्टर्स ऑव दि वाई. डब्ल्यू. सी. ए. थीं। वे स्विट्जरलैण्ड में रहती हैं। इन दिनों भारत में आयी हैं। इन्हें भारत के सामाजिक आर्थिक एवं नैतिक प्रश्नों में विशेष रुचि है। उन्होंने बापू से इस विषय में पथ प्रदर्शन पाने की इच्छा व्यक्त की कि "हिन्दुस्तान को अच्छे-से-अच्छे रूप में किस तरह देखा जा सकता है अथवा भारत को इस तरह देखना हो तो उसके लिए क्या करना चाहिए ?" बापू ने कहा

"American visitors should endeavour to see India could go round and offer friendly and constructive criticism but to describe its dirty spots as India would be a caricature."

बापू ने इसी प्रसंग में Emily Kinnaired की याद करते हुए कहा कि "वे सेवाग्राम में बापू के पास आये थे और उनके साथ चलकर प्रार्थना-सभा में जाते थे। वे शुद्ध शाकाहारी थे। मरने तक उनके और मेरे बीच आत्मचिन्तन के विषय में बहुत ही अच्छा पत्र-व्यवहार चलता रहा।"

उसके बाद भारत के ईसाइयों के बारे में किये गये सवाल के जवाब में बापू ने कहा

"The best course would be to leave them to their own resources to help them settle down as sons of the soil."

ईश्वर की आवाज

उसके बाद अन्य सज्जन मिलने आये। वे बापू से मिलकर आश्वासन लेने के लिए पाकिस्तान से आये हुए थे। अन्त में बन्नू के लोग आये। वे अपनी करुण कहानी कहते ही जाते थे और जोरों के साथ सुना रहे थे। एक दो भाई ने तो बापू पर

हिमालय चले जाने के लिए कहा। लेकिन बापू ने उसे बड़ा करुण स्वर में कहा कि 'मेरा हिमालय तो यहीं है। आप लोगों का दुःख दूर करना, आपकी सेवा करते-करते मरना ही मेरे लिए हिमालय में जाने जैसा है।

बापू को इन लोगों की बात इतनी चुभ गयी कि प्रार्थना के लिए उठते हुए उन्होंने मुझसे कहा : "इसे तू अपने और मेरे लिए एक नोटिस ही समझ। ये लोग मेरे एक-एक बोल को लेकर पैरों से सिर चढ़ाते थे वे ही आज मुझे हिमालय चले जाने के लिए कह रहे हैं। इन दुःखी भाइयों के हृदय की चोट खाकर इस बात में पड़े हम लोगों के लिए ईश्वर की आवाज ही समझ। यह बात तुझसे ही कह रहा हूँ, क्योंकि इस बात में यहाँ प्यारेलाल, सुशीला, आभा और देव किसीन सभी होते हुए भी मेरे निकट कोई भी नहीं है। अकेली तू ही मेरे साथ बंधी हुई है। इसलिए आत्मा की आवाज तुझसे कैसे छिपायी जा सकती है! बापू बड़े ही दुःखी दीख पड़े।

उसमें भी फिर [illegible] की घूसखोरी संबंधी अन्य बातें भी सामने आ गयीं।

आज का दिन तो इतना व्यस्त था कि उसास लेने तक की फुर्सत नहीं मिली। बापू कांग्रेस के संविधान के विषय में लिख रहे हैं। प्रार्थना-प्रवचन को [illegible] ने बहुत ही लम्बा लिखा था। अतः उसे सुधारने के लिए बापू को उसे फिर से लिखना पड़ा। इस कारण और भी ज्यादा मेहनत पड़ी। वे काफी थक गये हैं, लेकिन काम तो पूरा करना ही पड़ेगा!

[पूज्य बापू का आज का प्रार्थना-प्रवचन इस पृथ्वी पर का अन्तिम प्रार्थना-प्रवचन बन गया। इसी तरह कांग्रेस-संविधान संबंधी उनके विचार भी किसी अशुभ घड़ी में लिखे हुए अन्तिम विचार ही सिद्ध हुए। अतः उन दोनों को उन्हींके शब्दों में यहाँ दे रही हूँ।]

'कहने को चीजें तो काफी पड़ी हैं, मगर आज के लिए ९ चुनी हैं। १[illegible] मिनट में जितना कह सकूँगा कहूँगा। देखता हूँ कि मुझे यहाँ आने में थोड़ी देर हो गयी है, वह होनी नहीं चाहिए थी।

गलतफहमी की सफाई

'सुशीला बहन बहावलपुर गयी है, उस बारे में थोड़ी गलतफहमी हो गयी है।

और घोष साहब हमारे हैं। कोई ऊँच है और कोई नीच ऐसा भेदभाव न करें। घोष साहब औरत साथ में हो तो उसे ही आगे कर देते हैं और अपने को पीछे रखते हैं। मगर निःस्वार्थ सेवा में ऊँच-नीच का भेद नहीं होता। अगर कोई भेद है तो घोष साहब बड़े हैं। सुशीला उनके साथ उनकी मदद के लिए गयी है। वे दोनों आकर मुझे वहाँ का हाल बतायेंगे।

नवाब साहब ने लिखा है कि मुझे कई लोग झूठी बातें भी लिख देते हैं। उन्हें मान लेने का मुझे क्या अधिकार है? सो मैंने सोचा कि अब मुझे क्या करना चाहिए? इसीलिए घोष साहब और सुशीला बहन को मैंने बहादुरपुर भेजा है। वहाँ के मुसलमानों का तार भी आ गया है कि वे वहाँ पहुँच गये हैं। वहाँ से लौटेंगे तब मुझे सब सही हाल बता देंगे। वे तीन-चार दिनों में लौटनेवाले थे। मगर इन्हें काम निकल आया होगा इसलिए नहीं आये।

किसकी सुनूँ?

अभी जम्मू के कुछ भाई-बहन मेरे पास आये थे। शायद काश्मीर आदमी थे। वे परेशान तो थे मगर ऐसी हालत नहीं कि चल न पाते हों। किसीकी जेबमें माल था कहीं कुछ था तो कहीं कुछ। मैंने तो उनका दर्शन ही किया और कहा कि जो कुछ कहना हो अमृत्कौर से कह दें। लेकिन इतना समझ लें कि मैं आप लोगों को भूला नहीं हूँ। वे सब भले आदमी थे। उनका गुस्से से भरा होना स्वाभाविक था। मगर वे मेरी बात मान गये। एक आदमी थे मैं नहीं जानता कि वे शरणार्थी थे या अन्य कोई, और न मैंने उनसे यह पूछा ही उन्होंने कहा। तुमने बहुत खराबी कर दी है। क्या और करते ही जाओगे? इससे बेहतर है कि जाओ। बड़े महात्मा हो तो क्या हुआ? हमारा काम तो बिगाड़ता ही है। तुम हमें छोड़ दो हमें भूल जाओ भागो। मैंने पूछा कहाँ जाऊँ? तो उन्होंने कहा, हिमालय जाओ। मैंने उन्हें डाँटा। वे मेरे जितने बुजुर्ग नहीं थे।

कैसे तो वे कुसुम रे लगते हैं—मेरे जैसे पाँच-सात आदमियों को बस कर सकें। मैं तो महात्मा ठहरा। कमजोर शरीर। पहाड़ जाऊँ तो मेरा क्या हाल होगा? इसलिए मैंने हँसते हुए कहा, क्या मैं आपके कहने से चला जाऊँ? किसकी बात सुनूँ? कोई कहता है यहीं रहो तो कोई कहता है, जाओ। कोई

से पैदा करता और खाता है वही जनरल बने, प्रधान बने तो हिन्दुस्तान की शक्ल ही बदल जायगी। आज जो यह सड़ता पड़ा है, वैसा नहीं रहेगा।

'मद्रास में खुराक की तंगी है। श्री जयरामदासजी के पास मद्रास-सरकार की ओर से एक तार यह कहने आया है कि वे वहाँ के सूबे के लिए अन्न देने का बन्दोबस्त करें। मुझे मद्रासवालों के इस रुख से दुःख होता है। मैं मद्रास के लोगों को यह समझाना चाहता हूँ कि वे अपने ही सूबे में मूँगफली, नारियल और दूसरे खाद्य पदार्थों के रूप में काफी खुराक पा सकते हैं। उनके यहाँ मछलियाँ भी काफी हैं, जिन्हें उनमें से ज्यादातर लोग खाते हैं। तब उन्हें भीख माँगने के लिए बाहर निकलने की क्या जरूरत है? उनका चावल का आग्रह रखना (वह भी पालिश किया हुआ जिसके सारे पोषक तत्त्व मर जाते हैं) या चावल न मिलने पर मजबूरी से गेहूँ मंजूर करना ठीक नहीं है। चावल के बदले में वे मूँगफली या नारियल का खाद्य मिला सकते हैं। उन्हें जरूरत है, आत्मविश्वास और श्रद्धा की। मद्रासियों को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह-कूच के वक्त उस प्रान्त की सभी भाषाओंवाले हिस्सों के लोग मेरे साथ थे। उन्हें रोजाना राशन में सिर्फ डेढ़ पौंड रोटी और एक औन्स शक्कर दी जाती थी। लेकिन जहाँ-जहाँ उन्होंने रात में डेरा डाला, वहाँ जंगल की घास में से खाने लायक चीजें चुनकर और मजे से गाते हुए उन्हें पकाकर मुझे अचरज में डाल दिया। ऐसी सूझ-बूझवाले लोग कभी लाचारी कैसे महसूस कर सकते हैं? यह सच है कि हम सब मजदूर बनें और ईमानदारी से काम करने में ही हमारी मुक्ति और सभी आवश्यकताओं की पूर्ति भरी हुई है।

आखिरी वसीयतनामा

प्रवचन अभी पूरा देखा-सुधारा नहीं गया था। इसी बीच बापू ने कांग्रेस के लिए पथ-प्रदर्शन किया। (वह भी अन्तिम ही बन गया अतः उसे पू. बापू के शब्दों में ही दे रहे हैं)

"Though split into two, India having attained the political independence through means devised by the Indian National Congress, the Congress, in its

present shape and form, i.e. as a propoganda vehicle and a parliamentary machine, has outlived its use. India has still to attain social moral and economic independence in term of its seven hundred thousand villages as distinguished from its cities and towns. The struggle for the ascendency of civil over military power is bound to take place in India's progress towards its democratic goal. It must be kept out of unhealthy competition with the political parties and communal bodies. For these and other similar reasons, the all India Congress Committee resolves to disband the existing Congress organisation and flower into a Lok Sevak Sangh under the following rules with power to alter them as occasion may demand.

Every Panchayat of five adult men or women being villagers or village-minded shall form a unit.

Two such contiguous Panchayats shall form a working party under a leader elected from among themselves.

When there are one hundred such Panchayats the fifty first grade leaders shall elect, from among themselves a second grade leader and so on, the first grade leaders in the meanwhile working under the second grade leader. Parallel groups of two hundred Panchayats shall continue to be formed till they cover the whole of India, each succeeding group of Panchayats electing second grade

leader after the manner of the first. All second grade leaders shall serve jointly for the whole of India and severally for their respective areas The second grade leaders may elect, whenever they deem necessary, from among themselves a chief who will during Leisure, regulate and command all the groups.

(As the final formation of provinces or districts is still in a state of flux, no attempt has been made to divide this group of servants into provincial or district councils and jurisdiction over the whole of India has been vested in the group or groups that may have been formed at any given time It should be noted that this body of servants derive their authority or power from service ungrudgingly and wisely done to their master, the whole of India.)

1 Every worker shall be a habitual wearer of Khadi made from self-spun yarn or certified by the A. I S. A. and must be a teetotaller If a Hindu he must have observed untouchability in any shape or form in his own person or in his family and must be a believer in the ideal of inter-communal unity, equal respect and regard for all religions, equality of opportunity and status for all irrespective of race, creed or sex.

2. He shall come in personal contact with every villager with in his jurisdiction.

3 He shall enrol and train workers from amongst the villagers and keep a register of all these.

4 He shall keep a record of his work from day to day

5 He shall organise the villages so as to make them self-contained and self-supporting through their agriculture and handicrafts.

6 He shall educate village folk in sanitation and hygiene and take all measures for prevention of ill health and disease among them

7 He shall organise the education of the village folk from birth to death along the lines of the Nai Talim in accordance with the policy laid down by the Hindustani Talimi Sangh.

8. He shall see that those whose names are missing on the statutory 'voters roll are duly entered therein.

9 He shall encourage those who have not yet acquired the legal qualification, to acquire it for getting the right of franchise.

10 For the above purposes and others to be added from time to time, he shall train and fit himself in accordance with the rules laid down by the Sangh for th due performance of duty

The Sangh shall affiliate the following autonomous bodi 1 All India Spinners Association.
2 All-India Village Industries Association.

करेगा। द्वितीय श्रेणी के सभी सेवक सम्मिलित रूप से सम्पूर्ण देश तथा व्यक्तिगत रूप से अपने-अपने क्षेत्र की सेवा करेंगे। द्वितीय श्रेणी के सेवक आवश्यकता पड़ने पर अपने में से एक को प्रमुख नेता चुनेंगे जो अपने इच्छानुसार सभी दलों का नियमन और संचालन करेगा।

[चूँकि प्रान्तों और जिलों का अन्तिम पुनर्संघटन अभी अनिश्चित स्थिति में है, इसलिए सेवकों के इस दल को प्रान्तीय या जिला-परिषदों में बाँटने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया है तथा समस्त भारत में कार्य करने का अधिकार उस एक या दलों में निहित है, जो किसी समय संघटित किये गये हों। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि सेवकों की यह संस्था अपने स्वामी अर्थात् समस्त भारत की जनता और बुद्धिमत्तापूर्वक की जानेवाली सेवा से अपना अधिकार अथवा शक्ति प्राप्त करती है।]

(१) प्रत्येक कार्यकर्ता आदतन अपने हाथ से कते सूत की अथवा अखिल भारत चरखा-संघ द्वारा प्रमाणित खादी पहनेगा तथा मदिरा का स्पर्श सेवन न करेगा। यदि वह हिन्दू हो तो उसने व्यक्तिगत रूप से या परिवार में किसी भी रूप में अस्पृश्यता का भाव त्याग दिया हो तथा वह साम्प्रदायिक ऐक्य सभी धर्मों के प्रति समान आदर और प्रतिष्ठा और बिना किसी जाति धर्म या स्त्री-पुरुष के भेदभाव के सबके लिए समान अवसर और स्थिति के आदर्श में विश्वास करता हो।

(२) वह अपने कार्यक्षेत्र में स्थित प्रत्येक ग्रामवासी से व्यक्तिगत सम्पर्क रखेगा।

(३) वह ग्रामवासियों में से ही कार्यकर्ताओं को भरती और प्रशिक्षित करेगा तथा उनका एक रजिस्टर रखेगा।

(४) वह अपने प्रतिदिन के कार्य का लेखा रखेगा।

(   ) वह ग्रामवासियों को इस प्रकार संघटित करेगा कि वे अपनी खेती और दस्तकारी से आत्मनिर्भर और स्वयंपूरित हो जायँ।

(६) वह ग्रामवासियों को सफाई और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में प्रशिक्षित करेगा तथा उनमें रोगों और अस्वास्थ्य के निवारण के लिए सभी उपाय बरतेगा।

(७) वह हिन्दुस्तानी तालीमी संघ द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार नयी

तालीम के आधार पर ग्रामवासियों की जन्म से मृत्युपर्यन्त शिक्षा का कार्यक्रम करेगा।

(८) वह इसके लिए भी सतर्क रहेगा कि जिन व्यक्तियों के नाम वैधिक निर्वाचक सूची (लैजिस्लेटिव वोटर्स रोल) में छूट गये हैं, उन्हें विधिवत् चढ़वाया जाय।

(९) वह उन व्यक्तियों को जिन्होंने मताधिकार प्राप्त करने के लिए अभी कानूनी योग्यता प्राप्त नहीं की है, उक्त योग्यता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

(१०) उपर्युक्त उद्देश्यों तथा समय-समय पर इसमें जुड़नेवाले अन्य उद्देश्यों की दृष्टि से वह अपने कर्तव्य के समुचित पालन के लिए संघ द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार अपने को प्रशिक्षित करेगा और योग्य बनायेगा।

संघ निम्नलिखित स्वायत्त संस्थाओं को सम्बद्ध करेगा

(१) अखिल भारत चरखा-संघ (२) अखिल भारत ग्रामोद्योग-संघ (३) हिन्दुस्तानी तालीमी संघ (४) हरिजन-सेवक-संघ और (५) गो-सेवा-संघ।

संघ अपने ध्येय की पूर्ति के लिए ग्रामवासियों और अन्य व्यक्तियों से धन-संग्रह करेगा किन्तु निर्धन व्यक्तियों से पैसा इकट्ठा करने पर विशेष जोर दिया जाय।

है बहार बाग दुनिया चन्द रोज़!

शाम को मुलाकात करनेवालों में क्रमशः श्री [illegible] हैदराबाद के मुख्यमन्त्री आदि थे। मौलाना साहब के साथ भी काफी चर्चा हुई।

रात में अत्यन्त श्रान्त होने पर भी बापू ने कांग्रेस-संविधान का मसविदा पूरा करके छोड़ा। फिर नियमानुसार ९। बजे पैर धोने के लिए उठे और सीधे सोने के लिए जाने लगे। वे इतने श्रान्त थे कि कपड़े बदलना भी भूल गये। जब याद दिलायी तब उन्होंने बदले।

मैं बापू के सिर में तेल मलती रही। दो मिनट मौन रहकर वे बोले "आज मुझे चक्कर आ रहा है। ... के लड़कों की पूछताछ की बात याद करो। पहले

करेगा। द्वितीय श्रेणी के सभी नेता सम्मिलित रूप से सम्पूर्ण देश तथा व्यक्तिगत रूप से अपने-अपने क्षेत्र की सेवा करेंगे। द्वितीय श्रेणी के नेता आवश्यकता पड़ने पर अपने में से एक को प्रमुख नेता चुनेंगे जो अपने इच्छानुसार सभी वर्गों का नियमन और संचालन करेगा।

[चूँकि प्रान्तों और जिलों का अन्तिम पुनर्संघटन अभी अनिश्चित स्थिति में है, इसलिए सेवकों के इस दल को प्रान्तीय या जिला-परिषदों में बाँटने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया है तथा समस्त भारत में काम करने का अधिकार उस दल या दलों में निहित है, जो किसी समय संघटित किये गये हों। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि सेवकों की यह संस्था अपने स्वामी अर्थात् समस्त भारत की सहर्ष और बुद्धिमत्तापूर्वक की जानेवाली सेवा से अपना अधिकार अथवा शक्ति प्राप्त करती है।]

(१) प्रत्येक कार्यकर्ता आदतन अपने हाथ से कते सूत की अथवा अखिल भारत चरखा-संघ द्वारा प्रमाणित खादी पहनेगा तथा मदिरा का कतई सेवन न करेगा। यदि वह हिन्दू हो तो उसने व्यक्तिगत रूप से या परिवार में किसी भी रूप में अस्पृश्यता का भाव त्याग दिया हो तथा वह साम्प्रदायिक ऐक्य सभी धर्मों के प्रति समान आदर और प्रतिष्ठा और बिना किसी जाति वर्ण या स्त्री-पुरुष के भेदभाव के सबके लिए समान अवसर और स्थिति के आदर्श में विश्वास करता हो।

(२) वह अपने कार्यक्षेत्र में स्थित प्रत्येक ग्रामवासी से व्यक्तिगत सम्पर्क रखेगा।

(३) वह ग्रामवासियों में से ही कार्यकर्ताओं को भरती और प्रशिक्षित करेगा तथा उनका एक रजिस्टर रखेगा।

(४) वह अपने प्रतिदिन के कार्य का लेखा रखेगा।

( ) वह ग्रामवासियों को इस प्रकार संघटित करेगा कि वे अपनी खेती और दस्तकारी से आत्मनिर्भर और स्वयंपूरित हो जायँ।

(६) वह ग्रामवासियों को सफाई और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में प्रशिक्षित करेगा तथा उनमें रोगी और अस्वास्थ्य के निवारण के लिए सभी उपाय बरतेगा।

(७) वह हिन्दुस्तानी तालीमी संघ द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार नयी

सके ? आखिर हम लोग कहाँ के रह जायेंगे ? आजादी की लड़ाई में पूरा योग देनेवाले लोगों पर ही सारे राष्ट्र का आधार है। अगर वे ही इस तरह सत्ता का दुरुपयोग करें तो हमें कहीं खड़े होने के लिए भी जगह न रह जायगी। इस तरह हम कब तक अपनी इज्जत सँभाल पायेंगे ? यों तो मैं इसे आजादी ही नहीं मानता फिर भी बाह्य दृष्टि से जो आजादी प्राप्त हुई है उसे भी हम ऐसी करतूतों से कलंकित ही कर रहे हैं। सोचता हूँ कि आखिर मैं कहाँ हूँ और क्या कर रहा हूँ ! इस अशान्ति से शान्ति कैसे मिले ?

"है बहारे बाग दुनिया चन्द रोज
देख लो इसका तमाशा चन्द रोज।

पाखण्डी अथवा सच्चा महात्मा ?

इतना कहते हुए बापू को खाँसी आने लगी। यह देख-सुनकर मेरी आँखें डबडबा उठीं—हाय ! बापू के हृदय की वेदना कितनी बढ़ती जा रही है ! मानो इस समय उनके लिए सिवा ईश्वर के कोई भी नहीं है। खाँसी आते समय मैंने धीरे से पूछा : "आप पेनिसिलिन की गोली ले लीजिये न ? सुशीला बहन सुझा गयी हैं। अन्यथा अगर इन्फ्लुएञ्जा हो जाय तो ?

मैंने कह तो दिया पर बापू और भी दुःखी हो गये और कहने लगे : "इस यज्ञ में तो तू अकेली ही मेरी साझीदार है, मददगार है। आज तक मैंने किसीको भी ऐसी शिक्षा नहीं दी जैसी कि माँ बनकर तुझे दी है। तेरे लिए ही मैं जागता रहा। आखिर तू होम की गयी और खरी-सलामत बाहर निकली। मैंने तुझमें जो कुछ देखा वह अन्य किन्हीं लड़कियों में नहीं। इसलिए आज एक बात तुझे कहना चाहता हूँ, जो कई बार कह भी चुका हूँ। यदि मैं किसी रोग से या छोटी-सी फुन्सी से भी मरूँ तो तू जोर-जोर से दुनिया से कहना कि यह दम्भी महात्मा था। तभी मेरी आत्मा को भले ही वह कहीं हो शान्ति मिलेगी। भले ही मेरे लिए लोग तुझे गालियाँ दें फिर भी यदि मैं रोग से मरूँ तो मुझे दम्भी-पाखण्डी महात्मा ही ठहराना। और यदि गत सप्ताह की तरह पटाखा हो या कोई मुझे गोली मार दे और मैं उसे खुली छाती झेलता हुआ भी मुँह से भी उफ न करता हुआ राम का नाम रटता रहूँ, तभी कहना कि वह सच्चा महात्मा था। इससे भारतीय जनता का कल्याण ही होगा।

हे राम ! 　　　　। २९ ।

बिड़ला-भवन, नयी दिल्ली
२९-१-'४८

नियमानुसार बापू प्रार्थना के लिए जगे, मुझे भी जगाया। बहन उठी नहीं। आजकल सुशीला बहन नहीं है इसलिए गीता-पाठ मुझे ही करना पड़ता है। भाई साहब और प्यारेलालजी जागते रहते हैं, तो वे आवाज में आवाज ही मिलाते हैं। वो गीता के श्लोक बोल ही नहीं पाते। उठे नहीं इसलिए बापू ने उलाहना करते हुए आज भी एक बात कही : 'मैं देख रहा हूँ कि मेरा प्रभाव मेरे निकट रहनेवालों पर से भी घटता जा रहा है। प्रार्थना तो आत्मा को साफ करने की झाड़ू है। मैं प्रार्थना में अटल श्रद्धा रखता हूँ। ऐसी प्रार्थना करना जिन्हें पसन्द नहीं पड़ता तो फिर उसे चाहिए कि मेरा त्याग ही कर दे। इसीमें दोनों का भला है। यदि तुममें इतनी हिम्मत हो तो मेरी ओर से उसे यह कह देना। उनसे कह देना कि ये सब बातें मुझे अच्छी नहीं लगतीं। यह सब देखने के लिए भगवान् अब मुझे अधिक न रखे यही चाहता हूँ। आज मैं तुमसे यह भजन सुनना चाहता हूँ।'

'थाके न थाके छतांय हो
मानवी न लेजे विसामो।'

आश्चर्य की बात है कि आज पहली बार बापू ने यह भजन पसन्द किया। मुझे तब से बापू के बारे में कुछ विचित्र-सा हो रहा है। कभी-कभी यह भी आशंका होने लगती है कि कदाचित् वे पुनः अनशन तो नहीं करने जा रहे हैं! आज रात्रि को सरदार दादा विशेष रूप से मिलने के लिए आनेवाले हैं। वे और बापू एकान्त में बातचीत करेंगे। उसके बाद कल-परसों मन्त्रिमण्डल की बैठक बुलाकर या। निर्णय किया जायगा। देखें ईश्वर इसे कहाँ तक पार करता है! कल सुबह भाई भी आ रहे हैं।

प्रार्थना के बाद मैं बापू को कमरे में भीतर ले आयी। उन्हें कपड़ा ओढ़ाया। बापू बस गरम लिहाफ लिये हुए कांग्रेस-विधान के मसविदे का संशोधन करने बैठ गये। नियमानुसार ४॥ बजे गरम जल शहद और नींबू और ५॥ बजे सन्तरे का

से अधिक प्रसन्न न होना चाहिए। दोनों में सन्तुलित स्वभाव रखने पर ही मनुष्य का सान्निध्य पाना आसान होता है। यह कानून मेरा नहीं, अनादिकाल से चला आ रहा है और सभी धर्म-ग्रन्थों में लिखा है। स्थितप्रज्ञ होने के उपायों में इसे भी एक माना गया है। तू १८ वर्ष की उमरवाली छोकरी है। मैंने तेरा मन जितना गढ़ा है, उसका खयाल तुझे आज नहीं हो सकता। नोआखाली से लेकर आज तक मैंने तुझे खूब तपाया है और तरह-तरह के विलक्षण अनुभवों से गढ़ा है। भले ही आज तुझे इसका मूल्य न मालूम पड़े, लेकिन मेरे ये शब्द लिख रखो कि तेरे भावी जीवन के लिए यह बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा, कदाचित् मैं जिन्दा रहूँ या न रहूँ।

'तू जानती ही है कि आज सुबह प्रार्थना के समय नहीं उठी। इसलिए मैं सोच रहा हूँ कि आखिर तुझमें कहाँ खामी है? दूसरी लड़कियाँ या और कोई इस यज्ञ में मेरा साझीदार नहीं। अकेली तू ही मेरी सेवा और मेरे कामों की जिम्मेदारी उठा रही है। इसमें तनिक भी भूल नहीं होने देती। लेकिन अपनी तबीयत सँभाल रखना भी मेरी सेवा का एक अंग है। अतः यह जिम्मेदारी भी तुझे अदा करनी ही चाहिए।' —बात के समय बापू ने बड़े ही प्रेम से ये बातें कहीं और मेरी पीठ सहलायी।

बाथ से निकलने के बाद वजन लिया गया—१०९॥ पौण्ड हुआ। भोजन में उबाला हुआ शाक, बारह औंस दूध, एकआध मूली और करीब चार-पाँच पके टमाटर और चार सन्तरों का रस लिया। खाते समय प्यारेलालजी के साथ नोआखाली के विषय में बातें हुईं। उन्होंने नोआखाली की अमन-चैनी के बारे में बापू से पूछा, जिस पर बापू ने साफ-साफ कह दिया

'हम लोगों ने तो 'करेंगे या मरेंगे' यह मन्त्र लेकर ही नोआखाली का वरण किया है। भले ही आज मैं यहाँ बैठा हुआ हूँ, पर काम तो नोआखाली का ही चल रहा है। हमें जनता को भी इसके लिए तैयार करना चाहिए कि वह अपनी इज्जत और सम्मान बचाये रखने के लिए बहादुरी के साथ वहीं रहे। भले ही अन्ततः वहाँ गिने-गिनाये लोग ही रह जायँ, लेकिन वहाँ दुर्बलता से ही सामर्थ्य पैदा करनी है। वहाँ दूसरा उपाय ही क्या है? आखिर सशस्त्र युद्ध में भी साधारण सिपाहियों का

पैदा होता ही है। फिर अहिंसक युद्ध में इससे भिन्न और हो ही क्या सकता है ? —और उन्हें नोआखालीके काम का ही सुझाव दिया।

फिर पैरों में घी मलवाते हुए बापू ने भोजन आरम्भ किया। दोनों पैर साफ हुए थे और बाथरूम में जाने के लिए बाहर के कमरे पर से जा रहे थे। मैंने कहा : "बापू ! अकेले ही चलकर जा रहे हैं, तो कैसे जा रहे हैं ?" (कमजोरी के कारण इधर वे बिना किसीका सहारा लिये चलते नहीं थे) बापू ने कहा : क्यों अच्छा दीखता है न ! एकदम चलते !

११॥ बजे डॉ. भार्गव की नर्सिंग होम बनाने के लिए एक मकान चाहिए। मुसलमानों की बात कही गयी। बापू ने कहा कि "जब स्थानीय मुसलमान यहाँ आते हैं, तब मुझे इसके लिए याद दिलायें। उन्होंने यह भी कहा कि 'रहमत उनसे डर-डरकर कब तक चलेगी ? मेरे डर से नहीं बल्कि अपने मन से करना चाहिए। जब मियाँजी यहाँ आयें तो पूछ लेंगे। बापू के पास मुसलमान भाग आये तो उन्हें याद दिलायी गयी। लेकिन उन्होंने कहा कि अभी इसे न लिया जाय तो अच्छा है। बापू ने कहा : "अच्छा मैंने तो वैसे ही पूछ लिया। इसके पीछे हमें बल देने की जरूरत ही क्या है ?

उसके बाद मौलाना रहमान ने सेवाग्राम के बारे में पूछते हुए कहा कि 'आप वहाँ जा सकते हैं, पर १४ को वापस लौट ही आयें। बापू ने कहा : "हाँ जिंदा रहा तो मैं यहीं रहूँगा। फिर यह सब तो खुदा के हाथ में है। यह तो आसमानी सुल्तानी बात है।

महादेव भाई की डायरी लिखने का—डायरी-सम्पादन करने का काम व्यवस्थित होने जा रहा था। इस बारे में शान्तिकुमार भाई के साथ बातें कीं। शान्तिकुमार भाई की शिकायत थी कि चन्द्रशंकर भाई और नरहरिभाई के बीच झगड़ा चल रहा है। अधिक पैसा देने की बात है।

बापू ने कहा 'जहाँ पैसा है, वहीं ऐसे झगड़े आदम से चले आते रहे हैं। हम लोग आपस में झगड़ा कर समाज की कितनी हानि कर रहे हैं, इसका खयाल किसीको भी नहीं आता। इसमें आप या और कोई कर ही क्या सकता है ? इन सबमें मेरी ही खामी है। ईश्वर ने ही मुझे अन्धा बना दिया है,

देख सम्हाला देने के लिए उठकर तो नहीं आयेंगे? नहीं नहीं बापू! आप मेरी भूल अक्सर भी क्षमा नहीं करते थे और आज इतने उदार हो गये? हाय मुझ पर गजब आ गया! मुझसे कहते थे : 'इस यज्ञ में तू और मैं दो ही हैं। तू मुझे छोड़ सकती है, पर मैं तुझे नहीं छोड़ सकता।' लेकिन आज तो बापू! आप ही मुझे छोड़ गये! भाई कल आनेवाले हैं। क्या मुझे सौंप देने के लिए ही तो चार दिन पहले उनको चिट्ठी नहीं लिखी? कुछ भी नहीं समझा! पण्डितजी का यह पुक्का फाड़कर रोना अच्छे-अच्छे धीर-गम्भीर लोगों का भी हृदय विदीर्ण कर देता है। नन्हा गोपू कह रहा है 'मनु बहन! दादा क्यों सोये हैं?' —]

थाके न थाके छताये हो!

"बापू सरदार दादा के साथ बातचीत में इतने तन्मय हो गये थे कि दस मिनट देर हो गयी। इस गम्भीर वातावरण में उन्हें विक्षेप करने की किसीकी भी हिम्मत नहीं हुई। आखिर मणि बहन ने हिम्मत की ही क्योंकि यह सभी जानते थे कि यदि बापू को समय का ध्यान न कराया जाय तो बाद में हम लोगों पर नाराज हो जायेंगे। बातें करते हुए ही बापू ने भोजन भी कर लिया। भोजन में सोलह औंस बकरी का दूध चार औंस शाक का रस और तीन संतरे थे। बातें करते हुए उन्होंने कताई भी कर ली। बिना यज्ञ किये खाना चोरी का खाना माना जाता है। अतः वे बिना कताई किये रह ही कैसे सकते हैं? आज ब्राह्म मुहूर्त में कभी न भुलाया हुआ यह भजन कि 'थाके न थाके छताये हो मानवी न लेजे विसामो' मुझसे गवाया। क्या बापू उसे चरितार्थ करना चाहते रहे हैं? चाहे जो हो पलभर भी विश्राम लिये बगैर अपनी अखंड प्रगति का वेग और भी बढ़ा दिया। वे एकदम उठ खड़े हुए।

नर्सों का धर्म

मैंने अपने हाथ में रोज की तरह बापू की माला पीकदानी चश्मे का केस और जिस पर प्रवचन लिखती हूँ, वह नोटबुक ले ली। दस मिनट देर हो जाने के लिए बापू ने रास्ते में नाराजगी जाहिर की। "आप लोग ही तो मेरी घड़ी हैं न? फिर मैं घड़ी के लिए क्यों रुका रहूँ?" पाकर आजकल बापू घड़ी देखते ही

तो कोई क्या कर सकता है ? फिर भी अपने जीते जी यह सब अपनी आँखों देखकर जितना सुधार सकूँ उतना सुधार करूँगा; जिससे भावी पीढ़ी को गाली न खानी पड़े, इतना ही भगवान् का आभार मानिये ।

'यह काम मुझे ही करना चाहिए । बहनों को अच्छी तरह अम्तुस्सलाम से बचाना ही होगा । नरहरि की तबीयत साथ नहीं देती और अब ! इसमें तो मैंने अब आशा से छुट्टी पा ली है । लेकिन वह बिना हमारी-तुम्हारी मदद के यह कैसे बन सकता है ? क्योंकि सभी अपने-अपने विचार के लिए स्वतन्त्र हैं । यदि कार्यदल यह बोझ उठाता है, तो वह अपनी कमाई खर्च करेगा । इन दोनों के बारे में जितना सम्भव है ? मैं वहीं लिखूँगा ।

डॉ. मिश्रा और उनकी लड़की लंका में मुख्य प्रतिनिधि थे । उन्हें बापू ने आशीर्वाद दिया ।

दोपहर में बिड़ला भाई के साथ चिट्ठियों का काम हुआ । काम पूरा करने के लिए कहा । ३ बजे मिट्टी ली । पैर दबाये । बापू ने मिट्टी उतारी । हम लोग बापू से छुट्टी लेकर शहर में एक सम्बन्धी के यहाँ मिलने गये । वहाँ से ७ बजे लौटे ।

यदि जीवित रहा तो…

बापू और सरदार दादा बातचीत कर रहे थे । काठियावाड़ के बारे में भी चर्चा हुई । इसी बीच काठियावाड़ के नेता रसिक भाई पारीख और ढेबर भाई भी आ गये । उन्हें बापू से मिलना था । लेकिन आज तो एक क्षण फुरसत नहीं है । फिर भी मैंने उनसे कहा कि "बापू से पूछकर समय तय किये देती हूँ ।" बापू और सरदार दादा बातों में एकदम तल्लीन थे । मैंने पूछा तो कहने लगे । "उनसे कहो कि यदि जिन्दा रहा तो प्रार्थना के बाद टहलते समय बातें कर लेंगे ।" मैंने उनसे प्रार्थना के लिए रुक जाने को कहा । कारण यदि वे प्रार्थना के बाद तत्काल न मिल लेंगे तो और कोई घुस ही आयगा और फिर बातें न कर पायेंगे । वे रुक गये और बापू के कमरे में आ बैठे ।

[इसके बाद की डायरी मैं पहली फरवरी की रात में दो बजे बाद लिख रही हूँ । क्या लिखूँ । समझ में ही नहीं आता ! पूरे बिड़ला-भवन में रोने के सिवा कुछ भी नहीं है । अरे ! क्या बापू सोये हुए तो नहीं हैं ? मुझे इतनी देर तक सिसकी

लेप लगवाना देने के लिए उठकर तो नहीं आयेंगी ? नहीं नहीं बापू ! आप मेरी भूल जरा-सी भी क्षमा नहीं करते थे और आज इतने उदार हो गये ! हाय मुझ पर गजब आ गया ! मुझसे कहते थे 'इस यज्ञ में तू और मैं दो ही हैं। तू मुझे छोड़ सकती है, पर मैं तुझे नहीं छोड़ सकता।' लेकिन आज तो बापू ! आप ही मुझे छोड़ गये ! भाई कल आनेवाले हैं। क्या मुझे सौंप देने के लिए ही तो चार दिन पहले उनको चिट्ठी नहीं लिखी ? कुछ भी नहीं समझा ! पण्डितजी का यह दुःख धाड़-धाड़कर रोना कठोर-से-कठोर धीर-गम्भीर लोगों का भी हृदय विदीर्ण कर देता है। नन्हा गोपू कह रहा है : 'मनु बहन ! दादा क्यों सोये हैं ?' —]

थाके न थाके छताये हा !

"बापू सरदार दादा के साथ बातचीत में इतने तन्मय हो गये थे कि दस मिनट देर हो गयी। इस गम्भीर वातावरण में उन्हें विक्षेप करने की किसीकी भी हिम्मत नहीं हुई। आखिर मणि बहन ने हिम्मत की ही क्योंकि वह सभी जानती थी कि यदि बापू को समय का ध्यान न कराया जाय तो बाद में हम लोगों पर नाराज हो जायेंगे। बातें करते हुए ही बापू ने भोजन भी कर लिया। भोजन में सोलह औंस बकरी का दूध, चार औंस शाक का रस और तीन संतरे थे। बातें करते हुए उन्होंने कताई भी कर ली। बिना यज्ञ किये खाना चोरी का खाना माना जाता है। अतः वे बिना कताई किये रह ही कैसे सकते थे ! आज ब्राह्म मुहूर्त में कभी न भूलनेवाला हुआ यह भजन कि 'थाके न थाके छतायें हो मानवी न लेजे विसामो' मुझसे गवाया। क्या बापू उसे साकार करना चाहते रहे हैं ? चाहे जो हो, पलभर भी विश्राम लिये बगैर अपनी अखंड प्रवृत्ति का वेग और भी बढ़ा दिया। वे एकदम उठ खड़े हुए।

नर्सों का धर्म

मैंने अपने हाथ में रोज की तरह कलम, बापू की माला, पीकदानी, चश्मे का केस और जिस पर प्रवचन लिखती हूँ, वह नोटबुक ले ली। दस मिनट देर हो जाने के लिए बापू ने रास्ते में नाराजगी जाहिर की : "आप लोग ही तो मेरी नर्स हैं न ? फिर मैं नर्स के लिए क्यों रुका रहूँ ? खासकर आजकल बापू घड़ी देखते ही

नहीं। समयानुसार एक के बाद एक सारा काम यों ही कर लिया करती हूँ। घड़ी की चाबी भी हम लोगों में से ही कोई दे दिया करता था। इसीलिए उन्होंने यह कहा। मैंने कहा कि 'बापू! आपकी घड़ी बेचारी अपेक्षा से सुस्त होती होगी।' इसीके उत्तर में उन्होंने यह बात कही। विनोद तो किया ही पर साथ ही यह भी कहा कि मुझे ऐसी देरी बिलकुल पसन्द नहीं।

थोड़े बहल को दिल्ली में ही उपवास की बात कही। "अभी खुराक की मात्रा थोड़ी-सी ही बढ़ायी है। यद्यपि अनशन के बाद अनाज तो अभी शुरू करना ही नहीं है, पर अब प्रवाही (तरल पदार्थ) कम करना है।" ये बातें करते हुए प्रार्थना-स्थल की सीढ़ियाँ चढ़े। कहने लगे: "प्रार्थना में दस मिनट देर हो गयी इसमें आप लोगों का ही दोष है। सरदार दादा दो-चार दिनों बाद जाने वाले थे और ऐसे गम्भीर प्रश्नों पर चर्चा कर रहे थे कि रोकने की हिम्मत ही नहीं हुई, यह भी बापू को पसन्द नहीं पड़ा। उन्होंने कहा: नर्सों का तो धर्म है कि साक्षात् ईश्वर भी बैठा हो तो भी वे अपना धर्म अपना कर्तव्य पूरा करें। किसी रोगी को दवा पिलाने का समय हो गया हो और किसी भी कारण यह विचार करते रहें कि उसके पास कैसे जाया जाय तो रोगी मर ही जायगा। यह भी ऐसी ही बात है। प्रार्थना में एक मिनट की देर भी मुझे खल जाती है।

यह नियम-सा बन गया था कि प्रार्थना में जाते समय हम लोग ही बापू की लकड़ी का काम करती थीं। कभी हम लोग नाराज हो जायँ और इस नियम के अनुसार लकड़ी बनना न चाहें, तो बापू हम लोगों को जबरदस्ती पकड़कर लकड़ी बना लेते थे। लौटते समय दूसरी लड़कियाँ रहती थीं।

हे राम!

बापू चार सीढ़ियाँ चढ़े और सामने देख नियमानुसार हम लोगों के कन्धे पर से अपने हाथ उठाकर उन्होंने जनता को प्रणाम किया और आगे बढ़ने लगे। मैं उनके दाहिनी ओर थी। मेरी ही तरफ से एक हृष्ट-पुष्ट पुरुष, जो खाकी वर्दी पहने और हाथ जोड़े हुए था, भीड़ को चीरता हुआ एकदम घुस आया। मैं समझी कि यह बापू के चरण छूना चाहता है। रोज ऐसा हो हुआ करता था। बापू जहाँ जायँ लोग उनका चरण छूने और प्रणाम करने के लिए पहुँच ही जाते थे। हम लोग भी

ही इनके और इनके भविष्य-क्षेम के बारे में बातें हो चुकी थीं। समय बिताने के लिए इन्होंने दस-पन्द्रह मिनट लगा दिये और अन्त में कह ही दिया : "मनु बेटी ! अब बापू नहीं रहे !" वज्रप्रहार-सा यह समाचार सुनने के साथ ही जिस कमरे में रात में हम बच्चे और बापू किलकारियाँ भरते थे, वहीं भयंकर विलाप छा गया। देवदास काका, गोपू, दोनों सबसे छोटे लड़के और नन्हा पौत्र—सभी बापू की छाती पर करुण वेदना से विलाप करने लगे। और पण्डितजी तो ओहो ! 'भगवान्, ऐसा दिन तो दुश्मन को भी देखने को न मिले ! नन्हें बच्चे की तरह सरदार दादा की गोद में मुँह छिपाकर, सिसक-सिसककर रोने लगे। फिर हम जैसों की तो बात ही क्या थी !

अन्तिम स्मृति की प्रसादी

देखते-देखते आदमियों की भीड़ शुरू हुई। करीब घण्टेभर तक यह सब चलता रहा। आखिर सरदार दादा ने अपने लौहपुरुष के नाते के अनुरूप इस कठोरतम परीक्षा को भी पास करने में कोई कोर-कसर नहीं दिखायी। अकेले वे ही सभी को ढाढस बँधा रहे थे। बापू के चश्मे और चप्पल का कहीं पता न था। तारीख २९ की प्रार्थना में जाने से पूर्व बातचीत करते हुए बापू ने खुद ही अपने नख काटे और मुझे फेंकने के लिए दिये थे। लेकिन मैं रसिक भाई और देवर भाई से बातें करने में व्यस्त रही, इसलिए वे कागज पर के नख वैसे ही रह गये। मैंने उन्हें अनमोल रत्न की तरह उठाकर सन्दूक में रख लिया (उनमें एक अँगूठे का एक उँगली का और एक बायीं उँगली का भी नख था।)। इसे मैंने आज उनके शरीर की अन्तिम स्मृति की प्रसादी के रूप में अपने पास सुरक्षित रख लिया।

हमारे बापू !

अन्त में लार्ड माउण्टबेटन सभी को शान्त करने लगे। बाहर की भीड़ भी बापू का समाचार सुनने के लिए आतुर है, इसलिए सरदार दादा ने रेडियो पर सारी बातें प्रसारित कर दीं। पण्डितजी तो बोल ही नहीं पाते थे। सारी हिम्मत बटोरकर बोले : 'हमारे बापू ...' फिर एक गहरी साँस छोड़कर सिसकते हुए कहा : 'बापू अब हमारे पास नहीं रहे।' उस समय तो धरती भी काँप उठी। इस तरह जनता बिलख उठी।

अब कैसे करना !

आखिर जनता की असाधारण भीड़ देख छत पर से ही बापू का दर्शन कराने की व्यवस्था होने लगी। उस समय मैं किसी काम से बाहर निकली। पण्डितजी ने एकदम मुझे पकड़ लिया और क्षणभर मूक बने कहने लगे : "मनु! जाओ बापू को पूछो अब कैसे करना! हे भगवान्! ऐसे विद्वान्, अपने देश और दुनिया के इस महापुरुष ! मैं तो उनके सामने में झुककर रो पड़ी। वे भी [illegible] रो दिये। उस समय हम दोनों की स्थिति में इतनी एकाकारता थी कि इतने बड़े पण्डितजी भी मुझ जैसी नादान बालिका को आश्वस्त करने में असमर्थ सिद्ध हुए।

शायद बापू जाग जायँ !

इसी बीच विभिन्न देशों के राजदूत आते हुए दीख पड़े। उनके साथ पण्डितजी भीतर आये। उस वक्त गीता-पाठ करने में मैं ही मशगूल थी। मेरे दादा और काका सारी व्यवस्था करने के निमित्त बार-बार बाहर आते-जाते थे। सुशीला बहन तो थी ही नहीं। और-सबसे शोक सहते नहीं बनते थे। प्यारेलालजी भी व्यवस्था में लगे हुए थे। फिर पण्डितजी कहने लगे "मनु! और जोर से गीता-पाठ करो शायद बापू जाग जायँ!" इतने वैज्ञानिक विद्वान् होकर भी वे उस समय सब कुछ भूलकर बार-बार आते और बापू के शरीर पर हाथ फेरकर जाते थे मानो स्वयं भूल तो नहीं कर रहे हों कि बापू सचमुच नहीं हैं।

महात्मा गांधी की जय !

और कैमरेवालों का तो पूछना ही क्या है! छत पर मंच बनाया गया और बापू का शव लाया गया। उसे देख ऊँचे-नीचे आबाल-वृद्ध सभी की आँखों से अविरल अश्रुधाराएँ बह चलीं मानो चारों ओर से बारिश ही हो रही हो। 'महात्मा गांधी की जय' के नारों से आकाश गूँज उठा। देखते-देखते जनता की श्रद्धाञ्जलियों के साथ फूलों और पैसों का ढेर ही लग गया। सर्वधर्मों की समानतापूर्वक प्रार्थना जारी थी।

दो बजे बापू की देह को नहलाने के लिए बाथरूम में ले जानेवाले थे। लेकिन मालूम हुआ कि पू. शान्तिकुमार भाई आ पहुँचे। वे पू. बा के अन्तिम समय में भी उपस्थित थे और आज बापू के भी। उन्होंने हिन्दूधर्मानुसार अन्त्यविधि करायी

वाले कभी बनाया शाल के भीतर से सारी कमीज छिपना आदि। यदि वे यह सब न बतलाते तो साधारणतः हममें से कोई भी यह नहीं जानता था।

यह घड़ी भी उतनी ही भयंकर थी। बापू की देह बाथरूम में लायी गयी। एक-एक कपड़ा उतारा गया। बापू की आस्ट्रेलियन ऊन की शाल गोली से छिद गयी थी और तीन जगह जल भी गयी थी। धोती और चादर भी खून से सराबोर थी।

बापू की देह पटरे पर सुलायी गयी। रुदन करते हुए भरत 'भाई एकले जावे रे' गीत की इस कड़ी को साकार कर रहे थे। आभा और हम सब इस तरह मार पार किये हुए बापू के शरीर को देख फूट-फूटकर रो रहे थे फिर भी क्रूर विधाता को दया नहीं आयी! हमारी हृदय-विदारक चीखों से किसे क्योंकर दया आये? कारण हम लोग अत्यन्त पापी थे फिर विधाता की दया की आशा कैसे रख सकते हैं? थरथराती छाती और हिम-सा ठंडा पानी बापू की देह पर छोड़ने की कौन हिम्मत करेगा?

बापू को नहलाकर पटरा कमरे के बीच रखा गया। उस पर सफेद खादी की चादर बिछायी गयी और बापू की देह को सुलाया गया।

'कर ले सिंगार!

भाई साहब ने उनके गले में सूत का हार और उनकी रामनाम जपने की माला पहनायी। गले में और छाती पर चन्दन-केसर का लेप किया गया। मस्तक पर कुंकुम तिलक लगाया गया। सिर की बाजू पत्तियों से 'हे राम' और पैर की बाजू ॐ लिखा गया। सारा कमरा गुलाब और अन्य सुगन्धित फूलों से इतना सुवासित हो उठा था मानो अभी सिर्फ फूलों से ही बनी हो। देखते-देखते १० का घंटा बजा। आज सुबह उठाने के लिए बापू के कमरे हाथ का स्पर्श न हो पाया। आज भाई साहब को उठाते हुए 'ब्रजकिशन' की पुकार सुनायी नहीं पड़ती थी। सभी ने कहा 'नियत समय पर ब्राह्म मुहूर्त में प्रार्थना की जाय।' आज हम लोगों को आशीष देकर 'मम्मो' कहनेवाले बापू की आवाज नहीं थी। दो मिनट की पाबन्दि' कौन करेगा?

और 'ईशावास्यमिदं सर्वम्' से आरम्भ कर न्यारी प्रार्थना बड़ी मुश्किल से शुरू की। 'कर ले सिंगार' भजन गाया और फिर 'यहाँ से नहीं जाना होगा' । क्या

बापू के इस पवित्र और तेजस्वी चेहरे का पुनः कभी भी दर्शन न होगा ! वे प्रेमभरी आँखें ! वह आश्वासनदायी वात्सल्य ! वह मुक्त हास्य ! अतीव निडरताभरी विशाल छाती और इस चमकते तेज वर्णवाले बापू का कभी भी दर्शन न होगा ! राम तो है आशाभरी पर है तो भयंकर निराशा ही !

फिर लोगों की अपार भीड़ हो जाने से बापू की देह ऊपर लायी गयी। देश-विदेश के दूत एवं प्रतिनिधि और सरकारी नौकर भारतीय शान्ति के सम्राट् के अन्तिम दर्शन करने के लिए पहुँच गये थे। • • •

अन्त्येष्टि : ३२

बिरला-भवन नयी दिल्ली
३१।१।'४८

शोक-दिवस

शनिवार ३१ जनवरी का प्रभात हुआ। कहीं भी उष:काल का असर दिखाई नहीं पड़ रहा था। सूर्यदेव भी इस तरह बादलों में समाये हुए थे मानो मानव-हृदय के इस करुण कल्पान्त से स्तम्भित हो न हो गये हों।

बापू की इस अन्तिम यात्रा में भाग लेने के लिए लाखों मानव बड़े तड़के दिल्ली और बिरला-भवन आ पहुँचे थे। देशभर में शोक-दिवस मनाया जा रहा था। शहरभर में सर्वत्र राष्ट्रध्वज झुका दिया गया था। अलबुकर्क रोड सर्वसाधारण जनता के लिए तो बन्द करना पड़ा। वहाँ सेना का पहरा पड़ा था। सैनिकों के काम आनेवाली शस्त्रवाहिनी (Weapons Carrier) बापू की देह पधराने के लिए मँगवायी गयी। वह काफी ऊँची गाड़ी थी जिसमें काफी अच्छा रंग [illegible]। गाड़ी पर भगवा वस्त्र बिछाया गया था और फिर उस पर वह पलंग रखा गया जिसे बापू बिरला-भवन में अन्त तक उपयोग में लाये। उस पर एक नीची छोटी-सी चारपाई रखने की योजना थी जिस पर बापू की देह रखी हुई थी। यह गाड़ी व्यवस्थित करने के बारे में प्रधान सेनापति जनरल बुचर के निरीक्षण पर सौंपी [illegible] गयी थी

ठीक ११ बजे हम स्ट्रेचर के साथ पू० बापू की देह शववाहिनी पर रखी गयी। और एक मैं भी बाहर आ गयी। मैं इसी समय पू० भाई की चिन्ता कर रही थी कि स्टेशन पर उनका क्या हाल हुआ होगा। लेकिन अभी बिरला-भवन से बाहर निकले ही नहीं थे कि किसीने मुझसे कहा — "तेरे पिताजी आ गये हैं!" मुझे लगा बापू मेरे बारे में स्वर्ग में भी चिन्ता कर रहे होंगे। स्वयं बिरला-भवन से निकलने के पहले ही मुझे मेरे पिताजी को सौंप देना चाहते थे। मानो इसीलिए इतनी देर यहाँ से निकलने के लिए रुके हों।

अश्रु-अंजलियाँ

रामदास काका नागपुर से हवाई जहाज द्वारा आ पहुँचे। पंडितजी का अतिप्रिय गुलाब का पुष्प उन्होंने अपनी अन्तिम अंजलि के रूप में चढ़ाया। बेचारी सुशीला बहन रोती-कलपती बहावलपुर से आ पहुँची। हम तीनों एक-दूसरे से लिपटीं और बापू की छाती पर मस्तक रखकर अपने आँसुओं की अंजलियाँ उन्हें अर्पित कीं। फिर भी आज बापू हम तीनों से बोलनेवाले नहीं थे। मैंने तो बापू से खूब-खूब माफी माँगी और एक ही माँग की कि आपकी दी हुई पूँजी का सके तो मैं बढ़ा न पाऊँ, पर नष्ट भी न करूँ; इसका मुझे सतत भान कराते रहें।

महायात्रा में सेना के स्थल, जल और वायु तीनों विभागों की टुकड़ियाँ आ पहुँची थीं। आज यहाँ के सशस्त्र पुलिस-दल की टुकड़ियाँ भी हाजिर थीं। चार बख्तर-गाड़ियाँ इस सारे जन-समुदाय के आगे रहने की योजना थी। मानवों की भीड़ का तो शुमार ही नहीं था। बापू की देह पर पुष्पवृष्टि हो रही थी। फूलों का तो ढेर लग गया। बिरला-भवन के मुख्य द्वार पर तो कड़ा पहरा था। श्रद्धांजलि समर्पण करने के लिए कांग्रेसजनों को पास दिया जाता था। सबकी यह भीड़ शोक-सागर में डूब गयी थी। सभी की आँखों के आँसू रुक ही नहीं पा रहे थे।

अलविदा महात्मन् !

हम लोगों ने बापू का शव उठाया। मुझे अपने कंधों पर बापू की ठठरी (अर्थी) उठाने की भावना आयी। मैं भाग्यशाली हूँ या अभागिन! कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि जगद्वन्द्य बापू की आज मुझे शव के रूप में कंधे पर ढोने का मौका आयेगा! एक ओर भयानक सिसकियों की आवाज! दूसरी ओर रोती

पर रिले करनेवाले हृदय-विदारक शब्दों में डुबियामार आँखों देखा वर्णन प्रसारित कर रहे हैं : "बापू के मृतदेह को घर बाहर लाया जा रहा है। यहाँ लाखों लोग जुटे हैं। जिन्हें पास तक पहुँचा जा सके, इतनी शोकमग्न शान्ति में भारत के राष्ट्रपिता आज अपनी अन्तिम शान्तियात्रा के लिए बिरला-भवन का द्वार छोड़ रहे हैं। लाखों लोग यहाँ हैं, किन्तु उनमें प्राण कहाँ! प्राण तो वह था जो अभी अन्तिम यात्रा के लिए जा रहा है। जाओ महात्मन्! जाओ अपनी अन्तिम शान्तियात्रा के पावनतम मार्गों पर जन-हृदय की श्रद्धांजलियाँ पाते हुए जाओ! करोड़ों की जनता आपको—भारत के राष्ट्रपिता को विश्व के युग-पुरुष को—अन्तिम वन्दना कर रही है। जाओ महात्मन्! "

रेडियोवाले के इन शब्दों से तो हृदय का बन्द-बन्द टूटता जा रहा था। हम लोग पण्डितजी का हाथ पकड़कर नीचे उतरे। पण्डितजी की आँखें तो इतनी सूज गयी थीं कि उनका प्रफुल्लित चेहरा देखनेवालों से उनकी यह दशा देखना दुश्वार हो रहा था। वे जनता को रास्ता देने के लिए इशारे से विनती कर रहे थे। एक लाउडस्पीकरवाली मोटर भी जनता को सूचना दे रही थी। सेना के तीनों विभागों के प्रतिनिधियों ने डोरी खींचकर बापू को—राष्ट्रपिता को—यमुना-तट पहुँचाने के पहले प्रणाम किया सलामी दी। पू. मणि बहन ने कहा कि "आप लोग पाँच मील चल न सकेंगी इसलिए घर पर ही रहें।" लेकिन रहा ही कैसे जा सकता है! शव-वाहिनी गाड़ी पर सरदार दादा रामदास काका मौलाना साहब कृपलानीजी आदि कभी-कभी बैठ जाते तो कभी पैदल ही चलने लगते। पण्डितजी भी ऐसा ही कर रहे थे। हम लोग पहली टुकड़ी में रामधुन गाते हुए चल रहे थे। हमसे आगे पुलिस थी। उनसे आगे दो चार बख्तरबन्द गाड़ियाँ थीं फिर सैनिक टुकड़ियाँ पुलिस टुकड़ियाँ बैण्ड और शव-वाहिनी।

शव-वाहिनी के पीछे भारत-सरकार के मन्त्री गवर्नर जनरल लार्ड माउण्टबेटन प्रादेशिक गवर्नर और मुख्य मन्त्री एवं मन्त्रिगण उच्च सैनिक अधिकारी विदेशी दूतावासों के प्रतिनिधि मित्र स्वजन बिरला-परिवार, महाराज जामसाहब और अन्य देशी नरेश कांग्रेस महासमिति एवं धारासभा के सदस्य तथा स्वयंसेवक सेना सभी चल रहे थे।

चार हजार स्थल-सैनिक, एक हजार वायु-सैनिक और एक हजार पुलिस की टुकड़ियाँ अपने-अपने गणवेश (वर्दी) में आ पहुँची थीं। चीन के राजदूत के आदेश से दिल्ली में रहनेवाले सभी चीनी नागरिक भी चीनी भाषा में 'गांधीजी अमर रहें' यह सुभाषित अपने झंडे में अंकित कर महायात्रा में सम्मिलित हो गये थे। वे लोग शव-वाहिनी के पीछे-पीछे चल रहे थे।

'करेंगे या मरेंगे' का शंखनाद

11॥ बजे अन्तिम यात्रार्थ प्रस्थान किया गया और करीब पाँच घण्टे में सवा पाँच मील का रास्ता निम्नलिखित क्रम से तय किया गया। लोगों ने शंखनाद किया। आखिर यह किस विजय का शंख था? क्या बापू की इस विजय का कि उन्होंने 'करेंगे या मरेंगे' इन दोनों सूत्रों को साकार कर दिखाया? अलबुकर्क रोड, किंग्स वे रोड, मेमोरियल पोर्च, प्रिंसेस पार्क, हाइमहाल रोड से होकर दिल्ली गेट और परिक्रमा होते हुए यह महायात्रा राजघाट पर जानेवाली थी। 'महात्मा गांधी की जय', 'महात्मा गांधी अमर हो गये' इन नारों और शंखघोषों के साथ करीब चार घंटे में महायात्रा मेमोरियल पोर्च के पास आ पहुँची। वेद की कुछ ऊँचे गुम्बदाकार के निकट से जब भीड़ गुजरने लगी तो मेमोरियल पोर्च के अन्तिम छोर तक और आसपास के सैकड़ों वृक्षों, तार के खंभों, घरों की छतों—जहाँ भी दृष्टि जाती वहाँ मानवों के मुंड ही मुंड दीखते थे। उनमें सर्वधर्मीय स्त्रियाँ थीं। हजारों लोग हाथ जोड़ते आँखों में आँसुओं की धाराएँ लिये अपने राष्ट्रपिता को प्रणाम करने के लिए टूट पड़ने को आतुर थे। बीच-बीच में पंडितजी और देवदास काका हम सभी लड़कियों को बारी-बारी से शव-वाहिनी पर बैठाते थे। हम लोग रामधुन कर रही थीं इसलिए बारी-बारी से ही जा पाती थीं। रास्ता साफ रखने के लिए राइफलधारी गुरखा टुकड़ी और रक्षक रास्ते के आगे-आगे चल रहे थे। पंडितजी रस्सी को खींच-खींचकर इधर-उधर कूद पड़ते थे उनसे पुलिस और स्वयंसेवकों को बड़ा ही भय लग रहा था। उनकी रक्षा करना मुश्किल हो गया। मैंने कई बार उन्हें रोककर ऐसा न करने के लिए कहा तो वे काफी बिगड़कर बोले : "और तुम बापू को तो नहीं बचा पायी!"

पाँच मील का पूरा रास्ता गुजर के फूलों की पंखुड़ियों और पैसों से एकदम

छा गया था। भारतीय हवाई दल के तीन डाकोटा विमान बापू की शव-वाहिनी की तीन प्रदक्षिणा कर पुष्प-वृष्टि कर रहे थे। उस समय रामायण में वर्णित पुष्पक-विमान का दृश्य आँखों के सामने साकार खड़ा हो जाता था। तीन बार ऐसा हुआ। तीनों बार चक्कर काटकर ऐंठ-इत्र के साथ सिर्फ अपने गुलाब के फूलों की वर्षा सचमुच बड़ी अद्भुत बात थी।

दिल्ली गेट से आगे बढ़कर महात्माजी हरिजनों के रास्ते यमुना-तट की ओर मुड़ी। रास्ते में किसान-सेवक लगा जहाँ पू० बापू को कैदी के तौर पर रखा गया था। इस जेल के बाहरी दरवाजे के सामने जेल के चौकीदारों और वार्डरों ने जेलर के नेतृत्व में सैनिक ढंग से राष्ट्रपिता को सलामी दी तो उस समय पण्डितजी शव-वाहिनी से नीचे उतर गये थे। राजेन्द्र बाबू तो सीलोन में थे। वे वहाँ से दोपहर में दिल्ली पहुँचे। बम्बई से भी बहुत-से मेहमान दोपहर को दिल्ली पहुँचे। अतः वे इस बीच रास्ते से ही महात्माजी में शामिल हो गये। दिल्ली गेट के पास तो भीड़ बेशुमार हो गयी थी लगभग १४ लाख होगी। आसपास के गाँवों से भी लोग आ पहुँचे थे।

अन्तिम दर्शन

यमुना-तट पर १२ × १२ का २॥ फुट ऊँचा एक चबूतरा बनाया गया था। उसे यमुना मैया के जल से पवित्र किया गया। वह पंचगव्य और पुष्पों से सजा हुआ था। १५ मन चन्दन की लकड़ी ४ मन घी १ मन धूप १ मन नारियल १ मन समिधा ४॥ सेर कपूर—यह सारा सामान तैयार था। चिता के स्थान से १०० गज दूर मजबूत घेराबन्दी कर दी गयी थी जिससे लोगों की भीड़ न हो। वहाँ भी असंख्य लोग पहले से ही पहुँच गये थे। बाढ़ की तरह जनता की उमड़ती आ रही थी। इन लोगों के पहुँचने के पहले ही वहाँ भीषण भीड़ हो गयी। कितने बेहोश हो गये तो कितने ही घायल हुए। एम्बुलेन्स कारें उपस्थित थीं और उनकी दौड़-धूप जारी रही। इस समय यह स्पष्ट दीख रहा था कि राष्ट्र के सभी मानवों को राष्ट्रपिता का अन्तिम दर्शन का समान अधिकार है। जब हम लोग शव को उतारने चले तो फूलों के ढेर में सारी देह ढँक गयी थी। सिर्फ दिखाई पड़ रहा था चन्दन-कुंकुम चर्चित मस्तक जो मस्तक ऊँचा रहकर अपनी अनुपम विजय की साक्षी दे रहा था।

इसलिए हम लोग खूब खुलकर रोयीं, मन ही मन हलका हुआ। आखिर आँसू भी सूख गये। सारी रात और कड़कड़ाते जाड़े में हम लोग एकदम ठंडे पानी से नहाये। १ तारीख से पानी तक गले से नीचे नहीं उतारा था।

करुण दृश्य

हमें राजघाट पर अन्त तक रहना था, लेकिन अपार भीड़ और यह बेहाल हाल देखकर हमें वहाँ पहुँचाया गया। हम लोगों की खोज-खबर लेने के लिए हम पर अत्यन्त प्रेम रखनेवाले चाचा-चाची भी आ गये। चाचा के घर मेहमानों की अपार भीड़ है। देवदास काका ने मुझे तो बहुत ही प्रेम से सँभाला। उन्होंने मुझसे बापू की सभी वस्तुओं की सूची बनाने के लिए कहा और इस तरह ध्यान बहलाया। अन्त में हम दोनों के इच्छानुसार अपनी गाड़ी में ही वे रात में पुनः चितास्थल पर ले गये। दक्षिण अफ्रीका के बापू के पुराने साथी सोराबजी भाई लगातार पहरा दे रहे थे। रातोंरात कँटीले तार की बाड़ बना दी गयी और सैनिक पहरा भी रख दिया गया।

हम लोग दो बजे पुनः वहाँ गये। अरे, बापू के कोमल चरण जल रहे थे—हड्डियाँ भी। हमारी आँखें यह देखती हुई फूट क्यों नहीं गयीं! कितना पाषाण हृदय होगा! मुझसे तो यह देखा नहीं गया। रहना मुश्किल हो गया। इसलिए गाड़ी में जाकर बैठ गयी। भगवन्! ऐसा प्रसंग इस जीवन में पुनः कभी मत दिखलाना। मेरे जीवन के अभी दो दसक भी पूरे नहीं हो पाये और उसी बीच ऐसी दो करुण घटनाएँ! पू. कस्तूर बा और पू. महात्मा गांधी जैसी विश्व इतिहास की अमर विभूतियों के अग्निदाह की मुझे साक्षिणी बनाया! दिल में यह चोट बनी ही रहेगी। और भले ही मैं दुनिया के समक्ष भाग्यशालिनी मानी जाती होऊँ, पर इस आघात के समक्ष एक अभागिन ही है। ● ● ●

दाह संस्कार के बाद : ३२

हम लोगों को तो मानो कुछ काम ही नहीं है। बापू के पास तो समय कम पड़ता था। लेकिन अब तो समय इतना बढ़ गया है कि उसे किस तरह बिताया जाय, यह एक पहेली बन गयी है।

बिरला-भवन में हम लोग नियमानुसार सुबह उठकर प्रार्थना करते हैं—बापू बैठते थे उस गद्दी के पास ही। कमरा तो अलबत्ता सूना लग रहा है। देवदास काका और रामदास काका तथा मेरे पिताजी यहीं हैं। इसलिए उनके पास ही रहते हैं और उन्हें यह अच्छा भी लगता है। काका और उनकी जगती भी खूब है। भाई भी काका और हम उनके नाम पर आनेवाली चिट्ठियों और तारों का ढेर, इकट्ठे आदि की तारीखों से छाँटते हैं, अलग-अलग करते हैं और जो चीज अखबारों में देने योग्य हो उसे वहाँ भेज रहे हैं।

देश-विदेश के सन्देशों में कुछ तो ये हैं—अमेरिका के प्रमुख ट्रूमन अबीसीनिया अफगानिस्तान ईरान इराक इटली इण्डोनेशिया मिस्र कनाडा क्यूबा कोलम्बिया चीन चिली जर्मनी जापान जेकोस्लोवाकिया जंजीबार, यूनान डेनमार्क टर्की तिब्बत पश्चिम अफ्रीका दक्षिण रोडेशिया नेपाल नेदरलैण्ड नार्वे न्यूजीलैण्ड फिलस्तीन पुर्तगाल पोलैण्ड फ्रान्स फिलिपाइन फिनलैण्ड ब्रिटेन बर्मा बेल्जियम बगदाद, मारटो युगांडा लेबनान लैक्समबर्ग सानमेरिनो सीसीलीस सोमालीलैण्ड स्याम स्विट्जरलैण्ड स्वीडन सीरिया संयुक्त राष्ट्रसंघ हवाई। इस तरह दुनिया के सभी देशों से यहाँ-वहाँ की सरकारों ब्रिटिश राजपुरुषों तथा सभी देशों में रहने-वाले पू. बापू के अनेक व्यक्तिगत मित्रों और शुभचिन्तकों के तार और समवेदना के सन्देश आये हुए थे। इसे देखकर सचमुच यही मालूम पड़ता है कि बापू ने तो सच्चा जीना भी जाना और सच्चा मरना भी जाना।

पू. बापू की अस्थियाँ (फूल) और भस्मी की मुख्य विसर्जन-विधि तो प्रयाग के त्रिवेणी-संगम में होनेवाली है, किन्तु भारत के राष्ट्रपिता का अन्तिम भस्म-दर्शन करोड़ों देशवासी कर सकें, इसलिए हर प्रदेश में भस्म-कुंभ पहुँचाना तय हुआ।

अस्थि-विसर्जन

भावनगर के लिए जसवन्त भाई मुझसे भस्म ले गये। उस समय हर प्रदेश में भस्म पहुँचाने की बात तय नहीं हुई थी। महाराजा साहब चाहते थे, इसीलिए मैंने अपनी मपारी में से थोड़ी भस्मी दे दी। मुख्य-मुख्य प्रदेशों में भस्मी के प्रवाह के लिए निम्नलिखित व्यवस्था की गयी: (१) इलाहाबाद—त्रिवेणी-

बापू और केन्द्र का पूरा मन्त्रिमण्डल उपस्थित था। उत्तर प्रदेश के मन्त्रिमण्डल ने अपनी देख-रेख में सारी तैयारी की थी। पण्डितजी तो आगे तब से वहीं ही रहे थे।

इलाहाबाद में जब-जब बापू आते थे तो पण्डितजी एक प्रिय पुत्र की तरह स्वयं उनके स्वागत-सत्कार में लगे रहते थे। जनता ने भी इसी तरह सदा सत्कार किया है। भारत की स्वतन्त्रता दिलानेवाले राष्ट्रपिता को गोलियों से मार देने के कारण आते हुए इस अस्थि-कलश का स्वागत करते हुए आज स्वतन्त्र भारत के प्रधान मन्त्री के नाते पण्डितजी को देख यहाँ की जनता को कितनी व्यथा होती होगी।

ठीक नौ बजे हमारी ट्रेन इलाहाबाद स्टेशन पर पहुँची। त्रिवेणी-संगम करीब पाँच मील दूर होने पर भी यहीं से लाखों की भीड़ जमा हो गयी थी। फिर भी वातावरण में अभूतपूर्व शान्ति छायी हुई थी। स्टेशन पर सारा मन्त्रिमण्डल देश-विदेश के प्रमुख जन हाथों में हार लेकर खड़े थे।

जुलूस में अस्थि-कुम्भ

अस्थि-कुम्भ को पालकी से पण्डितजी और जीवराज भाई मेहता तथा सरदार सरदार बलदेव सिंह और मौलाना साहब क्रमशः अपने कन्धों पर ढोकर १० फुट ऊँचे बने हुए गांधी-रथ तक ले आये और उसे रथ में स्थापित किया। विमान ऊपर से रथ पर पुष्पवृष्टि कर रहे थे। यात्रा क्रीस्ट रोड पर से सुव्यवस्थित जुलूस के रूप में परिणत हो गयी।

सर्वप्रथम लाउडस्पीकरवाली मोटरें और चार सैनिक जीपें साथ-साथ चल रही थीं। फिर १२ १२ की कतार में घुड़सवार सैनिक टुकड़ी और उसके पीछे कुमाऊँ रेजीमेण्ट चल रही थी। उसके बाद पुलिस की टुकड़ी और फिर सैनिक टुकड़ी थी। आगे १२ १२ की आठ कतारें और फिर अस्थि-पालकी के दोनों ओर तीन-तीन की कतारें बीच भीड़ में हम बहनें रामधुन गाती हुई चल रही थीं। उनके बाद देश के नेता अतिरिक्त मंत्री तथा सरकारी अधिकारी देश और विदेश के प्रतिष्ठित नागरिक ६ ६ की कतार में चल रहे थे। पालकी के पीछे सैनिक टुकड़ी विमान जन-समुदाय और अन्त में भी सैनिक टुकड़ी थी। ८ १ मील के इस जुलूस को

इस तरह बैठना होगा यह कल्पना में भी नहीं था। मेरे साथ जानेवालों में मेरे पूज्य पिताजी, मनु भाई, मामा मामी और जमादार ये चार व्यक्ति थे।

२३ तारीख का सारा दिन गाड़ी में ही बीता। २४ को हम लोग बम्बई पहुँचे। वहाँ शान्तिकुमार के आतिथ्य में १ मार्च तक रहे। पहली को उन्होंने भावनगर के लिए हवाई जहाज की व्यवस्था कर दी और हम लोग भावनगर आये।

भावनगर से रवाना

यों तो भावनगर में एक ही दिन रहना था पर वहां लगे पाँच दिन। महाराज और महारानी साहिबा ने मेरे साथ अपनी पुत्री-सा व्यवहार किया। बापू के एक शब्द से इन दम्पती ने अपना राज्य उनके चरणों में उत्तरदायी शासन के लिए सौंप दिया था। बापू की महत्ता और व्यापक प्रभाव का यहाँ प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। भावनगर के इन पाँच दिनों में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम हुए। ६ मार्च को 'भावनगर-समाचार' के संपादक मिलने आये और उन्होंने बापू के संस्मरण लिख भेजने के लिए अत्यन्त आग्रह किया। मैंने कहा : "यह लिखना मेरे लिए संभव नहीं।" बापू के लिए क्या नहीं किया जाय — यही प्रश्न था। इस बारे में मुरली साहब ने भी अत्यन्त आग्रह किया। ६ मार्च को दिन में १ बजे हम लोग भावनगर से रवाना हुए और शाम ५॥ बजे महुवा पहुँचे।

कालाय तस्मै नमः

आखिर मैं क्या आशा लेकर महुवा से नोआखाली में उस महायज्ञ में भाग लेने के लिए गयी थी! बापू ने मुझे लिखा था : 'करेंगे या मरेंगे का संकल्प लेकर आओ।' लेकिन आखिर बापू बापू ही थे—बापा के माँ थे। अपनी बच्ची को वे मरने कैसे दे सकते हैं! स्वयं ही उन्होंने नोआखाली के इस महायज्ञ में अपना बलिदान देकर यह यज्ञ सिद्ध कर लिया और उसके बाद ही मुझे महुवा में आने दिया। यहाँ आने के बाद आज पहली बार मुझे यह भास हुआ कि अब इस जगत् में पुनः बापू मिल नहीं सकते। वर्षभर पूर्व १९४६ के दिसम्बर में मैं इसी महुवा से कलकत्ता गयी थी और सन् १९४८ की मार्च के इस पहले सप्ताह में दुनिया की एक विस्मयजनक विभूति की जीवन-लीला समाप्त करके ही वापस आयी! 'कालाय तस्मै नमः'!

●

सुन्दरपुर की पाठशाला ॥।)
गो-सेवा की विचारधारा ॥)
समाजवाद से सर्वोदय की ओर ।=)
सर्वोदय का इतिहास और शास्त्र ।)
सर्वोदय-संयोजन १)
वर्ग-संघर्ष ॥=)
गांव का गोकुल ।)
शोषण-मुक्ति और नव समाज ॥=)
भूदान से ग्रामदान =)
नव-दुनियादारी ॥)
पारिवारिक समाजवाद १॥)
लोकतांत्रिक समाजवाद १॥)
बच्चों का काम और शिक्षा)
गांधीजी क्या चाहते थे ? ॥)
भूदान-पोथी ।)
सर्वोदय की पुरानी कहानी [पाँच भाग] १।)
किशोरलाल भाई की जीवन-साधना २)
गुजरात के महाराज २)
बापूजी : जीवन और साधना १।)
ग्राम-राज्य क्यों ? ।=)
ग्राम-स्वराज्य
ताई की कहानियाँ

विनोबा-संवाद ।=)
सत्याग्रही शक्ति ।-)
जीवन-परिवर्तन [नाटक] ।)
कुलदीप [नाटक] ।)
प्रायश्चित्त [नाटक] ।)
चन्द्रलोक की यात्रा [नाटक] ।)
एक भेंट [नाटक] ॥=)
प्राकृतिक चिकित्सा-विधि १॥)
बापू के पत्र १।)
सुधरे हुए खेती के औजार ॥)
गो उपासना ।)
घर-घर में गाय ।)
ग्राम-सेवा १।)
मेरा जीवन-विकास ॥)
अहिंसात्मक प्रतिरोध ॥)
प्यारे बापू [तीन भाग] १॥=)
तपोधन विनोबा १॥)
खाद और पेड़-पौधों का पोषण १)
जापान की खेती ॥।)
हमारे बापू =)